श्रीः

विद्वद्वरश्रीशम्भुनाथात्मज

गणकचक्रचूडामणि श्रीजीवनाथ

कृत

भावकुतूहलम्

बलियामण्डलान्तर्गत केवराग्रामनिवासिना सरयूपारीण-

विप्रवंशावतंस विद्वद्वर श्रीरामावतार मिश्र

तनूजन्मना ज्यौतिषाचार्यादिविविधोपाधिना

काशीस्थ-उत्साहवर्द्धिनी पाठ-

शालाध्यापकेन

सम्पादक

श्रीरामोत्साहमिश्र शर्मणा

सान्वय-उत्साहवर्द्धिनीभाषया

समलङ्कृतम्।

प्रकाशकः—

ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर

राजादरवाजा, वाराणसी।

मूल्य १२) बारह रुपया

श्रीः १००८ रामचन्द्राय नमः

भूमिका

सिद्धान्ते गणितप्रकाशनविधौ यस्सूर्यरूपः क्षितौ
नानाशास्त्रविचारचारुसुमतिर्मत्पूज्यपादो गुरुः ।
"गेनालाल" बुधः सदा विजयते सन्मैथिलः कर्मठः ।
यत्पादाम्बुजरेणुसत्कणिकया ज्ञानस्य लब्धिः परा: ॥ १ ॥
यो लन्दनादि बहुदेशभवैस्सुपूज्यैर्विद्वद्वरैः सुमहितः प्रथितप्रभावः ।
"पद्माकरो" गुरुवरोऽस्ति तदीय सेवाऽऽचार्यस्ययोग्य पदवी महती सुलब्धा ॥ २ ॥

अस्त्ययं विद्वद्वराणां पुरतोऽतिविदितस्य श्रीजीवनाथस्य विशेष पाण्डित्यप्रकाशन विशेषतः ज्योतिः फलिताभिलापुकाणामानन्दसन्दोह-सम्पादकश्चमत्कारपरिपूर्णो भावकुतूहलाख्यो ग्रन्थः ।

एतस्य काठिन्येन दुराधिगमतया क्लेशमनुभवतामध्ययनाध्यापन-पराणां जनानां सुखेनाववोधाय सान्वयं सरलहिन्दीभाषालंकृतं मया निरमायि ।

विदुषामनुचरः-
श्रीरामोत्साहमिश्रः
काशी ।

॥ श्रीः ॥

अथ भावकुतूहलविषयानुक्रमणिका ।

❀ इति ❀

श्रीः

अथ भावकुतूहलम्

अन्वय–भाषाटीकासहितम् ।

प्रथमोऽध्यायः

मङ्गलाचरणम्—

महः सेतुं हेतुं सकलजगतामङ्कुरतया
सदा शम्भोरम्भोभवभवभयत्राणजनकम् ।
अहं वन्दे तस्यासुरसुरमनोमोदनिकरं
चिदानन्दं पादामलकमललावण्यमधिकम् ॥१॥

अन्वयः–सकलजगताम् अङ्कुरतया हेतुं महः सेतुंअम्भो भव भव भयत्राणजनकम्, तस्य असुरसुरमनोमोदनिकरं चिदानन्दं पादामलकमललावण्यं अधिकं 'यथा स्यात्तथा' अहं वन्दे ॥ १ ॥

भा०—तेज के सेतु (पुल), समस्त विश्व के अंकुर होने के कारण अर्थात् आदि कारण, जल से उत्पन्न होनेवाले श्रीब्रह्माजी को संसार-बन्धन-जनित भय से बचानेवाले, चिदानन्दमय, देवता और दैत्य, इन दोनों के हृदय को आनन्दित करनेवाले, श्री शिवजी के उस निर्मल चरण-कमल की शोभा को मैं अधिकाधिक (बार-बार) प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

विचारसञ्चारचमत्कृतं यन्मतं मुनीनां प्रविलोक्य सारम् ।
श्रीजीवनाथेन विदां हिताय प्रकाश्यते भावकुतूहलं तत् ॥२॥

अन्वयः–यत् मुनीनां मतं विचार संचार चमत्कृतं तत् सारं प्रविलोक्य विदां हिताय श्रीजीवनाथेन भावकुतूहलं प्रकाश्यते ॥ २ ॥

भा०—सदा विचार होते-होते जिसमें विविध प्रकार के चमत्कार दीख पड़ रहे हैं, प्राचीन मुनियों के कथन का सार भाग मात्र मत को अच्छी तरह देखकर मैं जीवनाथ विद्वानों के उपकारार्थ यह भावकुतूहल नामक ग्रन्थ प्रकाश में ला रहा हूँ–अर्थात् लिख रहा हूँ ॥ २ ॥

धात्रोदितं यवनकर्कश शब्दसंगा-
दाधिव्यथाविदलितं परमं फलं यत् ।
मत्कोमलामलरवामृतराशिधारा-
स्नानं करोतु जगतामपि मोदहेतोः ॥३॥

अन्वयः-धात्रोदितं यत्परमं फलं यवन कर्कश शब्दसङ्गादाधिव्यथा विदलितं तत् जगतां हेतोः मत्कोमलामल रवामृतराशिधारा स्नानं करोतु ।

भा०— साक्षात् ब्रह्माजी के मुख से उच्चरित ज्योतिषशास्त्र का जो फलित भाग, यवनों के कर्कश शब्दजाल में घुलमिल जाने से मन ही मन झींक रहा था, वह फलित भाग आज मेरे कोमल और स्वच्छ शब्दरूपी अमृतराशि की बहती हुई धारा जगत् के कल्याणार्थ स्नान करे--ऐसा करने से वह शुद्ध होकर संसार का अधिक भला कर सकेगा ॥ ३ ॥

अथ द्वादशभावः—

तनकोशसहोदरबन्धुसुतारिपुकामविनाशशुभाविबुधैः ।
पितृभं तत आप्तिरपाय इमे क्रमतः कथिता मिहिरप्रमुखैः ।।४।।

अन्वयः-तनु १ कोश २ सहोदर ३ बन्धु ४ सुत ५ रिपु ६ काम ७ विनाश ८ शुभ ९ पितृभं १० आप्ति ११ अपाय १२ इमे द्वादश भावाः क्रमतः मिहिर प्रमुखैः विबुधैः कथिता ॥ ४ ॥

भा०—अब तनु-धन आदि बारहों भावों के नाम बतलाते हैं । जैसे प्रथम भाव तनु, द्वितीय-कोश, तृतीय-सहोदर, चतुर्थ-बन्धु, पंचम सुत, षष्ठ-रिपु, सप्तम काम, अष्टम-विनाश, नवम-शुभ, दशम-पितृ, एकादश-लाभ, और द्वादश भाव का नाम है व्यय । प्राचीन मिहिराचार्य प्रभृति मुनियों की बतलायीहुई ये संज्ञायें हैं ।

अथ राशिपाः—

कुजकवी बुधचन्द्रदिवाकरा बुधसितावनिजा गुरुसूर्य्यजौ ।
शनि गुरू च पुरातनपण्डितैरजमुखादुदिता भवनाधिपाः ।।५।।

अन्वयः-कुजकवी बुधचन्द्रदिवाकराः बुधसितावनिजा गुरुसूर्यजौ शनिगुरू इमे अजमुखात् भवनाधिपाः पुरातनपण्डितैः उदिताः (कथिताः) ॥ ५ ॥

भा०--अब राशियों के स्वामी बतलाते हैं—मंगल, शुक्र, बुध, चंद्रमा, सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, शनि और गुरु ये क्रमशः मेष आदि बारहों राशियों के स्वामी हैं। उदाहरणार्थ जैसे—मेष राशि का स्वामी मंगल वृष राशि का स्वामी शुक्र, मिथुन राशि का स्वामी बुध आदि॥ ५॥

अथ मित्रसमरिपवः-

अङ्गारकेन्दुगुरवो रविचन्द्रपुत्रा-
वादित्यचन्द्रगुरवः कविचण्डभानू।
भौमार्करात्रिपतयो बुधसूर्यपुत्रौ-
शुक्रेन्दुजौ दिनकरात्सुहृदो भवन्ति॥६॥

अन्वयः—अङ्गारकेन्दुगुरवः, रविचन्द्रपुत्रौ, आदित्यचन्द्रगुरवः, कविचण्डभानू, भौमार्करात्रिपतयः, बुधसूर्यपुत्रौ, शुक्रेन्दुजौ, दिनकरान् सुहृदः भवन्ति॥ ६॥

भा०--अब ग्रहों की मित्रता और शत्रुता का निरूपण करते हैं--मंगल, चंद्रमा और गुरु (बृहस्पति) सूर्य के मित्र हैं। सूर्य तथा बुध चंद्रमा के मित्र हैं। सूर्य, चंद्र और बृहस्पति मङ्गल के मित्र हैं। शुक्र और सूर्य बुध के मित्र हैं। मंगल, सूर्य और चंद्रमा बृहस्पति के मित्र हैं। बुध तथा शनि ये दोनों शुक्र के मित्र हैं। शुक्र तथा बुध ये दोनों शनि के मित्र हैं॥ ६॥

सौम्यः समा हि सकलाः कविभानुपुत्रौ
मन्देज्यभूमितनया रविजः क्रमेण।
भौमेज्यकौ सुरगुरू रिपवोऽवशिष्टा-
स्तात्कालिका व्ययधनायदशत्रिबन्धौ॥७॥

अन्वयः—सौम्यः सकलाः, कविभानुपुत्रौ, मन्देज्यभूमितनयाः, भौमेज्यकौ, सुरगुरू रविजः, क्रमेण हि समाः भवन्ति, अवशिष्टाः रिपवः भवन्ति। तथा स्थितग्रहात् व्यय, धन, आय, दश, त्रि, बन्धु भावस्थितग्रहाः तात्कालिकमित्राणि भवन्ति तथा, पञ्च, षट्, सप्ताष्ट, भाग्यैकस्थानस्थिताः ग्रहास्तात्कालिकशत्रवो भवन्तीतिशेषः॥ ७॥

भा०—अब यह बतलाते हैं कि कौन ग्रह किस ग्रह के साथ समभाव रखता

है--सूर्य का बुध से, चंद्रमा का मंगल, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि से मंगल का शुक्र तथा शनि से, बुध का शनि, बृहस्पति तथा मंगल से, बृहस्पति का शनि से, शुक्र का मंगल तथा बृहस्पति से और शनि का बृहस्पति के साथ समभाव रहता है। इनके अतिरिक्त बाकी सब ग्रह सबके शत्रु होते हैं अर्थात् सूर्य के शनि शुक्र चन्द्रमा के कोई नहीं, मङ्गल के बुध, बुध के चन्द्रमा, गुरु के बुध, शुक्र, शुक्र के सूर्य चंद्र और शनि के सूर्य, चंद्र मंगल शत्रु होते हैं। जो ग्रह जिस भाव में हो उससे द्वादश, द्वितीय, एकादश, दशम, तृतीय और चतुर्थ भाव में बैठे ग्रह तात्कालिक मित्र हो जाते हैं। इसी तरह पंचम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम और एक स्थान में स्थित ग्रह तात्कालिक शत्रु भी हो जाते हैं ॥ ७ ॥

अथ ग्रहोच्चनीचस्थानाः।

परमोच्चमजे दशभिर्वृषभे शिखिभिर्मकरे गजयुग्मलवैः।
तिथिभिर्युवतीभवने विधुभे किल पंचभिरेवझषे त्रिघनैः ॥८॥
कृतभिश्च तुलाभवने रवितः कथितं मदने खलु नीचमतः।
मिथुने तमसः शिखिनो धनुषि प्रथमे बुधभे गुरुभे भवनम् ॥९॥

अन्वयः—अजे दशभिः, वृषभे शिखिभिः, मकरे गजयुग्मलवैः, युवतीभवने तिथिभिः विधुभे किल पञ्चभिः, झषे त्रिघनैः तुलाभवने कृतिभिः रविितः परमोच्चं खलु कथितम्। अतो मदने-उक्तांशैर्नीच कथितम् ॥८॥

अन्वयः—मिथुने तमसः धनुषि शिखिनः स्थानं, तथा बुधभे गुरुभे क्रमेण राहु शिखिन प्रथमे उच्चस्थानं कथितम् ॥ ९ ॥

भा०—अब ग्रहों की उच्चता और नीचता का विचार करते हैं--सूर्य मेष राशि के दश अंश पर, चंद्रमा वृष राशि के तीन अंश पर, मंगल मकरराशि के अट्ठाईस अंश पर, बुध कन्याराशि के पंद्रह अंश पर बृहस्पति कर्कराशि के पांच अंश पर शुक्र मीनराशि के सत्ताईस अंश पर, शनि तुलाराशि के बीस अंश पर, परम उच्च कहा गया है और इसी उच्च से प्रत्येक सातवीं राशि के उक्त अंश के अनुसार सभी ग्रह परम नीच भी हो जाते हैं। जैसे कि सूर्य तुलाराशिके दश अंश में, चंद्रमा वृश्चिक राशि के तीन अंश में और मंगल कर्कराशि के अट्ठाईस अंश में परम नीच कहा गया है। यही क्रम औरों का भी परमनीच स्थान का समझना चाहिए। मिथुन के १ अंश पर राहु और धन के १ अंश पर केतु परमोच्च होते हैं। कन्या का राहु और मीन का केतु भी स्वामी होता है ॥८-९॥

अथ षड्वर्गसाधनम्—

होरा राशिदलं समे प्रथमतश्चन्द्रस्य भानोरतो
व्यत्यासा दशमे दृक्काणपतयः स्वाक्षाङ्कभावाधिपाः।
मेषादादिमभे वृषे तु मकराद्युग्मे घटादिन्दुभे
कर्कादेव नवांशकानि गदिताः स्युर्द्वादशांशाः स्वभात् ॥१०॥

अन्वयः—राशिदलं होरा, समे प्रथमतश्चंद्रस्य ततः भानोः, असमे अतो व्यत्यासा, अर्थाद्विषमराशौ प्रथमतः सूर्यस्य ततश्चन्द्रस्य होरा भवति, स्वाक्षाङ्कभावाधिपाः दृकाणपतयः भवंति आदिमभे मेषात्, वृषे मकरात्, युग्मे घटात्, तु इन्दुभे कर्कात्-इत्यादेव नवांशकानि गदिताः। स्वभाद्द्वादशांशाः स्युः ॥१०॥

भा०—प्रत्येक राशि के दो भाग किये जाते हैं और उन दोनों भागों को ही होरा कहते हैं। उसका विचार इस तरह है कि हर,एक सम राशि का प्रथम होरा चन्द्रमा का और विषम राशि का प्रथम होरा सूर्य का होता है। प्रत्येक राशि तीस-तीस अंश की होती है। तो पन्द्रह-पन्द्रह अंश के दो दल करने पर समराशि अर्थात् वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन के प्रथम दल अर्थात् आदि के १५ अंश का होरेश चन्द्रमा होगा और अगले पन्द्रह अंश का होरेश सूर्य होगा। इसी प्रकार विषम राशि यानि मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुम्भ, इनके आदि के दल अर्थात् प्रथम पन्द्रह अंश का होरेश सूर्य होगा द्वितीयदल का होरेश चन्द्रमा होगा। अब द्रेष्काण का क्रम बतलाते हैं-ऊपर यह तो बतला ही आये हैं कि प्रत्येक राशि में तीस अंश होते हैं। उन्हीं तीस अंशों में से दस दस अंश का एक-एक द्रेष्काण माना जाता है। इसका मतलब यह हुआ हर एक राशि में तीन द्रेष्काण होते हैं। उन तीनों द्रेष्काण के क्रमशः अपना पञ्चम भाव और नवम भाव का स्वामी, स्वामी होता है। जैसे कि राशि के प्रथम द्रेष्काण का स्वामी वह होगा जो कि उस राशि का स्वामी होगा। दूसरे द्रेष्काण का स्वामी वह होगा जो उस राशि से पंचम भाव का स्वामी हो? और तृतीय द्रेष्काण का स्वामी वह होगा जो नवमभाव का स्वामी होगा। अब नवमांश का विचार करते हुए कहते हैं कि प्रत्येक राशि के तीन अंश बीस कला बीतने तक पहला, छ अंश चालीस कला बीतने तक दूसरा, पूरे दश अंश बीतने तक तीसरा, तेरह अंश बीस कला बीतने तक चौथा, सोलह अंश चालीस कला बीतने तक पाँचवाँ, पूरे बीस अंश बीतने तक छठाँ, तेइस अंश बीस कला बीतने तक सातवाँ, छब्बीस अंश चालीस

कला बीतने तक आठवां और पूरे तीस अंश बीतने तक नवम नवांश होता है । मेष, सिंह, धन का नवांश मेष से वृष, कन्या मकर का नवांश मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ का नवांश तुला से और कर्क, वृश्चिक, मीन का नवांश कर्क से चलता है । मेष राशि के प्रथम नवांश का स्वामी मंगल, द्वितीय नवांश का स्वामी वृषराशि का स्वामी शुक्र होगा । इसी क्रम से शेष को भी समझ लीजिए । वृष राशि का प्रथम नवांश मकर राशि का होगा, उसका स्वामी शनि होगा । दूसरा नवांश कुम्भ का होगा उसका भी स्वामी शनी ही होगा । मिथुन राशि का प्रथम नवांश तुला का होगा और उसका स्वामी शुक्र होगा । इसी के दूसरे नवांश का स्वामी वृश्चिक राशि का मंगल होगा । कर्क राशि का प्रथम नवांश कर्क ही का, दूसरे सिंह का, तीसरा कन्या का होगा और उन राशियों के स्वामी ही इसके भी स्वामी होंगे । अब द्वादशांश को समझाते हुए कहते हैं कि प्रत्येक राशि के बारहवें भाग (दो अंश तीस कला) को द्वादशांश कहते हैं । मेष राशि का प्रथम द्वादशांश मेष का, द्वितीय द्वादशांश वृष का और तृतीय द्वादशांश मिथुन राशि का होगा । वृष राशि में दो अंश तीस कला के स्वामी शुक्र, पाँच अंश तक के स्वामी बुध, सात अंश ३० कला तक के स्वामी चन्द्रमा इत्यादि जानना ॥१०॥

पञ्चपञ्चाष्टशैलाक्षास्त्रिंशांशा विषमे क्रमात् ।
भौमभानुजजीवज्ञशुक्राणामुत्क्रमात्समे ॥११॥

अन्वयः—विषमे (विषमराशौ पञ्च पञ्च अष्ट शैल अक्षाः क्रमात् भौम भानुज जीवज्ञ शुक्राणां त्रिंशांशाः स्युः, समे (समराशौ) अतः उत्क्रमात् भवति ॥११॥

भा० –अब सम विषमराशियों के त्रिशांशा का क्रम बतलाते हैं । मेष, मिथुन, सिंह और तुला आदि विषम राशियों में पाँच, पाँच, आठ, सात, और पाँच अंशों के क्रमशः मंगल, शनि बृहस्पति, बुध और शुक त्रिशांश पति होते हैं जैसे कि विषम राशि मेष के प्रथम पाँच अंश तक मंगल का, बाद के दस अंश तक शनि का बाद के अठारह अंश तक बृहस्पति का, फिर पचीस अंश तक बुध का, और बाद के तीस अंश तक शुक्र का त्रिशांश होगा। ठीक इसके विपरीत क्रम से समसंख्यक राशियों का त्रिशांश समझना चाहिए । जैसे समराशि के पाँच अंश तक शुक्रका और बारह अंश तक बुध का बीस अंश तक बृहस्पति का पचीस अंश तक शनि का और तीस अंश तक भौम का त्रिशांश होता है ॥११॥

अथ गृह उच्चादिचक्रम्

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	बृह.	शुक्र.	शनि	राहु	केतु
गृह	५	४	१ ८	३ ६	९ १२	२ ७	१० ११	६	१२
उच्च अंश	० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३ ५	११ २७	६ २०	२ १	८ १
नीच अंश	६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	९ ५	५ २७	० २०	८ १	२ १
मूल त्रि॰	५	२	१	६	९	७	११	६	११
रंग	रक्त श्या॰	गौर	रक्त गौर	दूर्वा श्याम	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण	धूम्र
देवता	अग्नि	जल	अ.कु	विष्णु	चन्द्र	इन्द्रा- णी	ब्रह्मा	राक्षस	राक्षस
दिशा पति॰	पू॰	वा॰	द.	उ.	ई॰	आ.	प.	नै॰	न,
शुभादि	क्रूर	शुभ क्षी.पा.	अशुभ	शुभ पायुपा	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ
पुरु- षादि	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुं.	पुरुष	स्त्री	न.	पुरुष	न.
तत्व	अग्नि	जल	अ.	भूमि	आका.	वायु	आका.	आका.	आका.
वर्णा- धी॰	राजा	वैश्य	राजा	वैश्य	ब्राह्मण	ब्रा.	अन्त्य.	अं.रा.	अं.रा.
स्थान	देवा- लय	जलाश	अनि	की. स्था.	कोप	शयन	स्त्रा.	छि.	छि,
वस्त्र	स्थूल	नूतन	दग्ध	दग्ध	जीर्ण	दृढ़	सछिद्र	मलिन	मलिन
धातु	ताम्र	मणि	स्वर्ण	स्वर्ण	सुवर्ण	मोती	लोह	शीशा	शीशा
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	ग्रीष्म	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	ग्रीष्म	ग्रीष्म

अथ ग्रहदृष्टिकथनम् ।

चरणविवृद्ध्याखेटादशमसहोत्थे १०।३ त्रिकोणभे ५।९ जनने
चतुरस्रेऽथ कलत्रे प्रयताः पश्यन्ति तत्फलं क्रमतः ॥१२॥

अन्वयः—जनने दशमसहोत्थे त्रिकोणभे चतुरस्र कलत्रे चरणविवृद्ध्या खेटाः प्रयतः (क्रमेण) पश्यन्ति अथ तत्फलं च क्रमात्, (दास्यन्ति ॥

भा०—अब ग्रहों की दृष्टि का विचार करते हैं। सूर्य चन्द्रमा आदि सभी ग्रह जिस घर में बैठे रहते वहाँ से तीसरे और दसवें घर को एक चरण की दृष्टि से देखते हैं, नवम तथा पंचम भवन को दो चरण से, अष्टम तथा चतुर्थ भवन को तीन चरण की दृष्टि से देखते हैं। सभी ग्रह अपने भवन में बैठे हुए अपने से सातवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं। कोई ग्रह यदि एक चरण की दृष्टि से देखता तो चतुर्थांश, दो चरण की दृष्टि से देखता तो आधा, तीन चरण की दृष्टि से देखता तो तीन चौथाई और पूर्ण दृष्टि से देखता तो पूर्ण फल प्राप्त होता है ॥१२॥

अथ चरादिसंज्ञाकथनम् ।

चरस्थिरद्विस्वभावाः क्रूराक्रूरावजादितः ।
नरनारी क्रमादेव विषमाख्यसमावपि ॥१३॥

अन्वयः—चर स्थिर द्विःस्वभावाः, क्रूराक्रूरौ, नरनारी विषमाख्य समावपि अजादितः क्रमादेव भवति ॥१३॥

भा०—अब मेष आदि बारहों राशियों की चर, स्थिर आदि संज्ञा का निरूपण करते हैं। मेष आदि बारहों राशि क्रमशः चर स्थिर और द्विःस्वभाव संज्ञक होते हैं। जैसे मेष चर, वृष स्थिर, मिथुन, द्विस्वभाव, कर्क चर, सिंह स्थिर, कन्या द्विःस्वभाव. तुला चर, वृश्चिक स्थिर, धन द्विस्वभाव, मकर चर कुम्भ स्थिर और मीन द्विःस्वभाव संज्ञक राशि है। इसी क्रम से सभी राशियें क्रूर, अक्रूर, पुरुष और स्त्री संज्ञक भी होती है। जैसे—मेष, क्रूर, वृष अक्रूर मिथुन क्रूर, कर्क अक्रूर आदि। इसी प्रकार मेष पुरुष, वृष स्त्री, मिथुन पुरुष, कर्क राशि स्त्री संज्ञक होती हैं। इसी क्रमसे और राशियों को भी समझ लीजिए ॥१३॥

मिथुनं धन्विपूर्वार्द्धं तुलाकन्याघटा नराः ।
चतुष्पदा धनुः सिंहवृषमेषा मृगादिमः ॥१४॥

अन्वयः—मिथुन, धन्विपूर्वार्द्ध, तुला, कन्या कुम्भ नराः तथा धन,

सिंह, वृष, मेष, मृगादिमश्चतुष्पदा भवन्ति (मकरस्योत्तरार्द्धं, मीनौ चलचरौ कर्क, वृश्चिकौ, कीटौ इति शेषः) ॥ १४ ॥

भा०—अब मेषादि राशियों के द्विपद चतुष्पद आदि संज्ञा बताते हैं। मिथुन और धन राशि का पूर्वार्ध, तुला कुम्भ और कन्या, ये राशियें द्विपद अर्थात् नर संज्ञक कही जाती हैं। धनराशि का उत्तरार्ध, सिंह, वृष मेष और मकर का पूर्वार्ध ये राशियें चतुष्पद कही जाती हैं। इनके अतिरिक्त मकर का उत्तरार्ध तथा मीन ये जलचरराशि हैं और कर्क तथा वृश्चिकराशि कीट-संज्ञक हैं ॥ १४ ॥

मूलत्रिकोणमर्कादेः सिंहो वृषभ आदिमः।
कन्याधनुस्तुलाकुंभः प्रवदन्ति पुरातनाः ॥ १५ ॥

अन्वयः—सिंह वृषभ आदिमः कन्या धनु तुला कुम्भः अर्कादेर्मूल-त्रिकोणं पुरातनाः प्रवदन्ति ॥ १५ ॥

भा०— सूर्य आदि ग्रहों के क्रम से सिंह, वृष, मेष, कन्या, धन, तुला और कुम्भ ये राशियें मूलत्रिकोणसंज्ञक होती हैं। जैसे सिंह का सूर्य, वृष का चन्द्रमा मेष का मंगल, कन्या का बुध, धन का वृहस्पति, तुला राशि का शुक्र और कुम्भ राशि का शनि मूलत्रिकोणी होता है ॥ १५ ॥

इति भावकुतूहले उत्साहवर्धिनी भाषाटीकायां संज्ञाऽध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

—०—

अथ द्वितीयोऽध्यायः

पिता मातादिकष्टज्ञानम्।

आदित्याद्दशमे पापः पीड़ितो दशमाधिपः।
तदा पितुर्महाकष्टं निधनं वेति कीर्त्तितम् ॥ १ ॥

अन्वयः—आदित्याद्दशमेपापः दशमाधिपः पीड़ितः तदा पितुर्महत्कष्टं निधनं वेति कीर्त्तितम्।

भा०–जिस बालककी कुंडली में सूर्य से दसवें घर में कोई पापग्रह हो और उस दसम घर का स्वामी निर्वल हो तो उस बालक का पिता किसी महान् कष्ट में पड़ता या मृत्यु को प्राप्त होता है। ऐसा मुनियोंने कहा है ॥१॥

भवति यदि शशाङ्कः पापयोरन्तराले-
जनुषि सुखनगस्थैः पापखेटैः शशांकात् ।
विधुरपि बलहीनो नष्टकान्तिर्जनन्या
निधनमपि विशेषादाहुराचार्यवर्य्याः ॥ २ ॥

अन्वयः—जनुषि यदि पापयोरन्तराले शशाङ्कः भवति, शशाङ्कात् सुखनगस्थैः पापखेटैः, विधुरपि बलहीन नष्टकान्तिश्च [तदा] जनन्याः विशेषात् निधनं आचार्यवर्य्याः आहुः ॥ २ ॥

भा०-जिसकी जन्मकुण्डली में चन्द्रमा पापग्रहोंके साथ बैठा हो और चंद्रमा से चौथे तथा सातवें घर में पापग्रह बैठे हों और चंद्रमा बलहीन तथा कांतिहीन (क्षीण) होकर बैठा हो तो उस बालक की माता मर जाती है और 'अपि' शब्द से वह बालक स्वयं भी मर जाता है ऐसा प्राचीन आचार्यों ने कहा है ।।२।।

अथ भ्रातारिष्टयोगः

यदा पापखेचारिणो जन्मकाले
धरानन्दनाक्रान्तभावात्सहोत्थे ।
तदैवाशु नाशं सहोत्थस्य धीरा
मणित्थादयः प्राहुराचार्य्यमुख्याः ॥३॥

अन्वयः—यदा जन्मकाले धरानन्दनाक्रान्तभावात् पापखेचारिणः सहोत्थे भवति तदैव सहोत्थस्य आशु नाशं धीराः मणित्थादयः आचार्यमुख्याः प्राहुः ॥३॥

भा०- जिसके जन्म समय में मंगल जिस घर में बैठा है उससे तृतीय स्थान में पापग्रह बैठे हों तो उस बालक का भाई अवश्य मर जाता है, यह मणित्थ आदि आचार्यों का मत है ॥ ३ ॥

मातुल कष्टयोगः ।

बुधारातिभावे तु पापा भवन्ति-
दृत्तो ज्ञोपि नीचाश्रितो नष्टवीर्य्यः ।
तदा मातुलानां विनाशो विशेषा-
दिति प्राहुराचार्य्यवर्य्या नराणाम् ॥४॥

अन्वय—यदा बुधात् षष्ठभावे पापा भवन्ति तु नीचाश्रितो नष्टवीर्यः वृत्तज्ञोऽपि स्यात्तदा नराणां मातुलानां विशेषात् विनाशः इति आचार्यवर्या प्राहुः ॥४॥

भा०—जिसके जन्म समय में बुध जिस घर में बैठा है, उस घर से छठें घर में पापग्रह हों और बुध पापग्रहों के साथ नीच के आश्रित तथा निर्बल होकर बैठा हो तो उस बालक के मामा मर जाते हैं, ऐसा बड़े-बड़े आचार्य कह गये हैं ॥ ४ ॥

अथ सन्तानहानियोगः ।

बृहस्पतेः पंचमभावसंस्था महीजमन्दागुदिवाकराश्चेत् ।
गुरोरपत्याधिपतिः सपापस्तदात्मजानां विरतिं वदन्ति ॥५॥

अन्वयः— यदि चेत् बृहस्पतेः पञ्चमभावे महीजमन्दागुदिवाकराः संस्था, गुरोरपत्याधिपतिः सपापस्तदा आत्मजानां विरतिं वदन्ति ॥५॥

भा०—बृहस्पति जिस घर में है, उससे पाँचवें स्थान में शनि, राहु तथा सूर्य, इनमें से कोई भी ग्रह बैठा हो और बृहस्पति से पाँचवें घर का स्वामी पापग्रहों से युक्त हों तो उस मनुष्य के पुत्र हो होकर मर जाते हैं। ऐसा ज्योतिर्विदाचार्यों का कथन है ॥५॥

अथ दाराकष्टयोगः ।

चेत्कवेरंगनागारगामीदिनेशो
विनाशोऽङ्गनाया सपापो निरुक्तः ।
नैधने मन्दतः पापखेटा बलिष्ठा
नृणां नैधनं सत्वरं सन्दिशन्ति ॥६॥

अन्वयः—चेत् स पापः दिनेशः कवेः अङ्गनागारगामी अङ्गनायाः विनाशः, मन्दतः नैधने बलिष्ठाः पापखेटाः (भवन्ति) नृणां सत्वरं नैधनं सन्दिशन्ति निरुक्तः ॥६॥

भा०—शुक्र जिस घर में बैठा हो उस घर से सातवें घर में किसी पापग्रह के साथ-साथ सूर्य बैठा हो तो उस पुरुष की स्त्री मर जाती है। यदि शनिसे अष्टम स्थान में बलवान् पापग्रह बैठे हों तो उस पुरुष की ही मृत्यु शीघ्र हो जाती है ॥६॥

इति भावकुतूहले उत्साहवर्द्धिनी भाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

—o—

अथ तृतीयोऽध्यायः।

अथ जातकचिन्हज्ञानम्—

जनुषि लग्नगतो वसुधासुतो
मदनगोऽपि गुरुः कविरेव वा।
भवति तस्य शिरो व्रणमण्डितं
निगदितं यवनेन महात्मना ॥१॥

अन्वयः—यस्य जनुषि लग्नगतः वसुधासुतः मदनगोऽपि गुरुः कविः एव वा तस्य शिरः व्रणलांक्षितं यवनेन महात्मना निगदितम् ॥१॥

भा०—महात्मा यवनाचार्य का मत है कि जिस जातक के जन्मलग्न में मंगल, सप्तम स्थान में बृहस्पति या शुक्र बैठे हों तो उस बालक के सिर में घाव का निशान रहता है ॥१॥

भवति लग्नगते वसुधासुते भृगु-
सुतेऽपि विधाविह जन्मिनाम्।
शिरसि चिन्हमुदाहृतमादिभिर्मुनि-
वरैर्द्विसाब्दसमासतः ॥२॥

अन्वयः—यदा जन्मिनां लग्नगते वसुधासुते भृगुसुते विधौ अपि इह भवति तदा द्विरसाब्दसमासतः शिरसि चिन्हं मुनिवरैः उदाहृतम् ॥२॥

भा०—जिस बालक के जन्मलग्न में मंगल, शुक्र अथवा चन्द्रमा बैठे हों तो उसके माथे में दूसरे या छठें वर्ष में किसी प्रकार का चिन्ह हो जाता है ॥२॥

भार्गवे जनुरंगस्थे चाष्टमे सिंहिकासुते।
मस्तके वामकर्णे वा चिन्हदर्शनमादिशेत् ॥३॥

अन्वयः—जनुरङ्गस्थे भार्गवे च अष्टमे सिंहिकासुते मस्तके वामकर्णे वा चिन्हदर्शनं आदिशेत् ॥३॥

भा०—जिसके जन्मलग्न में शुक्र और अष्टम भवन में राहु बैठा हो तो उसके मस्तक तथा वायें कान में चिन्ह हैं, ऐसा कहना चाहिए ॥३॥

मदनसदनमध्ये सिंहिकानन्दने वा
सुरपतिगुरुणा चेदङ्गराशौ युते नुः।

प्रकथितमिह चिन्हं चाष्टमे पापखेटे-
कविरपि गुरुलग्ने वामबाहौ मुनीन्द्रैः ॥४॥

अन्वयः—यदा मननसदनमध्ये सिंहिकानन्दने, वा सुरपतिगुरुणा युते चेत् अङ्गराशौ च अष्टमे पापखेटे कविरपि गुरुलग्ने युते तदा नुः वामबाहौ चिन्हं मुनीन्द्रैः प्रकथितम् ॥ ४ ॥

भा०—जिस बालक के सप्तम भवन में राहु, जन्मकाल में वृहस्पति, अष्टम भवन में पापग्रह युक्त शुक्र और लग्न में वृहस्पति बैठा हो तो मुनियों का कहना है कि उस बालक की बायीं भुजा में कोई चिन्ह रहता है ॥४॥

लाभारिसहजे भौमे व्यये वा शुक्रसंयुते ।
वामपार्श्वे गतं चिन्हं विज्ञेयं व्रणजं बुधैः ॥५॥

अन्वयः—लाभारिसहजे व्यये वा भौमे शुक्रसंयुते वामपार्श्वे व्रणजं चिन्हं गतं बुधैः विज्ञेयम् ॥५॥

भा०—जिस मनुष्य के ग्यारहवें, छठें या तीसरे घर में मङ्गल हो और बारहवें घर में शुक्र के साथ साथ मंगल बैठा हो तो पण्डितों को चाहिये कि उस मनुष्य के बायें बगल में घाव का चिन्ह समझें ॥५॥

लग्ने क्षितिसुते मन्दे शुक्रदृष्टे त्रिकोणभे ।
लिङ्गे गुदसमीपे वा तिलकं सन्दिशेद् बुधः ॥६॥

अन्वयः—लग्ने क्षितिसुते, त्रिकोणभे मन्दे शुक्रदृष्टे, लिङ्गे गुदसमीपे वा तिलकं बुधः संदिशेत् ॥ ६ ॥

भा०—जिस पुरुष के जन्मलग्न में मंगल और शुक्र से दीखता हुआ शनि त्रिकोण अर्थात् नवें या पाँचवें घर में बैठा हो तो उस पुरुष के लिंग अथवा गुदा में तिल है, ऐसा कहना चाहिए ॥६॥

सुतालये भाग्यनिकेतने वा कविर्यदा चाष्टमगौ ज्ञजीवौ ।
शनौ चतुर्थे तनुभावगे वा तदा स चिन्हं जठरं नरस्य ॥७॥

अन्वयः—यदा सुतालये भाग्यनिकेतने कविः, च अष्टमगौ ज्ञजीवौ, चतुर्थे तनुभावगे वा शनौ, तदा नरस्य जठरं सचिन्हं भवति ॥ ७ ॥

भा०—जिस पुरुष के पाँचवें, अथवा नवें घर में शुक्र और आठवें घर में

बुध तथा बृहस्पति, चौथे घर में अथवा लग्न में शनि बैठा हो तो उस पुरुष के पेट में चिन्ह है, ऐसा कहना चाहिए ॥७॥

धने कवावष्टम लग्नगे वा दिवाकरे मन्दकुजौ तृतीये।
कटिप्रदेशे प्रवदेन्नराणां चिन्हं विशेषादिह जातकज्ञः ॥८॥

अन्वयः—धने कवौ, अष्टमलग्नगे वा दिवाकरे, तृतीये मन्दकुजौ, नराणां कटि प्रदेशे विशेषात् चिन्हं जातकज्ञः प्रवदेत् ॥ ८ ॥

भा०—जिस पुरुष के द्वितीय शुक्र, अष्टम घर तथा लग्न में सूर्य, तीसरे घर में शनि तथा मंगल बैठा हो तो उस पुरुष की कमर में चिन्ह है ऐसा कहना चाहिए ॥ ८ ॥

पातालस्थौ राहुशुक्रौ लग्ने मन्दः कुजोऽपि वा।
पादमूलेऽथवा पादे वामे चिन्हं विनिर्द्दिशेत् ॥९॥

अन्वयः—पातालस्थौ राहुशुक्रौ, लग्ने मन्दः कुजोऽपि वा पादमूले अथवा वामे पादे चिन्हं विनिर्दिशेत् ॥ ९ ॥

भा०—जिस मनुष्य के चतुर्थ स्थान में राहु और शुक्र, लग्न में शनि वा मंगल बैठे हों तो उस पुरुष के पाँव के तलवे अथवा बाये पैर मे चिन्ह है ऐसा कहे ॥९॥

व्यये गुरौ विधौ भाग्ये लाभारिसहजे बुधे।
गोलकं गुदमध्यस्थं व्रणं वा प्रवदेद्बुधः ॥१०॥

अन्वयः—व्यये गुरौ, विधौ भाग्ये, लाभारिसहजे बुधे, गुदमध्यस्थं व्रणं गोलकं वा बुधः प्रवदेत् ॥ १० ॥

भा०—जिस मनुष्य के बारहवें घर में बृहस्पति, नवें घर में चन्द्रमा ग्यारवें, छठें वा तीसरे घर में बुध बैठा हो तो उस मनुष्य की गुदा में कोई गोलाकार चिन्ह हो या घाव रहे ॥१०॥

भ्रातृ-मातृनाश योगः।

दिनपतौ नवमे हरिभे यदा सहज-हानिरवश्यमिहाङ्गिनाम्।
धनगते रविजे तनुगे गुरावगुरुगे जननी नहि जीवति ॥११॥

अन्वयः—यदा हरिभे दिनपतौ नवमे तदा अङ्गिनां सहज हानि अवश्यं, यदा धन गते रविजे, तनुगे ऽगुरुगे गुरौ, तदा जननी नहिं जीवति ॥११॥

भा०—जिस मनुष्य के नवें घर में सिंह राशि का सूर्य बैठा हो, तो उसका भाई अवश्य मर जायगा। जिसके दूसरे घर में शनि और निर्बल बृहस्पति जन्म लग्न में बैठा हो तो उस मनुष्य की माता मर जाती है ॥११॥

सहजसुखविचारः

सुरगुरौ धनभावगते यदा
कुजयुते शनिनापि च जन्मिनाम् ।
अगुयुते सहजे सहजासुखं
निगदितं यवनैः प्रथमोदितम् ॥१२॥

अन्वयः—यदा शनिनाकुजयुतेऽपि सुरगुरौ धनभावगते, तथा अगुयुते सहजे, तथा जन्मिनां सहजासुखं यवनै प्रथमोदितं निगदितम् ॥ १२ ॥

भा०—जिस मनुष्य के दूसरे घर में मगल और शनि से युक्त बृहस्पति बैठा हो और तीसरे घर में राहु बैठा हो तो उस मनुष्य को भाई का सुख नहीं होता ऐसा यवनाचार्य कह चुके हैं ॥१२॥

अरिनिकेतनगेऽवनिनन्दने
भवति राहुयुते निधने शनौ ।
निगदितं सहजो जनिमात्रतो
यमपुरं व्रजतीति पुरातनैः ॥१३॥

अन्वयः—यदा अरिनिकेतनगे अवनिनन्दने, तथा राहुयुतेशनौ निधने भवति तदा सहजः जनिमात्रतः यमपुरं व्रजतीतिपुरातनैः निगदितम्॥१३।

भा०—जिस मनुष्य के छठें भाव में मंगल और अष्टम घर में राहु युक्त शनि बैठा हो तो उसका भाई जन्म लेते ही मर जाता है, ऐसा पुरातन आचार्यों ने कह रखा है ॥१३॥

इति भावकुतूहले उत्साहवर्द्धिनी भाषाटीकायां तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

अथारिष्टाऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथारिष्टविचारः—

तुहिनकिरणहोरिका च सन्ध्या
भचरमगाः खलखेचरा जनौ चेत् ।

मृतिरथ रजनीशपापखेटै-
रखिलचतुष्टयगैर्विनाशमेति ॥१॥

अन्वयः—चेत् जनौ तुहिनकिरणहोरिका च सन्ध्या भचरमगाः खलखेचराःसद्यामृतिः अथ रजनीशपापखेटैः अखिलचतुष्टयगैः तदा-बालः विनाशं एति ॥ १ ॥

भा०--पण्डितों को चाहिये कि जन्म से पाँच या १२ वर्ष तक बालकों की आयु का विचार नहीं करें, (यथा आपञ्चाब्दं तु जन्तुनामायुदाय न चिन्तयेत्) इसके अन्दर बालकों को अनेक प्रकार (पुतनाकृत, यमकृत, पूर्व जन्मार्जित स्व पापकृत, मातृ-पितृ पापकृत्, ग्रहकृत इत्यादि) अरिष्ट हो जाते हैं, अतः माता पिता को चाहिये कि पाँच वर्ष तक भौम प्रदोष व्रत, शिवार्चन, चिकित्सा, अन्न वस्त्र, तुला दानादि, वेदोक्त विधि से करें। अब अरिष्ट ज्ञान कहते हैं।

जिस मनुष्य के जन्म समय में चन्द्रमा की होरा हो, अथवा संध्या का समय हो तथा राशि के अन्त्यनवांश में चार ग्रह बैठे हों तो वह बालक जीवित नहीं रहता। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा पाप ग्रहों के साथ केन्द्र में बैठा हो अथवा ये (१, ४, ७, १०) केन्द्र के स्थानों में पापग्रह बैठे हों तो भी उस बालक की मृत्यु हो जाती है ॥१॥

अशुभेषु शुभेषु चक्रपूर्वापरभागेषु गतेषु कीटलग्ने।
विर्तिं समुपैति बालकोऽयं खलखेटैरपिकामिनीतनुस्थैः ॥२॥

अन्वयः—यदा कीटलग्ने चक्रपूर्वापरभागेषु अशुभेषु शुभेषु गतेषु (अथवा) कामिनीतनुस्थैः खलखेटैः अपि तदा अयं बालकः विर्तिं समुपैति ॥ २ ॥

भा०—जिस जातक की जन्मकुण्डली के पूर्व भाग अर्थात् लग्न से लेकर छठें घर तक सब शुभग्रह या सब पापग्रह बैठे हों और कर्क तथा वृश्चिक लग्न हो तो उस बालक की मृत्यु हो जाती है, इसी तरह सप्तम घर से लेकर बारहों घर तक शुभग्रह या पापग्रह बैठें हों और कर्क तथा वृश्चिक लग्न हो तो भी बालक की मृत्यु हो जाती है। इसके सिवाय यदि लग्न में तथा सप्तम घर में ही सब पापग्रह बैठे हों तो भी वह बालक मर जाता है ॥ २ ॥

खलखगसहितो निशाकरोऽयं
तनुमृतिमारगतो हि जन्मकाले।

मृतिपदमुपयाति देवबालोऽपि च
सकलैरवलोकितो न सौम्यैः ॥ ३ ॥

अन्वयः—जन्मकाले खलखगसहितः निशाकरः तनुमृतिमारगतः । न सकलै सौम्यै अविलोकित (तदा) देवबालोऽपि मृतिपदमुपयाति ॥३॥

भा०—जिस बालक की जन्म कुण्डली के जन्मलग्न, अष्टम तथा सप्तम घर में पापग्रहों सहित चंद्रमा बैठा हो और शुभ ग्रह न देखते हों तो वह बालक चाहे देवता का ही पुत्र क्यों न हो, फिर भी मर जाता है ॥ ३ ॥

अशुभाङ्गोदयतौ शुभैर-
वलोकितो न खलु युक्तविधुः ।
मृतिरन्त्यगे कृशविधौ कुगजाग-
भगैः खलैरपि विकेन्द्रशुभैः ॥ ४ ॥

अन्वयः—यदा अशुभौ अगोदयगतौ शुभैः अवलोकित न खलु-युक्तविधुः अथवा कृशविधौ अन्त्यगे, कुगजागभगै खलैरपि विकेन्द्र-शुभैः तदा मृति स्यात् ॥ ४ ॥

भा०—जिस बालक की जन्मकुण्डली में दो पापग्रह सप्तम घर या लग्न में बैठे हों, उन दोनों को कोई शुभ ग्रह न देखता हो और न चंद्रमा पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो न उसके साथ ही कोई शुभग्रह बैठा हो तो वह बालक मर जाता है अथवा जिसके लग्न से बारहवें घर में क्षीण चंद्रमा बैठा हो और पाप ग्रह लग्न में तथा आठवें घर में स्थिर राशि पर बैठे हों और केंद्र (१, ४, ७, १०) में कोई शुभग्रह न हो उस बालक की मृत्यु हो जाती है ॥ ४ ॥

शीतांशावरिविरतिस्थिते विनाशः
पापैः स्यात्सपदि युतेक्षितेपि जन्तोः ।
अष्टाब्दैः शुभखचरैश्च मिश्रखेटै-
र्वेदाब्दैरपि मुनिभिर्निरुक्तमेतत् ॥ ५ ॥

अन्वय—पापैः युतेक्षितेऽपि शीतांशौ अरिविरतिस्थिते जन्तोः सपदिविनाशः, शुभखचरैः युतेक्षिते अष्टाब्दैः मिश्रखेटैरपि (युतेक्षिते) वेदाब्दैः जन्तोः विनाश स्यात् एतत् मुनिभिः निरुक्तम् ॥५॥

भा०—जिस जातक की कुण्डली में पापग्रहों से दृश्यमान तथा युक्त चंद्रमा

छठें या आठवें घर में बैठा हो तो जन्म लेते ही वह बालक मर जाता है और यदि चन्द्रमा शुभग्रहों से देखा जाता हुआ या उनके साथ-साथ छठें या आठवें घर में बैठा हो तो उस बालक की आठवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है और यदि अशुभ तथा शुम दोनों प्रकार के ग्रहों से युक्त तथा उनसे दृश्यमान होकर चंद्रमा छठें या आठवें घर में बैठा हो तो चौथे ही वर्ष उस बालक की मृत्यु हो जाती है, ऐसा प्राचीन मुनियों का कथन है ॥ ५ ॥

अरिविरतिगते शुभे च दृष्टे
बलसहितेन खलेन मासमायुः ।
मदनसदनगेऽपि लग्ननाथे
खलविजिते ध्रुवमस्य मासमायुः ॥ ६ ॥

अन्वयः - अरिविरतिगते शुभे, बलसहितेन खलेन दृष्टे मासमायु, खलविजिते लग्ननाथे मदनसदनगेऽपि ध्रुवं अस्य मासमायु ॥ ६ ॥

भा०–जिसके शुभग्रह छठें या आठवें घर में बैठे हों और पापग्रह बली होकर उसे देख रहा हो तो उस बालक की आयु केवल एक महीने की होती है। अथवा जिसका लग्नपति किसी पापग्रह से विजित होकर सप्तम स्थान में बैठा हो तो भी उस बालक की केवल एक मास की आयु होती है, यह बात निश्चित है ॥६॥

कृशशशिनि तनौ खलोऽष्टकेन्द्रे
मृतिरथ शीतरुचौ खलान्तराले ।
मुनिहिबुकलयस्थितेऽपि लग्ने
मुनिलयगैश्च सहाम्बया खलैः स्यात् ॥ ७ ॥

अन्वयः - कृशशशिनि तनौ, खल अष्टकेन्द्रे मृति, अथ खलान्तराले शीतरुचौ मुनिहिबकलयस्थिते अपि लग्ने मुनि लयगैः खलैः अम्बयासह मृति स्यात् ॥ ७ ॥

भा०—जिसके लग्न में क्षीण चन्द्रमा बैठा हो और अष्टम स्थान तथा केन्द्र १; ४, ७, १०) में कोई पापग्रह हो तो उस बालक की मृत्यु हो जाती है और यदि चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ सातवें, चौथे या आठवें घर में बैठे हों और लग्न सप्तम तथा अष्ठम स्थान में पापग्रह बैठे हों तो माता के साथ-साथ उस बालक की मृत्यु हो जाती है ॥ ७ ॥

भविरतिगतशोभनैरदृष्टे शशि-
नि नवेपुगतैः खलैर्मृतिः स्यात्.
तनुगतहिमगौ खले नगस्थे मृति-
रुदिता मुनिभिः शिशोरवश्यम् ॥ ८ ॥

अन्वयः—भविरतिगत शशिनि, शोभनैः अदृष्टे नवेषु गतैः खलैः मृतिः स्यात, तनुगतहिमगौ खले नगस्थे शिशोः अवश्यं मृतिः (इति) मुनिभिः उदिताः ॥८॥

भा०—जिसके लग्न तथा अष्टम स्थान में चन्द्रमा बैठा हो, कोई शुभग्रह उसे न देखता हो और नवें तथा पाँचवें स्थान में पापग्रह बैठे हों तो बालक की मृत्यु हो जाती है। अथवा लग्न में चन्द्रमा और सप्तम घर में पापग्रह बैठे हों तो बालक की अवश्य मृत्यु हो जाती है ऐसा मुनियों ने कहा है ॥ ८ ॥

असुरमुखगते खलेन युक्ते
तनुगविधौ सममम्बया लयारे।
मृतिरथ तनुगे रवौ सशस्त्रं
ग्रहणगते खलसंयुतेऽपि मृत्युः ॥९॥

अन्वयः—असुरमुखगते खलेन युक्ते विधौ तनुगे अम्बया समं मृतिः, लयारे तनुगे रवौ सशस्त्रं मृतिः, ग्रहणगते खलसंयुते विधौ अपिमृतिः (स्यात्) ॥ ९ ॥

भा०—जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा पापग्रह तथा राहु के साथ लग्न में बैठा हो तो माता के साथ-साथ उस बालक की मृत्यु हो जाती है। और यदि पूर्वोक्त योग होता हुआ सूर्य, मङ्गल के साथ अष्टम या लग्न मे बैठा हो तो उस बालक की मृत्यु किसी शस्त्र से होती है। यदि ग्रहण के योग से युक्त होकर सूर्य तथा चन्द्रमा पापग्रह के साथ लग्न में बैठा हो तो भी उस बालक की मृत्यु हो जाती है ॥९॥

सबलशुभखगैर्युतेन दृष्टे तुहिन-
करे दिनपेऽथवा तनौ चेत्।
निधननवसुताश्रिताः खलाः
स्यर्निधनमिहाशु वदन्ति वै मुनीन्द्राः ॥१०॥

अन्वयः—चेत् सबलशुभखगैः न युते (न) दृष्टे तुहिनकरे अथवा दिनपे तनौ, निधननवसुताश्रिताः खला स्युः (तदा) वै इह आशु निधनं इति मुनीन्द्राः वदन्ति ॥१०॥

भा०—जिसे कोई बलवान् शुभग्रह न देखता हो और न उसके साथ ही बैठा हो ऐसा सूर्य तथा चन्द्रमा लग्न में बैठा हो और आठवें पाँचवें तथा नवें घर में पापग्रह बैठे हो तो उस बालक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है ऐसा श्रेष्ठ मुनियों का कथन है ॥१०॥

शनिरविविधुभूमिजैः क्रमेण
व्ययनवलग्नलयाश्रितैर्मृतिः स्यात् ।
सबलसुरपुरोहितेन दृष्टैर्नहिमरणं
गदितं तदा मुनीन्द्रैः ॥११॥

अन्वयः—शनि रवि विधु भूमिजैः क्रमेण व्यय नव लग्न लयाश्रितैः तदा (मृतिः स्यात् (यदि) सबलसुरपुरोहितेन दृष्टैः तदा नहि मरणं मुनीन्द्रैः गदितम् ॥११॥

भा०—जिसकी कुण्डली में शनि, रवि, चन्द्रमा और मंगल ये क्रमशः बारहवें, नवें लग्न तथा अष्टम में बैठे हों तो वह बालक मर जाता है। और यदि पूर्वोक्त ग्रह उपर्युक्तस्थान में बैठे हों किन्तु उनको बलवान् शुभग्रह देखते हों तो वह बालक अत्यन्त कष्ट पाकर अच्छा हो जाता है ऐसा मुनियों का कहना है ॥११॥

लयमारलग्ननवधीव्ययगः
खलखेचरेण सहितः सितगुः ।
अवलोकितो नहि युतश्च-
शुभैर्नियतं भवेत्स मरणायतदा ॥ १२ ॥

अन्वयः—लय मार लग्न नव धी व्ययगः सितगुः खलखेचरेण सहितः शुभैः नहि अवलोकितः युतश्च तदा स (बालः) मरणाय भवेत् ॥१२॥

भा०—जिसके अष्टम, सप्तम, लग्न, नवम, पञ्चम और द्वादश इनमें से किसी भी घर में पापग्रह युक्त चन्द्रमा बैठा हो और उसे कोई भी शुभग्रह न तो देखता हो न उसके साथ ही बैठा हो तो अवश्य उस बालक की मृत्यु हो जाती है ॥१२॥

बालयोगकारकखगाश्रित भे
जनिभे तनावपियदास्ति विधुः ।
बलसंयुतः खलजदृक्सहितः
शरदन्त एव मृतिदः स तदा ॥ १३ ॥

अन्वयः--बालयोगकारकखगाश्रितभे जनिभेतनौ अपि यदा विधुः अस्ति (तथा) बल संयुतःखलजदृक् सहितः तदा स शरदन्त एव मृतिदः ॥१३॥

भा०--जिन बलवान अरिष्ट कारक योगों का समय निश्चित नहीं किया है वह अरिष्ट कारक ग्रह लग्न से जिस राशि पर बैठा हो उस राशि या लग्न पर गोचर से जब बलवान पापग्रह दृष्ट युक्त बलवान् चन्द्रमा आता है तो उस बालक की मृत्यु करता है, यह योग एक वर्ष पर्यन्त ही है ॥१३॥

इति भावकुतूहले उत्साहवर्द्धिनी भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

अरिष्टभंगयोगाः--

भवतीन्दुरथो शुभान्तराले
परिपूर्णः किरणेन जन्मकाले ।
विनिहन्ति तदाशु दोषसंघा
निभसङ्घानिव केसरी बलिष्ठः ॥ १ ॥

अन्वयः--अथ (यदा) जन्मकाल इन्दुः परिपूर्णः किरणेन शुभान्तराले भवति (तदा) दोषसङ्घानाशु विनिहन्ति, इभसङ्घान् बलिष्ठः ॥१॥

भा०—जिस मनुष्य के जन्मकुण्डली में चन्द्रमा बलवान् और पूर्णिमा आसन्न काल का होकर शुभ ग्रहों के साथ-साथ बैठा हो तो यह समस्त दोष समूह को उसी तरह नष्ट कर देता है जैसे सिंह, हाथियों के झुण्ड को नष्ट कर डालता है ॥१॥

यदि जनुषि निशाकरोऽरिभावे
गुरुकविचन्द्रजवर्गगो विशेषात् ।
शमयति बहुकष्टजालमद्धा
मुरहरनाम यथाऽघसङ्घतापम् ॥ २ ॥

अन्वयः—यदि जनुषि निशाकरः गुरुकविचन्द्रजवर्गगः अरिभावे (तदा) विशेषाद् बहु कष्टजालमद्धा शमयति यथा अघसंघतापं मुरहर नाम (स्मरणं) शमयति ॥२॥

भा०—जिसकी जन्मकुण्डली में चन्द्रमा वृहस्पति, शुक्र तथा बुध के षड्वर्ग का होकर छठे घर में बैठा हो तो वह सब अरिष्टों को उसी तरह नष्ट कर देता है जैसे मुरारि का नाम कीर्तन करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं ॥२॥

यदि सकलनभोगवीक्ष्यमाणो
लसिततनुर्ज्जनुरिन्दुरेव सद्यः ।
दिविचरजनितं निहन्ति दोषं
खगपतिराशु यथा भुजङ्गजालम् ॥३॥

अन्वयः—यदि (जन्मकाले) सकलनभोगवीक्ष्यमाणः लसिततनुर्जनुः इन्दुः एव दिविचरजनितं दोषः सद्यः निहन्ति यथा भुजङ्गजालं खगपतिः आशु (निहन्ति) ॥३॥

भा०—जिसकी जन्मकुण्डली में सभी शुभग्रहों से दृश्य होता हुआ चन्द्रमा जन्मलग्न में बैठा हो वह सब अरिष्टों को नष्ट कर डालता है जैसे गरुड़ सर्पों के यूथ को नष्ट कर डालता है ॥३॥

भवति यदि तनोः क्षपाकरोऽयं
मृति भवने शुभखेटवर्गगश्चेत् ।
गदविकलतनु पितेव बालं किल
परितः परिरक्षति प्रसन्नः ॥ ४ ॥

अन्वयः—यदि चेत् शुभखेटवर्गगः क्षपाकरः तनोः मृतिभवने भवति (तदा) अयं (योगः) बाल किल परितः प्रसन्नः परिरक्षति (यथा) गद विकलतनु बालं (तत्) पिता परितः प्रसन्न इव परिरक्षति ॥४॥

भा०--यदि चन्द्रमा शुभग्रह के षड्वर्ग का होकर लग्न से अष्टम घर में बैठा हो तो वह सभी अरिष्टों को उसी तरह नष्ट कर डालता है जैसे पिता प्रसन्न चित्त से अपने पुत्र की रक्षा करता है ॥ ४ ॥

शुभभवनगतस्तदीयभागे
जनिसमये कविनावलोकितश्चेत् ।
शमयति सकलं शशी त्वरिष्टं
जलमिव पावकमङ्गिनामतीव ॥ ५॥

अन्वयः—(यदा) जनिसमये शशी शुभभगवनगतः (वा) तदीय भागे कविना अवलोकितः चेत् (तदा) अङ्गिनामतीव सकलं अरिष्टं शमयति पावकं जलमिव ॥ ५ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में चन्द्रमा शुक्र के षड्वर्ग का होकर शुभ ग्रह की राशि में शुक्र से दीखता हुआ कहीं बैठा हो तो वह सभी अरिष्टों को नष्ट कर देता है जैसे कि जल अग्नि को बुझा देता है ॥ ५ ॥

बलवानपि केन्द्रगो विशेषादिह
सौम्यो यदि लाभगो दिनेशः ।
शमयत्यखिलामरिष्टमालामपि
गाङ्गं हि जलं यथाघजालम् ॥ ६॥

अन्वयः—यदि बलवान् सौम्यः (बुधः) अपि (कश्चिद् शुभग्रहः) केन्द्रगः (तथा) दिनेशः लाभः (भवन) गः तदा विशेषात् इह अखिलां अरिष्ठमलिां शमयाति, यथा अघजालं गङ्गाजलं हि (शमयति) ॥ ६ ॥

भा०--यदि सौम्य (शुभग्रह) बलवान् होकर केन्द्र (१, ४, ७, १०) स्थान में बैठे हों और सूर्य ग्यारहवें घर में बैठा हो तो वह समस्त अरिष्ट को नष्ट कर देता है, जैसे गङ्गाजल सब पापों को नष्ट कर डालता है ॥ ६ ॥

भवति हि जनुरङ्गपो बलिष्ठः
सकलशुभैरवलोकितो न पापैः ।
इह मृतिमपहाय दीर्घमयुर्वित-
रति वित्तसमुन्नतिं विशेषात् ॥ ७॥

अन्वयः—जनुः अङ्गपः बलिष्टः भवति सकल शुभैरवलोकितः, न पापैः (अवलोकितो युतश्च) इह मृति अपहाय हि दीर्घमायुः विशेषात् वित्त समुन्नतिं वितरतिं ॥ ७ ॥

भा०—जिस मनुष्य की कुण्डली में लग्नेश बलवान् (स्वगृह, स्वमूल त्रिकोण, उच्चादि स्थान गत) हो, उसे शुभ ग्रह देख रहे हों, और कोई भी पापग्रह न देखता हो तो मनुष्य दीर्घायु और धनाढ्य होता है ॥ ७ ॥

सुरपति गुरुरङ्गधामगामी
निजपदगोपि च तुङ्गतामुपेतः ।
बहुतरखगजं निहन्ति दोषं
हरिरिभयूथमुपागतं हि यद्वत् ॥ ८॥

अन्वयः—यत् निजपदगः अपि च तुङ्गतां उपेतः सुरपतिगुरुः अङ्गधामगामी, बहुतर खगजं दोषं (निहन्ति) (यथा) हरिः इभयूथं उपागतं निहन्ति ॥ ८ ॥

भा०—यदि बृहस्पति स्वक्षेत्री अथवा उच्च का होकर लग्न में बैठा हो तो वह बहुत से ग्रहों के अरिष्टों को दूर कर देता है जैसे कि सिंह अपने सामने आये हुए हाथियों के झुण्ड को मार भगाता है ॥ ८ ॥

गुरुसितबुधवर्गगा हि पापाः
सकलशुभैरवलोकिता यदि स्युः ।
खगकृतमपिवारयन्ति रिष्टं
तृणराशीनिव वन्हिविन्दुरेकः ॥ ६ ॥

अन्वयः—यदि गुरुसित बुधवर्गगाः हि पापाः (तथा) सकलशुभैः अवलोकिताः स्युः (तदा) खगकृतं अरिष्टमपि वारयन्ति (यथा) वह्नि-विन्दुरेकस्तृणराशीनिव ॥ ९ ॥

भा०—यदि बृहस्पति, शुक्र तथा बुध के षड्वर्ग में पापग्रह बैठे हों और सभी शुभग्रह उसे देखते हों तो वे अरिष्टों को उसी तरह नष्ट कर देते हैं कि जैसे आग की एक चिनगारी तृण राशि को भस्म कर डालती है ॥ ६ ॥

सहजरिपुगतोऽथलाभगो वा
सकलशुभैरवलोकितो युतो वा ।

अगुरिह विनिहन्ति रिष्टजालं
नगजाधीश इवाधितापराशिम् ॥ १० ॥

अन्वयः—सकलशुभैः अवलोकितः युतः वा अगुः 'राहुः' सहज रिपु लाभगः 'तदा' रिष्टजालं विनिहन्ति नगजाधीश 'स्मरणात्' अधितापराशिमिव ॥ १० ॥

भा०—यदि शुभ ग्रहों से युक्त वा दृष्ट राहुतीसरे, छठें अथवा ग्यारहवें घर में बैठा हो तो वह बहुतेरे अरिष्टों को उसी तरह नष्ट कर डालता है कि जैसे शिवजी का नाम मानसिक सन्ताप को दूर कर देता है ॥१०॥

अधिकबलयुता जनुर्नभोगा
यदि सकला नरराशिगा भवन्ति ।
हितभवननिजोच्चगेहगा वा
बहुतरमाशु लयं प्रयाति रिष्टम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—जनुः यदि सकला अधिकबलयुता नभोगाः नरराशिगाः, हित भवन निजोच्च गेहगा वा भवन्ति 'तदा' बहुतरं अरिष्टं आशु लयं प्रयाति ॥ ११ ॥

भा०—जन्म समय में यदि सभी शुभ ग्रह पुरुष (विषम) राशि में बलवान् होकर बैठे हों या मित्र गृह अथवा उच्च स्थान में बैठे हों तो शीघ्र बहुत से अरिष्टों को नष्ट कर डालते हैं ॥११॥

इति श्री भावकुतूहले—उत्साहवर्द्धिनी भाषाटीकायां पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

❀❀❀

अथ षष्ठोऽध्यायः

अथ सन्तान भाव विचारः

नन्दनाधिपतिना युतेक्षितं नन्दनं शुभनभोगसंयुतम् ।
नन्दनागमनमेव सत्वरं व्यत्ययेन नहि नन्दनागमः ॥ १ ॥

अन्वयः—नन्दनाधिपतिनायुतेक्षितं नन्दनं 'तथा' शुभनभोग संयुतम्, 'तदा' नंदनागमनं सत्वरमेव व्यत्ययेन नन्दनागमः नहि 'भवति' ॥१॥

भा०—जिस पुरुष की जन्मकुण्डली में पञ्चमेश पञ्चम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो या पञ्चम भाव में बैठा हो अथवा पञ्चम भाव में शुभग्रह बैठे हों तो वे उस पुरुष को शीघ्र ही पुत्र प्राप्त कराते हैं यदि ऐसा न बैठकर उलटा (पञ्चमभाव पाप ग्रह दृष्ट युक्त अथवा पञ्चमेश पाप दृष्ट युक्त) हो तो इसके विपरीत फल अर्थात् पुत्र नहीं होता ॥१॥

अङ्गाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुतः स्यात् ।
सुखे यदा लग्नपतौ नरस्य कन्या सुतो वेति सुतश्च कन्या ॥२॥

अन्वयः–अङ्गाधिपे लग्नगते तृतीये धनालये वा प्रथमं सुतः स्यात्, यदा लग्नपतौ सुखे 'तदा' नरस्य कन्या सुतः वा इति सुतश्च कन्या ॥२॥

भा०—यदि लग्नपति लग्न, तृतीय भाव, अथवा दूसरे भाव में बैठा हो तो उसको पहले पुत्र होता है। और यदि लग्नेश चौथे भाव में बैठा हो तो उस पुरुष को पहले कन्या होती है बाद में पुत्र होता है, कभी-कभी कन्या और पुत्र दोनों एक साथ भी हो जाते हैं ॥ २ ॥

- सन्तान संख्या विचारः—

यावन्मितानामिह पुत्रभावे
नरग्रहाणामिह दृष्टयः स्युः ।
तावन्त एवास्य भवन्ति पुत्राः
कन्यामितिः स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या ॥ ३ ॥

अन्वयः–पुत्रभावे यावन्मितानां नरग्रहाणां इह दृष्टयः स्यु तावन्तः एव अस्य पुत्राः भवन्ति, स्त्रीग्रहदृष्टितुल्या कन्या मितिः (स्यात्) ॥ ३ ॥

भा०—पञ्चम भाव को जितने पुरुष ग्रह देख रहे हो उतने ही पुत्र उस पुरुष को होते हैं और जितने स्त्री ग्रह पञ्चम भाव को देखते हैं उतनी ही कन्यायें उस पुरुष को होती हैं ॥ ३ ॥

पुत्रहानियोगः ।

सहजभावपतिः सहजे यदा
तनुगतो धनगो व्ययगोऽपिवा ।
सुतगतः सुतहानिकरो नृणां
बुधवरैरुदितो मिहिरादिभिः ॥४॥

अन्वयः--यदा सहजभावपतिःसहजे अनुगतो धनगो व्ययगः सुतगतः अपि वा। तदा नृणां सुतहानिकरः, मिहिरादिभिः बुधवरैः उदितः ॥४॥

भा०—जिसके तृतीय भाव का स्वामी तृतीय भाव, लग्न, द्वितीय भाव बारहवां घर या पञ्चम घर में बैठा हो तो वह उस मनुष्य को अवश्य पुत्र हानि करता है ऐसा वराहमिहिर आचार्यों का कहना है ॥ ४ ॥

संतान प्राप्त्यप्राप्ति विचारः

शुक्राङ्गारनिशाकरा द्वितनुगाः सन्तानसौख्यं नृणा-
मादौ संजनयन्ति जन्मसमये चापं विना प्रायशः।
मीने वा धनुषि प्रमाणपटवः सन्तानभावे यदा
सन्तानं न तदामनन्ति विबुधाः पुंसां विशेषादिह ॥ ५ ॥

अन्वयः--जन्मसमये शुक्राङ्गारनिशाकराः चापं विना द्वितनुगाः प्रायशः नृणां आदौ सन्तानसौख्यं संजनयन्तियदा सन्तानभावे मीने वा धनुषि तदा पुंसां विशेषात् इह सन्तानं न (इति) विबुधा आमनन्ति ।५।

भा०--जिसके जन्म समय में धनराशि के सिवाय किसी द्विस्वभाव (३, ६, १२) राशि में शुक्र, मङ्गल तथा चन्द्रमा बैठे हों तो वे उस मनुष्य को पहले सन्तति सुख देते हैं और यदि शुक्र भौम, चन्द्रमा, मीन अथवा धनराशि के होकर पञ्चम भाव में बैठे हों तो उस पुरुष को सन्तान सुख नहीं देते- यदि केवल मीन या धनराशि पञ्चम भाव में हो तो सन्तान सुख बिलम्ब से होता है ॥ ५॥

क्लीवयोगः ।

अर्के कर्कगते हरौ भृगुसुते मन्दे तुलायामजे
चंद्रे यस्य नरस्य जन्मसमये वीर्यच्युतोऽसौ भवेत्।
लग्ने चंद्रयुते गुरौ रविसुते पुत्रेऽपि वीर्यच्युतो
जीवेङ्गे सरवौ मृतावपि कुजे क्लीवर्क्षगे कण्टके ॥ ६ ॥

अन्वयः--यस्य नरस्य जन्मसमये कर्कगते अर्के हरौ भृगुसुते, तुलायां मन्दे, अजे चन्द्रे, असौ वीर्यच्युतः, भवेत्, लग्ने चन्द्रयुते गुरौ, रविसुते पुत्रे अपि वीर्यच्युतः, सरवौ जीवेऽङ्गे, मृतौ अपि कुजे (तथा) क्लीवर्क्षगे कण्टके, (तदपि) वीर्यच्युतः (भवेत्] ॥ ६ ॥

भा०—जिसकी कुण्डली में कर्क राशि में सूर्य, सिंह राशि में शुक्र, तुला में शनि, और मेष में चन्द्रमा बैठे हों तो वह मनुष्य वीर्य रहित अर्थात् नपुंसक होता है। यदि चन्द्रमा बृहस्पति से युक्त लग्न में बैठा हो और शनि पञ्चम भाव में बैठा हो तो भी नपुंसक होता है। यदि सूर्य के साथ साथ बृहस्पति लग्न में, मङ्गल अष्टम भाव में और कोई भी नपुंसक ग्रह की राशि केन्द्र (१, ४, ७, १०) स्थान में हो तो वह पुरुष नपुंसक ही होता है ॥ ६ ॥

कन्याराशिगते लग्ने बुधमन्दावलोकिते ।
शनिक्षेत्रे गते शुक्रे वीर्य्यहीनो नरो भवेत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—(यदा) बुधमन्दावलोकिते लग्ने कन्याराशिगते, (तथा) शनिक्षेत्रगते शुक्रे (तदा), नरः वीर्यहीनः भवेत् ॥ ७ ॥

भा०—जिस पुरुष के जन्मलग्न में कन्या राशि हो उसे बुध तथा शनि देखते हों और मकर या कुम्भ में शुक्र बैठा हो तो वह मनुष्य वीर्य हीन अर्थात् नपुंसक होता है ॥ ७ ॥

पुत्रसुखहानियोगः—

नीचे गुरौ भृगौ वापि समे ज्ञे विषमे रवौ
तदा पुत्रसुखं न स्यादित्युक्तं गणकोत्तमैः ॥ ८ ॥

अन्वयः—(यदा) नीचे गुरौ भृगौ वा अपि समे ज्ञ, विषमे रवौ तदा पुत्रसुखं न स्यात् इत्युक्तं गणकोत्तमैः ॥ ८ ॥

भा०—गुरु अथवा शुक्र नीच स्थान अर्थात् गुरु मकर और शुक्र कन्या राशि में बैठा हो, बुध सम राशि (वृष, कर्क, कन्या इत्यादि) में बैठा हो और सूर्य विषम (मेष, मिथुन, सिंह, तुला इत्यादि) राशि में बैठा हो तो सन्तान सुख नहीं होता ऐसी ज्योतिष शास्त्रज्ञों की सम्मति है ॥ ८ ॥

कर्कटे तु कलानाथे पापयुक्तेक्षिते यदा।
मन्दद्दष्टे दिवानाथे पुत्रः षष्टिमितेऽब्दके ॥ ९ ॥

अन्वयः—यदा पापयुक्तेक्षते कर्कटे कलानाथे, तु मन्ददृष्टे दिवानाथे (तदा) षष्टिमिते अब्दके पुत्रः (भवति) ॥ ९ ॥

भा०—पाप ग्रहों से युक्त और दीखता हुआ चन्द्रमा कर्क राशि गत हो और सूर्य को शनि देखता हो तो साठ वर्ष के बाद पुत्र सुख होता है ॥९॥

त्रिंशद्वर्षात्परं पुत्राप्ति योगः—

पापभे पापसंयुक्ते जन्मलग्ने रवावलौ।
युग्मभे वसुधापुत्रे खगुणाब्दात्परं सुतः॥ १०॥

अन्वयः—जन्मलग्ने पापभे पापसंयुक्ते, रवौ अलौ, वसुधापुत्र युग्मभे, (तदा) खगुणाब्दात् परं सुतः (भवेत्)॥ १०॥

भा०—पाप ग्रहों से युक्त जन्मलग्न में पाप ग्रहों की राशि हो, वृश्चिक राशि में सूर्य बैठा हो तथा मिथुन राशि गत मंगल हो, तो ३० वर्ष के उपरान्त पुत्र सुख होता है॥ १०॥

पुत्राभाव योगः—

अलौ गुरुकवी लग्ने भवेतां चन्द्रजार्कजौ।
न पश्यति सुतं गेहे वर्षकोटिशतैरपि॥ ११॥

अन्वयः—अलौ गुरुकवी चन्द्रार्कजौ लग्ने भवेतां (तदा) कदाचिदपि मानवः गेहे सुतं न पश्यति॥ ११॥

भा०—जिसके जन्म समय में वृश्चिक राशि में गुरु तथा शुक्र बैठे हों और लग्न में बुध, शनि बैठे हों तो उसको पुत्र नहीं होता॥११॥

मन्देन्दुदृष्टो रिपुसंयुतोऽङ्गाधिपो रविश्शत्रुधने विपुत्रः।
मन्दारिगेहे बुधसूर्यचन्द्रैर्दृष्टो विलग्ने खलवीक्षिते वा॥ १२॥

अन्वयः—मन्देदुदृष्टः अङ्गाधिपः रिपुसंयुतः (तथा) रविः शत्रुक्षेत्रे (गतः) विपुत्रः वा बुधसूर्यचन्द्रैः दृष्टः मन्दः अरि गेहे (तथा) विलग्ने खलवीक्षिते (तदपि) विपुत्रः॥ १२॥

भा०—शनि, चन्द्र से दीखता हुआ लग्नेश, अपने शत्रु ग्रह के साथ बैठा हो, और सूर्य छठें तथा दूसरे स्थान में बैठा हो तो उस पुरुष को पुत्र नहीं होता अथवा बुध, सूर्य और चन्द्रमा से दृष्ट शनि शत्रु स्थान में बैठा हो तथा जन्म लग्न को पापग्रह देखते हों तो भी पुत्र नहीं होता॥१२॥

मन्दालयेऽर्के खलदृष्टियुक्ते लग्नेऽपि वा पापखगस्य वर्गे।
अपत्यहानिं कुलदेवकोपात्पुरातनैरङ्गभृतां निरुक्ता॥ १३॥

अन्वयः—खलदृष्टियुक्ते वा मन्दालये अर्के, पापखगस्य वर्गे लग्ने (तदा) कुलदेवकोपात् अपत्य हानिः, (इति) पुरातनैः अङ्गभृतांनिरुक्ता।१३।

भा०—पापग्रहों से दृष्ट वा युक्त सूर्य मकर अथवा कुम्भ राशि में बैठा हो तथा पाप ग्रहों का षड्वर्ग लग्न गत हो तो कुल देवता के क्रोध से सन्तान हानि योग पण्डितों ने कहा है ।। १३ ।।

अपत्यभावे यदि मङ्गलः
स्यादपत्यराशिं विनिहन्ति सद्यः ।
अस्तांशगे पापयुते सुतेशे
तदा न सन्तानसुखं वदन्ति ।। १४ ।।

अन्वयः--यदि अपत्य भावे मङ्गलः स्यात् (तदा) अपत्य राशिं सद्यो विनिहन्ति (यदा) सुतेशे अस्तांशके पापयुते तदा सन्तानसुखं न वदन्ति ।। १४ ।।

भा०--यदि पञ्चम भाव में मंगल बैठा हो तो सन्तान हो-होकर मर जाते हैं, अथवा पञ्चम भावेश अस्त हो या पाप ग्रह से युक्त हो तो भी सन्तान सुख नहीं होता ।।१४।।

गुरोः सुतागारपति सपापो
बलेन हीनो मनुजो विपुत्रः ।
अरावपापे निधने तदीशः
सुतेन हीनो मनुजस्तदानीम् ।। १५ ।।

अन्वय--(यदा) गुरोः सुतागारपतिः स पापः बलेन हीनः (तदा) मनुजः विपुत्रः (अथवा) अरौ अपापे निधने तदीश तदानीं मनुजः सुतेन हीनः ।। १५ ।।

भा०--बृहस्पति से पञ्चम भाव का स्वामी बलहीन होकर पाप ग्रहों के साथ हो तो पुत्र सुख नहीं होता । षष्ठ भाव में पाप ग्रह न हों तथा षष्ठ भावेश अष्टम स्थान गत हो तो भी पुत्र सुख नहीं मिलता ।। १५ ।।

तथैव भानु खलुपञ्चमस्था
जातं च जातं विनिहन्ति बालम् ।
लग्नेश्वरः पापयुतः सुतेशो
व्ययाष्टमे पुत्रसुखेन हीनः ।। १६ ।।

अन्वयः--भानुः खलु पञ्चमस्थो जातं च जातं विनिहन्ति, तथैव लग्नेश्वरः पापयुतः, सुतेशो व्ययाष्टमे पुत्रसुखेन हीनः ।। १६ ।।

भा०--जन्म लग्न से पञ्चम स्थान मे सूर्य बैठा हो तो उत्पन्न हुए बालकों को नाश करता है, लग्नेश पाप ग्रहों से युक्त हो तथा पञ्चम भावेश अष्टम या द्वादश घर में बैठा हो तो भी सन्तान सुख नाश करता है ।।१६।।

यदागुसूर्यारशनैश्चराणां
दोषो तदा जन्मनि मानवानाम् ।
वंशेशकोपेन सुतस्य नाशं
तदा वदन्तीति पुराणविज्ञाः ।। १७ ।।

अन्वयः--अथ यदा मानवानां जन्मनि अगुसूर्यारशनैश्चराणां दोषस्तदा वंशेश कोपेन सुतस्य नाशं पुराणविज्ञाः वदन्ति ।। १७ ।।

भा०--पुराणाचार्यों का कहना है कि मनुष्यों के कुण्डली में यदि राहु, सूर्य, भौम तथा शनैश्चर से सन्तान हानि के योग हों तो वंशेश (कुल देवता) के क्रोध (अनादर) से वंश हानि होती है अर्थात् अपने इष्टदेव के आराधना से सन्तान सुख होगा ।। १७ ।।

बुधशुक्रकृते दोषे सुताप्तिः शिवपूजनात् ।
गुरुचन्द्रकृते दोषे यन्त्रमन्त्रौषधीबलात् ।। १८ ।।

अन्वयः--बुध शुक्र कृते दोषे शिवपूजनात्सुताप्तिः गुरुचन्द्रकृते दोषे यन्त्र मन्त्रौषधी बलात् सुताप्तिः) ।। १८ ।।

भा०--यदि बुधः शुक्र कृत कुयोग से सन्तान बाधा हो तो शिव पूजन (रुद्राभिषेक, पार्थिवार्चन) करने से, बृहस्पति चन्द्र कृत् कुयोग हो तो मंगल-यन्त्र पूजनं, सन्तान गोपाल मन्त्र का जप तथा रज, वीर्य पुष्ट कारक (रसायन) औषधि सेवन करने से सन्तान सुख होता है ।। १८ ।।

राहुणा कन्यकादानं भानुना हरिकीर्तनम् ।
शिखिनः कपिलदानं मन्दाराभ्यां षडङ्गकम् ।।१९ ।।

अन्वयः--राहुणा कन्यकादानं भानुना हरिकीर्त्तनम्, शिखिना कपिला दानं मन्दाराभ्यां षडङ्गकम् ।। १९ ।।

भा०—राहुकृत बाधा हो तो ब्राह्मण को कन्यादान करने से, सूर्यकृत

बाधा हो तो श्री भगवान् का यशगान (श्री हरिवंश कथा श्रवण) करने से केतुकृत बाधा हो तो कपिला गाय दान करने से और शनि मंगलकृत सन्तान बाधा योग हो तो रुद्राष्टाध्यायी वेद मन्त्र पाठ करते हुए श्रीशंकर भगवान् को गायके दुग्ध या पञ्चामृत से स्नान कराने से अवश्य सन्तान सुख होता है ॥१९॥

सर्वदोष विनाशाय सन्तानहरिपूजनम् ।
कुर्य्याद्भौमव्रतं चापि कामदेवव्रतं नरः ॥२०॥

अन्वयः—सर्वदोष विनाशाय सन्तानहरिपूजनम्, भौमव्रतं कामदेवव्रतं चापि नरः कुर्यात् ॥ २० ॥

भा०—अथवा सब दोष शान्ति के लिये सन्तान गोपाल मन्त्र का अनुष्ठान, मंगल व्रत और कामदेव व्रत करे तो सन्तान सुख अवश्य होगा ॥ २० ॥

इति भावकुतूहले—उत्साहवर्द्धिनी भाषाटीकायां पुत्रभावविचाराध्यायः ॥६॥

--०--

अथ सप्तमोऽध्यायः

सार्वभौमराजयोगः—

खेटा यदा पञ्च निजोच्चसंस्थाः
स सार्वभौमः खलु यस्य सूतौ ।
त्रिभिः स्वतुङ्गोपगतैः स राजा
नृपालबालोऽन्यसुतस्तु मंत्री ॥ १ ॥

अन्वयः—सूतौ यदा पञ्च खेटा निजोच्च संस्थाः सखलु सार्वभौमः, त्रिभिः स्वतुङ्गोपगतैः स नृपालबालो राजा, अन्य सुतस्तु मन्त्री (भवति) ॥१॥

भा०—जिस मनुष्य की कुण्डली में पाँच ग्रह अपने उच्च (परमोच्चांश स्थान में बैठे हों तो वे उसको चक्रवर्ती राजा बनाते हैं। जिस राजपुत्र की कुण्डली में तीन ग्रह उच्च (परमोच्चांश) स्थान में बैठे हों तो वे उस बालक को अवश्य राजसिंहासन पर बैठाते हैं, यदि साधारण मनुष्य के कुण्डली में तीन ग्रह उच्च स्थान में बैठे हो तो उसको राज मन्त्री पद अथवा राज्यवत् सुख देते हैं ॥१॥

गुरावुच्चेकेन्द्रे भवति दशमे दानवगुरौ
जनुः काले मुद्रा विलसति समुद्रावधि भृशम् ।
गुरौ कर्के चापे भवति च सचन्द्रे दिनमणौ
बुधे तुङ्गे लग्ने बलवति खगे वा नरपतिः ॥२॥

अन्वयः—(यदा) जनुः काले गुरावुच्चे केन्द्रे (तथा) दशमे दानव गुरौ भवति (तदा) भृशं समुद्रावधि मुद्रा विलसति, (यदि सचन्द्रे गुरौ कर्के चापे, च दिनमणौ वा बुधे तुङ्गे लग्ने, बलवति खगे भवति (तदा) नरपतिः (भवति) ॥२॥

भा०— जिस मनुष्य के जन्म समय में बृहस्पति अपने परमोच्चस्थ होकर केन्द्र (१,४,७,१०) स्थान में बैठा हो और दशम स्थान में शुक्र बैठा हो तो उस पुरुष का समुद्र पर्यन्त राजमुद्रा (आज्ञा) चलती है अर्थात् महाराजा होता है। यदि चन्द्रमा के साथ-साथ बृहस्पति कर्क अथवा धन राशि में बैठे हों और सूर्य अथवा बुध उच्चराशि में होकर लग्न में बैठे हों तथा शेष सब ग्रह बलवान् हों तो भी मनुष्य राजा होता है। ॥ २ ॥

गुरावङ्गे कर्के मदनसुखभावे दिनमणेः
सुते शुक्रे प्रभवति जनेर्यस्य समयः ।
महाम्भोधेर्नीरं गमनसमये तस्य करिणां
चलद्घण्टानादाद्व्रजतिचपलत्वंहिपरितः ॥३॥

अन्वयः—यस्य जनेः समयः कर्के गुरावङ्गे, दिनमणेः सुते मदन सुखभावे (तथा) शुक्रे वक्रे प्रभवति (सति) तस्य करिणां चलद्घण्टा-नादात् महाम्भोधेर्नीरं हि परितः चपलत्वंव्रजति ॥ ३ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में कर्क राशिगत बृहस्पति लग्न में बैठा हो, रविपुत्र (शनि) सातवें अथवा चौथे राशि में बैठा हो और शुक्र वक्रागति को प्राप्त हो तो इस योग में उत्पन्न हुये राजा के दिग्विजयकाल में चलती हुँई सेना के साथ बजता हुआ हाथियों के घण्टा के घोर ध्वनि गर्जन से समुद्र का जल घबड़ाकर चारो तरफ उछलने लगता है ॥ ३ ॥

अजे जीवादित्यौ दशमभवने भूमितनय-
स्तपस्थाने शुक्रो बुधविधुयुतो यस्य जनने ।

गजानामालीभिर्विजयगमने तस्य सहसा
समाक्रान्तापृथ्वी व्रजति चकिता मोहपदवीम् ॥४॥

अन्वयः—यस्य जनने अजे जीवादित्यौ, दशमभवने भूमितनयः, तपस्थाने बुधः विधु युतः शुक्रः (भवति तस्य विजयगमने गजानामालीभिः समाक्रान्ता पृथ्वी सहसा चकिता मोह पदवी व्रजति ॥४॥

भा०—जिसके जन्म समय में मेष राशि में बृहस्पति और सूर्य बैठे हों, दशवें घर में मङ्गल बैठा हो, और नवें घर में बुध अथवा चंद्रमा के साथ-साथ शुक्र बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न हुये राजा अपने शत्रुओं के परास्त करनेकी नियत से जाती हुई हाथियों के झुण्ड की घोर चिघाड़, घोड़ों की हनहनाहट तथा रथ, पैदल चलने वाले सिपाहियों के शब्द गुञ्जार को सुनकर पृथ्वीश (पृथ्वीमात्र के जीव) आश्चर्जित होकर मोहित हो जाते हैं ॥ ४ ॥

कन्याङ्गे सबुधे झषे सुरगुरौ भूपुत्रसूर्यौ बली
मन्दे कर्कगते शरासनगते शुक्रो यदीया जनिः ।
तस्यालं शिरसा वहन्ति वसुधाधीशाः सदा शासन-
मानन्दाढ्यिकचारविन्दकलिकामालामिव प्रायशः ॥५॥

अन्वयः—यदीया जनिः कन्याङ्गेस बुधे, झषे सुरगुरौ, भूपुत्र सूर्यौबली, मन्दे कर्क गते, शरासनगतेशुक्रे (भवति। तस्य शासनमानन्दाढ्यिकचारविन्दकलिकामालामिव प्रायशः सदा वसुधाधीशाः शिरसा वहन्ति-इत्यलम् ॥ ५ ॥

भा०—जिस के जन्म समय में कन्या लग्न, बुध के साथ हो, मीनराशि का बृहस्पति हो, मङ्गल तथा सूर्य बलवान् (अपने २ षड्वर्ग या उच्चस्थान में बैठा, हो, शनि कर्कराशि का हो और धन राशि में शुक्र बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न हुये सम्राट् की आज्ञा राजाओं को इस तरत शिरोधार्य होती है जैसे अति सुगन्धित पुष्पों के कलियों की माला सानन्द मनुष्य धारण कर लेते हैं ॥ ५ ॥

भाग्ये भानुसुतो मृगे धरणिजो जीवज्ञशुक्राः सुते
तिष्ठन्ति प्रवला दिवाकरकरव्यासङ्गमुक्ता यदा
तत्रोद्भूतजनस्य यानसमये प्रोत्तुङ्गराजिव्रज-
व्यस्तन्यस्तपदप्रचाररजसाच्छन्नं नभोमण्डलम् ॥६॥

अन्वयः—यदा भाग्ये भानुसुतो, मृगे धरणिजो जीवज्ञशुक्राः सुते-(तथोक्त ग्रहाः) प्रबलाः दिवाकरकरव्यासङ्गमुक्तास्तिष्ठन्ति, तत्रोद्भूत जनस्य यानसमये प्रोतुङ्गराजिव्रजव्यस्तन्यस्तपद प्रचार रजसाछन्नं नभो मण्डलम् (भवति) ॥ ६ ॥

भा०—जिसके नवें घर में शनि बैठा हो, मकरराशि में मङ्गल बैठा हो और बृहस्पति, बुध तथा शुक्र बलवान् होकर पाँचवें घर में बैठे हों और कोई भी ग्रह अस्त न हो इस राजयोग में उत्पन्न हुये महाराजा की सेना शत्रुओं को|परास्त करने के लिये चलते हुए मदान्धयुक्त (हय दल, गज दल, रथ दल, पैदल) पैर धूलि विक्षेप से आकाश मण्डल अन्धकारमय हो जाता है ॥ ६ ॥

यदि तुलामकराजकुलीरभे
रविमुखाः सकला विलसन्ति चेत्।
इह चतुष्कमहोदधिसंज्ञकः
सुरपतेः समतां तनुते नणाम् ॥ ७ ॥

अन्वयः—यदि तुला मकराजकुलीरभे रविमुखाः सकला विलसन्ति चेत्तदा इह चतुष्क महोदधि संज्ञकः (योगः) नृणां सुरपतेः समतांतनुते ॥७॥

भा०—जिसके जन्म समय में तुला, मकर, मेष और कर्क इन राशियों में सूर्यादि सभी ग्रह बैठे हों तो चतुष्क महोदधि योग होता है यह योग (इस योग में उत्पन्न हुए) मनुष्यों को इन्द्र की तरह सुख देता है ॥ ७ ॥

राज्यस्वामी निजोच्चे भवति तनुधनापत्यपातालकान्ता-
पुण्यानामुच्चराशौ पतय इह यदा वीर्यवन्तो भवन्ति।
राजानो यस्य तस्य प्रबलबलघटादन्तिघंटाधनुर्ज्या-
टङ्कारव्रातभीता जगदुदरगताः कम्पभावं भजन्ति ॥ ८ ॥

अन्वयः—यस्य (जन्मकाले) यदा राज्यस्वामी निजोच्चे भवति (तथा) तनुधनापत्यपातालकान्तापुण्यानां पतयः उच्चराशौ (अथवा) वीर्यवन्तो भवन्ति तदा तस्य प्रबलबलघटादन्तिघण्टाधनुर्ज्याटंकार-व्रातभीताजगदुदरगताः राजानः कम्पभावं भजन्ति ॥ ८ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में दशमेश अपने उच्च स्थान मे बैठा हो और लग्न, धन, पञ्चम, चतुर्थ, सप्तम तथा नवम, इन भावों के स्वामी अपने २ उच्च

स्थान में बैठे हों अथवा मूल त्रिकोणादि षड्वर्ग में बैठे हों तो इस योग में उत्पन्न हुए राजा की सेना में रहनेवाले प्रबल मदांध हाथियों के झुण्ड के घंटा का बुलं शब्द तथा घनघोर युद्ध करनेवाले धनुषधारियों के धनुषटंकोर (ज्या) शब्द सुनकर शत्रु राजागण भयभीत होकर अपने-अपने राजसिंहासन को छोड़ कर पर्वतों की कंदरों में रहते हुए भी मानसिक संताप से कांपते हैं ॥ ८ ॥

येषामर्को निजोच्चे प्रभवति मकरे मङ्गलो वैरिभावे
दैत्येज्यः कर्म्मगामी शनिरपि सहजे जन्ममात्रेण तेषाम् ।
पृथ्वी सद्दानतोयार्णवजनितयशश्चन्द्रकान्त्याज्र्जुना*भा
मत्तोन्मत्त प्रचण्डप्रबलरिपुशिरो मण्डले वज्रपातः ॥ ९ ॥

अन्वयः—येषां (जन्मकाले) अर्को निजोच्चे, मकरे मङ्गलो वैरि भावे, कर्मगामी दैत्येज्यः, (तथा) सहजे शनिरपि प्रभवति, तेषां जन्ममात्रेण पृथ्वी सद्दानतोयार्णवजनितयशश्चन्द्रकान्त्यार्जुनाभा मत्तोन्मत्तप्रचण्डप्रबलरिपुशिरो मण्डले वज्रपातः ॥ ९ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में सूर्य अपने परमोच्चांश में बैठा हो, मकर राशि का होकर मंगल छठें घर में बैठा हो, दसवें घर में शुक्र बैठा हो और तीसरे घर में शनि बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न हुये राजा पृथ्वी, रत्न, भूषण, वाहनादि अनेकानेक दान करने के लिए संकल्प में दिये हुए जल से समुद्र रूप यश चन्द्रमा की देदीप्यमान कांति के समान उज्जवल पृथ्वी मात्र में सुशोभित करता है और राज्यमद से मदांध, प्रचण्ड प्रताप शूरवीर प्रबल बैरी राजाओं के सिर पर अंकुश रूपी शासन करने लगता है ॥ ९ ॥

सम्बन्धो दशमाधिपस्य नवमाधीशेन येषां जनुः
काले पञ्चमभावपेन च बलोपेतस्य तुल्ये न चेत् ।
प्रस्थाने सति लीलया तनुभृतां वश्यारिविश्वम्भरा
गर्जद्धोटकमत्तवारणघटाक्रान्ता समन्ताद्भवेत् ॥१०॥

अन्वयः—येषां जनुः काले बलोपेतस्य दशमाधिस्य नवमाधीशेन (वा) पञ्चमभावपेन तुल्येन चेत्सम्बन्धो भवेत् (तदा) प्रस्थाने सति

टिप्पणी—शुक्लशुभ्रशुचिश्वेतविशदश्येतपाण्डुराः ।
अवदातः सितो गौरोऽवलक्षो धवलोऽर्जुनः—इत्यमरः ॥

लीलया तनुभृतां वश्यारि विश्वम्भरा गर्जद्घोटकमत्तवारणघटाक्रान्ता-समंताद्भवेत् ॥ १० ॥

भा०--ग्रहों का सम्वन्ध चार प्रकार का कहा गया है अर्थात् १ क्षेत्र सम्वन्ध, २ दृष्टि सम्वन्ध, ३ अन्यतर दृष्टि सम्वन्ध, ४ सहावस्थान सम्वन्ध। परस्परस्थान में (सिंह में चन्द्रमा, कर्क में सूर्य) बैठे हुये ग्रह को स्थान संबंध कहते हैं। एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से (मेष में शनि और तुला में भौम) देखता हो तो उसको दृष्टि संबंध कहते हैं। एक दूसरे के घर में बैठा हो और दूसरा उस (एक) को पूर्ण दृष्टि से देखता हो जैसे मीन राशि में बैठा हुआ चन्द्रमा को कन्याराशीस्थ वृहस्पति पूर्ण दृष्टि से देखता हो इसको अन्यतर दृष्टि संबंध कहते हैं। कोई दो ग्रह किसी स्थान में एक साथ बैठे हों उसको सहावस्थान संबंध कहते हैं, जैसे मिथुन में शनि, शुक्र। इस प्रकार जिसके जन्म समय में बलवान् दशमेश; बलवान् नवमेश के साथ अथवा पञ्चमभावेश के साथ संबंध करता हो तो इस योग में उत्पन्न हुये राजा की सेना में दिग्विजयार्थ चलने वाले हाथिओं और घोड़ों के झुण्ड के बुलन्द हुनहुनाहट शब्दों के गूंज से आच्छादित हो कर शत्रु राजाओं की पृथ्वी वशीभूत हो जाती है॥ १०॥

अथ महाराजाधिराजयोगः—

राज्येशो यदि देवतालयपदे पारावतांशे तपः-
स्थानेशो धनगोपि गोपुरलवे लाभाधिपो जन्मिनाम्।
चञ्चत्तुङ्गतुरंगकुञ्जरघटाघण्टाधनुर्ज्यारवैर्वित्रस्ता-
गमनोत्सवे दिगवला भ्रान्तिं भजन्तिक्षणात् ॥११॥

अन्वयः—यदि जन्मिनां राज्येशः पारावतांशे देवतालयपदे, तपस्थानेशो धनगो, अपि लाभाधिपो गोपुरलवे (गतः) [तदा] गमनोत्सवे चञ्चत्तु रङ्गतुङ्गकुंजरघटा घण्टाधनुर्ज्यारवैः वित्रस्ता दिगवला क्षणात् भ्रान्तिं भजन्ति ॥ ११ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में पारावतांश का होकर दशम घर का स्वामी नवें घर में बैठा हो, नवमघर का स्वामी दूसरे घर (धनभाव) में बैठा हो और गोपुरांश में ग्यारहवें घर का स्वामी बैठा हो इस योग में उत्पन्न हुये सम्राट् (महाराजाधिराज के उत्सव संबंधी यात्रा में निकली हुई सेना में चञ्चल चपल उच्च घोड़ों के हिनहिनाहट गुञ्जार शब्दों से तथा मदांध झुण्ड हाथिओंके

घण्टा गुञ्जार शब्दों से और धनुर्धारी वीरों के धनुष टङ्कोर शब्दों से अ[ति]
भयभीत [काँपती हुई] दिशा रूपी स्त्रियाँ वशीभूत होकर सेवा करने लगत[ी]
हैं अर्थात् दिगन्त पर्यन्त हुक्म चलने लगता है ॥ ११ ॥

अथ सिंहासनयोगः--

कन्यामीनवृषालिभे यदि खगाः सिंहासनः कीर्तितः
किंवा चापनृयुग्मकुम्भहरिभे खेटो हि सिंहासनः ।
यः सिंहासनयोगयोगजो हि मनुजो भूपाधिराजो बली
गर्जत्कुञ्जरवाजिराजिमुकुटारूढ़ो धरामण्डले ॥१२॥

अन्वयः—यदि कन्या मीन वृषालि भे खगाः (तदा) सिंहासन
[योगः किंवा चापनृयुग्मकुम्भहरिभे खेटे हि सिंहासनः (योगः
कीर्त्तितः यः मनुजः सिंहासनयोगजः (जातः) (स) गर्जत्कुञ्जरवा
जिराजि मुकुटारूढ़ो धरामण्डले भूपाधिराजो बली [भवति] ॥ १२ ॥

भा०--यदि कन्या मीन, वृष और वृश्चिक राशियों में सूर्यादि सभी ग्रह बै[ठे]
हों तो सिंहासन योग होता है, अथवा धन, मिथुन, कुम्भ और सिंह इन राशि[यों]
में सूर्यादि सभी ग्रह बैठे हों तो भी सिंहासन योग होता है इस योग में उत्पन्[न]
मनुष्य, चपल [वायु के समान चलनेवाले] घोड़े तथा मदान्ध और घो[र]
गर्ज करनेवाले अति सुशोभित सजावट से सजे हुये हाथियों के सिरताज वाह[न]
पर सवार होकर भूमण्डल में सफर करनेवाले राजाधिराज कहलाते हैं ॥ १२ ॥

टि०—वर्गास्तु ये दश प्रोक्ताः पूर्वाचार्यमहर्षिभिः ।
भवन्ति वर्गसंयोगे पारिजातादिसंज्ञका ॥ १ ॥
उत्तमं तु त्रिवर्गैक्यं चतुर्वर्गं तु गोपुरम् ।
वर्गपञ्चकसंयोगे सिंहासनमिहोच्यते ॥ २ ॥
वर्गद्वयं पारिजातं षण्णां पारावतांशकम् ।
सप्तमं देवलोकं स्यादष्टमं चामरं भवेत् ॥ ३ ॥
ऐरावतं तु नवमं फलं तेषां पृथक् पृथक् ।
दशवर्गस्य संयोगे विदुर्वैशेषिकांशकान् ॥ ४ ॥
योगानेतान्समुत्पन्नाः धनधान्यसमन्विताः ।
ग्रहाः स्वोच्चादिवर्गस्थे विपरीतानराऽन्यथा ॥ ५ ॥
दुःस्थारिनीचमूढ़स्था ग्रहाबलविवर्जिता ।
मरणावस्थगाश्चेत्तु पारिजातादिनाशकाः ॥ ६ ॥

एकावलीयोगः

अजे सिंहे कन्याकलशमिथुनान्त्यालितुरगे
समाजः खेटानामिह भवति जन्मन्यपि नरः।
चतुश्चक्रे योगे सकलसुखभोगेन मिलितो
महीपानामालीमुकुटमणिपाली विजयते ॥१३॥

अन्वयः—(यस्य) जन्मनि अजे सिंहे कन्या कलशमिथुनान्त्यालितुरगे खेटानां समाजः (तदा चतुश्चक्र योगः) भवति इह चतुश्चक्रे योगे (जातः) नरः सकलसुखभोगेन मिलितो महीपानामाली मुकुटमणिपाली विजयते ॥ १३ ॥

भा०—यदि मेष, सिंह, जाया, कुम्भ, मिथुन, मीन, वृश्चिक और तुला इन्हीं लग्नों में सूर्यादि सभी ग्रह बैठे हों, तो चतुश्चक्र योग कहलाता है, इस योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य सब प्रकार का [इन्द्र की तरह] सुख करता हुआ राजाओं में श्रेष्ठ कहलाता हुआ, उनके मुकुट मणियों का पालन करता हुआ अर्थात् राजाओं पर शासन करता हुआ विजय प्राप्त करता है ॥ १३ ॥

अथ चतुश्चक्रयगः

एकैकेन खगेन जन्मसमये सैकावली कीर्तिता
मुक्तालीव समस्तभूपमुकुटालङ्कारचूड़ामणिः।
तज्जातो रिपुपुञ्जभञ्जनकरो गन्धर्वदिव्याङ्गनाः-
वृन्दानन्दपरो गुणव्रजधरो विद्याकरो मानवः ॥ १४ ॥

अन्वयः—जन्मसमये एकैकेन खगेन मुक्तालीव सैकावली कीर्त्तिता तज्जातो मानवः समस्तभूपमुकुटालङ्कारचूड़ामणिः रिपुपुजंभजंनकरो गन्धर्वदिव्याङ्गनावृन्दानन्दपरो गुणव्रजधरो विद्याकरो भवति ॥१४॥

भा०—मोतियों की माला की तरह क्रम से एक-एक ग्रह एक-एक स्थानमें बैठे हों तो उसको एकावली योग कहते हैं, इस योग में उत्पन्न हुआ राजा, सब भूषणों में श्रेष्ठ चूढ़ामणि की तरह सब राजाओं का पूज्य [महाराजाधिराज] होकर शत्रुओं का नाश करनेवाला, अत्यन्त सुन्दरी स्त्रियों के साथ विहार करनेवाला, अनेक सद्गुणों से युक्त, चौसठ कला विद्या का जाननेवाला [अतिगुणज्ञ] होवा है ॥१४॥

शत्रुजीतयोगः--

कुलीरे कन्यायामनिमिषधनुर्युग्मभवने
जनुः काले यस्य प्रभवति नभोगो रविमुखः
प्रचण्डप्रोत्तुङ्गप्रबलरिपुहन्ता क्षितिपतिः
समन्तादाधिक्यं व्रजति धनदानेन महताम् ॥१५॥

अन्वयः—यस्य जनुः काले कुलीरे कन्यायामनिमिषधनुर्युग्म भवने रविमुखः नभोगः प्रभवति, [स] प्रचण्डप्रोतुङ्गप्रबलरिपुहन्ताक्षितिपतिः, [तथा] धनदानेन समन्तादाधिक्यं जति ॥१५॥

भा०— जिसके जन्म समय में कर्क, कन्या, मीन, धन और मिथुन राशियों में सूर्यादि सभी ग्रह बैठे हों, इस योग में उत्पन्न हुआ राजा, प्रबल प्रचण्ड घोर युद्ध करनेवाली अति बढ़ी हुई शत्रु की सेना को विध्वंस करनेवाला तथा धनादि दान करके सबसे अधिक यश पाने वाला होता है ॥ १५ ॥

नृवालयोगः--

अथादित्यः सिंहे विधुरपिकुलीरे रविसुतो
मृगे मीने जीवो हिमकरसुतो यस्य मिथुने
तुलायां शुक्रश्चेदजभवनगो भूमितनयो
नृबालो भूपालो नृपमुकुटभूषामणिवरः ॥१६॥

अन्वयः—यस्य [जन्मसमये] आदित्यः सिंहे विधुरपि कुलीरे, रविसुतो मृगे, मीने जीवो हिमकरसुतो मिथुने तुलायां शुक्रः चेत् अजयवनगोमूमितनयः (तदा स , नृबालो भूपालो नृपमुकुटभूषामणिवरः (भवति ॥ १६ ॥

भा०— जिसके जन्म समय में सूर्य सिंह राशि में, चंद्रमा कर्कराशि में, शनि मकर राशि में, वृहस्पति, मीन राशि में, बुध मिथुन राशि में, शुक्र तुला राशि में और मङ्गल मेष राशि में बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ साधारणकुल का बालक भी पृथ्वीपति कहलाता हुआ राजाओं के सिरताज के मणियों की तरह आदर पाता है ॥ १६ ।

साधारणराजयोगः—

दिवानाथः सिंहे गवि हिमकरो मेषभवने
महीजः कन्यायाममृतकरसूनुः सुरगुरुः ।
भवेच्चापे कुम्भे दिनमणिसुतस्तौलिनिकवि-
र्ज्जनुः काले यस्य प्रभवति नरोऽसौ क्षितिपतिः ॥ १७ ॥

अन्वयः— यस्य जनुः काले दिवानाथः सिंहे, हिमकरो गवि, महीजेमेष भवने, अमृतकरसूनुः कन्यायां, सुरगुरुश्चापे, दिनमणिसुतः कुम्भ, कविस्तौलिनि भवेत् तदा असौ नर क्षितिपतिः प्रभवति ॥ १७ ॥

भा०— जिसके जन्म समय में सूर्य सिंह राशि में चंद्रमा वृष राशि में, मङ्गल मेष राशि में, बुध कन्या राशि में, बृहस्पति धन राशि में, शनि कुम्भ राशि में, और शुक्र तुला राशि में बैठे हो तो वह मनुष्य राजा होता है ॥ १७ ॥

बलीपुण्यस्वामी दशमभवनाधीशभवन
तपः स्वाम्यागारे भवति दशमेशोऽपि भविनाम् ।
तदागर्ज्जद्दन्तावलनिकरघण्टाघनरवै-
र्दिगन्तं वित्रस्तो विजयगमने यात्यरिगणः ॥ १८ ॥

अन्वयः—भविनां जन्मसमये बलीपुण्य स्वामी दशम भवनाधीश-भवने, दशमेशोऽपितपः स्वाम्यागारे भवति तदाविजयगमने गर्ज्जद्दन्ता वलनिकरघण्टाघनरवैर्वित्रस्ता अरिगणः दिगन्तं यान्ति ॥ १८ ॥

भा०— जिसके जन्म समय में बलयुक्त नवमेश, दशम स्थान में या दशमेश के दूसरे घर में बैठा हो और बलयुक्त दशमेश भी नवम घर में बैठा हो, इस योग में पैदा हुआ राजा के दिग्विजयार्थ यात्रा में अति मदोन्मत्त गर्जन करने-वाले हाथियों के झुण्ड के घण्टों के घनघोर शब्दसुनकर शत्रु राजागण अतित्रस्त हो (काँपते हुए) दिगन्तों में भाग जाते हैं । ॥ १८ ॥

शत्रुनाशकयोगः—

यदा पुण्यस्वामी दशमभवने पुण्यभवने
बली कर्म्माधीशो भवति भविनामेव जनने ।
समुद्रान्तं कीर्तिर्विजयगमने वैरिपटली
धनुर्ज्याटङ्कारैर्भजति चकिता भीतिपदवीम् ॥ १९ ॥

अन्वयः—यदा भविनां जनने बली पुण्यस्वामी दशमभवने (तथा) बलीकर्माधीशः पुण्यभवने भवति (तदा) समुद्रान्तं कीर्तिः (तथा) विजयगमने धनुर्ज्याटङ्कारैर्वैरिपटली चकितभीति पदवीं भजति ॥१९॥

भा०—जिसके जन्म समय में अपने उच्च या अपने षड्वर्ग मित्रगृहादि होकर नवम घर का स्वामी दसवें घर में बैठा हो और पूर्ण बलयुक्त दशम घर का स्वामी नवें घर में बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ राजा का सुयश भूमण्डल मात्र में फैल जाता है और राजा धनुष विद्या में इतना प्रवीण (चतुर) होता है कि उसके धनुष के (ज्या) टङ्कोर के भयानक शब्दों को सुनकर शत्रु राजागण चकित होकर राज्यसिंहासन को छोड़ भग जाते हैं ॥ १९ ॥

प्रतापाधिकयोगः—

भवेदङ्गाधीशो जननसमये पुण्यभवने
तथा कर्म्मस्वामी भवति च विलग्ने जनिमताम्
तदा गर्ज्जद्दन्तावलकरभवाजिव्रजपदैः
समाक्रान्ता पृथ्वी व्रजति गमने मोहपदवीम् ॥ २० ॥

अन्वयः—(यदा) जनिमतां जननसमयेऽङ्गाधीशः पुण्यभवने, तथा कर्मस्वामी विलग्ने भवेत् तदा गमने गर्जद्दन्तावलकरभवाजिव्रजपदैः समाक्रान्ता पृथ्वी मोहपदवीं व्रजति ॥ २० ॥

भा०—जिसके जन्म समय में लग्नेश नवें घर में बैठा हो और दशम भावेश जन्म लग्न में बैठा हो तो उस राजा के यात्रा काल में चलने वाली सेना में मदोन्मत हाथी घोड़े, साँड़िनी और सिपहसालारों के प्रकाण्ड भार बोझ से लदी हुई पृथ्वी चकित होकर मोहपदवी को प्राप्त होती है ॥ २० ॥

सुखसम्पत्तियुक्तयोगः—

यदा राज्यस्वामी नवमसुतचन्द्रेऽर्थभवने
बलाक्रान्तो यस्य प्रभवति स वीरो नरवरः
सदाकाव्यालापी नवमणिकलापि बहुबली
तुरङ्गालीदन्तावलकलभगन्ता धनपतिः ॥ २१ ॥

अन्वयः—यदा (जन्मसमये) बलाक्रान्तो राज्यस्वामी नवम सुत-

केन्द्रेऽर्थभवने प्रभवति स वीरो नरवरः सदा काव्यालापी नवमणिकलापी बहुबली तुरङ्गालीदन्तावलकलभगन्ता धनपतिः (भवति) ॥ २१ ॥

भा०--यदि जन्म समय में बलयुक्त दसम घर का स्वामी त्रिकोण, केंद्र, और दूसरे [९, ५, १, ४, ७, १०, २] इनमें से किसी घर में बैठा हो तो वह वीर राजा होता हुआ भी काव्य [साहित्य] शास्त्र में अति प्रवीण, नित्य नूतन मणियों की माला धारण करने वाला, अति धीर गम्भीर योद्धाओंको युद्ध से भगाने वाला, अपनी सेना में अनेक गुणों से युक्त घोड़े, हाथियों को रखने वाला, महान् धनाभिमानी होता है ॥ २१ ॥

यदा कर्मस्वामी सुतभवनगामी शुभयुतः
सुतेशः कोदण्डे भवति भविनो यस्य जनने।
भयातीतो भोगी भवति चिरजीवी बहुगुणी
मतङ्गालीगन्ता रिपुनिकरहन्ता नरपतिः ॥२२॥

अन्वयः—भविनो यस्य जनने यदा शुभयुतः कर्मस्वामी सुतभवनगामी, (तथा) सुतेशः कोदण्डे भवति (तथा सः) भयातीतो भोगी चिरजीवी, बहुगुणी मतङ्गालीगन्ता रिपुनिकरहन्ता नरपतिः भवति ॥२२॥

भा०--जिसके जन्म समय में शुभग्रहों से युक्त दशमभाव का स्वामी पांचवें घर में बैठा हो और पाचवें घर का स्वामी धनराशि में बैठा हो तो वह मनुष्य किसी का भी नहीं भय करता हुआ, अनेक प्रकार के सुखों को भोगता हुआ दीर्घजीवी, अति गुणज्ञ होकर हाथी और घोड़ों से सुसज्जित सेना करके शत्रुओं को मार भगा कर स्वतंत्र राज्य करता है ॥ २२ ॥

धनागारस्वामी भवति यदि पारावतपदे
विशालं भूपालं कलयति नृबालं बहुबलम्।
अरातीभव्राताङ्क शमनिशमानन्दनिरतं
नितान्तं श्रीमन्तं विविधधनदानोद्यतमलम् ॥२३॥

अन्वयः—यदि धनागारस्वामी पारावतपदे भवति (तदा) नृबालं विशालं भूपालं बहुबलं कलयति तथा अरातीभव्राताङ्क शमनिशमानन्दनिरतं श्रीमन्तं विविधधनदानोद्यतमित्यलम् ॥ २३ ॥

भा०--साधारण कुल में उत्पन्न हुआ बालक के जन्मकुण्डली में धनभाव का स्वामी यदि पारावतांश में हो तो वह अपने बाहुबल से अनेक राजाओं को

जीतकर महाराजा कहलाता हुआ आनंदस्वरूप, उदारमूर्ति होता है और उसके दिये हुये सद्दान से यश बढ़कर पृथ्वी जो आच्छादित कर लेता है ॥ २१ ॥

देवलोकलवगो निशाकरात्पुण्यराशिपतिरिन्दुकान्तिभाक् ।
गोगजव्रजतुरङ्गमण्डलीमण्डितो मणिगणैरिलापतिः ॥२४॥

अन्वयः— (यदा) निशाकरात्पुण्यराशिपतिर्देवलोकलवगः (तथा च) इन्दुकान्तिभाक् (भवति) (तदा) गोगजव्रजतुरङ्गमण्डलीमण्डितो-मणिगणैरिलापतिः (भवति) ॥ २४ ॥

भा०--जिसके जन्म समय में चन्द्रमा से नवमघर का स्वामी बृहस्पति के नवमांश में बैठा हो और चंद्रमा पूर्ण हो, इस योग में पैदा हुआ मनुष्य हाथी, घोड़े, छकड़े, साँड़िनी और गाय, भैंस समूहों से युक्त होकर अनेक मणियों से जड़ित सिरताज बाँध कर पृथ्वीपनि कहलाता है । २४ ।

कुबेरतुल्यराजयोगः—

यदा माने याने भवति मदने वासवगुरौ
स्वतुङ्गे वा पङ्केरुहनिकरवन्धावपि भृशम् ।
भयत्राता दाता निगमविहिताचारचतुरो
गुणव्रातैर्नम्रो धनपतिसमानो विजयते ॥२५॥

अन्वयः—यदा वासवगुरौ स्वतुङ्गे माने याने मदने भवति (तथा) पङ्केरुहनिकरवन्धावपि (तत्रैव) (तदा) भृशं भयत्राता दाता निगम-विहिता चारचतुरो गुणाव्रतैर्नम्रो धनपात समानो विजयते ॥ २५ ॥

भा०—यदि बृहस्पति अपने परमोचांश का होकर जन्म लग्न से दसवें, चौथे तथा सातवें घर में बैठा हो, अथवा चंद्रमा परमोच्चांश में होकर उक्त स्थानों में से किसी स्थान में बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य दीनबंधु कहलाता हुआ षट्शास्त्र तथा नीति शास्त्र का मर्मज्ञ होता हुआ अनेक गुणों से युक्त कुबेर के समान धन का मालिक होकर राजा कहलाता है ॥ २५ ॥

कुलोचितराजयोगविचारः—

एतेषु योगेषु नरो नृपालो भवेदलं नीचकुलप्रजातः
नपालबालोऽपिच वक्ष्यमाणैः सुयोगजातैरिति संप्रवक्ष्ये ॥२३॥

अन्वयः—एतेषु योगेषु नीचकुल प्रजातो नरः (अपि) अलं नृपालो भवेत्, नृपाल बालोऽपि च वक्ष्यमाणैः (साधारण सुयोगैः) नृपालो भवेत् इति सुयोगजातैः संप्रवक्ष्ये ॥२६॥

भा०—पूर्वोक्त योगों में उत्पन्न हुआ साधारण कुल का बालक भी राजा हो जाता है, तथा राज्य कुल का उत्पन्न हुआ बालक राजाधिराज होता है और आगे कहे हुए साधारण योगों में उत्पन्न हुआ राज्यकुल का बालक अवश्य राजा होता है ॥ २६ ॥

मृगे विलग्ने रविजे कुलीरे दिवाकरे चन्द्रयुते प्रसूतौ ।
कुजे यदाये भृगुजेऽष्टमस्थे भवेन्नृपालो नृपवंशजातः ॥२७॥

अन्वयः—यदा प्रसूतौ मृगे विलग्ने रविजे, कुलीरे दिवाकरे चन्द्रयुते, कुजे आये, भृगुजेऽष्टमस्थे (तदा) नृपवंशजातो नृपालो भवेत् ॥२७॥

भा०—यदि जन्म समय में मकर लग्न हो, शनि वहाँ ही बैठा हो, चन्द्रमा के साथ-साथ सूर्य कर्कराशि में बैठा हो, भौम, ग्यारहवें घर में बैठा हो और शुक्र आठवेंघर में बैठा हो तो राज्यकुलका उत्पन्न बालक अवश्य राजा होता है ॥२७॥

यदा कवीज्यौ भवतश्चतुर्थे
नृपालबालोपि च भूमिपालः ।
कुलीरगो देवगुरुः सचन्द्रो
नृपालबालं प्रकरोति बालम् ॥२८॥

अन्वय—यदा कवीज्यौ चतुर्थे भवतः (तदा) नृपालबालोऽपि भूमिपाल (भवति) (यदा) सचन्द्रो देवगुरुः कुलीरगः (तदा) बालं नृपालबालं प्रकरोति ॥ २८ ॥

भा०—यदि जन्म समय में शुक्र और बृहस्पति बलवान होकर जन्म लग्न से चौथे घर में बैठ जावें तो यह योग राजपुत्र को अवश्य राज्यसिंहासन पर बैठाता है तथा उक्त योग होता हुआ चंद्रमा के साथ-साथ बृहस्पति कर्क राशि में बैठा हो तो यह योग साधारण बालक को भी राजगद्दी पर बैठाता है ॥२८॥

यदेन्द्रमन्त्री विधुजं प्रपश्ये-
द्गुणज्ञविज्ञं नृपतिं करोति ।
प्रसूतिकाले यदि पञ्चराशौ
चैकोऽपि बालंकुरुते नृपालम् ॥ २९ ॥

अन्वय—प्रसूति काले यदेन्द्रमन्त्री विधुजं प्रपश्येत् तदा गुणज्ञविज्ञं नृपतिं करोति, यदा पञ्चराशौ च एकोऽपि (बलीशुभग्रहः) तदा बालं नृपालं कुरुते ॥ २९ ॥

भा०—जन्मकाल में यदि बृहस्पति बुध को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो राजकुल में उत्पन्न हुआ बालक अति गुणज्ञ तथा विद्वान राजा होता है। यदि पाँचवें घर में एक भी बलवान शुभग्रह बैठा हो तो नृपकुल बालक को राज्यपद मिलता है ॥ २९ ॥

हितलवे तपनो विधुनेक्षितो
नृपसुतं कुरुते च नृपोत्तमम् ।
विधुसुतः सविधुः कुरुते नृपं
भवति तुङ्गगतो यदि जन्मनि ॥ ४० ॥

अन्वय—यदि जन्मनि विधुनेक्षितस्तपनो हितलवे तदा नृपसुतं नृपोत्तमं कुरुते यदि जन्मनि सविधुर्विधुसुतस्तुङ्गगतो भवति तदा नृपं कुरुते ॥ ३० ॥

भा०—यदि जन्म समय में चंद्रमा से दीखता हुआ सूर्य अपने या अपने मित्र के षड्वर्ग में बैठा हो तो नृपतिकुल में पैदा हुआ बालक को प्रतिष्ठित राजा बनाता है। यदि चन्द्रमा के साथ-साथ बुध अपने परमोच्चांश में बैठा हो तो भी राजपुत्र को अवश्य राजा बनाता है ॥ ३० ॥

जनुषिलग्नगतो यदि लग्नपो
बलयुतः किल कन्टकगोऽपिवा ।
अविरतं प्रकरोति तदा नृपं
नृपजमेव न चित्रमिति स्फुटम् ॥३१ ॥

अन्वय—यदि जनुषि बलयुतः लग्नपः लग्नगतः कण्टकगोऽपि वा तदा किल अविरतं नृपजमेव नृपं करोति चित्रमिति स्फुटम् ॥३१॥

भा०—यदि जन्म समय में बलयुक्त लग्नेश तनु भाव में बैठा हो अथवा केंद्र (लग्न चौथे, सातवें तथा दसवें में बैठा हो तो इस योग में उत्पन हुआ राजकुमार अवश्य राजा होता है, इसमें संशय नहीं है ॥३१॥

अथ द्रविड़केरलदेशेराजयोगाः—

रविरजे शशिना बलिना युतो
भवति भूमिपतिं कुरुते शिशुम् ।
द्रविड़केरलदेशसमुद्भवं
कृतिवरं च परत्र धनेश्वरम् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—बलिना शशिना युतो रविः अजे भवति (तदा) शिशुं भूमिपतिं कुरुते, द्रविणकेरलदेशसमुद्भवं कृतिवरं च परत्र धनेश्वरमिति ॥ ३२ ॥

भा०—बलवान् चंद्रमा के साथ-साथ-बलवान् सूर्य मेष राशि में बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न हुआ राजकुमार द्रविड़ और केरल देश का राजा होता हुआ अपनी उज्ज्वलकीर्ति दिगंत पर्यन्त बढ़ाकर अन्य देशों के शासनाधिकारकी बागडोर भी अपने हाथ में कर लेता है ॥ ३२ ॥

गुरुकवी यदि तुङ्गगताविमौ जनुषि कण्टककोणगृहाश्रितौ ।
नृपकुले कुरुतो नृपमन्यथा द्रविड़पं परितो भवतो नरम् ॥३३॥

अन्वयः—यदि जनुषि इमौ गुरुकवी तुङ्गगतौ कण्टककोण गृहाश्रितौ भवतः (तदा) नृपं नृपकुले कुरुतः, अन्यथा परितो द्रविणपं नरं (कुरुतः) ॥ ३ ॥

भा—यदि जन्म समय में वृहस्पति और शुक्र अपने २ उच्च स्थान में होकर केन्द्र तथा कोण (१,४,७,१०,५,९, स्थान में बैठे हों तो राज्यकुल का उत्पन्न हुआ बालक अवश्य राजा होता है, यदि इस योग में साधारण कुल का बालक उत्पन्न हो तो धनाढ्य, (बिनाबो राजा) होता है ॥ ३३ ॥

श्री छत्रयोगः—

प्रसूतिकाले यदि सर्वखेटैस्तनुव्ययाऽगाऽर्थ गृहस्थितैश्चेत् ।
पुरातनास्तुण्यत एव पुंसां श्रीच्छत्रयोगं प्रवदन्ति सन्ताः ॥३४॥

अन्वयः—यदि प्रसूतिकाले सर्वखेटैस्तनुव्ययाऽगाऽर्थगृहस्थितैःचेत् (तदा) पुरातनात् सन्ताःपुण्यत एव पुंसा श्रीच्छत्रयोगं प्रवदन्ति ॥३४ ॥

भा०--यदि जन्म समय में सूर्यादि सभी ग्रह जन्मलग्न, बारहवें, सातवें तथा दूसरे घर में बैठे हों तो प्राचीन महात्माओं का कथन है, कि इस छत्रयोग में उत्पन्न हुआ बालक पुण्यात्मा, प्रभावशाली तथा धनाढ्य होता है ॥३४॥

यदा जीवो लग्ने मकरमपहाय प्रवसति
तदालं भूपालं नृपतिकुलकालं जनयति।
भवत्येवं चन्द्रो जनुषि जनुरङ्गं च कलया
परिक्रान्तः केन्द्रे नरपतिसुतं भूपतिपरम् ॥ ४५ ॥

अन्वयः-यदा जनुषि मकरमपहाय जीवो लग्ने प्रवसति तदालन्नृपति कुलवालं भूपालं जनयति, एवं कलया (पूर्णः) चन्द्रः (नीचमपहाय) जनुः अङ्गं केन्द्रे च परिक्रान्तः (तदा) नरपतिसुतं परं भूपतिः भवति ॥३५॥

भा०-जिसके जन्म समय में मकर राशि को छोड़कर वृहस्पति अन्य राशीस्थ लग्न में बैठा हो तो राज्यकुल का उत्पन्न बालक राजा ही होता है, इसी प्रकार पूर्ण चंद्रमा वृश्चिक राशि को छोड़कर लग्न, चौथे, सातवें या दसवें घर में बैठा हो तो राजकुल के बालक को अवश्य राजा बनाता हैं ॥ ३ ॥

सुखागारस्वामी भवति नवमे वाथ दशमे
सुखे वा लग्ने वा हितलवगतो वा शुभखगः।
युतो दृष्टो दन्तावलतुरग यानेन नितरां
जनानामागारं कनकमणिसङ्घैः परिवृतम् ॥ ३६ ॥

अन्वयः—(यदा) शुभखगैर्युतो दृष्टो हितलवगतः सुखागारस्वामी नवमे वाऽथ दशमे वा सुखे वा लग्ने भवति (तदा, जनानामागारं दन्ता-बलतुरगयानेन (तथा) कनकमणिसङ्घैर्नितरां परिवृतम् ॥ ३६ ॥

भा०—यदि शुभ ग्रहों के साथ अथवा शुभग्रहों से दीखता हुआ अपने मित्र के षड्वर्ग में होकर चौथे घर का स्वामी नवें, दशवें, चौथे अथवा लग्न में बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न हुए मनुष्य के दरवाजे पर हाथी और घोड़ों का समूह रहता है, एवं उसका गृह मणि जवाहिरात रत्नों से सुसज्जित स्वर्णमय लक्ष्मी का निवास स्थान । मालूम पड़ता है ॥ १६ ॥

पञ्चमे भवति कर्मभावपे
कान्तिभाजि गजवाजिजं सुखम्।
सर्वतोऽस्य विदिता ततो
भवेदादिगन्तमतुला यशोलवा ॥ ३७ ॥

अन्वयः—(यदा) कर्मभावपे पञ्चमे भवति (तदा) कान्तिभाजिगजवाजिजं सुखं भवेत् ततोऽस्य वालस्य, सर्वतः आदिगन्तमतुला यशोलता विदिता भवेत् ॥ ३७ ॥

भा०— जिसके जन्म समय में दसमेश पाँचवें घर में बैठा हो तो उसको हाथी, घोड़ा, साँड़िनी तथा अनेक प्रकार के सवारियों का यथेच्छ सुख मिलता है और उसकी स्वच्छ उज्वल कीर्ति दिगंत पर्यन्त इतनी शीघ्र बढ़ती है मानो विद्युत को शर्माती है ॥ ३७ ॥

अथ चन्द्रकृद्राजयोगाः—

भवति चन्द्रमसो दशमाधिपो
जनुषि केन्द्रनवद्विसुतोपगः ।
अतिविचित्रमणिव्रजमण्डितो
वसुमतौ वसुभूषणसंयुतः ॥३८॥

अन्वयः—जनुषि चन्द्रमसो दशमाधिपः केन्द्रनवद्विसुतोपगः (भवति) (तदा) अतिविचित्रमणिव्रजमण्डितो (वसुमतौ) वसुभूषणसंयुतो भवति ॥ ३८ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में चंद्रमा से दसवें घर का स्वामी केंद्र (१, ४, ७, १०) स्थान, नवें, दूसरे तथा पांचवें घर में बैठा हो तो स्वर्ण, पन्ना; हीरा, इत्यादि अनेक प्रकार के रत्न तथा भूषणों से युक्त पृथ्वीपति कहलाता है ॥ १८ ॥

चन्द्राक्रान्तभपः सुखालयगतो दन्तावलानां सुखं
मुक्तास्वर्णमणिव्रजामलयशः पुञ्जं विचित्रालयम् ।
भृत्यापत्यकलत्रमित्रपटलीविद्याविनोदं तथा
पुण्यं संतनुते मुदं नरपतेरर्थं नराणामिह ॥३९॥

अन्वयः—(यदा) चन्द्राक्रान्तभपः सुखालयगतः (तदा) नराणां दन्तावलानां सुखं, मुक्तास्वर्णमणिव्रजामलयशः पुञ्जं विचित्रालयम् तथा भृत्यापत्यकलत्रमत्रपटलीविद्याविनोदं तथा पुण्यं, मुदं एवं नरपतेः अर्थं संतनुते ॥ ३९ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में चंद्रमा जिस राशि में बैठा हो उस राशि का स्वामी जन्म लग्न से चौथे घर में बैठा हो तो उस मनुष्य को हाथी घोड़ा इत्यादि

वाहनों का सुख, रत्नों से जड़ित स्वर्णमय गृह में मूँगा, मोती, लाल, हीरा इत्यादि जवाहरातों से भरा हुआ खजाना का सुख तथा आज्ञाकारी नौकरों का सुख, शुभशील युक्ता पतिव्रता अति सुन्दरी मनोहारिणी रमणी का सुख, पितृभक्त सुशील गुणवान् पुत्र का सुख, निःशठ मित्रों का सुख एवं कला-कौशल-नीति-धर्म-शास्त्रादि विद्या--इत्यादि अनेक सुखों को अखण्ड (यथेष्ठ) भोगता हुआ, दानियों में अग्रगण्य नाम (यश) धारण करता हुआ राज्यकुल से समादर पाता हुआ विशेष धन प्राप्त करता है ॥ ३९ ॥

अनफादियोगः--

व्ययगतैरनफा रविवर्जितैर्द्धन-
गतैः खचरैः स्वनफा विधोः ।
उभयतोऽपि गतैरुदिता नृणां
दुरुधरा मधुराशनभोगदा ॥४०॥

अन्वयः--विधोः व्ययगतैः रविवर्जितैः खचरैः अनफा (तथा) धनगतैः स्वनफा, उभयतोऽपि गतैः दुरुधरा योगा नृणां मधुराशन-भोगदा उदिता ॥ ४० ॥

भा०--चंद्रमा से बारहवें घर में सूर्य के अतिरिक्त कोई ग्रह बैठा हो तो अनफा तथा चंद्रमा से दूसरे घर में सूर्यातिरिक्त कोई ग्रह बैठा हो तो स्वनफा और चंद्रमा से दूसरे, बारहवें (दोनों) घर में सूर्यातिरिक्त ग्रह बैठे हों तो दुरुधरा योग होता है, इन योगों में उत्पन्न हुए मनुष्यों को अनेक विधि मधुर भोजन तथा सुख मिलता है ॥ ४० ॥

अनफायोगफलम् -

जनिमतामनफा कुरुतेवरां
गुणवतीयुवतीरतिवर्द्धनम् ।
नृपसभापटुताममलं यशो
वरपशोरपि सौख्यकरं परम् ॥४१॥

अन्वयः--जीनमतां अनफा (योगे) गुणवती युवती रतिवर्द्धनं नृप-सभा पटुताममलं यशः वरपशोरप परमं सौख्यकरं कुरुते ॥ ४१ ॥

भा०-जिस मनुष्य के जन्म समय में अनफा योग हो तो केलि-क्रीड़ा में

कामदेव को बढ़ाने वाली अति मधुरभाषिणी सुन्दर युवती का सुख; सभाजीत चातुरी बुद्धिजन्य यश वृद्धि का सुख तथा गोरस देनेवाली गाय-भैसों का सुख एवं गुणयुक्त वाहनों का सुख यथेच्छ प्राप्त होता है ॥ ४१ ॥

भुजबलेन रमापरमालयं
जनिमतां गरिमा स्वनफा यदा ।
अवलयाऽमलया नवयानभू-
विभुतयाद्भूतया परमं सुखम् ॥ ४२ ॥

अन्वयः--यदा जनिमतां स्वनफा योगः (तदा) भुजबलेन रमा परमालयं, गरिमा, अवलयाऽमलया, नवयानभूविभुतयाद्भुतया परमं सुखं (भवति) ॥ ४२ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में स्वनफा योग हो तो वह मनुष्य अपने भुज बल (अनेक प्रकार के व्यापार) से चिरकाल रहने वाला (अटूट) धन से घर भर कर, भूमण्डल में यश का भाजन बन कर अपने नवयुवती प्रिय वादिनी रमणी के साथ प्रगाढ़ सुखों को भोगता है ॥ ४२ ॥

दुरुधुरायोगफलम्—

दुरुधुरा बहुधा वसुधावसु-
व्रजसुवारणवाजिसुखं नृणाम् ।
वितनुते नृपतेरतुलं यशो
गुणकलापपटुत्वमिहाद्भुतम् ॥ ४३ ॥

अन्वयः--(यदा) नृणां दुरुधरायोगः (तदा) बहुधा वसुधावसुव्रजसुवारणावाजिसुखं (वितनुते) नृपतेः अतुलयशः अद्भुतमिह गुणकलापपटुत्वं च वितनुते ॥ ४३ ॥

भा०--जिस मनुष्य के जन्म समय में दुरुधरा योग हो तो वह पृथ्वी, भूषण वाहन, वस्त्र तथा नौकरों का अनेक विधि सुख पाता हुआ, सद्दानादि करके पृथ्वी में यश बढ़ाता हुआ अपने कला कौशल चातुरी विद्या से महाराज के सभा में विचित्र प्रतिष्ठा (उच्चपद) पाता है ॥ ४३ ॥

केमद्रुमयोगः—

न धने न व्यये खेटाश्चन्द्राद्दिह भवन्ति चेत् ।

तदा केमद्रुमं प्राहुः पण्डिता मिहिरादयः ॥४४॥

अन्वयः--यदि चेत् चन्द्रात् न धने न व्यये खेटाः भवन्ति तदा मिहिरादयः पण्डिताः केमद्रुमं इह प्राहुः ॥ ४४ ॥

भा०—यदि चन्द्रमा से दूसरे और बारहवें घर में कोई भी ग्रह न हो तो मिहिरादि आचार्यगण इसे केमद्रुत योग कहते हैं ॥ ४४ ॥

केमद्रुमे सुरपतेरपि नन्दनोऽयं
देशान्तरं व्रजति पुत्रकलत्रहीनः।
धर्म्मच्युतो विकलितो गदसङ्घभीतो
नानाधिताऽसहितो महितोपहीनः ॥ ४५ ॥

अन्वयः--केमद्रुमे (योगे) सुरपतेः नन्दनोऽप्ययं पुत्र कलत्रहीनः देशान्तरं व्रजति, (तथा) धर्मच्युतो विकलितो गदसंघभीतो नानाधि, तापसहितः महितोपहीनो व्रजति ॥ ४५ ॥

भा०--जिसके जन्म के समय केमद्रुम योग हो वह इन्द्र का प्रिय पुत्र क्यों न हो अपने राज्य सिंहासन को छोड़ कर स्त्री पुत्रों से रहित धर्मविरोधी बन कर अनेक (देहिक, दैविक, आधिभौतिक) दुःखों को भोगता हुआ इतस्ततः भ्रमण करता फिरता है ॥ ४५ ॥

केमद्रुमभङ्गयोगः—

शुक्रेज्यसौम्यसहितोऽपि च कण्टकस्थो
वा पूर्णबिम्ब इह यस्य भवेन्मृगाङ्कः।
केन्द्राणि खेचरयुतानि यदा नराणां
केमद्रुमोद्भवफलं विफलत्वमीयात् ॥ ४६ ॥

अन्वयः--यस्य पूर्णविम्बः मृगाङ्कः शुक्रेज्यसौम्यसहितोऽपि कण्टकस्थो वा केन्द्राणिखेचरयुतानि (भवेयुः) तदा नराणां केमद्रुमोद्भवफलं विफलत्वमीयात् ॥ ४६ ॥

भा०--जिसके जन्म समय में पूर्ण चन्द्रमा शुक्र, बृहस्पति, बुध इनमें से किसी के साथ-साथ केंद्र स्थान में बैठा हो, अथवा कोई भी बलवान् शुभ ग्रह केन्द्र कोण (१, ४, ७, १०, ५, ९,) में बैठा हो तो उक्त केमद्रुम योग जन्य अनिष्ट फल नष्ट होता है ॥ ४६ ॥

हृद्योगः—

जनुषि नीचगताः सकला ग्रहा-
यदि भवन्ति तदा हृदसंज्ञकः ।
हृद्भवो विकलो विभवोनितो
रिपुहतो नितरां शठतायुतः ॥४७॥

अन्वयः—यदि जनुषि सकला ग्रहाः, नीचगताः भवन्ति, तदा हृद संज्ञकः (योगः) हृद्भवो (नरः) विकलो विभवोनितो रिपुहतो (तथा) नितरां शठतायुतो (भवति) ॥ ४७ ॥

भा०—यदि सूर्यादि सभी ग्रह अपने-अपने नीच स्थान में बैठे हों तो हृद-योग होता है । इस योग में उत्पन्न हुआ मनुष्य शरीर से कष्ट भोगने वाला, धन धान्य से रहित, सर्वदा शत्रुओं से कष्टपानेवाला और अति कृपण होता है ।४७।

फणियोगः—

घटगते तपने क्रियगे शना-
वलिगते च विधौ निजनीचभे ।
भृगुसुते जनने फणिसंज्ञको
विकलितं कुरुते नरपुङ्गवम् ॥४८॥

अन्वयः—जनने घटगते तपने, क्रियगे शनौ, अलिगते विधौ, निज नीचभे च भृगुसुते, (तदा) फणिसंज्ञकः (योगः), नरपुङ्गवं विकलितं कुरुते ॥ ४८ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में कुम्भ राशि में सूर्य बैठा हो, मेष राशि में शनि बैठा हो, वृश्चिक राशि में चंद्रमा बैठा हो और अपने नीच (कन्या) राशि में शुक्र बैठा हो तो फणि संज्ञक योग होता है, यह (फणि) योग श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न हुए मनुष्य को भी अति भ्रमजाल में डालकर निर्धन बना देता है ॥४८॥

काकयोगः—

अजगते भृगुजे रविजे जनु-
र्वृषभगे दिनपेऽनिमिषे विधौ ।
अवनिजे यदि कर्कटगेहगे
भवति काकभवो विभवोनितः ॥४९॥

अन्वयः--(यस्य) जनुः अजगते भृगुजे रविजे, वृषभगे दिनपे, अनिमिषे विधौ, अवनिजे कर्कटगेहगे (तदा) काकभवो (योगः) विभवोनितो भवति ॥ ४९ ॥

भा०--जिसके जन्म समय में मेष राशि में शुक्र और शनि बैठे हों, वृष राशि में सूर्य बैठा हो, मीन राशि में चंद्रमा बैठा हो और कर्क राशि में मंगल बैठा हो तो काक संज्ञक योग होता है, यह (काक) योग धनाढ्य कुल में उत्पन्न हुये मनुष्य को भी धनहीन कर देता है ॥ ४९ ॥

दरिद्रयोगः—

विधुयुतो घटभे दिवसाधिपो
गुरुमहीजकवीनसुताः पुनः ।
यदि भवन्ति च नीचगता-
जनुर्व्रजति राजसुतोऽपिदरिद्रताम् ॥५०॥

अन्वयः—यदि जनुः विधुयुतो दिवसाधिपो घटभे, पुनः गुरुमहीज कवीनसुताः नीचगताः भवन्ति (तदा) राजसुतोऽपि दरिद्रतां व्रजति॥५०॥

भा०—जिसके जन्म समय में चंद्रमा के साथ २ सूर्य कुम्भ राशि में बैठा हो और बृहस्पति, मङ्गल; शुक्र तथा शनि अपने २ नीच राशि में (क्रम से मकर, कर्क, कन्या, मेष) में बैठे हों तो दरिद्र योग होता है, यह योग राज-कुमार को भी दरिद्र बना देता है तो दूसरे की क्या कथा ॥ ५० ॥

हुताशनयोगः—

शनिमहीजनिशाकरचन्द्रजाः
यदि जनुः किल नीचमुपाश्रिताः ।
मकरभे भृगुजोऽपि हुताशनः
परमतापकरो न करोति शम् ॥ ५१ ॥

अन्वयः—यदिजनुः शनिमहीजनिशाकरचन्द्रजाः किल नीचमुपाश्रिताः, भृगुजोऽपि मकरभे (तदा) हुताशनः (योगः) परमतापकरः शम् न करोति ॥ ५१ ॥

भा०--जिसके जन्म समय में शनि, मङ्गल, चंद्रमा और बुध अपने २ नीच स्थान में बैठे हों और शुक्र मकर राशि में बैठा हो तो हुताशन योग होता है इस

योग में उत्पन्न हुए मनुष्य तरह २ के व्याधियों से पीड़ित,मानसिक कष्ट से संतप्त रहते हुए आजन्म सुख नहीं पाते ॥ ५१ ॥

राजयोगभङ्गविचारः—

यदि भवति नवायदशाधिपा
जनुषि नीचगता विकलाभृशम् ।
नृपतियोगजमंगभृतां फलं
परिणमत्यपि निष्फलतामिह ॥ ५२ ॥

अन्वयः—यदि जनुषि नवायदशाधिपाः नीचगताः विकला च भवन्ति (तदा) अंगभृतां नृपतियोगजं फलं भृशमिह निष्फलतां परिणमति ॥ ५२ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में नवमेश, लाभेश और दसमेश अपने २ नीच स्थान में बैठे हों अथवा विकल (पापग्रहों के साथ) हों तो राज्यकुल में उत्पन्न हुआ बालक भी दरिद्र हो जाता है ॥ ५२ ॥

रिपुमन्दिरगैरेव वैरिभावगतैरपि ।
राजयोगा विनश्यन्ति दिवाकरकरोपगैः ॥५३॥

अन्वयः—(यदि राजयोगकारकाः) रिपुमन्दिरगैः वैरिभावगतैरपि (वा) दिवाकरकरोपगैः (तदा) राजयोगाः विनश्यन्ति ॥ ५३ ॥

भा०—यदि राजयोग कारक ग्रह अपने-अपने शत्रु के घर में बैठे हों,अथवा छैठें; आठवें, बारहवें घर में बैठे हों, अथवा अस्त हो गए हों तो राजयोग नष्ट हो जाते हैं ॥ ५३ ॥

भवति वीक्षणवर्जितमङ्गिनां
जननलग्नमिहाम्बरगामिनाम् ।
जननभं च नृपालभवो नरो
जगति यातितरामतिरंकताम् ॥ ५४॥

अन्वयः—(यदि) अंगिनां जननलग्नं जननभं च अम्बरगामिनां वीक्षण वर्जितं भवति (तदा) जगति नृपालभवो नरोऽतितरां रङ्कतां याति ॥ ५४ ॥

भा०—यदि जन्म समय में जन्मलग्न तथा चन्द्रमा को कोई भी ग्रह न

देखता हो तो राजयोग (राज्यकुल) में उत्पन्न होता हुआ भी मनुष्य अत्यन्त दरिद्र हो जाता है ॥ ५४ ॥

भद्रायां व्यतिपाते वा तथा केतूदये जनिः ।
यस्य तस्य विनश्यन्ति राजयोगफलान्यपि ॥५५॥

अन्वयः—यस्य भद्रायां व्यतिपाते वा तथा केतूदये जनिः तस्य राजयोगफलान्यपि विनश्यन्ति ॥ ५५ ॥

जिसके जन्म समय में भद्रा, व्यतिपात अथवा केतुतारा का उदय हो तो उसको राजयोग होता हुआ भी नष्ट हो जाता है ॥ ५५ ॥

परमनीचलवे यदि चन्द्रमा
भवति जन्मनि तस्य विशेषतः ।
नृपतियोगफलं विफलं ततः
कलयतीति वदन्ति मुनीश्वराः ॥ ५६ ॥

अन्वयः—(यस्य) जन्मनि यदि चन्द्रमा परमनीचलवे भवति 'तस्य' विशेषतः नृपतियोगफलं विफलं कलयतीति मुनीश्वराः वदन्ति ॥ ५६ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में चद्रमा अपने परम नीच्चांशस्थान में बैठा हो तो उसको विशेष राजयोग होता हुआ भी विफल (नष्ट) हो जाता है, ऐसा मुनियों का वाक्य है ॥ ५६ ॥

इति श्री भावकुतूहले—उत्साहवर्द्धिनी भाषाटीकायां राजयोग तद्भंगयोश्च सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

❀❀❀

अथ सामुद्रिकाष्टमोऽध्यायः

राजयोगलक्षणम्—

जनने प्रबलो यस्य राजयोगो भवेद्यदि ।
करे वा चरणेऽवश्यं राजचिन्हं प्रजायते ॥ १ ॥

अन्वयः--यस्य जननें प्रबलो राजयोगो भवेत् (तस्य) करे वा चरणेऽवश्यं राजचिन्हं प्रजायते ॥ १ ॥

भा०—जिस मनुष्य के जन्म समय में ग्रह जन्य राजयोग होता है, उसके हाथ अथवा चरण में अवश्य राजचिन्ह होता है ॥ १ ॥

अनामामूलगा रेखा सैव पुण्याभिधामता ।
मध्यमाङ्गुलिमारभ्य मणिबन्धान्तमागता ॥ २ ॥
सोर्ध्वरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत् ।
खण्डिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीणफलप्रदा ॥ ३ ॥

अन्वयः—अनामामूलगा रेखा सैव पुण्याभिधामता, मध्यमांगुलिमारभ्य मणिबन्धान्तमागता, सोर्ध्वरेखा विशेषेण राज्यलाभकरी भवेत् (यदि) खण्डिता (तदा) दुष्टफलदा (चेत्) क्षीणा क्षीणफलप्रदा भवेत् ॥ २-३ ॥

भा--जिस मनुष्य के हाथ में अनामिका अँगुली के मूल से अथवा मध्यमा अँगुली के मूल से मणिबन्ध पर्यन्त मोटी और सीधी रेखा हो वह अवश्य राजा होता है, यदि यह रेखा खण्डित (आधी) हो तो राजयोग नष्ट करने वाली होती है, यदि यह रेखा पतली हो तो साधारण जमींदार (रायबहादुर) बनाने वाली होती है ॥ २-३ ॥

जवचिन्हफलम्

अङ्गुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य
विराजते चारुयवो यशस्वी ।
स्ववंशभूषासहितो विभूषा-
योषाजनैरर्थगणैश्चमर्त्यः ॥ ४ ॥

अन्वयः -यस्य पुरुषस्य अङ्गुष्ठमध्ये चारुयवो विराजते समर्त्यः यशस्वी स्ववंशभूषासहितः विभूषायोषाजनैरर्थगणैश्च (भवति) ॥ ४ ॥

भा०--जिस मनुष्य के अंगूठे में सुन्दर पुष्ट जव के आकार का चिन्ह (जव रेखा) हो वह तरह-तरह की कीर्ति करनेवाला, अपने कुल को मणि के समान प्रकाश (आदर) करनेवाला, सुन्दर रमणी तथा भूषण वाहनादिकों से युक्त धनाढ्य होता है ॥ ४॥

वैसारिणो वाऽऽतपवारणो वा
चेद्वारणो दक्षिणपाणिमध्ये।
सरोवरं चाङ्कुशं एव यस्य
वीणा च राजा भुवि जायते सः ॥ ५ ॥

अन्वयः--यस्य (नरस्य) दक्षिणपाणिमध्ये चेद् वैसारिणः, वाऽऽतपवारणः, वारणः, सरोवरं वा अङ्कुशं, वीणा च (अस्ति) स भुवि राजा जायते ॥ ५ ॥

भा०—जिस मनुष्य के दाहिने हाथ में मछली, छाता, हाथी, तालाब अथवा अंकुश और वीणा का चिन्ह हो तो वह राजा होता है ॥ ५ ॥

मुसलशैलकृपाणहलाङ्कितं
करतलं किल यस्य सवित्तपः।
कुसुममालिकया फलमीदृशं
नृपति रेव नृपालभवे यदा ॥६॥

अन्वयः--यस्य किल करतलं मुसलशैलकृपाणहलाङ्कितकुसुम मालिकया च स्यात्तदा स वित्तपः, यदा ईदृशं फलं नृपालभवेत्तादा नृपतिरेव (भवति) ॥ ६ ॥

भा०—जिसके हाथ में मुसल, पर्वत, तलवार, हल और फूल के माला का चिन्ह हो तो वह धनाढ्य होता है, यदि ये सब चिन्ह राजकुमार के हाथ में हो तो वह अवश्य सिंहासन पर बैठता है ॥ ६ ॥

करतलेऽपि च पादतले नृणां
तुरगपङ्कजचापरथाङ्गवत्।
ध्वजरथासनदोलिकयासमं
भवति लक्ष्मरमापरमालये ॥ ७ ॥

अन्वयः-- नृणां करतले पादतलेऽपि च तुरगपङ्कजचापरथाङ्गवत्ध्वज-रथासनदोलिकया समं लक्ष्मं (तदा) रमापरमालये भवति ॥ ७ ॥

भा०—जिस मनुष्य के हथेली अथवा पैर के तलवे में घोड़ा, कमल का फूल, धनुष, चक्र; ध्वजा, सिंहासन और पालकी का चिन्ह हो उसका घर श्री लक्ष्मी का निवास स्थान हो जाता है ॥ ७ ॥

कुम्भःस्तंभो वा तुरङ्गो मृदङ्गः
पाणावंघ्रौ वा द्रुमो यस्य पुंसः ।
चञ्चद्दण्डोऽखण्डलक्ष्म्यापरीतः
किंवा सोऽयं पण्डितः शौण्डिको वा ॥ ८ ॥

अन्वयः--यस्य पुंसः पाणावंघ्रौ कुम्भः स्तम्भो वा तुरङ्गः मृदंगः द्रुमः दण्डो वा (भवति तस्य) अखण्डलक्ष्म्या परीतः किं वा सोऽयं पण्डितः शौण्डिको वा (भवति) ॥ ८ ॥

भा०—जिस पुरुष के हाथ अथवा पैर के तलवे में घट (कलश), स्तम्भ, घोड़ा, मृदङ्ग,वृक्ष और छड़ी का चिन्ह हो वह आजन्म लक्ष्मीयुक्त पण्डित अथवा धनाढ्य मद्य बेंचने वाला (कलवार) होता है ॥ ८ ॥

विशालभालोऽम्बुजपत्रनेत्रः
सुवृत्तमौलिः क्षितिमण्डलेशः ।
आजानुबाहुः पुरुषं तमाहुः
क्षोणीभृतां मुख्यतरं महान्तः ॥ ९ ॥

अन्वयः--(यस्य) विशाल भालोऽम्बुज पत्रनेत्रः सुवृत्तमौलिः आजानु बाहुः तं पुरुषं क्षितिमण्डलेशः क्षोणिभृतां मुख्यतरं महान्तः आहुः ॥ ९ ॥

भा०--जिस पुरुष का ललाट ऊँचा (बड़ा) हो, आँख कमल के फूल की तरह खिली हुई सुन्दर हो और गोलाकार सुन्दर शिर हो, तथा पैर के घुटने तक लम्बी-लम्बी बाह हो तो वह पुरुष सब राजाओं में श्रेष्ठ आदरणीय पृथ्वीपति (महाराजा) कहलाता है ॥ ९ ॥

नाभिर्गभीरा सरला च नासा
वक्षस्थलं रत्नशिलातलाभम् ।
आरक्तवर्णौ खलु यस्य पादौ
मृदू भवेतां स नृपोत्तमः स्यात् ॥१०॥

अन्वयः—यस्य नाभिर्गभीरा सरला नासा च वक्षः स्थलं रत्नशिलात लाभम् (तथा) पादौ-आरक्तवर्णौ, मृदुश्चभवेतां स नृपोत्तमः स्यात् ॥१०॥

भा०—जिस मनुष्य की नाभी गहरी, नाक सीधी (लम्बायमान सुग्गा के ठोर के समान) छाती चौड़ी (रत्नशिला के समान) और दोनों पैर के तलवे सुन्दर लाल रङ्ग कोमल हों तो वह राजा होती है ॥ १० ॥

राजते करगो यस्य तिलोऽतुलधनप्रदः ।
तथा पादतले पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः ॥ ११ ॥

अन्वयः—यस्य करगः तिलः राजते स अतुल धनप्रदः तथा पादतले (तिलः) पुंसां वाहनार्थसुखप्रदः स्यात् ॥ ११ ॥

भा०—जिस मनुष्य के दाहिने हाथ में तिल का चिन्ह हो वह बहुत बड़ा धनवान् होता है, जिसके दाहिने पैर के तलवे में तिल का चिन्ह हो उसको पर्याप्त वाहनों का सुख मिलता है ॥ ११ ॥

राजवंशप्रजातानां समस्तफलमीदृशम् ।
अन्येषामल्पतां याति तथा व्यक्त सुलक्षणम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—राजवंश प्रजातानां इदृशं समस्तं फलम् तथा अन्येषामल्पतां याति (इति) सुलक्षणं व्यक्तम् ॥ १२ ॥

भा० -राजकुल में उत्पन्न हुये राजकुमारों के कहे हुये लक्षण हों तो वह धन-धान्य युक्त प्रतापी राजा होता है, यदि उक्त लक्षण साधारण कुल में उत्पन्न हुए मनुष्यों को हो तो वह अन्न वस्त्रादि से युक्त श्रेष्ठ पुरुष कहलाता है ॥१२॥

इति भावकुतहले-उत्साहवर्द्धिनी सान्वयभाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ।

अथ नवमोऽध्यायः

स्त्रीजातकम्—

शुभाशुभं पूर्वजनेर्विपाकात्-
सीमन्तिनीनामपितत्फलं हि ।
विवाहकालात्परतः प्रवीणै-
रसंभवात्तत्पतिषु प्रकल्प्यम् ॥१॥

अन्वयः—सीमन्तिनीनामपि शुभाशुभं पूर्वजनेर्विपाकात् (भवति) तत्फलं विवाहकालात्परः तत्पतिषु-असम्भवात्प्रवीणैः प्रकल्प्यम् ॥ १ ॥

भा०—स्त्री या पुरुषों के पूर्वजन्मों का किया हुआ पुण्य अथवा पाप तज्जन्य ही सुख दुःख इस जन्म में भोगना पड़ता है यथा "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्" और भी कहा है "नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि" इत्यादि अनेक वाक्यों से यह बात सिद्ध है कि किये हुये कर्मों का ही फल जीवों को भोगना पड़ता है। वही कर्म सूचक ग्रह इस जन्म में जन्म लग्न से इष्ट अथवा अनिष्ट स्थान में बैठकर शुभाशुभ फल देते हैं। स्त्रियों का जो शुभाशुभ फल है वह पुरुषों के साथ-साथ भोगना पड़ता है, अतः विवाह समय में कन्या की कुण्डली के ग्रह अवश्य विचारणीय हैं, ऋषियों का कहना है कि कन्याओं की जन्म कुण्डली में जो सुख-दुख देनेवाले, सन्तान सम्भव-असम्भव योग करने वाले, सौभाग्य तथा वैधव्य योग करने वाले ग्रह बैठ जाते हैं उसका फल विवाह के बाद पति को भी अवश्य भोगना पड़ता है अतः पूर्ण विचार करने वाले ज्यौतिषियों के पास जाकर रत्न, वस्त्र, फल इत्यादि से संतोष कर स्वस्थ चित्त होने के बाद जन्म पत्रस्थ ग्रहों का विचार कराना चाहिये ॥ १ ॥

अतीव सारं फलमङ्गनाना-
मुदीरितं शौनकनारदाद्यैः।
व्यक्तं यथा लग्ननिशाकराभ्यां
मया तथैव प्रतिपाद्यते तत् ॥२॥

अन्वयः—यथा अङ्गनानां शौनकानारदाद्यैरुदीरितं तत् लग्ननिशाकराभ्यां तथैव मया व्यक्तं प्रतिपाद्यते ॥ २ ॥

भा०—जैसे स्त्रियों का अत्यन्त सूक्ष्म फल विचार शौनक नारदादि ऋषियों ने किया है वही ग्रहजन्य समस्त फल लग्न और चंद्रमा से विचार करने के लिए इस ग्रन्थ में लिखा जाता है ॥ १ ॥

सौभाग्यादिस्थानसंज्ञा

सौभाग्यं सप्तमस्थाने शरीरं लग्नचंद्रयोः।
वैधव्यं निधनस्थाने पुत्रे पुत्रं विचिन्तयेत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—(स्त्रीणां) सौभाग्यं सप्तमस्थाने, शरीरं लग्नचन्द्रयोः, वैधव्यं निधनस्थाने, पुत्रं पुत्रे विचिन्तयेत् ॥ ३ ॥

भा०—स्त्रियों के सौभाग्य का विचार जन्म लग्न में सातवें घर से, शरीर

सुन्दर पुष्ट दुर्बल इत्यादि का विचार लग्न और चंद्रमा से, वैधव्य का विचार आठवें घर से और संतान का विचार पाँचवें घर से करना चाहिये ॥ ३ ॥

सुभगा दुर्भगा योगः--

सौम्याभ्यां प्रवरा शुभत्रययुते जाया भवेद्भूपतेः
सौम्यैकेनपतिप्रिया मदनभे दृष्टे युते जन्मनि ।
पापैकेन पुनर्विलोलनयना पापद्वयेनाधमा
पापानां त्रितयेन सा परकुलं हत्वा पतिं गच्छति ॥ ४ ॥

अन्वयः--जन्मनि मदनभे सौम्याभ्यां दृष्टे युते प्रवरा (तथा) शुभत्रययुते दृष्टे भूपतेः जाया भवेत्, सौम्यैकेन (युते दृष्टे) पतिप्रिया, पुनः पापैकेन (युते दृष्टे) विलोलनयना, पापद्वयेन(दृष्टे युते) अधमा त्रितयेन पापानां (दृष्टे युते) सा पतिं हत्वा परकुलं गच्छति ॥ ४ ॥

भा०--जन्म समय में जिस कन्या के जन्म लग्न से सातवें घर को दो शुभग्रह पूर्ण दृष्टि से देखते हों या युक्त हों तो वह सुशील और पति सेवा में चतुरा होती है, यदि सातवां घर तीन शुभग्रह से पूर्ण दृष्ट अथवा युक्त हो तो पृथ्वीपति की स्त्री होती है, यदि एक शुभ ग्रह से दृष्ट युक्त हो तो अपने पति की प्यारी होती है, और यदि सातवां घर को एक पापाग्रह पूर्ण देखता हो या युक्त हो तो वह स्त्री चञ्चल नेत्रवाली (परपतियों को कुदृष्टि से देखनेवाली), यदि सातवां घर दो पापग्रहों से पूर्ण दृष्ट या युक्त हो तो वह स्त्री (अधर्म करनेवाली परपति से प्रेम करनेवाली), यदि सातवां घर तीन पापग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त हो तो वह स्त्री अपने पति को मार कर दूसरे कुल में चली जानेवाली होती है ॥ ४ ॥

वैधव्यादियोगः—

जनुः काले यस्या मदनभवने वासरमणौ
पतिं त्यक्त्वा नूनं कुपितहृदया भूमितनये ।
अवश्यं वैधव्यं सपदि कमलाक्षी रविसुते
जरां पापैर्दृष्टे निजपतिविरोधं व्रजति वा ॥ ५ ॥

अन्वयः—यस्या जनुः काले वासरमणौ मदनभवने सा कुपितहृदया नूनं पतिं त्यक्त्वा, भूमितनये अवश्यं, वैधव्यं, (यदा) रविसुते (मदनभवने तदा कमलाक्षी सपदि जरां (गच्छति), वा पापैर्दृष्टे निजपति विरोधं व्रजति ॥ ५ ॥

भा०—जिस स्त्री के जन्म लग्न से सातवें घर में सूर्य बैठा हो तो वह स्त्री क्रोधयुक्त नित्य अपने पति से कलह करके अन्ततोगत्वा पति को छोड़ देती है। यदि सातवें घर में मङ्गल बैठा हो तो वह अवश्य विधवा होती है। यदि सातवें घर में शनि बैठा हो तो वह कमलाक्षी शीघ्र वृद्धा हो जाती है अथवा युवावस्था तक कुमारी रह के बालक पति के साथ उसका विवाह होता है। यदि तीन वा तीन से अधिक पापग्रह सातवें घर को देखते हों तो भी वह स्त्री अपने पति से विरोध करती है ॥ ५ ॥

पतिव्रतायोगः—

यस्याः शशाङ्के जनिलग्नभे वा
रामर्क्षगे सा प्रकृतिः स्थिरा स्यात्।
शुभेक्षिते रूपवती गुणज्ञा पति-
प्रिया चारुविभूषणाढ्या ॥ ६ ॥

अन्वयः—यस्याः शशाङ्के जनिलग्नभे वा रामर्क्षगे सा प्रकृतिः स्थिरा स्यात्, शुभेक्षिते रूपवती गुणज्ञा चारुविभूषणाढ्या पतिप्रियास्यात् ॥६॥

भा०—जिस स्त्री के जन्मकाल में चन्द्रमा, जन्मलग्न अथवा तीसरे घर में बैठा हों तो वह स्त्री गम्भीर स्वभाववाली होती है, यदि उक्त, चन्द्रमा को शुभ ग्रह देखते हों तो वह स्त्री अत्यन्त रूपवती, अनेक शुभ गुणों से युक्त, पतिव्रता और भूषण शृङ्गारादिकों से युक्त अपने पति की अत्यन्त बल्लभा होती है ॥ ६ ॥

यदाङ्गचन्द्रावसमे भवेतां
तदा नराकारसमाकुरूपा।
पापेक्षितौ पापयुतौ विशेषा-
द्गदातुरा रूपगुणैर्विहीना ॥ ७ ॥

अन्वयः—यदाङ्गचन्द्रावसमे भवेतां तदा नराकारसमाकुरूपा (भवेत्) यदा पापेक्षितौ पापयुतौ भवेतां तदा विशेषाद्गदातुरा रूपगुणैर्विहीना (स्यात्) ॥ ७ ॥

भा०—जिस स्त्री के जन्म समय में लग्न और चन्द्रमा विषम (१, ३, ५, ७....) राशि के लग्न और नवांश में हो तो वह स्त्री पुरुष के आकार में रहती हुई कुरूपा होती है। यदि लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में रहते हुये पापग्रहों से

दृष्ट अथवा युक्त हों तो वह स्त्री अनेक रोगों से युक्त सौन्दर्य और सद्गुणों से हीन होती है ॥ ७ ॥

अथ नारीराजयोगः--

जनुः काले यस्या मदनसदने दानवगुरौ
शुभाभ्यामाक्रान्ते गतवति तदा सा विधुमुखी ।
गजेन्द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा
प्रिया पत्युर्नित्यं प्रभवति शचीवत्क्षितितले ॥ ८ ॥

अन्वयः--यस्या जनुः काले शुभाभ्यामाक्रान्ते दानवगुरौ मदनसदने गतवति तदा सा विधुमुखि गजेन्द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा पत्युः प्रिया नित्यं शचीवत् क्षितितले प्रभवति ॥८॥

भा०—जिस स्त्री के जन्मकाल में दो शुभ ग्रह से दीखता हुआ शुक्र सातवें घर में बैठा हो तो उस सौभाग्यवती स्त्री के उच्च स्तनों के मध्य में मोतियोंकी माला सुशोभित होता है और वह स्त्री सब शृंगारों से युक्त अपने पति की प्राण वल्लभा होती हुई इन्द्राणी की तरह सुख करती हुई राजरानी कहलाती है ।८।

समाक्रान्ते लग्ने त्रिदशगुरुणा वाथ भृगुणा
बुधे कन्याराशौ मदनभवने भूमितनये ।
मृगे कर्के चन्द्रे सति भवति लावण्यतिलका
तपोरेखायोषा प्रभवति विशेषात्क्षितिपतेः ॥ ९ ॥

अन्वयः–अथ लग्नेत्रिदशगुरुणा वा भृगुणा समाक्रान्ते, बुधे कन्याः राशौ मदनभवने, भूमितनये मृगे,(तया) कर्के चन्द्रे सति लावण्यतिलका भवति (तथा) विशेषात्क्षितिपतेस्तपोरेखायोषा प्रभवति ॥ ९ ॥

भा०--जिसके जन्म समय में लग्न में बृहस्पति अथवा शुक्र बैठा हो बुध कन्या राशि में होकर सातवेंघर में बैठा हो, मङ्गल मकर राशि में बैठा हो, और कर्क राशि में चन्द्रमा बैठा हो तो वह सुन्दरी अत्यन्त शोभायुक्त स्त्रियों (रति) के सौन्दर्य को नीचा दिखानेवाली, राजरानियों में पटरानी कहलाती है ॥ ९ ॥

शशाङ्के कर्कस्थे भवति हि युवत्यां विधुसुते
तनौ जीवे मीने गवि भृगुसुते जन्मसमये ।

सहस्राली मान्या जगति नृपकन्या गुणवती।
विशेषादेषा स्यान्नृपतिपतिका पुण्यलतिका ॥ १० ॥

अन्वयः— जन्मसमये, शशङ्के कर्कस्थे, युवत्यां विधुसुते, मीने जीवे तनौ (तथाच) गवि भृगुसुते भवति (तदा) सहस्राळी मान्या जगति नृपकन्या गुणवति विशेषादेषा नृपतिपतिका पुण्यलतिका स्यात् ॥ १० ॥

भा०— जिसके जन्म समय मे चंद्रमा कर्क राशि में बैठा हो, कन्या राशि में बुध बैठा हो, मीन राशि का होकर बृहस्पति लग्न में बैठा हो और वृष राशि में शुक्र बैठा हो तो वह राजकन्या हजारों सखियों में आदरणीय, पृथ्वी में सद्गुणों से भरी हुई श्रीमहाराज की वामाङ्गी, धर्म की लता होती है ॥१०॥

अथ सप्तमे प्रत्येकग्रहफलानि-

दिनपताविह कामनिकेतनं गत-
वति प्रवराप्यवराभवेत्।
जनुषि वल्लभभावविवर्जिता
सुजनतारहिता वनिता भृशम् ॥ ११ ॥

अन्वयः-जनुषि दिनपताविह कामनिकेतनं गतवति (तदा) वनिता भृशं प्रवरापि अप्रवरा, वल्लभभावविवर्जिता, सुजनतारहिताभवेत् ॥११॥

भा०-जिसके जन्म समय में सूर्य सातवें घर में बैठा हो वह स्त्री अतिसुन्दर, मधुर भाषिणी होती हुई भी घर में सबको अप्रिय मालूम पड़ती है, अपने पति से कम आदर पानेवाली और गृह कलहकारिणी सी प्रतीत होती है ॥ ११ ॥

वृषे राकानाथे भवति मदने जन्मसमये
भवेदेषा योषा विमलवसना चारुवदना।
विनम्रा मुक्तालीवलितकुचभारेण नितरां
परालीलालक्ष्मीरतिपतिरमेव क्षितितले ॥ १२ ॥

अन्वयः--(यस्याः) जन्मसमये वृषे राकानाथे मदने भवेत् (तदा) एषा योषा विमलवसना चारुवदना, विनम्रा मुक्तालीवलितकुचभारेण नितरां क्षितितले परालीलालक्ष्मीरतिपतिरमेव भवति ॥ १२ ॥

भा०---जिसके जन्मसमय में वृष राशि में होकर चन्द्रमा सातवें घर में बैठा हो तो वह वराङ्गना स्वर्ण के समान कान्तिवाली, वस्त्र भूषणों से शृंगार किये

५

हुई, गजमुक्ता के हार से सुसज्जित स्तनों के भार से विनम्र हुई, निजवल्लभ के अङ्क में अनेक भाँति काम केलि (क्रीड़ा) करती हुई, इस भूमण्डल में कामदेव की स्त्री (रति) अथवा श्रीलक्ष्मी की तरह शोभा पाती है ॥ १२ ॥

अङ्गारके मदनमन्दिरमिन्दुरमिन्दुभावं
मन्दान्विते हरिभगे जननेऽङ्गनायाः ।
वधव्यमेव नियतं कपटप्रबंधा-
द्वाराङ्गना भवति सैव वराङ्गनापि ॥ १३ ॥

अन्वयः—यस्याः अङ्गनायाः जनने मदनमंदिरमिंदुभावं अङ्गारके, (वा) हरिभगे मन्दान्वितेऽङ्गारके, (तदा) सैव नियतं वैधव्यं अथवा वराङ्गनामपि कपटप्रवन्धाद्वाराङ्गना भवति ॥ १३ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में कर्क राशि का होकर मंगल सातवें घर में बैठा हो तो वह स्त्री अवश्य विधवा होती है, अथवा श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होकर छिप करके कुकर्म (वेश्या का कर्म) करती है, अथवा वेश्या हो जाती है ॥१३॥

अनेकस्त्री भर्ता भवति मखकर्त्ता च मदने
बुधे तुंगे यस्या जनुषि खलुतस्याः पतिरिह ।
स्वयं वामा कामाकुलितहृदया मोदकलया
परीता मुक्तालीरजतकनकालीमणिगणैः ॥ १४ ॥

अन्वयः-यस्याः जनुषि तुङ्गे वुधे मदने तस्याः पतिः अनेक स्त्री भर्ता, मखकर्ता (तथा इह स्वयं वामा कामकुलितहृदया मोदकलया मुक्तालीरजतकनकालीमणिगणैः परीता भवति ॥ १४ ॥

भा०-जिसके जन्म समय में कन्या राशि का होकर बुध सातवें घर में बैठा हो तो वह वरांगना अनेक स्त्रियों (सौतियों) के रहते हुये भी अपने पति का प्यारी, साथ-साथ में यज्ञ करनेवाली, कामविह्वल होकर रति क्रीड़ा में पति को अति सुख देनेवाली, और मणि, पन्ना, हीरा आदि के माला तथा आभूषणों को पहनकर अत्यन्त शोभा प्राप्त करनेवाली होती है ॥ १४ ॥

परिक्रान्ते यस्या मदनभवने देवगुरुणा
गुणज्ञा धर्मज्ञा निजपतिपदाब्जं भजति सा ।

मणीनां मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसा
समाक्रान्ता कान्ता रतिपतिपताकेव शशिभे ॥ १५ ॥

अन्वयः—यस्या मदनभवने देवगुरुणा परिक्रान्ते सा गुणज्ञा धर्मज्ञा निजपतिपदाब्जं भजति (यदि) शशिभे देवगुरुणा मदनभवने (तदा) मणीनां मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसा समाकान्ता कान्ता रतिपतिपताकेव (भवति) ॥ १५ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में सातवें घर में बृहस्पति बैंठा हो वह स्त्री अनेक गुणों से युक्त, देवादि अर्चन तथा श्वसुर सासु की आज्ञा में तत्पर रहनेवाली और अपने प्रिय पति के कमलरूपी चरणों की सेवा करनेवाली होती है। यदि कर्क राशि का होकर बृहस्पति सातवें घर में बैठा हो तो वह स्त्री उक्त सब गुणों से युक्त अनेक प्रकार के मणियों की माला को पहननेवाली तथा स्वर्ण घटित मणिमय भूषण (चद्रिका) को सिर पर बांधनेवाली, पति के साथ-साथ शृङ्गार युक्त रति कामदेव को भी लज्जित करने वाली होती है ॥१५॥

कवौ यस्या जन्मन्यपि मदनगे मीनभवने
तदा कान्तो दान्तो रतिपतिकलाकौतुकपटुः ।
धनुर्द्धर्त्ता भर्ता स्वयमपि च संगीतरसिका
विलोला पद्माक्षी वसनलसिता भूषणवृता ॥ १६ ॥

अन्वयः—यस्या जन्मनि मीनभवने कवौ मदनगे तदा कान्तो दान्तो रतिपतिकलाकौतुकपटुः (तदा) धनुर्धर्त्ताभर्त्ता स्वयमपि च सङ्गीत-रसिका विलोला पद्माक्षी वसनलसिता भूषणवृता (भवति) ॥१६॥

भा०-जिसके जन्म समय में मीन राशि का होकर शुक्र सातवें घर में बैठा हो तो उस युवती का युवक दया का सागर, काम क्रीड़ा में आगर और धनुष विद्या का बुद्धि नागर होता है। वह स्त्री भी गान विद्या को जानने वाली (तरह २ के कवित्त,छन्द, भजन प्रभाती इत्यादि गाना सुनाकर अपने प्राणवल्लभ के चित्त को अपने तरफ झुकानेवाली) कमलरूपी चञ्चल नेत्रवाली (अपने चञ्चल चपल रसिक नेत्रों के कोण कटाक्षों से अपने प्रिय पति के नेत्रों को आकर्षित कर अपने सजे हुए शृङ्गार को दिखानेवाली) उत्तम भूषण वस्त्रों से युक्त स्वपरिवार में आदर पानेवाली होती है ॥ १६ ॥

मदनभावगते तपनात्मजे
पतिरतीव गदाकुलितो भवेत् ।
मलिनवेषधरोविपलो महाञ्ज-
नुषि तुङ्गगते प्रवरो धनी ॥ १७ ॥

अन्वय—(यदि) जनुषि तपनात्मजे मदनभावगते (तदा) पतिरतीव गदाकुलितो मलिनवेषधरो महान् विकलो भवेत् (यदि) तपनात्मजे तुङ्गगते (तदा पति) प्रवरो धनी भवेत् ॥ १७ ॥

भा०— जिस स्त्री के जन्म समय में शनि सातवें घर में बैठा हो तो उसका पति अत्यंत रोगी, मेला कुचैला कपड़ा धारण करनेवाला और अति दुर्बल होता है। यदि शनि उच्च (तुला) राशि का होकर सातवें घर मे बैठा हो तो उसका पति अति धनाढ्य होता है ॥ १७ ॥

सप्तमे सिंहिकापुत्रे कुलदोषविवर्द्धिनी ।
नारी सुखपरित्यक्ता तुङ्गे स्वामिसुखान्विता ॥१८॥

अन्वयः—सप्तमे सिंहिका पुत्रे (तदा) नारी कुलदोषविवर्धिनी (तदा) सुखपरित्यक्ता (यदि) तुङ्गे स्वामि सुखान्विता भवति ॥ १८ ॥

भा०—जिसके जन्म लग्न से सातवें घर में राहु बैठा हो तो वह स्त्री अपने दोनों कुलमें कलङ्क लगानेवाली (व्यभिचारिणी) और दरिद्रा होती है। यदि मिथुन राशि का होकर राहु सातवें घर में बैठा हो तो वह स्त्री अपने घर में पति के साथ २ सुख भोगनेवाली होती है ॥ १८ ॥

अथान्ययोगाः—

मिथस्तौ शुक्रार्की यदि लवगतौ विक्षणमितौ
भवेतां वा लग्ने घटलवगते शुक्रभवने ।
अनङ्गैरालीलाकलितनररूपाभिरनिशं
स्थिताभिः कान्ताभिः खलु मदनशांतिं व्रजति सा ॥१९॥

अन्वयः—यदि खलु शुक्रभवने घटलवगते लग्ने (तथा) शुक्रार्की मिथस्तौ लवगतौ वीक्षणमितौ वा भवेतां (तदा) सा अनङ्गैरालीलाकलितनररूपाभिः स्थिताभि कान्ताभिः मदनशान्ति व्रजति । १९ ॥

भा०—जिस स्त्री के जन्म समय में कुम्भ का नवांश गत वृष या तुला लग्न हो अथवा शुक्र के घर में शनि बैठा हो और शनि के घर में शुक्र बैठा हो अथवा दोनों परस्पर नवांश में बैठकर एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो वह स्त्री कामदेव के पीड़ा से पीड़ित होकर पुरुष का आकार (वेष) धारण किये हुये कामदेव (अत्यन्त सुन्दर पुरुष) से कामजनित पीड़ा को निरन्तर शान्ति करती है ॥ १९ ॥

क्षपानाथे यस्या गतवति कुलीराङ्गमथवा
मदागारं सारं सुरगुरुबुधाभ्यामपि युतम्
महान्तोऽपिभ्रान्ताः कतिकति मनोजाधिकतया
पुरस्तां पश्यन्तो दधति परमानन्दलहरीम् ॥ २० ॥

अन्वयः—यस्याः कुलीराङ्गं क्षपानाथे अथवा सुरगुरुबुधाभ्य युतं मदागारं सारं गतवति (तदा) महान्तोऽपिपुरस्तां पश्यन्तो भ्रान्ताः कतिकति मनोजाधिकतया परमानन्दलहरीं दधति ॥ २० ॥

भा०–जिसके जन्म समय में कर्क लग्न हो और चन्द्रमा लग्न में बैठा हो, अथवा बुध और बृहस्पति के साथ २ मंगल सातवें घर में बैठा हो तो वह स्त्री ऐसी सुन्दरी होती है कि जिसके रूप लावण्य को देखकर सिद्ध महात्मा जन भी भ्रमजालवश मोहित होकर परमानन्द को प्राप्त होते हैं ॥ २० ॥

मृगागारे सारे गतवति विसारं सुरगुरौ
कवौ वा पातालं तपनतनयेनापि मिलिते ।
जनुः काले यस्याः करिमुकुटमुक्ताफलमणि-
व्रजानां मालाभिर्वलितमुत वक्षोजयुगलम् ॥ २१ ॥

अन्वयः -यस्याः जनुः काले मृगागारे सारे, विसारं सुरगुरौ वा तपनतनयेनापि मिलिते कवौ पातालं गतवति सति (तदा) करिमुकुटमुक्ता-फलमणिव्रजानां मालाभिर्वलितमुतवक्षोज युगलं (भवति) ॥२१॥

भा०—जिसके जन्म समय में मकर राशि में मंगल बैठा हो, मीन राशि में बृहस्पति बैठा हो, अथवा शनि के साथ २ शुक्र चौथे घर में बैठा हो तो गज-मोतियों के हार से उस स्त्री के दोनों स्तन अत्यन्त शोभा पाते हैं ॥ २१ ॥

वैधव्ययोगाः--

निशाकरात्सप्तमभावसंस्था-
महीजमन्दागुदिवाकराश्चेत् ।
तनोरिभेजन्मनिनैधनं वा
दिशन्ति वैधव्यमलं मदेवा ॥ २२ ॥

अन्वयः--यदि जन्मनि निशाकरात्सप्तमभावसंस्था महीजमन्दाऽगुदिवाकराः-चेत् वा तनोऽरिभेजन्मनिनैधनं वा (उक्ता ग्रहास्तादा) वैधव्य दिशन्ति-इत्यलन् ॥२२॥

भा०—जिस स्त्री के जन्म समय मे चंद्रमा से सातवें घर में मंगल, शनि, राहु ओरसूर्य बैठे हों तो वह अवश्य विधवा हो जाती है,अथवा लग्न छठ, आठवें और सातवें घर मे उक्त ग्रह बैठे हों तो वह स्त्री विधवा हो जाती है ॥२२॥

लग्नाधिपो वाथ मदालयेशो
वर्गे गतः पापनभश्चराणाम् ।
मदे तनौ वा खलखेटवर्गस्त-
दाकुलं मुञ्चति चञ्चलाक्षी ॥ २३ ॥

अन्वयः--अथ पापनभश्चराणां वर्गे लग्नाधिपः मदालयेशा वा (भवति) वा खलखेटवगः मदे तनौ (भवति) (तदा) चञ्चलाक्षी कुलं मुञ्चति ॥२३॥

भा०—जिसके जन्म समय में पापग्रहों के षड्वर्ग में लग्नेश अथवा सप्तमेश बैठा हो अथवा पापग्रहों का षड्वर्ग लग्न तथा सप्तमभाव में हो तो वह चञ्चलाक्षी कुलटा (वेश्या) हो जाती है ॥ २३ ॥

पापान्तराले यदिलग्नचन्द्रौ
स्यातां शुभालोकनवर्जितौ तौ ।
अनङ्गलोला खलसङ्गमेन
कुलद्वयं हन्ति तदा मृगाक्षी ॥ २४ ॥

अन्वयः--यदि लग्नचंद्रौ पापान्तराले स्याताम् (तथा) तौ शुभावलोकनवर्जितौ (भवतः) तदा मृगाक्षी-अनङ्गलोला खलसङ्गमेन कुलद्वयं हन्ति ॥२४॥

भा०—यदि लग्न और चंद्रमा पापग्रहों के मध्य में बैठा हो (पाप ग्रहों के साथ हो) और इन दोनों को शुभग्रह न देखते हों तो वह मृगनयनी कामिनी अति कामातुर (कामविह्वल) होकर नीच मनुष्यों के संसर्ग से अपने दोनों कुल के धर्म को नाश कर अन्य कुल में रमण करती है अर्थात् व्यभिचारिणी हो जाती है ॥ २४ ॥

व्ययेऽष्टमे भूमिसुतस्य
राशावगौ सपापे भवतीह रण्डा ।
मदे कुलीरे सरवौ कुजेऽपि
धवेन हीना रमतेऽन्यलोकैः ॥२५॥

अन्वयः—भूमिसुतस्य राशौ अगौ स पापे व्ययेऽष्टमे (तदा) इह रण्डा भवति, (तथा मदे कुलीरे स रवौ कुजेऽपि (तदा) धवेन हीनाऽन्यलोकैः सह रमते ॥ २५ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में मङ्गल की (१, ८) राशि का होकर राहू, पाप ग्रहों के साथ २ बारहवें अथवा आठवें घर में बैठा हो तो वह स्त्री विधवा हो जाती है, तथा यदि सातवें घर में कर्क राशि हो और सूर्य, मंगल वहीं बैठे हों तो वह स्त्री विधवा होकर दूसरे पुरुष के साथ रमण करती है ॥ २५ ॥

तनौ चतुर्थे निधने व्यये वा
मदालये पापयुतः कुजश्चेत् ।
अनङ्गलीलां प्रकरोति जारैः
पतिं तिरस्कृत्य विलोलनेत्रा ॥ २६ ॥

अन्वय—यदि चेत् तनौ, चतुर्थे, निधने, व्यये, मदालये वा पाप युतः कुजो भवत्तदा विलोलनेत्रा पतिं तिरस्कृत्य जारैः (सह) अनङ्ग लीलां प्रकरोति ॥ २६ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में लग्न, चौथा, आठवां बारहवां अथवा सातवां, इनमें से किसी भी घर में पाप ग्रह के साथ २ मंगल बैठा हो तो वह चञ्चलाक्षी अपने पतिको तिरस्कार कर अन्य पुरुष (जार)के साथ काम क्रीड़ा करती है ॥२६॥

परस्परांशोपगतौ भवेतां
महीजशुक्रौ जननेऽङ्गनायाः ।

स्वयं मृगाक्षी ह्यभिसारिकेव
प्रयाति कामाकुलितान्यगेहे ॥ २७ ॥

अन्वय—यदि अङ्गनायाः जनने महीजशुक्रौ परस्परांशोपगतौ भवेतां (तदा) सा मृगाक्षी अभिसारिकेव स्वयं कामाकुलिता यन्यगेहं प्रयाति ॥ २७ ॥

भा०-जिस स्त्री के जन्म समय में मंगल के नवांश में शुक्र और शुक्र के नवांश में मंगल बैठा हो तो वह मृगनयनी अभिसारिका* की तरह (लज्जा छोड़कर अति कामातुर होकर स्वयं दूसरे के घर में (अन्य पति के पास) जाकर अपने कामाग्नि को बुझाती है ॥ २७ ॥

पापगृहे सप्तमगे बलोने-
ऽशुभेन दृष्टे पतिसौख्यहीना ।
स्यातां मदे भौमकवी सचन्द्रौ
पत्याज्ञया सा व्यभिचारिणी स्यात् ॥ २८ ॥

अन्वयः—अशुभेन दृष्टे बलोने पापग्रहे सप्तमगे (तदा) पतिसौख्य-हीना, भौमकवी सचन्द्रौ मदे स्यातां (तदा) सा पत्याज्ञया व्यभि-चारिणी स्यात् ॥ २८ ॥

भा०-पापग्रहों से दीखते हुए बलहीन (नीचस्य अस्त इत्यादि) होकर पाप ग्रह सातवें घर में बैठे हों तो उस स्त्री को अपने पति का सुख नहीं मिलता, यदि मंगल और शुक्र चन्द्रमा के साथ २ सातवें घर में बैठे हों तो वह स्त्री अपने पति की आज्ञा से व्यभिचारिणी होती है अर्थात् व्यभिचार कर्म कराती है ॥ २८ ॥

पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे
भर्ता दिवं गच्छति सप्तमाब्दे ।
निशाकरे चाष्टमवैरिभाने
तदाष्टमाब्दे निधनं प्रयाति ॥ २९ ॥

अन्वयः-पापग्रहे सप्तमलग्नगेहे तदा सप्तमाब्दे भर्ता दिवं गच्छति ।

टि०-हित्वा लज्जा भये श्लिष्ठा मदेन मदने न या ।
अभिसारयते कान्तं सा भवेदभिसारिकेति ॥

(अथ) च अष्टमवैरिभावे निशाकरे (तदा) अष्टमाब्दे भर्ता निधनं प्रयाति ॥ २९ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में सातवें घर अथवा लग्न में पापग्रह बैठे हों तो उस स्त्री का पति सातवें वर्ष में मर जाता है, यदि चंद्रमा छठें वा आठवें घर में बैठा हो (पाप दृष्ट युक्त हो) तो उसका पति आठवें वर्ष में मर जाता है ॥२९॥

बालविधवायोगः—

सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः ।
पापेक्षणयुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—यस्याः पापेक्षणयुतः सप्तमेशः अष्टमे (तथा) निधनाधिपः सप्तमे (भवति) (तदा सा) बाला ध्रुवं वैधव्यं लभते ॥ ३० ॥

भा०—जिस कुमारी के जन्म समय में पापग्रहों से दृष्ट, युक्त सप्तमेश आठवें घर में बैठा हो और अष्टमेश भी पाप दृष्ट युक्त सातवें घर में बैठा हो तो वह कन्या अवश्य बालवैधव्य को प्राप्त हो जाती है ॥ ३० ॥

सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीड़ितौ ।
तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—(यदा) पापपीड़ितौ सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा (भवती) तदा नारी वैधव्यमाप्नोति नैवात्र संशयः ॥ ३१ ॥

भा०—जिस कन्या के जन्म समय में पापग्रहों से पीड़ित होकर सप्तमेश और अष्टमेश छठें अथवा आठवें घर में बैठे हों तो वह कन्या विधवा हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं है ॥ ३१ ॥

मातासहव्यभिचारिणीयोगः—

मन्दाररार्शौ ससिते शशाङ्के
खलेक्षिते लग्नगते मृगाक्षी ।
मात्रा सहैव व्यभिचारिणी
स्यान्मन्दे खलांशे व्रणविद्धयोनिः ॥ ३२ ॥

अन्वयः—खलेक्षिते ससितेशशाङ्केमन्दाररार्शौ लग्नगते (तदा) मृगाक्षी मात्रा सहैव व्यभिचारिणी स्यात् (यदि) मन्दे खलांशे (सति) (तदा) मात्रा सह व्रणविद्धयोनिः स्यात् ॥ ३२ ॥

भा०—पापग्रहों से दीखता हुआ शुक्र के साथ २ चंद्रमा, शनि अथवा मंगल की राशि (१०, ११. १, ८) में बैठा हुआ लग्नगत हो तो वह मृगाक्षी अपने माता के साथ २ व्यभिचारिणी हो जाती है, यदि जन्म समय में पापग्रहों की राशि और नवांश (षड्वर्ग) सातवें घर में हो तो वह कन्या माता के साथ २ व्यभिचारिणी होकर योनि व्रण से पीड़ित (सुजाकी) होती है ॥ ३२ ॥

अथ राशिवशेन प्रत्येकत्रिंशांशफलानि—

तत्रादौ भौमराशौ--

यदाङ्गचन्द्रौ कुजभे कुजस्य
त्रिंशांशके दुष्टतमैव कन्या ।
मन्दस्य दासी हि गुरौ तु साध्वी
मयाविनी ज्ञस्य कवेः कुवृत्ता ॥ ३३ ॥

अन्वयः—यदांगचन्द्रौ कुजभे कुजस्य त्रिंशांशके (तदा) कन्या दुष्टतमैव, मन्दस्य दासी, गुरौ तु साध्वी: ज्ञस्य मायाविनी, कवेः (त्रिंशांशके) कुवृता (स्यात्) ॥ ३३ ॥

भा०— जिसके जन्म समय में लग्न और चंद्रमा मंगल की राशि में बैठा हुआ मंगल ही के त्रिशांश मे हो तो वह कन्या अति दुष्ट स्वभाव वाली होती है, यदि उस राशि में होकर शनि के त्रिशांश में हो तो वह कन्या दासी होती है, यदि उक्त स्थान होकर बृहस्पति के त्रिशांश में हो तो वह कन्या पतिव्रता तथा शुभशीलयुक्ता होती है, यदि बुध के त्रिशांश में हो तो मायावी होती है, यदि शुक्र के त्रिशांश में लग्न और चंद्रमा हो तो वह कन्या व्यभिचारिणी होती है ॥ ३३ ॥

शुक्रराशौ:—

शुक्रभे कुजखाग्न्यंशे दुष्टा सौरेः पुनर्भवा ।
गुरोर्गुणमयी विज्ञा ज्ञस्य कामातुरा भृगोः ॥ ३४ ॥

अन्वयः—शुक्रभे कुजाखाग्न्यंशे दुष्टा, सौरेः पुनर्भवा, गुरोर्गुणमयी, ज्ञस्य विज्ञा, भृगोः कामातुरा भवेत् ॥ ३४ ॥

भा०--यदि शुक्र की राशि में लग्न चन्द्रमा बैठकर मंगल के त्रिशांश में हो तो वह कन्या दुष्टा होती है, शनि के त्रिशांश में हो तो उस कन्या का दो बार

विवाह होता है, बृहस्पति के त्रिशांश में हो तो सद्गुणयुक्ता, बुध के त्रिशांश में चतुरा (पण्डिता) और शुक्र के त्रिशांश में कामातुरा होती है ॥ ३४ ॥

वधराशौ—

बुधभे भूमिपुत्रस्य कापटी क्लीववच्छनेः ।
गुरोः सती विदो विज्ञा कवेः कामातुरा भवेत् ॥ ३५ ॥

अन्वयः - बुधभे भूमिपुत्रस्य (त्रिशांशे) कापटी, शनेः क्लीववत्, गुरोः सती, विदो विज्ञा, कवेः कामातुरा भवेत् ॥ ३५ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में बुध की राशि में लग्न, चंद्रमा बैठकर मंगल के त्रिशांश में हो तो वह कन्या कपट व्यवहार करनेवाली, शनि के त्रिशांश में नपुंसकी, बृहस्पति के त्रिशांश में सती, बुध के त्रिशांश में अति गुणवती और शुक्र के त्रिशांश में कामविह्वला होती है ॥ ३५ ॥

चन्द्रराशौ -

कुलीरभे भूमिसुतस्य वेश्या
शनेः पतिप्राण विधातकर्त्री ।
गुरोर्गुणव्रातवती बुधस्य
शिल्पक्रियाज्ञा कुलटा भृगोः स्यात् ॥ ३६ ॥

अन्वयः--कुलीरभे भूमिसुतस्य वेश्या, शनेः पतिप्राणविधातकर्त्री, गुरोः गुणव्रातवती, बुधस्य शिल्पक्रियाज्ञा, भृगोः कुलटा स्यात् ॥ ३६ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में कर्कराशि में लग्न, चंद्रमा बैठकर मंगल के त्रिशांश में हो तो वह स्त्री वेश्या हो जाती है, शनि के त्रिशांश में पतिप्राण-घातिनी, बृहस्पति के त्रिशांश में गुण समूहों से युक्ता, बुध के त्रिशांश में शिल्प-क्रिया में अति चतुरा और यदि शुक्र के त्रिशांश में लग्न चंद्रमा बैठे हों तो वह स्त्री कुलटा (वेश्या) होती है ॥३६॥

सूर्यराशः--

सिंहे नराकारधरा कुजस्य
वारांगना भानुसुतस्य नारी ।
गुरोरिलाधीशवधूर्बुधस्य
दुष्टा कवेरंगजगामिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

अन्वयः--सिंहे कुजस्य (त्रिशांशके) नारी नराका रघरा भानुसुतस्य वाराङ्गना, गुरोः इलाधीश वधूः, बुधस्य दुष्टा, कवेः अङ्गजगामिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में सिंहराशि में लग्न और चंद्रमा बैठकर मंगल के त्रिशांश में बैठे हों तो वह स्त्री पुरुष के वेष को धारण करनेवाली, अथवा पुरुष की तरह हुकूमत चलाने वाली होती है, शनि के त्रिशांश में वारांगना (वेश्या), बृहस्पति के त्रिशांश में राजा की स्त्री (रानी), बुध के त्रिशांश में दुष्टा और शुक्र के त्रिशांश में लग्न चंद्रमा हो तो वह स्त्री अपने पुत्र से भोग कराने वाली होती है ॥ ३७ ॥

गुरुराशौ--

गुणैर्विचित्रा गुरुभे कुजस्य
मन्दस्य मन्दा गुणतत्वविज्ञा ।
जीवस्य विज्ञा शशिनन्दनस्य
शुक्रस्य रम्यापि भवेदरम्या ॥ ३८ ॥

अन्वयः -गुरुभे कुजस्य गुणैर्विचित्रा मन्दस्य मन्दा, जीवस्य गुणतत्वविज्ञा, शशिनन्दनस्य विज्ञा, शुक्रस्य रम्यापि-अरम्या भवेत् ॥ ३८ ॥

भा०—जिस कन्या के जन्म समय में बृहस्पति राशि में लग्न और चंद्रमा बैठकर मंगल के त्रिशांश में हो तो वह कन्या अनेक सद्गुणों से युक्त होती है शनिके त्रिशांश में मूर्खा, बृहस्पतिके त्रिशांश में गुणोंके सूक्ष्मविचार को जाननेवाली, बुध के त्रिशांश में पण्डिता और शुक्र के त्रिशांश में लग्न चंद्रमा हो तो वह स्त्री अति सुन्दरी होती हुई कुरूपा सी प्रतीत होती है ॥ ३८ ॥

शनिराशौ--

मन्दालये भूमिसुतस्य दासी
शनेरसाध्वी भवतीति साध्वी ।
गुरोर्निशानाथ सुतस्य दुष्टा
शुक्रस्य वन्ध्या क्रमतः प्रदिष्टा ॥ ३९ ॥

अन्वयः--मन्दालये भूमिसुतस्य दासी, शनेरसाध्वी, गुरोः साध्वी, निशानाथ सुतस्य दुष्टा, शुक्रस्य वन्ध्या भवति, इति क्रमतः प्रदिष्टा । ३९ ।

भा०—जिसके जन्म समय में शनि के राशि में लग्न और चन्द्रमा बैठकर मंगल के त्रिशांश में बैठे हों तो वह स्त्री दासी होती है, शनि के त्रिशांश में हो तो दुष्टा, बृहस्पति के त्रिशांश में सुशीला बुध के त्रिशांश में दुष्टा, और शुक्र के त्रिशांश में वन्ध्या होती है ॥ ३९ ॥

अथान्ययोगाः—

मन्दे मध्यबले वक्रवीन्दु शशिजैर्वीर्यच्युतैः प्रायशः
शेषैर्वीर्यसमन्वितैः पुरुषवन्नारी यदीजे तनुः ।
जीवाङ्गाररवीन्दुजैर्बलयुतैश्चेदङ्गराशौ समे
गीतातत्त्वविचारसारचतुरा वेदान्तवादिन्यपि ॥ ४० ॥

अन्वयः—यदीजे तनुः मन्दे मध्यबले, कवीन्दुशशिजैर्वीर्यच्युतैः प्रायश शेषैर्वीर्यसमन्वितैः (तदा) नारी पुरुषवत् (भवति) चेत् अङ्ग, राशौ समे जीवाङ्गाररवीन्दुजैर्बलयुतैः (तदा) नारी गीतातत्त्वविचारसारचतुरा वेदान्तवादिन्यपि (भवति) ॥ ४० ॥

भा०—जिस कन्या के जन्म समय में विषम (मेष, मिथुन, सिंह-इत्यादि) लग्न हो, शनि मध्यम बलयुक्त हो, शुक्र, चंद्रमा और बुध बलहीन हों तथा प्रायः करके शेष सब ग्रह बलवान् हों तो वह स्त्री पुरुष के आकार में रहती है। यदि जन्मकाल में सम (वृष, कर्क इत्यादि) राशि हो और बृहस्पति, मङ्गल सर्यं, बुध बलवान् हों तो वह स्त्री गान विद्या में अति चतुरा और वेदांतशास्त्र को भी जाननेवाली होती है ॥ ४० ॥

अष्टमभाव विचारः—

यदाष्टमे देवगुरौ भृगौ वा
विनष्टगर्भा मृतपुत्रका वा ।
कुजेऽष्टमे सा कुलटा मृगाक्षी
चन्द्रेऽष्टमे स्वामिसुखेन हीना ॥४१॥

अन्वयः-यदाष्टमे देवगुरौ भृगौ वा (तदा) विनष्टगर्भा मृतपुत्रका वा, कुज (यदा) अष्टमे (तदा) सा मृगाक्षी कुलटा, चन्द्रे अष्टमे स्वामिसुखेन हीना (भवति) ॥ ४१ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में जन्मलग्न से आठवें घर में बृहस्पति अथवा

शुक्र बैठा हो तो उस स्त्री के गर्भ नष्ट हो जाते हैं अथवा सन्तान हो होकर मर जाते हैं, यदि आठवें घर में मंगल बैठा हो तो वह मृगनयनी कुलटा (वेश्या) होती है। यदि आठवें घर में चन्द्रमा बैठा हो तो उस स्त्री को अपने पति का सुख नहीं मिलता है ॥ ४१ ॥

मन्देऽष्टमे रोगरतस्य भार्य्या
दिनाधिपे सा परितापतप्ता ।
अनङ्गरङ्गा परकान्तसङ्गा
मृताऽगौ सा कुलधर्म्मभङ्गा ॥ ४२ ॥

अन्वयः- मन्दे अष्टमे रोगरतस्य भार्या, दिनाधिपेऽष्टमे, सा परितापतप्ता, अगौमृतो सा अनङ्गरङ्गा परकान्तसंगा कुलधर्मभंगा च (भवति) ॥ ४२ ॥

मा०—यदि आठवें घर में शनि बैठा हो तो उसका पति रोगी रहता है, यदि आठवें घर में सूर्य बैठा हो तो अनेक व्याधियों के सन्ताप से दुःखी होती है, यदि राहु आठवें घर में बैठा हो तो वह स्त्री अत्यन्त काम पीड़ा से सन्तप्त होकर अपने पति से इच्छा पूर्ति न करके अन्य पुरुषों के साथ रमण करके अपने कुल के धर्म को नष्ट कर डालती है ॥ ४२ ॥

अथ पञ्चमभावविचारः—

पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि ।
केन्द्रकोणे सदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥ ४३ ॥

अन्वयः—(यदा) पञ्चमे शुभ संदृष्टे, पञ्चमाधिपतो अपि केन्द्रकोणे (गते) तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥ ४३ ॥

मा०—जिसके जन्म समय में पाँचवें घर के ऊपर शुभ ग्रहों की पूर्ण दृष्टि हो और पञ्चम भावेश भी केंद्र, कोण (१, ४, ७, १०, ५, ९) में बैठा हो तो उस स्त्री को सन्तान (पुत्र) सुख होता है ॥ ४३ ॥

पञ्चपुत्रवती जीवे सबले च सिते विधौ ।
सुतासुखवती पापे नारी सन्तानवर्जिता ॥ ४४ ॥

अन्वयः—सबले जीवे (पञ्चमे) पञ्चपुत्रवती, सबले सिते विधौ च (पञ्चमे) सुता सुखवती, पापे (पञ्चमे) (तदा) नारी सन्तान वर्जिता (भवेत्) ॥ ४४ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में बलवान् बृहस्पति पांचवें घर में बैठा हो तो उस स्त्री के पांच पुत्र होते हैं यदि बलवान् होकर शुक्र अथवा बुध पांचवें घर में बैठा हो तो कन्याओं का सुख होता है यदि पांचवें घर में पाप ग्रह बैठे हों तो उस स्त्री को संतान नहीं होती ॥ ४४ ॥

भद्रासार्पानलवरुणभे भानुमन्दारवारे
यस्या जन्म प्रभवति तदा सा विषाख्या कुमारी।
पापे लग्नेऽशुभखगयुतः पापखेटावरिस्थौ
स्यातां यस्या जननसमये सा कुमारी विषाख्या ॥ ४५ ॥

अन्वय—भद्रासार्पानलवरुणभे भानुमन्दारवारे यस्या जन्म प्रभवति तदा सा कुमारी विषाख्या। (तथा) यस्या जन्मसमये अशुभखगयुतः पापे लग्नेपापखेटावरिस्थौ तदा सा कुमारी विषाख्या (भवेत्) ॥ ४५ ॥

भा०—द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र, रविवार अथवा सप्तमी तिथि, कृत्तिका नक्षत्र, शनिवार अथवा द्वादशी तिथि, शतभिषा नक्षत्र, मङ्गलवार जिस कन्या के जन्मकाल में हो तो वह विषाख्या (विष से भरी हुई) होती है। अथवा जिसके जन्म समय में पापग्रहों से युक्त पाप ग्रहों की राशि जन्म लग्न में हो और दो पाप ग्रहों से छठें घर में बैठे हों तो भी वह कन्या विषाख्या होती है ॥ ४५ ॥

आदित्यसूनोर्दिवसे द्वितीया
भुजङ्गभे भौमदिनेऽम्बुजर्क्षे।
चेत्सप्तमी वाथरवौ विशाखा
हरेस्तिथौ वापि च सा विषाख्या ॥ ४६ ॥

अन्वयः—अथ चेत् (जन्मनि) आदित्यसूनोर्दिवसे द्वितीया भुजंगभे, वा भौमदिनेम्बुजर्क्षे सप्तमी, वाथरवौ विशाखा हरेस्तिथौ (भवेत्तदा) सा (कुमारी) विषाख्या (भवेत्) ॥ ४६ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में शनिवार, द्वितीया तिथि और अश्लेषा नक्षत्र अथवा मङ्गल दिन, शतभिषानक्षत्र और सप्तमी तिथि अथवा रविवार, विषाखा-नक्षत्र और द्वादशी तिथि हो तो कन्या विषाख्या होती है ॥ ४६ ॥

धर्मगेहगते भौमे लग्नगे रविनन्दने।

पञ्चमे दिवसाधीशे सा विषाख्या कुमारिका ।। ४७ ।।

अन्वयः--धर्मगेहगते भौमे, लग्नगे रविनन्दने, पञ्चमे दिवसाधीशे, सा कुमारिका विषाख्या (भवति) ।। ४७ ।।

भा०—जिसके जन्म समय में नवें घर में मंगल बैठा हो, जन्म लग्न में शनि बैठा हो और पाचवें घर में सूर्य बैठा हो तो वह कुमारी विषाख्या होती है ।। ४७ ।।

विषाख्यालक्षणम्--

विषाख्या शोकसन्तप्ता दुर्भगा मृतपुत्रिका ।
वस्त्राभरणहीना च पुराणैरुदिता बुधैः ।। ४८ ।।

अन्वयः--विषाख्या शोकसंतप्ता, दुर्भगा मृतपुत्रिका, वस्त्राभरणहीना चेति पुराणः बुधैः उदिताः ।। ४८ ।।

भा०--जो कन्या विषसंज्ञक होती है वह अनेक कष्टों से संतप्त, भाग्यहीन, संतान हीन और वस्त्र भूषण से हीन होती है ऐसा प्राचीन आचार्यों ने कह रखा है ।। ४८ ।।

विषयोगभंगः--

सप्तमे सप्तमाधीशः शुभो वा लग्नचन्द्रयोः ।
विषयोगमलं हन्ति सद्यो हरिरिभं यथा ।। ४९ ।।

अन्वयः--लग्नचन्द्रयोः सप्तमे सप्तमाधीशः शुभो वा (भवेत्तदा) विषयोगमलं सद्यो हन्ति यथा हरिरिभं हन्तिः ।। ४९ ।।

भा०—जिसके जन्म लग्न से और चंद्रमा से सातवें घर का स्वामी; सातवें घर में ही बैठा हो अथवा लग्न और चंद्रमा से सातवें घर में शुभग्रह बैठे हों तो विषजन्यदोष (विषयोग) को शीघ्र नाश कर देते हैं जैसे सिंह हाथियों के झुण्ड को नष्ट कर देता है ।। ४९ ।।

इत्थं विवाहकालेऽपि ज्ञातव्यं लग्नचन्द्रयोः ।
तदधीनं यतः स्त्रीणां शुभाशुभफलं भवेत् ।। ५० ।।

अन्वयः--इत्थं स्त्रीणां विवाहकालेऽपि लग्नचन्द्रयोः ज्ञातव्यं, यतः शुभाशुभफलं तदधीनं भवेत् ।। ५० ।।

भा०—इस प्रकार कन्याओं के विवाह काल में लग्न और चन्द्रमा से सब ग्रहों (योगों) का विचार कर लेना चाहिये, क्योंकि योग (ग्रह) के अनुकूल ही शुभ और अशुभ फल पुरुषों को स्त्री के साथ-साथ जन्मपर्यंन्त भोगना पड़ता है ॥ ५० ॥

वैधव्यभङ्गोपायः—

वैधव्योगयुक्तायाः कन्यायाः शान्तिपूर्वकम्।
वेदोक्तविधिनोद्वाहं कारयेच्चिरजीविना ॥ ५१ ॥

अन्वयः—वैधव्ययोगयुक्तायाः कन्यायाः शान्तिपूर्वकं वेदोक्त-विधिना चिरजीविना (वरेण) उद्वाहं कारयेत् ॥ ५१ ॥

भा०--जिस कन्या को वैधव्य योग लगा हो उसको पहिले सावित्रीव्रत कराके, अथवा विष्णु प्रतिमा के साथ विवाह कराके चिरंजीवी वर के साथ विवाह कर देना चाहिये ॥ ५२ ॥

इति श्रीभावकुतूहले उत्साहवर्द्धिनीभाषाटीकायां
स्त्रीजातकाऽध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

दशमोऽध्यायः

कन्यायाः शुभाशुभाङ्गलक्षणानि—

शुभलक्षणसंपन्ना भवेदिह यदाऽङ्गना।
तत्करग्रहणादेव वर्द्धते गृहिणां सुखम् ॥ १ ॥

अन्वयः—यदाङ्गना शुभलक्षणसम्पन्ना भवेदिह तत्करग्रहणादेव गृहिणां सुखं वर्द्धते ॥ १ ॥

भा०--यदि कन्या अच्छे योगों में उत्पन्न हो अथवा उसके शरीर में शुभ लक्षण हों तो उसके साथ विवाह करने के बाद ही से पति के घर में सुख सम्पत्ति बढ़ने लगती है ॥ १ ॥

शुभाशुभं पुरा गीतं वेदव्यासेन धीमता।
प्रकाश्यते तदेवात्र नारीणामङ्गलक्षणम् ॥ २ ॥

अन्वयः—धीमता वेदव्यासेन नारीणां अङ्गलक्षणं शुभाशुभं (यत्) पुरागीतं तदेवात्र प्रकाश्यते ॥ २ ॥

भा०--महात्मा वेदव्यास करके स्त्रियों के अंग का शुभाशुभ लक्षण जो पहले (शास्त्रों में) कहा गया है वही लक्षण इस ग्रंथ में लिखा जाता है ॥ ॥

पादतललक्षणम्—

युवतिपादतलं किल कोमलं
सममतीव जपाकुसुमप्रभम् ।
दिशति मांसलमुष्णमिलापते-
रतिहितं बहुधर्म समन्वितम् ॥ ३ ॥

अन्वयः--युवतिपादतलं किल कोमलं अतीवसमं जपाकुसुमप्रभं (किन्तु) मांसलं, उष्णं विवर्जितं (भवति) (तदा) बहुधर्म समन्वितं इलापते अति हितं दिशति ॥ ३ ॥

भा०--जिस स्त्री के पैर का तलवा अति कोमल, सम, अढ़ौल के फूल की तरह लाल रंग का हो किन्तु स्थूल और गर्म (पसीना देनेवाला) न हो तो वह धर्मयुक्ता प्रिया राजरानी होकर श्रीमहाराजा को अति सुख देती है ॥ ३ ॥

कमलकम्बुरथध्वजचक्रवत्
पृथुलमीनविमानवितानवत् ।
भवति लक्ष्म पदे यदि योषितां
क्षितिभृतां वनिता विभुतावृता ॥ ४ ॥

अन्वयः—यदि योषितां पदे कमलकम्बुरथध्वजचक्रवत्पृथुलमीन-विमानवितानवत् लक्ष्म भवति (तदा) विभुतावृता क्षितिभृतां वनिता भवेत् ॥ ४ ॥

भा०—यदि स्त्री के पैर के तलवे में कमल का फूल, शंख, रथ, ध्वजा, चक्र, मछली विमान (पालकी) अथवा वितान (चाँदनी) का चिन्ह हो तो वह सौभाग्यवती राजरानी होकर राज्यकुल में सुख सम्पत्ति को बढ़ाती है ॥ ४ ॥

शूर्पाकारं विवर्णञ्च विशुष्कं परुषं तथा ।
रुक्षं पादतलं तन्व्या दौर्भाग्यपरिसूचकम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—(यस्याः) पादतलं शूर्पाकारं विवर्णं विशुष्कं परुषं तथा रुक्षं (भवेत् सा) तन्व्या दौर्भाग्यपरिसूचकं भवति ॥ ५ ॥

भा० —जिस स्त्री के पैर का तलवा सूप के आकार का हो सुर्ख या गुलाबी

अंग का न हो शुष्क [निरस] हो, या रुक्ष हो और पैर में खरखराहट हो तो वह स्त्री पूर्ण अभागिनी होती है ॥ ५ ॥

यस्याः समुन्नताङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुलसौख्यदः।
शूर्पाकारा नखा यस्याः सा भवेद्दुःखभागिनी ॥ ६ ॥

अन्वय--यस्याः समुन्नताङ्गुष्ठो वर्तुलो (तदा) अतुल सौख्यदः, (तथा) यस्याः नखाः शूर्पाकारा सा दुःखभागिनी भवेत् ॥ ६ ॥

भा०--जिस स्त्री के पैर का अंगूठा ऊँचा और गोल हो तो वह अत्यन्त सुख देनेवाली होती है, जिसके पैर के नख सूर्प [सूप] के आकार का हो तो वे कष्ट भोगानेवाले होते हैं ॥ ६ ॥

अथ गमनलक्षणम्—

संचलन्त्यां धराधूलिधारा यदा
राजमार्गेऽबलायां बलादुच्छलेत्।
पांसुला सा कुलानां त्रयं सत्वरं
नाशयित्वा खलैर्मोदते सर्वदा ॥ ७ ॥

अन्वयः—यदा अवलायां राजमार्गे सचलन्त्यां धराधूलिधारा बलादुच्छलेत् (तदा) सा पांसुला सत्वरं नाशयित्वा सर्वदा खलैर्मोदते ॥७॥

भा०-जिस स्त्री के रास्ता चलते समय पृथ्वी की धूली उड़े अर्थात् पृथ्वी में पैर घसीटते हुये चले वह कुलघ्नी अपने तीनों (मातुल, पिता, श्वसुर) कुल को नाश कर नीच कुल के पुरुषों के साथ सर्वदा रमण करती है ॥ ७ ॥

श्लिष्टाङ्गुलीलक्षणम्—

यस्या अन्योन्यमारूढाः पादांगुल्यो भवन्ति चेत्।
सा पतिन्बहुधा हत्वा वारवामा भवेदिह ॥ ८ ॥

अन्वयः—यस्याः पादाङ्गुल्यः अन्योन्यमारुढाश्चेद्भवन्ति सा बहुधा पतीन् हत्वा वारवामा भवेत् ॥ ८ ॥

भा०--जिस स्त्री के पैर की अंगुली दूसरे किसी भी अंगुली के ऊपर चढ़ा हो तो वह व्यभिचारिणी अनेक पतियों को मारकर वारवामा (वेश्या) हो जाती है ॥ ८ ॥

कनिष्ठा न स्पृशेद्भूमिं चलन्त्या योषितस्तदा ।
सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा जारेण रमते पुनः ॥ ९ ॥

अन्वयः-- यस्याः योषितश्चलन्त्याः कनिष्ठा भूमिं न स्पृशेत्तदा सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा पुनः जारेण रमते ॥ ९ ॥

भा०--जिस स्त्री के चलते समय पैर की कनिष्ठा अंगुली भूमि को स्पर्श न करे वह अपने पति को मारकर अन्य पति (जार) के साथ रमण करती है ॥९॥

अनामिका च मध्या च यदि भूमिं न संस्पृशेत् ।
आद्या पतिद्वयं हन्ति चापरा तु पतित्रयम् ॥१० ॥

अन्वयः—यदि अनामिका च मध्या च भूमिं न संस्पृशेत् (तदा) आद्या (अनामिका) पतिद्वयं हन्ति तु अपरा (मध्या) पतित्रयं हन्ति ।.१०॥

भा०—जिस स्त्री के पैर की अनामिका अंगुली चलते समय भूमि को स्पर्श न करे वह दो पति को मारकर तीसरे पति के साथ रमण करती है, जिसकी मध्यमा अंगुली भूमि स्पर्श न करे वह तीन पतियों को मार कर चौथे पति के साथ रमण करती है ॥ १० ॥

अनामिका च मध्या च यदि हीना प्रजायते ।
तदा सा पतिहीनास्यादित्याह भगवान्स्वयम् ॥ ११ ॥

अन्वयः--यदि अनामिका च मध्या च हीना प्रजायते तदा सा पतिहीना स्यादिति स्वयं भगवान् आह ॥ ११ ॥

भा०—जिस स्त्री के पैर की अनामिका अंगुली कनिष्ठा से छोटी हो अथवा मध्यमा अंगुली अनामिका से छोटी हो तो वह स्त्री पतिहीन विधवा होती है, ऐसा श्रीभगवान् का वाक्य है ॥ ११ ॥

नखलक्षणम्—

यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः ।
ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोगप्रदायकाः ॥ १२ ॥

अन्वयः—मृगाक्षीणां पादनखाः स्निग्धा वर्तुला समुन्नताः, ताम्रवर्णाश्च तदा महाभोग प्रदायकः ॥ १२ ॥

भा०--जिस मृगनयनी के पैर के अंगुलियों के नख चिकने, गोलाकार, ऊंचा और ताम्र वर्ण (लाल रंग) के हों तो वे अनेक तरह से सुख सम्पत्ति तथा भोगों को देनेवाले होते हैं ॥ १२ ॥

पादतललक्षणम्—

यदि भवेदमलं किल कोमलं कमलपृष्ठवदेव मृगीदृशाम्।
अरुणकुंकुमविद्रुमसन्निभं बहुगुणं पदपृष्ठमिति ध्रुवम् ॥१३॥

अन्वय—यदि मृगीदृशां पादपृष्ठं किल कोमलं कमलपृष्ठवदेव (अथवा) अरुणकुंकुमविद्रुमसन्निभं भवेत् तदा) ध्रुवं बहुगुणं भवेत् ॥ १३ ॥

भा०—जिस मृगाक्षी के पैर की पीठ कोमल, कमल दल के पीठ के समान, लाल रंग, कुंकुम रंग, अथवा मूँगा के समान लाल हो तो वह निश्चय कर अत्यन्त गुणवती होती है ॥ १३ ॥

अंघ्रिमध्ये दरिद्रा स्यान्नम्रत्वेन सदाङ्गना।
शिरालेनाध्वगा नारी दासी लोमाधिकेन सा ॥ १४ ॥

अन्वयः—अङ्गना अंघ्रिमध्ये नम्रत्वेन सदा दरिद्रा, शिरालेना अध्वगा, लोमाधिकेन सा नारी दासी स्यात् ॥१४॥

भा०—जिस स्त्री के पैर की अंगुलियाँ गहरी हों तो वह दरिद्रा होती है; यदि अंगुलियों पर नसें हों तो वह रास्ता चलने (भिक्षा माँगने) वाली होती है, यदि अंगुलियों पर रोम हो तो वह स्त्री भृत्य कर्म करनेवाली दासी होती है ॥१४॥

गुल्फलक्षणम्—

निर्मांसेन सदा नारी दुर्भगा खलु जायते ।
गुल्फौ गूढौ शुभौ स्यातामशिरालौ च वर्तुलौ ॥१५॥

अन्वयः—गुल्फौ निर्मांसेन नारी सदा दुर्भगा खलु जायते, गूढौ, अशिरालौ वर्तुलौ च, शुभौ स्याताम् ॥ १५ ॥

भा०—जिस स्त्री का गुल्फ (पैर के ऊपर और जंघा के नीचे का भाग) मांसहीन (पतला) हो तो वह दुर्भगा (दरिद्रा) होती है, यदि गुल्फ मोटा मांसयुक्त, बिना नस का और गोलाकार हो तो वह स्त्री पुत्र सुख युक्त तथा सौभाग्यवती होती है ॥ १५ ॥

अगूढौ शिथिलौ यस्यास्तस्या दौर्भाग्यसूचकौ।
गुल्फलक्षणमाख्यातं पार्ष्णिलक्षणमुच्यते ॥ १६ ॥

अन्वयः—यस्याः (गुल्फौ अगूढौ शिथिलौ तस्या दौर्भाग्यसूचकौ गुल्फलक्षणमाख्यातं पार्ष्णिलक्षणमुच्यते ॥ १६ ॥

भा०—जिस स्त्री का गुल्फ ढीला, पतला हो वह अभागिनी होती है, गुल्फ लक्षण कहने के बाद पार्ष्णि (एड़ी) के लक्षण कहते हैं ॥ १६ ॥

अथ पार्ष्णिलक्षणम्—

समानपार्ष्णिः सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा ।
कुलटा तुङ्गपार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिर्गदाकुला ॥१७॥

अन्वयः—समानपार्ष्णि सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा, तुङ्गपार्ष्णिश्च कुलटा दीर्घपार्ष्णिर्गदाकुला भवेत् ॥ १७ ॥

भा०—जिस स्त्री की एड़ी समान, सुन्दर (गोलाकार) हो वह सौभाग्यवती होती है जिसकी एड़ी मोटी हो वह दुर्भगा, ऊँची हो तो कुलटा (व्यभिचारिणी) और लम्बी हो तो रोगिणी होती है ॥ १७ ॥

अथ जंघालक्षणम्

जंघे रंभोपमे यस्या रोमहीने च वर्तुले ।
मांसले च समे स्निग्धे राज्ञी सा भवति ध्रुवम् ॥१८॥

अन्वयः—यस्याः जंघे रम्भोपमे रोमहीने वर्तुले मांसले समे च स्निग्धे च ध्रुवं राज्ञी भवति ॥ १८ ॥

भा०—जिस स्त्री के जघे केले के स्तम्भ के समान सुन्दर गोल, रोमहीन पुष्ट और चिकने हो तो वह राजरानी होती है ॥ १८ ॥

रोमकूपलक्षणम्—

एकरोमा प्रिया राज्ञी द्विरोमा सौख्यभागिनी ।
त्रिरोमा विधवा ज्ञेया रोमकूपेषु कामिनी ॥१९॥

अन्वयः—कामिनी रोमकूपेषु एकरोमा प्रिया राज्ञी, द्विरोमा सौख्यभागिनी, त्रिरोमा विधवा ज्ञेया ॥ १९ ॥

भा०—जिस स्त्री के शरीर में रोमकूप (रोममूल) में एक-एक रोम हो तो वह राजा की स्त्री (रानी) होती है, दो-दो रोम हो तो वह अत्यन्त सुखी और सौभाग्यवती होती है, यदि तीन २ रोम हो तो वह स्त्री विधवा होती है ॥१९॥

अथ जानुलक्षणम्—

भवति जानुयुगं यदि मांसलं
तदतिवृत्तमतीव शुभप्रदम् ।

भुवनभर्तु रतो विपरीतमा-
दिभिरिदं विपरीतमुदीरितम् ॥ २० ॥

अन्वयः--तदि जानु युगं मांसलं तद्दतिवृत्तं भवति (तदा) अतीव शुभप्रदं (तथा) भुवनभर्तु भवति, इदं विपरीतं (तदा) (फलमपि) विपरीतं (इति) आदिभिः उदीरितम् ॥ २० ॥

भा० जिस स्त्री के दोनों जंघे पुष्ट और गोलाकार हों वह अत्यन्त सुखदायक होते हैं, तथा वह सौभाग्यवती रानी कही जाती है, यदि जंघे इससे विपरीत अर्थात् दुबले, पतले और रूक्ष हों तो वह स्त्री अभागिनी होती है ॥ २० ॥

अथ कटिलक्षणम्--

समुन्नतनितम्बाढ्या यस्याः सिद्धाङ्गुला कटिः ।
सा राजपट्टमहिषी नानालीभिः समावृता ॥ २१ ॥

अन्वयः--यस्याः नितम्वाढ्या समुन्नतं (तथा) कटिः सिद्धाङ्गुला (स्यात्) तदा) सा नानालाभिः समावृत्ता राजपट्टमहिषि (भवति) ॥२१॥

भा०--जिस स्त्री का नितम्ब उन्नत (ऊँचा और कमर चोविस अगुल प्रमाण पतला हो तो वह सुशील सैकड़ों सखियो की प्यारी (रक्षक) होती हुई सुख सम्पत्ति से युक्त राजरानी होती है ॥ २१ ॥

निर्मांसा विनता दीर्घा चिपिटा शकटाकृतिः ।
लघ्वी रोमाकुला नार्य्या वैधव्यं दिशते कटिः ॥ २२ ॥

अन्वयः -(यस्याः) कटिः निर्मांसा, विनता, दीर्घा, चिपिटा, शकटाकृतिः लघ्वी रोमाकुला (स्यात्तदा नार्य्या वैधव्यं दिशते ॥२२॥

भा०--जिस स्त्री की कमर मासहीन, चिपटी, गाड़ो के आकार की तरह, छोटी और रोमयुक्त हो तो वह वैधव्य देती है ॥ २२ ॥

अथ नितम्बलक्षणम्—

सीमन्तिनीनां यदि चारुबिम्बो
भवेन्नितम्बो बहुभोगदः स्यात् ॥
समुन्नतो मांसल एव यासां
पृथुः सदा कामसुखाय तासाम् ॥ २३ ॥

अन्वयः--यदि सीमन्तिनीनां नितम्वश्चारु विम्बो भवेत्तदा

बहुभोगदः स्यात् (तथा) यासां समुन्नतो मांसलः पृथुः एव भवेत्तासां सदा कामसुखाय स्यात् ॥ २३ ॥

भा०—जिस सौभाग्यवती स्त्री का नितम्ब (चूतड़)सुंदर बिंब (त्रिकोण) फल की तरह (किञ्चित् लाल रंग) हो तो वह सब तरह सुख देनेवाला होता है। यदि ऊँचा, मोटा और बड़ा हो तो वह पति के कामदेव को तृप्त करने-वाला होता है ॥ २१ ॥

अथ योनिलक्षणम्—

यदा गजस्कन्धसमानरूपो
भगोऽथवा कच्छपपृष्ठवेषः ।
इलापतेः कामविनोददायी
वा सोन्नतः सोऽपि सुताजनेता ॥ २४ ॥

अन्वयः—यदा (कामिन्याः) भगः गजस्कन्धसमानरूपः अथवा कच्छपपृष्ठवेषः वा सोन्नतो भवेत् (तदा) सा इलापतेः कामविनोद-दायी अपि च सुताजनेता भवति ॥ २४ ॥

भा०—यदि मृगनयनी का भग (योनि) हाथी के कंधे के समान हो अथवा कछुवा के पीठ के समान हो तो वह सुन्दरी श्रीराजराजेश्वर के साथ कामक्रीड़ा करके तृप्त करनेवाली अर्थात् महारानी होती है, यदि भग उन्नत हो तो पुत्र पौत्र धन धान्यादि से युक्त होती है ॥ २४ ॥

अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढमणिः शुभः ।
चुल्हिकोदररूपो यः कुरङ्गखुरसन्निभः ॥ २५ ॥
रोमकुलो दृष्टनासो विकृतास्यो महाधमः ।
कामिनां न विनोदार्हो भगो भवति सर्वथा ॥ २६ ॥

अन्वयः- यदि वा) भगः अश्वत्थदलरूपो वा गूढमणिः (स्वरूपस्तदा) शुभः, (अथवा) चुल्हिकोदररूपो यः कुरङ्गखुरसन्निभः रोमाकुलः दृष्टनासः विकृतास्यः भगः महाधमः (तथा) कामिनां सर्वथा विनोदार्हो न भवति ॥ २५-२६ ॥

भा०—यदि भग पीपल के पत्ता के समान हो अथवा गूढ़मणि (टोंटी अन्दर वाला) हो तो शुभदायक होता है। यदि भग (योनि) चूल्ही के उदर-समान हो

अथवा मृगा के खुर समान हो, अथवा अति रोमयुक्त हो और ऊँची टोंटीवाला भयानक हो तो कष्ट देनेवाला तथा कामियों को काम क्रीड़ा रहस्य में सर्वदा अतृप्त कारक होता है ॥ २१-२६ ॥

कामिन्याः कञ्चुकावर्तो भगो दौर्भाग्यवर्द्धकः ।
स गर्भधारणाशक्तो वक्राकारोऽपि तादृशः ॥ २७ ॥

अन्वयः—कामिन्याः भगः कञ्चुकावर्तो दौर्भाग्यवर्द्धकः (तदा) गर्भधारणाशक्तः स वक्राकारोऽपि तादृशः (गर्भधारणाशक्तः) ॥ २७ ॥

भा०—यदि कामिनी का भग कञ्चुकाकार अर्थात् दोनों तरफ ऊँचा और बीच में गहरा हो तो अभाग्य बढ़ानेवाला होता है और गर्भ धारण करने में असमर्थ होता है, यदि टेढ़ा (घूमा हुआ) हो तो भी गर्भ नहीं धारण करता ॥२७॥

वेतसवंशदलप्रतिभासः
कर्परकूपवदेव भगो वा ।
लम्बगलो विकटो गजलोमा
नैव शुभश्चिपिटोऽपि निरुक्तः ॥ २८ ॥

अन्वय—भगोवेतसवंशदलप्रतिभास कर्परकूपवदेव वा लम्बगलो विकटो गजलोमा 'वा' चिपिटोऽपि नैव शुभः (इति निरुक्तः ॥२८॥

भा०—यदि भग बेंत के पत्ता के समान अथवा बाँस के पत्ता के आकार का हो, अथवा गोल अर्थात् चारों तरफ ऊँचा और बीच में गहरा हो अथवा गला के समान लम्बा स्थूल हो, अथवा विकट (ऊँचा-नीचा) हो, अथवा हाथी के रोम समान रूक्ष रोमवाला हो, अथवा चिपटा हो तो अभाग्य वर्द्धक होता है अर्थात् जिस स्त्री का भग उक्त प्रकार हो वह अभागिनी होती है ॥ २८ ॥

मृदुतरं मृदुरोमकुलाकुलं
यदि तदा जघनं भगभाजनम् ।
उत समुन्नतमायतमादरात्
पतिकलाकलितं गदितं बुधैः ॥ २९ ॥

अन्वयः—यदि मृदुतरं मृदुरोमकुलाकुलं जघनं तदा भगभाजनम्, उत समुन्नतमायतमादरात्पतिकलाकलितं भगभाजनमिति) बुधैर्गदितम् ॥ २९ ॥

भा०--यदि भग (योनि) कोमल बालों से युक्त अति सुन्दर (गूढ़ नोक वाला) हो तो सम्पत्ति (सुपुत्र) का पात्र होता है, यदि उन्नत, चौड़ा और पति के देखने या स्पर्श करने में गाढ़, मुलायम, सुहावन मालूम पड़े तो वह भग भी सुख-सम्पत्ति तथा पति के सुख का भाजन होता है, ऐसा पण्डितों ने कहा है ॥ २६ ॥

तदेव दक्षिणावर्तं मासलं शुभसूचकम् ।
वामावर्तं च नारीणां खण्डिताश्रयम् ॥ ३० ॥

अन्वयः—तदेव दक्षिणावर्त्तं मांसलं शुभसूचकम्, वामवर्त्तं च नारीणां खंडितं खण्डिताश्रयम् ॥ ३० ॥

भा०--यदि भग दक्षिणावर्त (दाहिने तरफ घुमा हुआ) हो और पुष्ट हो वह श्रेष्ठ होता है, बायें तरफ घुमा हुआ और खण्डित (नीचा-ऊँचा) हो तो स्त्रियो का कष्टकारक (व्यभिचार कर्म करनेवाला) होता है ॥३०॥

निर्मांसं कुटिलाकारं रूक्षं वैधव्यसूचकम् ।
अतिस्थलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यवर्द्धकम् ॥ ३१ ॥

अन्वयः निर्मांसं कुटिलाकारं रुक्षं वैधव्यसूचकम्, अतिस्थलं महा दीर्घं सद्यो दौर्भाग्यवद्धकम् ॥ ३१ ॥

भा०--यदि भग मांसहीन, टेढ़ा और रुक्ष हो तो वैधव्य करनेवाला होता है, यदि अति मोटा और बहुत बड़ा (भयानक) हो तो शीघ्र भाग्यहीन करता है ॥ ३१ ॥

वास्तिलक्षणम्

मृदुला विपुला वस्तिः शोभना च समुन्नता ।
अशुभा रेखयाक्रान्ता शिराला लोमसंकुला ॥ ३२ ॥

अन्वयः—वस्तिः मृदुला विपुला समुन्नता च शोभना, रेखया कान्ता शिराला लोमसंकुला (तदा) अशुभा ॥ ३२ ॥

भा०--यदि वस्ति (पेड़ू) कोमल, बड़ा सुन्दर और उन्नत (ऊँचा) हो तो शुभदायक होता है रेखायुक्त, नसयुक्त और रोमयुक्त हो तो अशुभदायक होता है ॥ ३२ ॥

नाभिलक्षणम्--

गभीरा दक्षिणावर्ता नाभी भोगविवर्द्धिनी।
व्यक्तग्रंथिः समुत्ताना वामावर्त्ता न शोभना॥ ३३॥

अन्वयः—नाभी गभीरा दक्षिणावर्ता (तदा) भोगविवर्द्धिनी व्यक्तग्रन्थिः समुत्ताना वामावर्त्ता न शोभना॥ ३३॥

भा० यदि स्त्री की नाभि (ढोंढ़ी) गहरी और दाहिने घुमी हुई हो तो सब पदार्थों को देनेवाली होती है, यदि ऊँची (गांठवाली) और बायें तरफ घुमी हुई हो तो स्त्री के सब पदार्थों को नष्ट करनेवाली होती है॥ ३३॥

उदरलक्षणम्--

पृथूदरी यदा नारी सुते पुत्रान्बहूनपि।
भेकोदरी नरेशानां बलिनं चायतोदरी॥ ३४॥

अन्वयः—यदा नारी पृथूदरी बहूनपि पुत्रान् सुते, भेकोदर नरेशानां च आयतोदरी बलिनं प्रसूयते॥ ३४॥

भा०—जिस स्त्री का पेट बड़ा हो वह बहुत पुत्र पैदा करती है, मंडूक (मेढक) के समान पेटवाली राजा होने वाला (बहुत बड़ा भाग्यवान्) पुत्र पैदा करती है, बहुत बड़ा पेटवाली शूर वीर पुत्र पैदा करती है॥ ३४॥

उन्नतेनोदरेणैव वन्ध्या नारी प्रजायते।
जठरेण कठोरेण सा भवेद्भिन्दुकाङ्गना॥ ३५॥

अन्वयः—उन्नतेनोदरेणैव नारी वन्ध्या प्रजायते, कठोरेण जठरेण सा भिन्दुकाङ्गना भवेत्॥ ३५॥

भा०—जिस स्त्री का पेट उन्नत (ऊँचा) हो वह वंध्या होती है, जिसका पेट कठोर (कड़ा) हो वह कोलभिल्ल (नीचजाति) की स्त्री होती है॥ ३५॥

आवर्तेन युतेनैव दासिका भवति ध्रुवम्।
कोमलैर्मांससंयुक्तैः समानैः पार्श्वकैः शुभम्॥ ३६॥

अन्वयः—आवर्त्तेनयुतेनैव ध्रुवं दासिका भवति, पार्श्वकैः कोमलैर्मांससंयुक्तैः समानैः शुभम्॥ ३६॥

भा०—जिस स्त्री के पेट में आवर्त (भौंरा) हो वह अवश्य दासी होती है,

यदि दोनों पार्श्व (कोख) कोमल और मांस संयुक्त बराबर हो तो सुख सम्पत्ति देनेवाली होती है ॥ ३६ ॥

विशिरेण मृदुत्वचा सपुत्रा
जठरेणातिकृशेन कामिनी सा ।
बहुधातुलभोगलालिता सानुदिनं
मोदकसत्फलाशिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

अन्वयः- विशिरेण मृदुत्वचा जठरेणातिकृशेन सा कामिनी सपुत्रा बहुधातुलभोगलालिता (तथाच सा) अनुदिनं मोदकसत्फलाशिनी स्यात् ॥ ३७ ॥

भा०—जिसका पेट नसों से हीन, कोमल त्वचा (चमड़ा) और पतला हो वह सौभाग्यवती सुपुत्र देनेवाली अनेक प्रकार के भोगों को भोगनेवाली, प्रतिदिन मोदक और सुन्दर २ फलों को भोजन तथा महारानी की तरह सुख करने वाली होती है ॥ ३७ ॥

घटाकारं यस्या भवति च मृदङ्गेन सदृशं
यवाकारं दैवादुदरमहितं पुत्ररहितम् ।
अभद्रं नो भद्रं तदपि यदि कुष्माण्डसदृशं
निरुक्तं तत्त्वज्ञैः कठिनमुरुशालेन च समम् ॥३८॥

अन्वयः—यस्याः उदरं घटाकारं यवाकारं (तथा) दैवात्मृदङ्गेन सदृशं च भवति (तदा) अहितं पुत्ररहितं भवति, यदि कुष्माण्ड सदृशं तदपि अभद्रं यदि कठिनमुरुशालेन च सम (तदपि) नो भद्रं (इति) तत्त्वज्ञैः निरुक्तम् ॥३८ ॥

भा०--जिस स्त्री का पेट घट के समान, जव के समान अथवा मृदंग के समान हो तो वह अनिष्ट फल करनेवाला तथा संतानहीन करनेवाला होता है, यदि कोंहड़ा के सदृश हो तो भी दरिद्र करनेवाला और कठिन मुरुशाल (अत्यन्त) कठोर हो तो वह सदा अमङ्गल करनेवाला होता है ऐसा सूक्ष्म विचार करनेवालों का कहना है ॥ ॥ ३८ ॥

कृशतरा त्रिवली सरलावली
ललितनर्मविनोदविवर्द्धिनी ।

भवति सा कपिला कुटिलाकुला
शुभकरी विरला महदाकृतिः ॥ ३९ ॥

अन्वयः—यस्याः) त्रिवली कृशतरा सरलावली भवति सा ललित-नर्मविनोद विवर्द्धिनी (भवति, यदि) सा कपिला कुटिला (तदा) अकुलाः यदि विरला महदाकृतिः (तदा) शुभकरी (भवति ॥ ३९ ॥

भा०—जिस स्त्री का त्रिवली (हृदय से भग पर्यन्त छोटे २ रोमों की सरल रेखा) अत्यन्त पतली (काली रंग) और सीधी हो तो वह प्रियवल्लभ के साथ रहस्य क्रीड़ा विलास में अति प्रेम बढ़ानेवाली होती है, यदि वह रोमों की रेखा भूरे रंग की और टेढ़ी हो तो कामिनी के क्रोधको बढ़ाने (गुस्सा पैदा करने) वाली होती है, यदि त्रिवली विरल और चौड़ी आकार में हो तो शुभ करने वाली होती है ॥ ३९ ॥

उरोलक्षणम्—

लोमहीन हृदयं यदा भवेन्नि-
म्नताविरहितं समायतम्।
भोगमेत्य सकलं वराङ्गना
सा पुनः प्रियवियोगमालभेत् ॥ ४० ॥

अन्वयः—यदा लोमहीनहृदयं निम्नता विरहितं समायतं भवेत् (तदा) सा वराङ्गना सकलं भोगमेत्य पुनः प्रियवियोगमालभेत् ॥४०॥

भा०—जिस स्त्री की छाती रोमरहित बराबर (नीची ऊँची न हो) और चौड़ी हो वह कोमलाङ्गी पति, पुत्र, धन, धान्य तथा शय्याशनादि सब प्रकार सुख को भोगती हुई अन्त में प्रियतम से वियोग भी पा जाती है ॥४० ॥

उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहन्ति
विस्ताररूपहृदया व्यभिचारिणीस्यात्।
अष्टादशांगुल मितं हृदयं सुखाय
चेद्रोमशं च विषमं न सुखाय किंचित् ॥ ४१ ॥

अन्वयः—उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहन्ति विस्ताररूपहृदया व्यभिचारिणी स्यात्। अष्टादशांगुलमितंहृदयं सुखाय चेद्विषमं रोमशं (तथा) किञ्चित् सुखाय न (भवति) ॥ ४१ ॥

भा०—जिस स्त्री की छाती के रोम उखड़ते और जमते हों अर्थात् छिन्न-भिन्न हों तो वह अपने पति को मार डालती है, जिसकी छाती विशेष चौड़ी हो वह व्यभिचारिणी होती है, जिसकी छाती अठारह अंगुल चौड़ी हो वह सुख सम्पत्ति देनेवाली होती है, जिसकी छाती में विशेष रोम हों तथा छाती नीची ऊँची हो तो उस अभागिनी को सुख लेशमात्र भी नहीं मिलता है ॥ ४१ ॥

उन्नतं पीवरं शस्तं हृदयं वरयोषिताम् ।
अपीवरमिदं नीचं पृथुदौर्भाग्यसूचकम् ॥ ४२ ॥

अन्वयः—वरयोषितां हृदयं उन्नतं पीवरं (तदा) शस्त (यदि) हृदयं अपीवरं नीचं (तदा) पृथु दौर्भाग्य सूचक भवेत् ॥४२॥

भा०—यदि स्त्री या पुरुष की छाती ऊँची और मोटी हो तो दोनों के लिये शुभकारक होती है यदि नीची और मांसहीन (चपटी) हो तो दोनों के लिये विशेष दुर्भाग्य सूचक है ॥ ४२ ॥

स्तनलक्षणम्—

भवत एव समौ सुदृढाविभौ
यदि घनौ सुदृशस्तुपयोधरौ ।
निजपतेरनिशं परिवर्त्तुलौ
कुसुमबाणविनोदविवर्द्धकौ ॥ ४३ ॥

अन्वयः—यदि पयोधरौ समौ सुदृढौ घनौ परिवर्तुलौ (तथा) सुदृशं एव भवतः (तदा) निजपतेरनिशं कुसुमबाणविनोदविवर्द्धकौ (भवतः) ॥४३॥

भा०—जिस कामिनी के दोनों स्तन गाढ़ मांसयुक्त, कठोर, उन्नत और सुन्दर (उत्तरोत्तर किञ्चित्पतला) गोलाकार हों वे निरन्तर अपने पति के केलिक्रीड़ा में कामबाण बढ़ानेवाले होते हैं ॥ ४३ ॥

सुभ्रुवो विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रावहिताविभौ ।
पयोधरौ तदा नार्य्याः प्रभवेद्दक्षिणोन्नतः ॥ ४४ ॥
पुत्रदोऽप्यथ कन्यादो यदा वामोन्नतो भवेत् ।
सान्तरालौ च विस्तारौ पीवरास्यौ न शोभनौ ॥ ४५ ॥

अन्वयः--सुभ्रुवो नार्य्याः पयोधरौ विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रौ तदा अहितौ (भवतः) दक्षिणोन्नतः पुत्रदः प्रभवेत्, यदा वामोन्नतः कन्यादो भवत् अथ सान्तरालौ च विस्तरौ पीवरास्यौ न शोभनौ भवतः ।४४-४५।

भा० सुन्दर भृकुटीवाली स्त्री के दोनों स्तन विरल (मोटे पतले) हों अथवा मांसहीन अर्थात् चिपटे हों अथवा अग्रभाग स्थूल (मोटा) हो तो कष्टकारक होते हैं, यदि बायें के अपेक्षा दाहिना स्तन कुछ बड़ा हो तो वह पुत्रों को सुख देनेवाला होता है, यदि दाहिने के अपेक्षा बायाँ स्तन कुछ बड़ा हो तो वह विशेष कन्या देनेवाला होता है यदि दोनों स्तनों के बीच में अन्तर अर्थात् दोनों का जड़ मिला हुआ न हो, लम्बे (पतले) हों और उनके मुँह (जो भाग बच्चों के मुँह में रहता है) विशेष मोटा हो वह शुभप्रद नहीं होता ।। ४४-४५ ।।

मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ पयोधरौ ।
सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यन्तदुःखदौ ।। ४६ ।।

अन्वयः--पयोधरौ मूले स्थूलौ क्रमकृशावग्रे तीक्ष्णौ (तदा) पूर्वकाले सुखदौ तु पश्चादत्यन्त दुःखदौ 'भवतः' ।।४६।।

भा०—जो स्तन आदि भाग (मूल) में मोटा और क्रमशः पतला होता हुआ अग्रभाग अत्यन्त पतला नुकीला हो तो वह प्रथमावस्था में सुखदायक अन्त्यावस्था (बुढ़ापा) में अत्यन्त कष्टकारक होता है ।। ४६ ।।

स्कन्धलक्षणम्—

पुत्रिणी विनतस्कन्धा ह्रस्वस्कन्धा सुखप्रदा ।
पुष्टस्कन्धा तु कामान्धा रतिभोगसुखावहा ।। ४७ ।।

अन्वयः--विनतस्कन्धा पुत्रिणी ह्रस्वस्कन्धा सुखपदा पुष्टस्कन्धा तु कामान्धा रतिभोगसुखावहा ।।४७।।

भा०--जिस स्त्री के कन्धा गले से नीचे झुका हुआ हो वह पुत्र देनेवाला होता है, छोटे कन्धे सुख देनेवाले होते हैं और मोटे कन्धेवाली कामिनी कामांध होकर रति शय्या के ऊपर अति सुख देने वाली होती है ।। ४७ ।।

मदान्धा कुटिलस्कन्धा स्थूलस्कन्धा च तादृशी ।
यदि लोमाकुलस्कन्धा वैधव्यं द्रुतमावहेत् ।। ४८ ।।

अन्वयः--कुटिलस्कन्धा मदान्धा स्थलस्कन्धा च तादृशी यदि लोमाकुलस्कन्धा द्रुतं वैधव्यमावहेत् ।।४८।।

भा०—टेढ़े कन्धे अथवा मोटे कन्धेवाली स्त्री अति कामान्ध होती है और रोमयुक्त कन्धेवाली स्त्री शीघ्र वैधव्य धारण करती है ॥ ४८ ॥

बाहुमूललक्षणम्—

स्रस्तां सा संहतां सा च धन्या भवति कामिनी ।
तुङ्गां सा विधवा ज्ञेया विमांसां सा तथैव च ॥ ४६ ॥

अन्वयः—स्रस्तां सा संहतां सा च कामिनी धन्या भवति, तुङ्गांसा विधवा ज्ञेया विमांसां सा तथैव च (विधवा भवति) ॥ ४९ ॥

भा०—दोनों भुजों के मूल (कन्धा के नीचे चौड़ा अथवा मांसयुक्त और कठोर हो तो वह कामिनी ऐश्वर्ययुक्त होती, यदि भुजमूल उच्च अथवा मांसहीन पतला हो तो वह स्त्री विधवा हो जाती है ॥ ४६ ॥

कराङ्गुष्ठलक्षणम्—

अंगुष्ठांगुलिकं युग्मं यत्पद्मकलिकासमम् ।
बहुभोगाय नारीणां निर्मितं विधिना पुरा ॥ ५० ॥

अन्वयः—अंगुष्ठांगुलिकं युग्मं यत्पद्मकलिकासमम् नारीणां बहुभोगाय पुरा विधिना निर्मितम् ॥५०॥

भा०—जिस स्त्री के हाथ के अंगुष्ठे और तर्जनी अथवा कोई दो अंगुली कमल के कली के समान सुन्दर हो तो वह सुन्दरी अनेक सद्भोगों को भोगती है अर्थात् ब्रह्मा ने सुख भोगने ही के लिये उन दोनों अंगुलियों को पहले से बना रखा है ॥ ५० ॥

पाणितललक्षणम्—

करतलं भुजयोर्यदि कोमलं
विमलपद्मनिभं च समुन्नतम्
निजपतेः कुसुमायुधवर्द्धकं ।
निगदितं मुनिना विधिनोदितम् ॥ ५० ॥

अन्वयः—यदि भुजयोः करतलं कोमलं विमलपद्मनिभं च समुन्नतं (तदा) निजपतेः कुसुमायुधवर्द्धकं (इति) विधिनोदितं मुनिना निगदितम् ॥५१॥

भा०—जिसका दोनों करतल (हथेली) कोमल, कमल के समान सुन्दर

बनाए और उन्नत (ऊँचा) हो वह कामिनी अपने पति के कामदेव को बढ़ाने (तृप्त करने) वाली होती है ऐसा ब्रह्मदेव के वाक्य को मुनियों ने कहा है ॥५१॥

स्वच्छरेखाकुलं भद्रं नो भद्रं हीनरेखया।
अभद्रं रेखया हीनं वैधव्यं चातिरेखया ॥५२॥

अन्वयः--स्वच्छरेखाकुलं भद्रं हीनरेखया नो भद्रं रेखया हीनमभद्रं च अतिरेखया अभद्रं (स्यात्) ॥ ५२ ॥

भा०-जिस स्त्री के हस्त की रेखा पुष्ट सुन्दर और स्वच्छ (साफ) हो वह सुखप्रद होती है, छोटी २ रेखा कष्टकारक होती है, यदि रेखाहीन हस्त हो तो अमङ्गलदायक होता है, बहुत रेखा पतली २ हों वह वैधव्यसूचक होती हैं ॥५२॥

करपृष्ठलक्षणम्—

शिरालं कुरुते निःस्वं नारी करतलं यदि।
समुन्नतं च विशिरं करपृष्ठं सुशोभनम् ॥५३॥

अन्वयः—यदि नारी करतलं शिरालं निःस्वंकुरुते करपृष्ठं समुन्नतं च विशिरं सुशोभनम् ॥ ५३ ॥

भा०-जिस स्त्री की हथेली में नसें हों वह दरिद्रा होती है यदि हाथ का पृष्ठ भाग ऊँचा और बिना सिरा का हो तो वह कल्याणकारक होता है, अर्थात् उस स्त्री को सुख मिलता है ॥ ५३ ॥

रोमाकुलं गभीरं च निर्मांसं पतिजीवहृत्।
सुभ्रुवः करपृष्ठस्य लक्षणं गदितं बुधैः ॥५४॥

अन्वयः--सुभ्रुवः (करपृष्ठं) रोमाकुलं गभीरं च निर्मांसं पतिजीवहृत्, करपृष्ठस्य लक्षणं बुधैः निगदितम् ॥ ५४ ॥

भा०—जिस सुभ्रू के हाथ का पृष्ठ भाग अधिक रोमयुक्त हो, अथवा गहरा हो, अथवा मांसहीन [चिपिटा] हो वह पति के प्राण को हरण करनेवाला होता है ऐसा कर पृष्ठ लक्षण को पण्डितों ने कहा है ॥ ५४ ॥

कररेखाफलम्--

गभीरा रक्ताभा भवति मृदुला वा स्फुटतरा।
करे वामे रेखा जनयति मृगाक्ष्या बहु शुभम्।

यदा वृत्ताकारा पतिरतिसुखं विन्दति परं ।
विसारं सौभाग्यं बलमपि सुतं स्वस्तिकमपि ॥५५॥

अन्वयः—मृगाक्ष्या वामे करे गभीरा रक्ताभा मृदुला वा स्फुटतरा रेखा भवति (तदा) बहुशुभं जनयति, यदा वृत्ताकारा (रेखातदा) पतिर्रतिसुखं परं विन्दति विसारं स्वस्तिकमपि सौभाग्यं बलमपि सुतं (विन्दति) ॥ ५५ ॥

भा०—जिस मृगाक्षी के बायें हथेली में गम्भीर, लाल रंग की, कोमल और स्पष्टतर रेखायें हों वह अत्यन्त सुखदायक और लाभकारक होती है, यदि गोलाकार रेखा हों तो पति के साथ कामक्रीड़ा में अति सुख देनेवाली होती है, जिस सौभाग्यवती के बायें हाथ में विसारा* [मछली] की रेखा अथवा स्वस्तिक* [देवमन्दिर तोरणलगा हुआ] की रेखा हो वह सौभाग्य, शरीर सुख तथा संतान सुख देनेवाली होती है ॥ ५५ ॥

करतले यदि पद्ममिलापते ।
प्रियतमा परमा गरिमावृता ॥
नृपमपत्यमलं जनयेदरं ।
बलवतामपि मानविमर्दकम् ॥५६॥

अन्वयः—यदि करतले पद्मं इलापतेः प्रियतमा परमा गरिमावृता, नृपमपत्यमलंजनयेदरं बलवतामपि मानविमर्दकम् ॥ ५६ ॥

भा०—जिस स्त्री के बायें हथेली में कमल के फूल का चिन्ह हो वह राजा की अत्यन्त प्यारी, विशेष प्रतिष्ठा पानेवाली राजरानी होती है और अपने गर्भ से शूरवीर राजाओं का मानभङ्ग करनेवाला महाबली, राजसिंहासन पर बैठनेवाला, राजपुत्र पैदा करती है ॥ ५६ ॥

यदा प्रदक्षिणाकारो नद्यावर्तः प्रजायते ।
चक्रवर्तिनृपस्त्री सा यस्या पाणितलेऽमले ॥५७॥

---

*पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः ।
विसारः शकुली चाथ गण्डकः शकुलार्भक ॥अमरः॥
*सौधोऽस्त्री राजसदनमुपकार्योपकारिका ।
स्वस्तिकः सर्वतो भद्रो नद्यावर्तादयोऽपि च ॥ अमरः ॥

अन्वयः—यस्याः अमले पाणितले यदा प्रदक्षिणाकारो नद्यावर्तः प्रजायते सा चक्रवर्तिनृपपत्नी (भवति) ॥ ५७ ॥

भा०--जिस स्त्री के निर्मल वाम हथेली में दक्षिणावर्त्त गोलाकार रेखा हो तो वह चक्रवर्ती राजा की प्रियतमा [महारानी] होती है ॥ ५७ ॥

आतपत्रं च कमठः शंखोऽपि यदि वा भवेत्।
नृपमाता गुणोपेता भव्याकारा पतिव्रता ॥५८॥

अन्वयः - यदि आतपत्रं च कमठः शङ्खोऽपि वा भवेत् (सा नृपमाता गुणोपेता भव्याकारा पतिव्रता (भवति) ॥ ५८ ॥

भा० जिस स्त्री के हाथ में छत्र कछुआ अथवा शङ्ख का चिन्ह हो तो वह राजमाता शुभ गुणों से युक्त, अति सुन्दरी पतिव्रता होती है ॥ ५८ ॥

यस्या वामकरे रेखा तुलामालोपमा भवेत्।
वैश्यवामा रमापूर्णा नानालङ्कारमण्डिता ॥५९॥

अन्वयः – यस्या वामकरे तुलामालोपमा रेखा भवेत्, (सा) वैश्यवामा रमापूर्णा नानालंकारमण्डिता (भवति) ॥ ५९ ॥

भा०-जिस स्त्री के बायें हाथ में तुला [तराजू] अथवा फूल के माला का चिन्ह हो वह वैश्य की स्त्री [सेठानी] रिद्धि सिद्धि से पूर्ण, अनेक भूषणों से अलंकृत शोभायुक्त होती है ॥ ५९ ॥

करतले गजवाजिवृषाकृतिः
कृतिविदामबला किल कोविदा।
भवति सौधसमा यदि सुभ्रुवः
शशिनिभाऽतिशुभा किल रेखिका ॥६०॥

अन्वयः- (यस्याः) करतले गजवाजिवृषा कृतिर्भवति (सा) कृतिविदामबला किल कोविदा, यदि सुभ्रुवः सौधसमा शशिनिभा किल रेखिकाऽतिशुभा भवति ॥ ६० ॥

भा०-जिस स्त्री के बायें हाथ में हाथी, घोड़ा और बैल का चिन्ह हो तो वह तर्क शास्त्र में चतुरा और पण्डिता होती है, जिसके हाथ में सफेद [चूना लगाया हुआ] मकान का चिन्ह अथवा चंद्रमा के आकार का चिन्ह हो तो वह

सुन्दर भृकुटीवाली स्त्री अत्यन्त सुन्दरी, सौभाग्यवती और शुभगुणयुक्ता होती है ॥ ६० ॥

भवति सा विमलाङ्कुशचामरा-
मलशरासनवद्यदि रेखिका ।
गुणविभूषितभूपतिवल्लभा
करतले शकटेन विशोऽबला ॥६१॥

अन्वयः--(यस्याः) करतले विमलांकुशचामरामलशरासनवद्यदि रेखिका भवति सा गुणविभूषितभूपतिवल्लभा (तथा) शकटेन विशोऽबला (भवति) ॥ ६१ ॥

भा०-जिस स्त्री के बायें हाथ में सुन्दर अंकुश, चँवर अथवा सुन्दर धनुष के आकार का चिन्ह हो तो वह स्त्री अच्छे २ गुणों से युक्त राजा की प्यारी [रानी] होती है, यदि हाथ में गाड़ी का चिन्ह हो तो वह वैश्य की स्त्री [सेठानी] होती है ॥ ६१ ॥

अंगुष्ठमूलतो रेखा कनिष्ठां यदि गच्छति ।
यस्याः सा पतिहन्त्री तां दूरतः परिवर्जयेत् ॥६२ ॥

अन्वयः--यस्याः अंगुष्ठमूलतो कनिष्ठां रेखा यदि गच्छति सा पतिहंत्री (अतः) तां दूरतः परिवर्जयेत् ॥ ६२ ॥

भा०—जिस कन्या के अंगुष्ठ मूल से कनिष्ठा अंगुली के मूल तक सीधी रेखा गई हो वह पति को मारनेवाली होती है, ऐसी कन्या दूर ही से छोड़ देने योग्य है ॥ ६२ ॥

यदि करे करवालगदामल-
प्रखरकुन्तमृदङ्गकुरङ्गवत् ।
भवति शूलनिभा खलु रेखिका
भुवि सदा धनदा प्रमदा तदा ॥६३॥

अन्वयः--यदि करे करवालगदामलप्रखरकुन्तमृदङ्गकुरङ्गवत् (तथा) शूलनिभा खलु रेखिका भवति तदा प्रमदा भुवि सदा धनदा (भवति) ॥ ६३ ॥

भा०-जिस स्त्री के हथेली में तलवार, गदा मलरहित, तीक्ष्ण बर्छी, मृदङ्ग, मृग अथवा शूल के समान रेखा हो तो वह इस पृथ्वी में सर्वथा लक्ष्मी से परिपूर्ण रहती है ॥ ६३ ॥

वृषभेकवृश्चिकभुजङ्गजम्बुकाः
खरकङ्कपत्रशलभाविडालकाः ।
यदि वामपाणितलगा भवन्ति चेत्
कलहेन सार्द्धमतिरोगकारकाः ॥६४॥

अन्वयः—यदि वृषभेकवृश्चिकभुजङ्गजम्बुकाः खरकङ्कपत्रशलभाविडालकाः वामपाणितलगाः भवन्ति चेत् सार्द्धमतिरोगकारकाः (भवन्ति) ॥ ६४ ॥

भा०-यदि स्त्री के बायें हाथ में बैल, मेढक, बिच्छू, सर्प, स्यार, गदहा भरदुल (पक्षी विशेष) टीड़ी अथवा बिल्ली के आकार का चिन्ह हो तो वह स्त्री कलह करनेवाली और रोगयुक्ता होती है ॥ ६४ ॥

अथांगुलिलक्षणम्—

कोमलःसरलोऽगुष्ठोवर्त्तुलो यदि योषिताम् ।
क्रमादेवं कृशाङ्गुल्यो दीर्घाकाराश्चवर्त्तुलाः ॥६५॥
पृष्ठरोमाः शस्तफलाश्चिपिटा उदिताबुधैः ।
कृशाः कुंचितपर्वाणो ह्रस्वा रोगभयावहाः ॥६६॥
अनेकपर्वसंयुक्ता उन्नतांगुलयोऽशुभाः ॥६७॥

अन्वयः—यदि योषितामङ्गल्यः कोमलः सरलोऽङ्गुष्ठो वर्त्तुलः क्रमात् कृशांगुल्यो दीर्घाकाराश्च वर्त्तुलाः पृष्ठरोमाश्चिपिटाः (तदा) शस्तफलाः (इति) बुधैः उदिताः एवं कृशाः कुञ्चितपर्वाणः ह्रस्वा रोगभयावहाः (तथा च) अनेकपर्वसंयुक्ता उन्नताङ्गुल्योऽशुभाः ॥६५-६६-६७॥

भा०-जिस स्त्री के हाथ की अंगुलियाँ कोमल और सीधी हों तथा अंगुष्ठ गोलाकार हो और अंगुष्ठ से कनिष्ठा तक अंगुलियाँ क्रम से पतली जैसे अंगुष्ठ से पतली तर्जनी,तर्जनी से पतली मध्यमा, मध्यमासे पतलीअनामिका और अनामिका से पतली कनिष्ठिका होएवं अंगुलियाँ लंबी; गोल और पृष्ठभाग किञ्चित् चिपिटा तथा सरोम हों तो शुभ फल देनेवाली हैं, ऐसा पण्डितों ने कहा है। यदि अंगुलियाँ पतली (मांसहीन) और उनके पर्व टेढ़े तथा छोटी हों तो रोगभय

कारक होती हैं, यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों अथवा अंगुलिया ऊँचीं हों तो अनिष्ट फल देनेवाली होती हैं ॥ ६५-६६-६७ ॥

अथ नखलक्षणम्--

शंखशुक्तिनिभा निम्ना विवर्णा न नखाः शुभाः ।
कपिला वक्रिता रूक्षाः सुभ्रुवः सुखनाशकः ॥६८॥

अन्वयः--सुभ्रुवः शङ्खशुक्तिनिभा निम्ना विवर्णा नखाः न शुभाः कपिला वक्रिता रुक्षाः सुखनाशकः (भवति) ॥ ६८ ॥

भा०-जिस स्त्री के अंगुलियों के नाखून शंख अथवा सीप के आकार के हों चिपटे और लाल रंग विहीन हों तो शुभ फल देनेवाले नहीं होते, यदि भूरे रंग टेढ़े अथवा रुक्ष (रूखे) हों तो सुनेत्रा के सुख नाश करनेवाले होते हैं ॥ ६८ ॥

यदि भवन्ति नखेषु मृगीदृशां
सितरुचो विरला यदिविन्दवः ।
अतितरां कुसुमायुधपीड़या
परजनेन लपंति रमन्ति ताः ॥६६॥

अन्वयः—यदि मृगीदृशां नखेषु सितरुचो विरलो विन्दवो भवति (तदा) अतितरां कुसुमायुधपीड़या परजनेन लपन्ति रमन्ति च ॥ ६९ ॥

भा०— जिस मृगनयनी के नाखूनों में लालिमा के अन्दर से सफेद (मोती की तरह) छींटे झलकें तो वह अत्यन्त कामोद्वेग से पीड़ित होकर दूसरे (जार) के साथ प्रेम करती और रमण भी करती है ॥ ६६ ॥

अथ पृष्ठलक्षणम्—

गुप्तास्थिपृष्ठवंशेन मांसलेन पतिप्रिया ।
रोममूलेन पृष्ठेन विधवा भवति ध्रुवम् ॥७०॥

अन्वयः--गुप्तास्थि पृष्ठवंशेन मांसलेन पतिप्रिया रोममूलेन पृष्ठेन ध्रुवं विधवा भवति ॥ ७० ॥

भा०—जिस स्त्री के पृष्ठ की हड्डियाँ (रीढ़) मांस के अन्दर हों और पुष्ट हों तो वह अपने पति की प्यारी होती है, यदि पीठ में रोम हों तो वह स्त्री अवश्य विधवा हो जाती है ॥ ७० ॥

सशिरेणातिभुग्नेन विनतेन च दुःखिता।
सरलो मांसलो यस्याः पृष्ठवंशः समुन्नतः॥ ७१॥
सापत्युरनुभद्राख्या मुक्तालङ्कारमण्डिता।
अतिप्रिया सुशीला च वरालीभिः समावृता॥७२॥

अन्वयः—यस्याः पृष्ठवंशः सशिरेणाति भुग्नेन विनतेन च दुःखिता सरलो मांसलः समुन्नतः स। पत्युरनुभद्राख्या मुक्तालङ्कारमण्डिता अतिप्रिया सुशीला च वरालीभिः समावृता (भवति) ॥ ७१-७२॥

भा०—जिसके पीठ में नसें हों, अथवा नीचा-ऊँचा हो अथवा पीठ गहरी हो तो वह स्त्री कष्ट भोगनेवाली होती है, जिसका पीठ सुन्दर सीधा मांसयुक्त तथा ऊँचा हो तो वह सौभाग्यवती अपने पति को अत्यन्त सुख देनेवाली, मोती इत्यादि रत्नों से जड़ित भूषणों से अलकृत रहनेवाली, अपने पति की प्यारी, सुशीला हजारों सखियों के बीच में शोभा पानेवाली होती है॥ ७१-७२॥

अथ कण्ठलक्षणम्—

कण्ठो वर्तुलरूपः कमनीयः पीनतायुक्तः।
चतुरंगुलश्च यस्याः सा निजभर्तुः प्रिया भवति॥७३॥

अन्वयः—यस्याः कण्ठःवर्तुलरूप कमनीयः पीनतायुक्तः चतुरंगुलश्च (लम्बः) सा निज भर्त्तुः प्रिया भवति॥ ७३॥

भा०—जिस स्त्री का कण्ठ (गला) गोलाकार, सुन्दर, मोटा और लम्बाई में चार अंगुल हो तो वह अपने पति की प्यारी होती है॥ ७३॥

अथ ग्रीवालक्षणम्—

गुप्तास्थिमांसला ग्रीवा त्रिरेखाभिः समावृता।
सुसंहता तदा शस्ता विपरीता न शोभना॥७४॥

अन्वयः—(यस्याः) ग्रीवा गुप्तास्थिमांसला त्रिरेखाभिः समावृता सुसंहता सदा शस्ता विपरीता न शोभना॥ ७४॥

भा०—जिस स्त्री का ग्रीवा मांसयुक्त, पुष्ट और तीन रेखा से युक्त, देखने में अति सुन्दर हो तो वह शुभ फल देनेवाला होता है, जिसका गला टेढ़ा हो अथवा गले में नसें तथा हड्डियाँ दिखाई पड़ें या नाप में चार अंगुल से छोटा [कोतह-गरदन] हो तो अनिष्ट फल देनेवाला होता है॥ ७४॥

स्थूलग्रीवा धवत्यक्ता रक्तग्रीवा च दासिका ।
अपतिश्चिपिटग्रीवा लघुग्रीवार्थवर्जिता ॥७५॥

अन्वयः--स्थूलग्रीवा धवत्यक्ता रक्तग्रीवा च दासिका चिपिटग्रीवा अपतिः लघुग्रीवार्थवर्जिता ॥ ७५ ॥

भा०—जिस स्त्री का गला अति स्थूल हो वह अपने पति से अलग रहती है, जिसका गला लाल रंग का हो वह दासी होती है, जिसका गला चिपटा [चौड़ा] होता है वह विधवा होती है और छोटी गलावाली स्त्री दरिद्रा होती है ॥७५॥

अथ हनुलक्षणम्--

सुघना कोमला यस्या निर्लोमा च हनुः शुभा ।
लोमशा कुटिला लघ्वी चातिस्थूला न शोभना ॥७६॥

अन्वयः--यस्या हनुः सुघना कोमला निर्लोमा च शुभा, लोमशा कुटिला लघ्वी चातिस्थूला न शोभना ॥ ७६ ॥

भा०—जिस स्त्री का हनु [अधरोष्ठ के नीचे का भाग दाढ़ी] सुन्दर, घन [मांसयुक्त] टेढ़ा, छोटा अथवा अत्यन्त मोटा हो तो कष्ट देनेवाला होता है ॥ ७६ ॥

अथ कपोललक्षणम्

मांसलौ कोमलावेतौ कपोलौ वर्त्तुलाकृती ।
समुन्नतौ मृगाक्षीणां प्रशस्तौ भवतस्तदा ॥७७॥

अन्वयः –मृगाक्षीणां एतौ कपोलौ मांसलौ वर्त्तुलाकृती समुन्नतौ भवतस्तदा प्रशस्तौ भवतः) ॥ ७७ ॥

भा०—जिस मृगनयनी के दोनों गाल मांसयुक्त, कोमल, सुन्दर, गोलाकार [पूर्ण चंद्रमा की तरह] और ऊँचे हों वह श्रेष्ठ [सुखदायक] होते हैं॥७७॥

निर्मांसौ पुरुषाकारौ रोमशौ कुटिलाकृती ।
सीमन्तिनीनामशुभौ दौर्भाग्यपरिवर्द्धकौ ॥७८॥

अन्वयः—सीमन्तिनीनां (कपोलौ) निर्मांसौ पुरुषाकारौ रोमशौ कुटिलाकृती (तदा) अशुभौ दौर्भाग्य परिवर्द्धकौ (भवतः) ॥ ७८ ॥

भा०–जिस स्त्री के दोनों गाल मांसहीन [पतला], पुरुष के आकारवाले, रोमयुक्त और टेढ़े हों तो वे अनिष्ठ फल देनेवाले और अभाग्य बढ़ानेवाले होते हैं ॥७८॥

अथ ओष्ठलक्षणम्—

वर्तुलो रेखयाक्रांतो बन्धूकसदृशोऽधरः ।
स्निग्धो राजप्रियोनित्यं सुभ्रु वः परिकीर्तितः ॥ ७९ ॥

अन्वयः- सुभ्रुवोऽधरः वर्त्तुलः रेखयाक्रान्तो बन्धकसदृशः स्निग्धः (तदा) नित्यं राजप्रियः परिकीर्तितः ॥ ७९ ॥

भा०--जिस सुन्दर भौंहवाली स्त्री का अधर (होंठ) गोल, रेखायुक्त बंधूक फूल की तरह गुलाबी रंग और मुलायम (चिकना) हो तो उस अधरामृत का पान राजा करते हैं, अर्थात राजप्रिय होती है ॥ ७९ ॥

प्रलम्बः पुरुषाकारः स्फुटितोमांसवर्जितः ।
दौर्भाग्यजनको ज्ञेयः कृष्णो वैधव्य सूचकः ॥ ८० ॥

अन्वयः—प्रलम्बः पुरुषाकारः स्फुटितः मांसवर्जितः दौर्भाग्यजनकः ज्ञेयः कृष्णो वैधव्यसूचकः ॥ ८० ॥

भा०-- यदि ओष्ठ लम्बा हो, पुरुषाकार हो फटा हुआ हो, मांसहीन (अति पतला), हो तो भाग्य नष्ट करता है, यदि ओष्ठ काले रङ्ग का हो तो वैधव्य सूचक होता है ॥ ८० ॥

दन्तलक्षणम्--

उपर्यधः समा दन्ताः स्तोकरूपाः पयोरुचः ।
द्वात्रिंशदाभ्यगा यस्याः सा सदा सुभगा भवेत् ॥ ८१ ॥

अन्वयः--यस्याः दन्ताः उपयधः स्तोकरूपाः पयोरुचः द्वात्रिंश दास्यगा सा सदा सुभगा भवेत् ॥ ८१ ॥

भा०—जिस स्त्री के मुख में ऊपर और नीचे के दांत, बराबर, छोटे तथा दूध के समान सफेद और गिनती में बत्तीस हों तो वह स्त्री सदा सौभाग्यवती रहती है ॥ ८१ ॥

अधोदन्ताधिकत्वेन मातृहीना च दुःखिता ।
विधवा विकटाकारैः स्वैरिणी विरलद्विजैः ॥ ८२ ॥

अन्वयः—अधोदन्ताधिकत्वेन मातृहीना च दुःखिता, विकटाकारै, विधवा (तथा) विरलद्विजैः स्वैरिणी (भवेत्) ॥ ८२ ॥

भा०—जिस स्त्री के नीचे का दांत सोलह से अधिक हों वह मातृहीन और

दुःख भोगनेवाली होती है, यदि दाँत बड़े ? विकट रूप (भयानक) हों तो वह स्त्री विधवा होती है, जिसका दांत नीचा ऊँचा हो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ८२ ॥

जिह्वालक्षणम्—

कोमला सरला रक्ता श्वेता च रसना शुभा ।
स्थूला या मध्यसंकीर्णा विकृता सुखनाशिनी ॥ ८३ ॥

अन्वयः—(यस्याः) रसना कोमला सरला रक्ता श्वेता च शुभा स्थूला या मध्यसंकीर्णा विकृता सुखनाशिनी ॥ ८३ ॥

भा०—जिस स्त्री की जिह्वा कोमल, सीधी, लाल और सफेद रंग की हो वह शुभ फल देनेवाली होती है, यदि जीभ मोटी, बीच में पतली अथवा देखने में भद्दी मालूम पड़े वह सुख नाश करनेवाली होती है ॥ ८३ ॥

श्यामया कलहा नित्यं दरिद्रा स्थूलया भवेत् ।
अभक्ष्यभक्षिणी ज्ञेया जिह्वया लम्बमानया ॥ ८४ ॥

अन्वयः- श्यामया जिह्वया कलहा नित्यं स्थूलया दरिद्रा भवेत् लम्बमानया (जिह्वया) अभक्ष्यभक्षिणी ज्ञेया ॥ ८४ ॥

भा —जिसकी जीभ श्याम रङ्ग की हो वह नित्य कलह करनेवाली होती है, मोटी जीभ वाली स्त्री दरिद्रा होती है, जिसकी जीभ लम्बी होती है वह स्त्री अखाद्य वस्तु खानेवाली होती है ॥ ८४ ॥

तालुलक्षणम्—

तालु कोकनदाभासं कोमलं भद्रकारकम् ।
नारी प्रव्रजिता पीते सिते वैधव्यमाप्नुयात् ॥ ८५ ॥

अन्वयः—तालु कोकनदाभासं कोमलं भद्रकारकम्, पीते नारी प्रव्रजिता, सिते वैधव्यमाप्नुयात् ॥ ८५ ॥

भा०—जिस स्त्री का तालु कमल फूल के (गुलाबी) रङ्ग के समान और कोमल हो वह सुखदायक होती है, पीले रङ्ग के तालु वाली स्त्री वैष्णवी और सफेद रग के तालु वाली स्त्री विधवा होती है ॥ ८५ ॥

श्यामले पुत्रहीना च रूक्षे तालुनि दुःखिता ।
वक्रे कलिप्रिया नारी बहुरूपे च दुर्भगा ॥ ८६ ॥

अन्वयः—नारी तालुनि श्यामले पुत्रहीना, च रूक्षे दुःखिता, वक्रे कलिप्रिया, बहुरूपे च दुर्भगा ॥ ८६ ॥

भा०—श्याम रंग के तालु वाली स्त्री पुत्रहीन होती है। जिसका तालु रूक्ष हो वह दुखी होती है, जिसका तालु टेढ़ा हो वह कलहकारिणी और अनेक रंग तालु वाली स्त्री अभागिनी होती है ॥ ८६ ॥

घण्टीलक्षणम्—

क्रमसूक्ष्मारुणा वृत्ता स्थूला घण्टी शुभा मता ।
अतिस्थूला प्रलम्बा च कृष्णा नैव शुभा भवेत् ॥ ८७ ॥

अन्वय—घंटी क्रमसूक्ष्मारुणा वृत्ता स्थूला शुभा मता अतिस्थूला प्रलम्बा कृष्णा च शुभा नैव भवेत् ॥ ८७ ॥

भा०—जिस स्त्री की घंटी (कण्ठमूल) कण्ठ में लगा हुआ भाग स्थूल उसके आगे क्रम से पतली, लाल रंग की, गोलाकार और मोटी हो वह शुभ फल देने वाली होती है, यदि घंटी अत्यन्त मोटी, बहुत लम्बी और काले रंग की हो तो वह अनिष्ट फल करनेवाली होती है ॥ ८७ ॥

स्मितलक्षणम्—

भवति चेदनिमीलितलोचनं
शुभदृशां दरफुल्लकपोलकम् ।
अलमलक्षितदन्तमुदीरितं
पतिहितं सततं स्मितमुत्तमम् ॥ ८८ ॥

अन्वयः—यदि चेत् शुभदृशां स्मितं अनिमीलितलोचनं दरफुल्लकपोलकं अनमलक्षितदन्त भवति (तदा) सततं पतिहितं (तथा) उत्तममुदीरितम् ॥ ८८ ॥

भा० यदि सुनयना के मुस्कराने में दोनों नेत्र खुले रहें, दोनों गाल ऊँचे होकर प्रफुल्लित हो जायँ, दाँत दिखाई न पड़ें तो वह मुस्कान पति के लिये सदा शुभकारक होता है ॥ ८८ ॥

नासिकालक्षणम्—

नासिका तु लघुच्छिद्रा समवृत्तपुटा शुभा ।
स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च न शस्ता सुभ्रुवो भवेत् ॥ ८९ ॥

अन्वयः—सुभ्रुवो नासिका लघुच्छिद्रा तु समवृत्तपुटा शुभा, स्थूलाग्रा मध्यनम्रा च शस्ता न भवेत् ॥ ८९ ॥

भा०—जिस सुन्दर भृकुटीवाली स्त्री की नासिका (नाक) छोटे छिद्र का, बराबर और गोल पुट की हो तो शुभकारक होती है, यदि नाक का अग्र भाग स्थूल (मोटा) हो अथवा नासिका बीच में चिपटी (दबी हुई) हो तो शुभकारक नहीं होती है ॥ ८९ ॥

लोहिताग्रा कुंचिता च महावैधव्यकारिणी ।
दासिका चिपिटाकारा प्रलम्बा च कलिप्रिया ॥ ९० ॥

अन्वयः—लोहिताग्रा कुचिता च महावैधव्यकारिणी, चिपिटाकारा दासिका प्रलम्बा च कलिप्रिता (भवति) ॥ ९० ॥

भा०—जिस स्त्री के नासिका के अग्र भाग लाल रंग का हो अथवा टेढ़ा हो तो महा वैधव्य (बाल वैधव्य) कारक होता है, यदि नासिका चिपटी हो तो दासी और विशेष लम्बी हों तो कलहकारिणी होती है ॥ ९० ॥

नेत्रलक्षणम्—

रक्तान्ते लोचने भद्रे तदन्तः कृष्णतारके ।
कम्बुगोक्षीरधवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी ॥ ९१ ॥

अन्वयः—लोचने रक्तान्ते, तदन्तः कृष्णतारके, कम्बुगोक्षीरधवले कोमले कृष्णपक्ष्मणी भद्रे ॥ ९१ ॥

भा०—स्त्रियों के आंख का अग्र भाग लाल रंग और बीच की पुतली काली रंग हो बाकी हिस्सा शंख के समान अथवा गाय के दूध के समान उज्ज्वल और कोमल हो, पलकों के केश काले रंग के हों तो वे भद्र (कल्याण) करने वाली होती हैं ॥ ९१ ॥

अल्पायुरुन्नताक्षी च वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ।
अजाक्षी केकराक्षी च कासराक्षी च दुर्भगा ॥ ९२ ॥

अन्वयः—उन्नताक्षी अल्पायुः, वृत्ताक्षी कुटला च, अजाक्षी केकराक्षी च कासराक्षी च दुर्भगा भवेत् ॥ ९२ ॥

भा०—ऊंचे नेत्रवाली स्त्री अल्पायु होती है गोल नेत्रवाली व्यभिचारिणी होती है, और बकरे की तरह नेत्रवाली, केकरे की तरह नेत्रवाली तथा भैंस की तरह नेत्रवाली स्त्री दरिद्रा (अभागिनी) होती है ॥ ९२ ॥

पिङ्गाक्षी च कपोताक्षी दुःशीला कामवर्जिता ।
कोटराक्षी महादुष्टा रक्ताक्षी पतिघातिनी ॥ ९३ ॥

अन्वय—पिङ्गाक्षी च कपोताक्षी दुःशीला कामवर्जिता, कोटराक्षी महादुष्टा रक्ताक्षी पतिघातिनी भवेत्) ॥ ९३ ॥

भा०—पीले नेत्र वाली अथवा कबूतर के समान नेत्र वाली स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली और कामक्रीड़ा से रहित होती है, गहाड़े नेत्र वाली महादुष्टा होती है, और लाल नेत्र वाली स्त्री पति का जान मारने वाली होती है ॥९३॥

बिडालाक्षी गजाक्षी च कामिनी कुलनाशिनी ।
वन्ध्या च दक्षकाणाक्षी पुंश्चली वामकाणिका ॥ ९४ ॥

अन्वयः—कामिनी बिडालाक्षी गजाक्षी च कुलनाशिनी, दक्षकाणाक्षी वन्ध्या वामकाणिका पुंश्चली च (भवति) ॥ ९४ ॥

भा०—जो कामिनी बिल्ली के समान आंख वाली (बिलरांखी) हो अथवा हाथी के समान (अति छोटी) आंख वाली हो वह अपने (पति के) कुल को नाश कर डालती है, दाहिनी आंख काणी (फूटी) वाली स्त्री वन्ध्या और वाम आंख काणी वाली स्त्री व्यभिचारिणी होती है ॥ ९४ ॥

सदा धनवती नारी मधुपिंगललोचना ।
पुत्रपौत्रसुखोपेता गदिता पतिसंमता ॥९५॥

अन्वयः—मधुपिंगललोचना नारी सदा धनवती पुत्रपौत्रसुखोपेता, पतिसमता गदिता ॥ ९५ ॥

भा०—जिस स्त्री के नेत्र मधु (शहत) के समान पीले हों वह सर्वदा धनी धान्य, पुत्र पौत्र से युक्त और पति की सेवा करने वाली (पतिवल्लभा) होती है, ऐसा कहा गया है ॥ ९५ ॥

पक्ष्मलक्षणम्—

कोमलैरसिताभासैः पक्ष्मभिः सुघनैरपि ।
लघुरूप धरैरेव धन्या मान्या पतिप्रिया ॥९६॥

अन्वयः—कोमलैरसिताभासैः सुघनैरपि लघुरूपधरैरेव पक्ष्मभिः धन्या मान्या पतिप्रिया (भवति) ॥ ९६ ॥

भा०--जिस स्त्री के पलक कोमल, काले रङ्ग के, घने और छोटे २ हों तो वह सुलोचना अपने कुल में श्रेष्ठ, आदरणीय और पति की प्यारी होती है॥९६॥

रोमहीनैश्च विरलैर्लम्बितैः कपिलैरपि ।
पक्ष्मभिः स्थूलकेशैश्च कामिनी परगामिनी ॥९७॥

अन्वयः—रोमहीनैश्च विरलैर्लम्बितैः कपिलैरपि स्थूलकेशैश्च पक्ष्मभिः कामिनी परगामिनी (भवति) ॥ ९७ ॥

भा०—जिस स्त्री के पलक में रोम न हों अथवा कहीं अधिक कहीं कम रोम हों अथवा लम्बे २ रोम हों अथवा पलक के रोम मोटे २ हों ऐसे पलक वाली कामिनी परपुरुष गामिनी (व्यभिचारिणी) होती है ॥ ९७ ॥

अथ भ्रूलक्षणम्—

वर्त्तुला कोमला श्यामा भ्रूर्यदा धनुराकृतिः ।
अनङ्गरङ्गजननी विज्ञेया मृदुलोमशा ॥ ९८ ॥

अन्वयः—यदा भ्रूर्वर्तुला कोमला श्यामा धनुराकृतिः मृदुलोमशा (तदा) अनङ्गरङ्ग जननी विज्ञेया ॥ ९८ ॥

भा०—जिस स्त्री की भ्रुकुटी (भौंह) गोलाकार, कोमल श्याम रङ्ग, धनुषाकार हो और भौंह के रोम कोमल हों तो वह सुभ्रू सुखशय्या पर कामक्रीड़ा में अपने प्रियवल्लभ को अति सुख देती है ॥ ९८ ॥

पिङ्गा विरला स्थूला सरला मिलिता यदि ।
दीर्घलोमा विलोमा च न प्रशस्ता नतभ्रुवः ॥ ९९ ॥

अन्वयः—पिंगला विरला स्थूला सरला मिलिता दीर्घलोमा विलोमा च नतभ्रुवो न प्रशस्ता (भवति) ॥ ९९ ॥

भा०—जिसके भौंह, पर पीले रंग के केश हों, कहीं अधिक कहीं कम केश हों मोटे २ केश हों सीधी हो, अथवा दोनों भौंह मिली हुई हों अथवा भौंह के रोम बड़े २ हों अथवा बिना रोम की भ्रुकुटी हो अथवा भौंह के केश नीचे लटके हों तो अशुभ फल होता है ॥ ९९ ॥

अथ कर्णलक्षणम्—

प्रलम्बौ वर्त्तुलाकारौ कर्णौ भद्रफलप्रदौ ।
शिरालौ च कृशौ निन्द्यौ शष्कुली परिवर्जितौ ॥ १०० ॥

अन्वयः—कर्णौ प्रलम्बौ वर्तुलाकारौ भद्रफलदौ, शिरालौ च कृशौ निंद्यौ शष्कुली परिवर्जितौ ॥ १०० ॥

भा०—जिस स्त्री के दोनों कान लम्बे तथा गोल हों वह शुभ फल देते हैं, नसवाले और पतले निन्द्य होते हैं, रोटी के आकार (बराबर) कानवाली स्त्री छोड़ देने योग्य है ॥ १०० ॥

अथ ललाटलक्षणम्—

उन्नतस्त्र्यंगुलो भालः कोमलश्च नतभ्रुवाम् ।
अर्द्धचन्द्रनिभो नित्यं सौभाग्यारोग्यवर्द्धकः ॥१०१॥

अन्वयः—नतभ्रुवां भालः उन्नतस्त्र्यंगुलः कोमलश्च (तथा) अर्द्धचन्द्रनिभः (तदा) नित्यं सौभाग्यवर्द्धक (भवेत्) ॥ १०१ ॥

भा०—जिन नम्र भृकुटी वाली स्त्री का ललाट तीन अंगुल ऊँचा, सुन्दर, और अर्द्धचन्द्राकार हो वह सदा सौभाग्य तथा शरीर सुख बढ़ानेवाला होता है ॥ १०१॥

व्यक्तस्वस्तिकरेखयाकुलमलं नार्योंललाटस्थलं
सौभाग्यामलभोगकृत्तदलिकं लम्बायमानं यदि ।
अद्धा देवरमाशु हन्ति नितरां रोमाकुलं रोगद
रेखाहीनमनङ्गभङ्गजनकं ज्ञेयं बुधैः सर्वदा ॥१०२॥

अन्वयः—नार्याः ललाटस्थलं व्यक्तस्वस्तिकरेखयाकुलमलं, (तदा) सौभाग्यामलभोग्यकृत् यदि तदलिकं लम्बायमान अद्भा आशुदेवरं हन्ति, रोमाकुलं नितरां रोगदं, रेखाहीनमनङ्गभङ्गजनक सर्वदा बुधैः ज्ञेयम् ॥ १०२ ॥

भा० जिस स्त्री के ललाट में स्वस्तिक (सरल) रेखा हो अनेक स्वस्तिक चिन्ह हों वह पूर्ण सौभाग्य तथा अनेक प्रकार के भोगों से युक्त करनेवाली होती है। यदि वही रेखा नीचे लटकी हुई हो तो देवर को शीघ्र नाश करती है। यदि ललाट में रोम हों तो रोग देते हैं और रेखाहीन ललाट कामदेव को नाश करता है ऐसा पण्डितों ने कहा है ॥ १०२ ॥

करिपुङ्गवकुम्भसमान उत
प्रवरोन्नत एव कदम्बनिभः ।
इह मौलिरजस्रमिला विमला
विविधा बहुधान्ययुता सुदृशः ॥१०३॥

अन्वयः—सुदृशः मौलिः करिपुङ्गवकुम्भसमानः उत प्रवरोन्नतः एव कदम्बनिभः (भवति) इह अजस्रमिला विमला विविधा बहुधान्य युता (भवति) ॥ १०३ ॥

भा०--सुन्दर नेत्रवाली स्त्री के ललाट श्रेष्ठ हाथी के मस्तक के समान ऊँचा अथवा कदम्ब की तरह ऊँचा हो वह सदा भूषण, वाहन, भूमि तथा अनेकों प्रकार के धन-धान्य से युक्त रखता है ।। १०३ ।।

पीनमौलिरतिमानहारिका
दारिका कुजनसङ्गकारिका।
लम्बमौलिरपि सर्वनाशिका
बन्धकी निजकुलान्तकारिका ।।१०४।।

अन्वयः—पीनमौलि दारिका रतिमानहारिका कुजनसंगकारिका लम्बमौलिरपि सर्वनाशिका बन्धकी निजकुलांतकारिका (भवति) ।। १०४ ।।

भा०--चक्की के समान स्थूल ललाटवाली स्त्री रतिकाल में लज्जा खानेवाली नीच जनों के साथ प्रेम करनेवाली होती है, लम्बा ललाटवाली स्त्री भी धनधान्य नाश करनेवाली वन्ध्या और अपने कुल को विध्वंश करनेवाली होती है ।। १०४ ।।

केशा यस्या भ्रमरपटलोपेक्षवर्णा सुवर्णा
वक्राकाराः कुवलयदृशः किंचिदाकुञ्चिताग्राः।
भाग्यं सद्यः ददति विरलाः पिंगलाः स्थूलरूपा
रूक्षाकाराः परमलघवो बन्धवैधव्यदुःखम् ।।१०५।।

अन्वयः—यस्याः केशा भ्रमरपटलोपेक्षवर्णाः सुवर्णा वक्राकाराः कुवलयदृशः किञ्चिदाकुञ्चिता (भवति तदा) सद्यो भाग्यं ददति, विरलाः पिङ्गलाः स्थूलरूपा रूक्षाकाराः (अथवा) परमलघवो (भवति तदा) बन्धवैधव्यदुःखं (ददति) ।। १०५ ।।

भा०--जिस स्त्री के केश अति काले, चमकीले, लहर के समान टेढ़े, तथा अग्रभाग कुछ मुड़े हुए हों वह शीघ्र भाग्योदय करते हैं। शिर में अल्प केश भूरे रंगवाले, रुक्ष अथवा अति छोटे केश, बन्धन, वैधव्य तथा दुःख देनेवाले होते हैं ।। १०५ ।।

मशकोपि ललाटपट्टवर्त्ती यदि
जागर्त्ति स मध्यगो भ्रुवोर्वा।

तनुते सुखमर्थराशिभोगं
सततं पत्युरपत्यभृत्ययोश्च ॥ १०६ ॥

अन्वयः—यदि ललाटपट्टवर्ती भ्रुवार्मध्यगो वा मशकोऽपि जागर्ति सा सततं अर्थराशिभोगं, पत्युरपत्यभृत्ययोश्च सुखं तनुते ॥ १०६ ॥

भा० यदि ललाट में या दोनों भौंह के बीच में तिल या मशा हो तो ऐसे स्त्रियों को अनेक प्रकार का भोग, सदा पति, पुत्र और नौकरों का सुख मिलता है ॥ १०६ ॥

मशकोऽपि कपोलमध्यगामी
सुदृशो लोहित एवमिष्टदः स्यात्।
हृदयं तिलकेन शोभित
लसनेनापि च राज्यकारणम् ॥ १०७ ॥

अन्वयः—सुदृशः कपोलमध्यगामिनी मशकोऽपि इष्टदः स्यात्, एवं हृदयं तिलकेन शोभितं लसनेनापि च राज्यकारणम् ॥ १०७ ॥

भा० जिस स्त्री के गाल पर लाल रंग का मसा हो वह लाभदायक है, हृदय पर तिल तथा लहसन हो तो राज्य देनेवाला होता है ॥१०७॥

लोहितेन तिलकेन मण्डितं
सुभ्रुवो हि कुचमण्डलं यदा।
जायते किल सुताचतुष्टयं
बालकत्रयमुदीरितं तदा ॥ १०८ ॥

अन्वय—यदा सुभ्रुवः कुचमण्डलं लोहितेन तिलकेन हि मण्डितं तदा किल सुताचतुष्टयं बालकत्रयं च उदीरितम् ॥ १०८ ॥

भा०—जिस सुनेत्रा के स्तन के ऊपर लाल रंग की तिल सोभायमान हो उसको चार कन्या और तीन पुत्र होगा ऐसा कहना चाहिये ॥ १०८ ॥

भवति वामकुचेऽरुणलांछनं
शुभदृशस्तिलकं कमलाप्रभम्।
प्रथमतस्तनयं परिसूय सा
कृतिवरं विधवा तदनन्तरम् ॥ १०९ ॥

अन्वयः—शुभदृशः वामकुचेऽरुणलाञ्छनं, (अथवा) तिलकं कमलप्रभं भवति सा प्रथमतः कृतिवर तनयं परिसूयः तदन्तरं विधवा भवति ॥ १ ५ ॥

भा०—जिस सुभ्रू के वाम स्तन पर लाल लहसन अथवा सुन्दर तिल हो तो वह प्रथम युवा अवस्था न विद्वान् पुत्र पैदा करके विधवा हो जाती है ।।१०६।।

लसति बालमधुव्रतसन्निभं
शुभदृशस्तिलकं गुददक्षिणे ।
न पतेरबला कमलालया
नृपमपत्यमरं जनयेदलम् ॥ ११० ॥

अन्वय-- शभदृश गुददक्षिणे वालमधुव्रतसन्निभं तिलकं लसति (सा) नरपतेरबला, कमलालया नृपमपत्यमरं अलं जनयेत् ॥ ११० ॥

भा०– जिस सुनयना के दाहिने चतड पर छोटे भ्रमर के समान (काला) तिल हो वह राजा की प्रियतमा (स्त्री) अनेक सम्पत्तियों से युक्त होकर अवश्य राजपुत्र ही पैदा करती है ॥ ११० ॥

मशकोऽपि च नासिकाग्रगामी
सुदृशी विद्रुमकांतिरर्थदायी ।
असितपक्षनवाभ्ररूपधारी
पतिहन्त्री किल पुंश्चली विशेषात् ॥ १११ ॥

अन्वय—सुदृशी नासाग्रगामी विद्रुमकान्तिः मशकोऽपि (तदा) अर्थदायी (तथा) असितपक्षनवाभ्ररूपधारी (तदा), पति हन्त्री विशेषात् किल पुंश्चली (भवति) ॥ १११ ॥

भा०—जिस सुनयनी स्त्री के नासाग्र पर लाल रंग का मसा हो वह धन देने वाला होता है । यदि काला रंग का मसा हो तो वह स्त्री पति को नाश करने वाली तथा विशेष करके व्यभिचारिणी होती है ॥ १११ ॥

यदि नाभेरधोभागे तिलकं लांछनं स्फुटम् ।
सौभाग्यसूचकं ज्ञेयं मशको वा नतभ्रुवाम् ॥ ११२ ॥

अन्वयः यदि नतभ्रुवां नाभेरधोभागे स्फुटं तिलकं लांछनं मशको वा (भवति तदा सौभाग्य सूचकं ज्ञेयम् ॥ ११२ ॥

भा०—यदि नम्र भृकुटी वाली स्त्रियों के नाभि के नीचे (पेडू पर) स्पष्टतिल, लहसन अथवा मसा हो तो वह सौभाग्य देनेवाला समझना चाहिए॥ ११२॥

यदि करे च कपोलतलेऽथवा
भवति कण्ठगतं तिलकं तदा।
श्रुतितलेऽपि च सा पतिवल्लभा
वरदृशी मशकामललांछनैः॥ ११३॥

अन्वयः—यदि वरदृशो करे च कपोलतले अथवा कण्ठगतं श्रुतितलेऽपि च तिलकं (भवति तदा) सा पतिवल्लभा, मशकामललांछनैरपि पतिवल्लभा (भवति)॥ ११३॥

भा०—जिस सुनेत्रा के हथेली, गाल, कण्ठ अथवा कान के नीचे तिल का चिह्न हो वह अपने पति की अत्यन्त प्यारी होती है, इसी प्रकार उक्त स्थानों में मसा और लहसन होने से भी उक्त फल होता है॥ ११३॥

भालस्थेन त्रिशूलेन शंभुना निर्मितेन वै।
यस्याः साऽऽलीसहस्राणामीशितामाप्नुयादरम्॥ ११४॥

अन्वयः—यस्याः भालस्थले शम्भुना निर्मितेन त्रिशूलेन (शोभिता) सा वै अली सहस्राणामीशितां आदरमाप्नुयात्॥ ११४॥

भा०—जिस स्त्री के ललाट में श्रीशंकरजी करके बनाया हुआ त्रिशूल रेखा हो वह हजारों सखियों (स्त्रियों) की स्वामिनी अर्थात् महारानी की तरह आदर पाती है॥ ११४॥

किटकिटे तिलकं कुरुते मिथः
शुभदृशः शयने तु रदावली।
महदमङ्गलमाह विशेषतः
प्रियतमे तनुलक्षणकोविदाः॥ ११५॥

अन्वयः—शुभदृशः शयने रदावली तिलकं (अथवा) मिथः किटकिटे कुरुते (तदा) प्रियतमे विशेषतः महदमङ्गलं (इति) तनुलक्षणकोविदाः आहुः॥ ११५॥

भा०—जिस सुनेत्रा के दाँतों में तिल हो अथवा शयन करने पर दाँतों से

किटकिटाहट (शब्द) हो तो उसके पति को विशेष अमंगल होता है ऐसा लक्षण शास्त्र के जानने वाले पण्डितों ने कहा है ।। ११५ ।।

शकटवद्यदि योनि ललाटगो
मृगदृशो मृदुलोमगणो भवेत् ।
वरदुकूलमणिव्रजमण्डिता
क्षितिभृतां वनिता वनितावृता ।। ११६ ।।

अन्वयः—यदि मृगदृशः मृदुलोमगणः शकटवत् योनिललाटगः वरदुकूलमणिव्रजमण्डितावनिता वनितावृता क्षितिभृतां भवेत् ।। ११६ ।।

भा०—जिस मृगनयनी के कोमल बालों से बना हुआ ललाट में चक्र तथा योनि का आकार (चिन्ह) हो वह सुन्दर वस्त्र, अनेक भूषण और दासियों से युक्त राजमहिला होती है ।। ११६ ।।

विलसति भगभाले दक्षिणावर्तरूपः
कुवलयनयनायाः कोमलो लोमसंघः ।
नरपतिकुलभर्तुः कामिनी मानिनीना-
मिह भवति वदान्या सैव धन्या विशेषात् ।।११७।।

अन्वयः—कुवलयनयनायाः कोमलो लोमसङ्घः दक्षिणवर्तरूपः सैव विशेषात् धन्या भवति ।। ११७ ।।

भा०—जिस मृगनयनी के दक्षिण ललाट पर कोमल केशों से योनिरूप चिन्ह सोभायमान हो वह अनेक रानियों में श्रेष्ठ (पटरानी) विशेष कर अति धन्या होती है ।। ११७ ।।

कण्ठावर्ता भवति कुलटा भर्तृहन्त्री कुरूपा
पृष्ठावर्त्ता कठिनहृदया स्वामिहन्त्री कुलघ्नी ।
आवर्तौ वा भवत उदरे द्वाविहैकोऽपि यस्याः
सापित्याज्या कृतिभिरबला लक्षणज्ञैस्तु दूरात् ।। ११८ ।।

अन्वयः —यस्याः (भगः) कण्ठावर्ता (तदा) कुलटा, भार्तृहन्त्री, कुरूपा, भवति, पृष्ठावर्ता कठिनहृदया स्वामिहन्त्री कुलघ्नी भवति, द्वौ आवर्त्तौ

उदरे भवतः एकोऽपिवा (भवति) सापि अबला लक्षणज्ञैः कृतिभिः दूरात् त्याज्या ॥ ११८ ॥

भा०—जिस स्त्री के कण्ठ में भँवरी (घुमा हुआ केश) हो वह पुश्चली, पति मारनेवाली तथा कुरूपा होती है, जिसके पीठ में भँवरी हो वह कर्कशा, पतिघात करने वाली तथा परिवार का नाश करने वाली होती है, जिसके उदर (पेडू) पर दो अथवा एक भी भँवरी हो तो वह दूर ही से त्याग करने योग्य है ऐसा अबला शास्त्र के जानने वाले पण्डितों ने कहा है ॥ ११८ ॥

सीमन्ते च ललाटे वा कण्ठे वापि नतभ्रुवः ।
लोम्नामावर्त्तको दक्षो वामो वैधव्यसूचकः ॥ ११९ ॥

अन्वयः—नतभ्रुवः सीमन्ते च ललाटे वा कण्ठे दक्षो वामोऽपि लोम्नामावर्त्तको भवति तदा) वैधव्यसूचकः ॥ ११९ ॥

भा० - जिस स्त्री के केशान्त स्थान, ललाट में अथवा कण्ठ के दाहिने बायें भँवरी हो तो वह वैधव्य सूचक होती है ॥ ११९ ॥

अथ शुभाशुभलक्षणकारणम्—

याभिरेव वरदो महेश्वरः
पूजितः किल पुरा व्रतादिभिः ।
पार्वती च परिपूजिता मुदा
भक्तियोग विधिना सुवासिनी ॥ १२० ॥
भूषितामलविभूषणादिभिः
क्षालितं वपुरनेकधा पुरा ।
तीर्थराजपयसा भवन्ति ता
लक्षणैरिह शुभाः सुलक्षणाः ॥ १२१ ॥

अन्वयः—याभिः पुरा व्रतादिभिः वरदः महेश्वरः किल पूजितः तथा भक्तियोग विधिना मुदा पार्वती सुवासिनी च भूषितामलविभूषणादिभिः हरिपूजिता, तथा तीर्थराजपयसा पुरा अनेकधा वपुः क्षालितं ताः सुलक्षणाः सुलक्षणैरिह भवन्ति ॥ १२०-१२१ ॥

भा०—जिस सुन्दरी के पूर्वजन्म में शिवरात्रि प्रदोष इत्यादि व्रत रह कर आशुतोष शंकरजी का पूजन किया गया है अथवा भक्ति के साथ प्रसन्नतापूर्वक

बहुला, सावित्री, पैप्पल इत्यादि व्रत रहकर भूषण वस्त्र अक्षत चन्दन फूल माला इत्यादि करके सुन्दर वर देनेवाली श्रीपार्वती का पूजन किया गया है तथा तीर्थराज (प्रयाग)इत्यादि अनेक तीर्थों के जल से अनेकवार शरीर स्नानकराया गया है उसी (पद्मावती) स्त्रीके शरीर में अनेक शुभलक्षण होते हैं।। १२०-१२१।।

कृतं नहि तपो यया नगजया समाराधितो
हरिर्नहि रविव्रतं नहि कृतं च तीर्थाटनम् ।
धनं नहि धरामरे परमर्पितं तर्पितं
गुरोः कुलमिहाङ्गना भवति सैव दीनाङ्गना ।। १२२ ।।

अन्वयः—यया नगजया तपः नहि कृतं, हरि समाराधितो नहिकृतं, रविव्रतं नहिकृतं, तीर्थाटनं च नहिकृतं, धरामरे परम धनं नहि अर्पितं गुरोः कुलं नहि तर्तितं इह सैव अङ्गना दीनाङ्गना भवति ।। १२२ ।।

भा०--जिस स्त्रीने पूर्वजन्म में तपस्या श्रीपार्वतीजी की तथा पतिसेवा नहीं किया, सच्चे मन से श्रीविष्णु का ध्यान धारण नहीं किया, श्रीसूर्यनारायण का व्रत नहीं किया पतियुक्त तीर्थयात्रा न किया, आदरपूर्वक ब्राह्मणोंको दान न दिया तथा गुरु कुल (सासु-श्वसुर इत्यादि) का सेवा न किया वही मनस्विनी इस जन्म में अन्न-वस्त्र रहित अनेक प्रकार के कष्टों को भोगती है ।। १२२ ।।

अथ सुरेखाफलम्—

यतः सुलक्षणी रेखा योषा हीनायुषं पतिम् ।
दीर्घायुषं सुचरितैः प्रकारोति सुखास्पदम् ।। १२३ ।।

अन्वयः—यतः सुलक्षणी रेखा योषा सुचरितैः हीनायुषं पतिम् दीर्घायुषं सुखास्पदं (च) प्रकरोति ।। १२३ ।।

भा०--सुन्दर लक्षणवाली स्त्रियों के सुधर्म (पतिव्रत धर्म) अल्पायु पति को भी दीर्घायु तथा सुख का स्थान बना देता है ।। १२ ।।

अथ कुलक्षणफलम्—

दीर्घायुषं पतिं हन्ति कुयोगैश्च कुलक्षणैः ।
अतः सुलक्षणा कन्या परिणेया विचक्षणैः ।। १२४ ।।

अन्वयः—कुलक्षणैः कुयोगश्च दीर्घायुष पतिं हन्ति, अतः विचक्षणैः सुलक्षणा कन्या परिणेया ।। १२४ ।।

भा०-कुलक्षण तथा कुयोगवाली स्त्री दीर्घजीवी पति को भी मार डालती है, अतः विद्वान करके शुभ लक्षणवाली कन्या के साथ विवाह किया जाय ॥१२४॥

कुलक्षणविलक्षिता यदि सुताऽत्रसंजायते
श्रुतिस्मृति पथानया परमसोमवारव्रतम् ।
विधाय तदनन्तरं रहसि कारयित्वाच्युत-
द्रुमेण हरिणा कृतोशुभघटेन* पाणिग्रहण ॥ १२५ ॥

---

* अथ कुम्भविवाहविधिः संक्षेपतः ।

तत्र संस्कारप्रकाशे निर्णयसिन्धौ च—

बालवैधव्ययोगे तु कुम्भद्रु प्रतिमादिभिः ।
कृत्वा लग्न ततः पश्चात् कन्योद्वाह्येति चापरे ॥
द्रुवृक्षोऽश्वत्थः । प्रतिमा विष्णोः सौवर्णी शिरो-
ऽवयवादि सहिता । तत्र प्रकारोऽभिहितः सूर्यारुण-
सम्वादे तत्रैव ।

विवाहात्पूवकाले च चन्द्रतारा बलान्विते ।
विवाहोक्ते शुभे लग्ने कन्यां कुम्भेन चोद्वहेत् ।
पिता संकल्प्य वाह्ये च विवाहविधिपूर्वकम् ।
सूत्रेण वेष्टयेत्पश्चाद् दशतन्तु विधानतः ॥
कुम्भमालकृतं देहं तयोरेकान्त मन्दिरे ।
ततः कुम्भं च निस्सार्थं प्रमज्य सलिलाशये ॥
ततोऽभिसेचनं कुर्यात् पञ्चपल्लव वारिभिः ।
इति । आसमन्ताच्चन्दनादिभिरलंकृतं ॥
कुम्भं कन्यायाः देहं च सूत्रेण वेष्टयेदित्यन्वयः ।

तत्र पूनर्भू दोषभाव उक्तो विधानखण्डे (संस्कार प्रकाशे)

"स्वर्णाम्बु पिप्पलानां च प्रतिमा विष्णुरूपिणी ।
तया सह विवाहे तु पुनर्भूत्वं न जायते ॥"

अत्राम्बु शब्देन जलपूर्णो घटो गृह्यते ।

अथ प्रयोगः—

कन्यादानकर्त्ता पित्रादिः एकान्ते विष्णुमन्दिरं गत्वा स्वासने प्रांमुखः उप-विश्य स्वदक्षिणतः कन्यामुपवेश्य दीपं प्रज्वालय्य आचम्य प्राणानायम्य शान्तिपाठ

अन्वयः—यदि कुलक्षणविलक्षिता सुताऽत्र संजायते (तदा) परम सोमवारव्रतं विधाय तदनन्तरं रहसि श्रुतिस्मृति पथानया अच्युतद्रुमेण, हरिणा, शुभघटे वा पाणिग्रहं कारयित्वा अग्रेसम्बन्धः ॥ १२५ ॥

(स्वस्तिवाचनं) कृत्वा देवेभ्यः पुष्पाञ्जलिं समर्प्य यथाविधिः पूजयित्वा प्रधानसंकल्पं कुर्यात् । तद्यथा-देशकालौ संकीर्त्य अद्येहं अमुक गोत्राया अमुक राशेरस्याः कन्याया अमुक स्थानस्थितदुष्टग्रहसूचित वैधव्यदोषोपशान्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कुम्भविवाहं करिष्ये । तत्पूर्वाङ्गत्वेन मातृपूजाभ्युदयिकश्राद्ध पुण्याहवाचनानि करिष्ये । इति संकल्प्य मातृपूजादि पुण्याहवाचनान्तं कर्मकृत्वा-आचार्यं वृत्वा कलशविधिना कलशं संस्थाप्य तत्र कलशे नवग्रहानावह्य संपूज्य विष्णुवरुणयोः सुवर्णप्रतिमे अग्न्युत्तारणपूर्वकं पञ्चामृतेन संस्नाप्य एतन्त इत्यादिना ॐ भूर्भुवः स्वः सुवर्णमतिमायां वरुण इहागच्छ इहातिष्ठ सुप्रतिष्ठितो भव इति प्रतिष्ठाप्य तत्रैव विष्णुं प्रतिष्ठाप्य प्रतिमे कलशे संस्थाप्य पूजा संकल्पं कुर्यात् अद्येह अमुक गोत्रः अमुक राशिरमुकशर्माहं अस्याः कन्यायाः वैधव्यदोष-परिहारार्थं कलशे सुवर्णप्रतिमयो विष्णुवरुणयोः पूजनं करिष्ये । इति संकल्प्य ॐ वरुणाय नमः इति नाम मंत्राभ्यां वा ॐ तत्वा यामि ब्राह्मण वन्दः मानस्तदा शास्ते याजमानो हविर्भिः । अहेड मानो वरुणेह बोध्युश ॐ समा न आयुः प्रमोषी—इति, ओं विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा-इति वैदिक मन्त्राभ्यां च ध्यानादि-नीराजनान्त विष्णुवरुणौ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

वरुणांगस्वरूपस्त्वं जीवनानां समाश्रयः ।
पतिं जीवय कन्यायाश्चिर पुत्रसुखं कुरु ॥ १ ॥
देहि विष्णोवरं देव कन्यां पालय दुःखतः ।
पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं देहि तथा सुखम् ॥ २ ॥

इति सम्प्रार्थ्य मधुपर्कवस्त्रालङ्कारान् समर्प्य कन्या कुम्भान्तरालेऽन्तः पटं धृत्वा मंगलपद्यानां पाठं कृत्वा कन्यया वस्त्रोपवस्त्रे परिधाप्योत्तरतः अन्तः पट-मपमार्य समञ्जनं कारयित्वा ॐ विष्णुः ३ इत्यादि सं० अस्याः कन्याया वैधव्य दोषपरिहारद्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं श्रीविष्णुवरुणस्वरूपिणे कुम्भाय इमां श्रीरूपिणीं वरार्थिनीं कन्यां सम्प्रददे-संकल्प्य-गौरीकन्यामित्यादि ततः पञ्चपल्लव-सहितेन जलेन समुद्रज्येष्ठा इत्यादि मन्त्रैः स्वस्तिन इत्यादि मन्त्रैर्वा मन्य-मभिषिच्य शुद्धवाससी परिधाप्य दक्षिणा संकल्पं कुर्यात् । अद्येह अमुक राशेरस्याः कन्यायाः अमुकस्थानस्थितदुष्टग्रहसूचितवैधव्यदोषपरिहारद्वारा सौभाग्य फल-

भा०-यदि अलक्षण युक्त कन्या घर में उत्पन्न हो तो उसको उत्तम सोमवार व्रत कराकर एकान्त में वेदोक्त विधि से (विवाहविहित लग्न नक्षत्र इत्यादि में) पिप्पलवृक्ष अथवा विष्णुप्रतिमा, अथवा घट के साथ विवाह कराकर ॥१२५॥

शुभेऽहनि कुमारिकाकरनिपीडनं कारये-
द्वरेण चिरजीविना पुनरिदं न दोषायते ।
इदं तु बहुसंमतं मुनिवरेण गीतं पुनः
प्रमाणपटुनादृतं प्रियविनोदकन्दप्रदम् ॥ १२६ ॥

अन्वयः—शुभेऽहनि कुमारिकाकरनिपीडनं चिरजीविना वरेण कारयेत् इदं पुनः न दोषायते (इति) मुनिवरेण गीतं इदं तु बहुसम्मतं पुनः प्रमाणपटुनादृतं प्रियविनोदकन्दप्रदम् ॥ ११६ ॥

भा०--शुभ दिन (मुहूर्त) में कन्या का विवाह दीर्घजीवी वर के साथ कर देना चाहिये, यहाँ पुनर्विवाह का दोष नहीं लगता ऐसा ऋषियों का वाक्य है, यह पुनर्विवाह बहु सम्मत है । प्रमाणिक पण्डितों करके कहा गया है यह विवाह अत्यन्त आनन्ददायक और पति-प्रिया के प्रेम को बढ़ानेवाला होता है ॥१२६॥

कुलक्षणैः कुयोगैश्च लक्षिता वनिता यदा ।
तस्याः पूर्वविधानेन विवाहं कारयेद्बुधः ॥ १२७ ॥

अन्वयः यदा कुलक्षणैः कुयोगैश्च वनिता लक्षिता तस्याः पूर्वविधानेन विवाहं बुधः कारयेत् ॥ १२७ ॥

भा०—जब कन्या के कुण्डली अथवा शरीर के चिन्ह (कुयोग) से वैधव्य योग मालूम पड़े तो विद्वानों करके (घट तथा विष्णु से विवाह कराकर) अवश्य पुनः विवाह कन्या का कर देना चाहिये ॥ १२७ ॥

प्राप्तये कृतस्य कुम्भविवाहकर्म्मणः साद्गुण्यार्थं इमे सुपूजिते विष्णुवरुणयोः प्रतिमे वैवाह्यवस्त्रादिकमिमां दक्षिणां च आचार्याय दास्ये । तथा इमां भूयसीं दक्षिणां ब्राह्मणेभ्यो दास्ये । तथा सिद्धान्तेन यथा संख्यकान् ब्राह्मणांश्च तर्पयिष्ये ओं तत्सत् न मम इति संकल्प्य आचार्याय प्रतिमा स दक्षिणां दत्वा ब्राह्मणेभ्यो भूयसीदक्षिणां विभज्य दत्वा अभिषेकतिलकमन्त्रपाठादिकं करयित्वा यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयित्वा कन्याविवाहं कुर्यात् । एवं कृते सति शुभं भवेत् ।
अनया रीत्या केवलंविष्णुप्रतिमयाऽपि विवाहो भवतीति कुम्भविवाहप्रयोगः ।

जीवनाथविदुषात्र कामिनी-
लक्षणं बुधमनोमुदे मया ।
स्कन्दकुम्भभवयोर्विवादजं
व्यासगीतमखिलं प्रकाशितम् ॥ १२८ ॥

अन्वयः--जीवनाथविदुषाऽत्र कामिनीलक्षणं बुधमनोमुदे स्कन्द कुम्भभवयोर्विवादजं व्यासगीतमखिलं मया प्रकाशितम् ॥ २८ ॥

भा०—ग्रन्थकर्त्ता पं० श्रीजीवनाथजी का कहना है कि यह स्त्रियों का लक्षण पण्डितों के प्रसन्नार्थ स्कन्द कुम्भज का प्रश्नोत्तर श्रीव्यासजी का कहा हुआ सम्पूर्ण प्रकाशित किया है ॥ १२८ ॥

इति श्रीभावकुतूहले-उत्साहवर्द्धिनीभाषाटीकायां
दशमाऽध्यायः समाप्तः ॥ १० ॥

—०:०—

अथैकादशोऽध्यायः ।

अथ शयनादिद्वादशावस्थाविचारः—

प्रथमं शयनं ज्ञेयं द्वितीयमुपवेशनम् ।
नेत्रपाणिः प्रकाशश्च गमनागमने ततः ॥ १ ॥
सभावस्था ततो ज्ञेय आगमो भोजनं तथा ।
नृत्यलिप्सा कौतुकं च निद्रावस्था नभः सदाम् ॥ २ ॥

अन्वयः--प्रथमं शयनं, द्वितीय मुपवेशनम्, ततः नेत्रपाणिः प्रकाशश्च, ततः गमनागमने, सभायां, आगमः तथा भोजनं, नृत्यलिप्सा, कौतुकं निद्रा चेति नभःसदां अवस्था ज्ञेयः ॥ १–२ ॥

भा०—अब ग्रहों की अवस्था बताते हैं, १ शयन, २ उपवेशन, ३ नेत्रपाणि, ४ प्रकाश, ५ गमन, ६ आगमन, ७ सभा, ८ आगम, ९ भोजन, १० नृत्यलिप्सा, ११ कौतुक, १२ निद्रा ये ग्रहों के बारह अवस्था के नाम हैं ॥ १–२ ॥

अवस्थापरिज्ञानम्—

ग्रहर्क्षसंख्या खगमाननिघ्नी-
खेटांशसंख्यागुणिता ग्रहाणाम् ।
निजेष्टनक्षत्रमर्क्षतनुप्रमाणै-
र्युतार्क तष्टा शयनाद्यवस्था ॥ ३ ॥

शेषं शेषहतं स्वराङ्कसहितं तष्टं पुनर्भानुना
संक्षेपं गणशेषितं खलु भवेद्दृष्ट्याद्यवस्था त्रिधा ।
पञ्च५ द्वि२गुणा२ क्ष५ राम३गुण ३वेदाः४ क्षेपकाङ्काःरवेः ।
प्राचीनैर्यवनादिभिः समुदितास्तेऽमी निबद्धामया ॥ ४ ॥

प्रथमश्लोकद्वयंसुगमम् ॥ ग्रहर्क्ष ख्येति ॥
जन्मकाले यस्मिन्नक्षत्रे ग्रहोस्ति तन्नक्षत्रसंख्या ग्रहर्क्षसंख्या ज्ञेया सा ग्रहप्रमाणेन निघ्नी गुणा । पुनर्ग्रहस्य वर्तमानांशसंख्यया गुणनीया ततो निजेष्टदण्ड जन्मनक्षत्र जन्मलग्न प्रमाणाङ्केन युक्ता द्वादशभिस्तष्टा शेषाङ्कमिता ग्रहस्य शयनाद्यवस्था स्यादिति एकशेषे शयनावस्था । द्विशेषे उपवेपनावस्था, त्रिशेषे नेत्रपाणिरेवमग्रेपि ॥
अथ दृष्ट्याद्यवस्थानयनम् ॥

शेषमिति--

पूर्वस्मिन्नर्कशेषिते यच्छेषं तदेव शेषमिति शेषेण शेषप्रमाणाङ्कप्रमाणेन हतं कार्यम् अयमर्थः स्वरोदयग्रन्थात्स्वरांकप्रमाणं विज्ञाय तत्र क्षेपं स्वरांकमालोक्य मानं ज्ञेयम् ॥
ननु सर्वत्र जन्मनामाक्षरस्य मुख्यतायां सत्यां कथमत्र प्रसिद्धनामाद्यक्षरग्रहणमिति चेदुच्यते ।

स्वरशास्त्रे प्रसिद्धनाम्नो मुख्यता प्रतिपादन-
दर्शनात् प्रसुप्तो येन जागर्त्तीत्युक्ते,
यथा अकारस्यैकं इकारस्य द्वयं उकारस्य
त्रयं एकारस्य चतुष्टयं ओकारस्य पंचेति ॥
एवं स्वराङ्क मानं ज्ञात्वा योज्यम् ॥
ततो रविभिस्तष्टं क्षेपांकयुतं शेषं कार्य्यासीत् ।
ततः त्रिभिस्तष्टं एकादि शेषे दृष्ट याद्यवस्था ज्ञेया ।
एकेन दृष्टिः द्वाभ्यां चेष्टा त्रिभिर्विचेष्टेति ॥

अथोदाहरणार्थं कस्यचित्पुरुषस्य
जन्मसमयादिकं लिख्यते ।
पौषशुक्लपञ्चम्यां शुक्र धनिष्ठा ४
चरणे मिथुनलग्ने इष्टं २६ जन्म ॥

तत्रजन्मसमये मूलनक्षत्रे रविःस्ति,
धनिष्ठायां चन्द्रः, श्रवणे कुजः, पूर्वाषाढे
बुधः, गुरुरार्द्रायाम्, शुक्रः पूर्वाषाढे, शनिर्मूले,
पूर्वाफाल्गुन्यां राहुः, पूर्वभाद्रे केतुरिति ॥

अथ रव्यादीनामंशाः —

सूर्यस्य सप्त ७, भौमस्य रुद्राः ११, बुधस्यो-
त्कृतयः २६, गुरोरेकादशः ११, शुक्रस्य
पंचविंशतिः २५, शनेः सप्तः ७,
राहोस्त्रयोविंशतिः २३, केतोश्च २३ ॥

अथोदाहरणम्—

अत्र मूलनक्षत्रे रविस्तत्संख्या १९,
राशिसङ्ख्यया १, गुणिता १९, धनुषः

सप्तमांशो रविस्तेन सप्तभिर्गुणिता जाताः
१३३, इष्टं २६ धनिष्ठाजन्मभंसंख्या २३
मिथुनलग्नं ३ एषां योगेन युताः १८५
रविस्तष्टाः शेषं ५ तेन शयनादि
गणनया गमनावस्थायां रविर्ज्ञेयः ।
एवं चन्द्रादीनामप्यवस्था ज्ञानं भवति ।
अथ च अवशेषं ५ स्वराङ्कज्ञानम्,
यथात्र प्रसिद्धनामाद्यक्षरस्य गकारस्य
उकाराधः पङ्क्तौ स्थित्यात-
स्स्वरसङ्ख्या ३ त्रि मितेति ।
शेषं ५ शेषेण ५ गुणितं २५
स्वराङ्क ३ युतं २८ रवितष्टं शेषं ४
सूर्यर्क्षेपकेण ५ युक्तं ९ त्रिभि-
स्तष्टम्० शून्यमतारवेर्विचेष्टावस्था ॥

भा०—अश्विन्यादि जिस नक्षत्र पर ग्रह हों उस संख्या को ग्रह कों (रवि=१, चं०=२, भौ०=३ इत्यादि) संख्या से गुणा कर, गुणनफल को ग्रह जिस अंश में हो उस संख्या से गुणा कर पुनः गुणनफल में इष्टघटी जन्म नक्षत्र संख्या और जन्म लग्न संख्या जोड़ देना, इस योगाङ्क को १२ से तष्ट करने से जो शेष अंक हो वही ग्रहों की शयनादि अवस्था जानना यथा १ शेष में शयन अवस्था, २ शेष में उपवेशन अवस्था इत्यादि ॥ ३ ॥

भा०--उक्त प्रकार से जो शेष आता है उस अंक को उसी अंक से गुणा (वर्ग) कर दे, उसमें (वक्ष्यमाण) स्वरांक जोड़ कर १२ से तष्ट करे फिर शेष में ग्रहों का क्षेपकांक जोड़ कर ३ से तष्ट करे यदि १ शेष बचे तो दृष्टि, २ शेष में चेष्टा, और शेष में विचेष्टा अवस्था जानना । सूर्यादि ग्रहों का ५, २, २, ३, ५, ३, ३, ४ क्रम से क्षेपकांक होता है, यह क्षेपकांक प्राचीन यवनाचार्यादिकों का कहा हुआ इस ग्रन्थ में लिखा जाता है, अर्थात ये अंक उपपत्ति हीन हैं ॥ ४ ॥

अथ स्वराङ्क चक्रम्

१	२	३	४	५
अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठद
ड	ढ	त	थ	ब
ध	न	प	फ	
भ	म	य	र	ल
व	श	प	स	ह

"स्वरांक सहित" जो लिखा गया है वह स्वरशास्त्र (इस चक्र) से लेना, अर्थात् पुकारने के नाम में जो आदि अक्षर हो उस अक्षर में जो स्वर तज्जन्य जो अंक वही अंक (शेपंशेपहत में) जोड़ना चाहिये। जैसे रामदास का स्वराक = १, देवदत्त का स्वरांक = ४, मोहन (म् + ओ = मो = ५ का स्वरांक ५ इत्यादि। वहाँ अ = आ = १। इ = ई = २। उ = ऊ = ३। ए = ऐ = ४। ओ = औ = ५।

भा०—गुप्तेश्वर का जन्म पौष शुक्ल पञ्चमी शुक्रवार धनिष्ठा नक्षत्र इष्ठ २६।० मिथुन लग्न में हुआ। उस समय तात्कालिक सूर्य्य मूल नक्षत्र में, चन्द्रमा धनिष्ठा में, मंगल श्रवण में, बुध पूर्वाषाढ़ में, बृहस्पति आर्द्रा में, शुक्र पूर्वाषाढ़ में, शनि मूल में, राहु पूर्वाफाल्गुनी में और पूर्वाभाद्रपद में केतु हैं। सूर्य ७ अंश, चन्द्रमा ४ अंश, मङ्गल ११ अंश, बुध २६ अंश, बृहस्पति १ अंश, शुक्र २५ अंश, शनि ७ अंश और राहुकेतु ३ अंश पर हैं। सूर्य मूल नक्षत्र में है इसकी संख्या अश्विनी से १९ है, इसको सूर्य की संख्या १ से गुणा कर दिया तो (१९ × १ =) १९ हुआ, इसको सूर्य के अंश (७) से गुणा कर दिया तो (१९ × ७ =) १३३ हुआ, इसमें इष्ट (२६) संख्या, जन्म नक्षत्र (२३) संख्या, और लग्न (३) संख्या इन तीनों को जोड़ दिया तो- १३३ + २६ + २३ × ३ = १८१ हुआ, इसको १२ से तष्टित किया तो शेष बचा ५। अतः शयनादि गणना से गमन अवस्था सूर्य की हुई।

अब "शेपं शेप हतमित्यादि" शेप ५ को ५ ही से गुणा किया तो (५ × ५ =) २५ हुआ, इसमें "गुप्तेश्वर" का स्वर ३ जोड़ दिया तो (२५ + ३ =) २८ हुआ, इसको १२ से तष्टित किया तो शेष बचा ४। इसमें सूर्य का क्षेपकांक ५ जोड़ दिया तो (४ + ५ =) ९ हुआ, इसको ३ से तष्टित किया तो शेष बचा ० (शून्य) अतः सूर्य की गमना अवस्था में विचेष्टा अवस्था हुई। इसी प्रकार सब ग्रहों की अवस्था जाननी चाहिये।

अथावस्थाफलानि ।

तत्रादौ सूर्यावस्था—

त्रिकोणे वा कर्मण्यपि नयनपाणौ दिनमणेः
फलं शस्तं ज्ञेयं मदनसदने नन्दनपदे ।
प्रकाशे मार्तण्डे मृतिपदमपत्यं जनिमतां
तथा जाया याति व्ययमदनमाने च जनने ॥ १ ॥

अन्वयः—जनिमतां जनने नयनपाणैः दिनमणेः कर्मण्यपि वा फलं शस्तं ज्ञेयं, तथा प्रकाशे मार्तण्डे मदनसदने, नन्दनपदे, (तदा) अपत्यं मृतिपदं याति, तथा च प्रकाशे मार्तण्डे व्ययमदनमाने (तदा) जाया मृतिपदं याति ।

भा०—जिस मनुष्य के जन्म समय में नेत्रपाणि अवस्था गत सूर्य सातवें अथवा पाँचवें घर में बैठा हो तो पुत्र मर जाता है, अथवा उक्तावस्था गत सूर्य बारहवें, सातवें घर में बैठा हो तो उसकी स्त्री मर जाती है ॥ १ ॥

पुण्यबाधाकरः पुण्यमे भोजने
कौतुके वरिभे वैरिभे वैरिहन्ता रविः ।
सप्तमे पञ्चमे तत्रगो वा भवे-
दङ्गनापुत्रहा लिङ्गरोगप्रदः ॥ २ ॥

अन्वयः—यदि भोजने पुण्यभे रविः (तदा) पुण्यबाधाकरः कौतुके वैरिभे वैरिहन्ता, (यदा) तत्रगः (कौतुकावस्थागतः) सप्तमे पञ्चमे (रविः तदा] अङ्गनापुत्रहा, लिङ्गरोगप्रदश्च भवेत् ॥ २ ॥

भा०—भोजनावस्था में होकर नवें घर में सूर्य बैठा हो तो धर्म की हानि करता है, कौतुक अवस्था में होकर छठें घर में हो तो शत्रु का नाश करता है, तथा कौतुक अवस्था गत सातवें, पाँचवें घर में बैठा हो तो स्त्री, पुत्र की हानि करता है और लिंग में रोग (सुजाक कर) देता है ॥ २ ॥

चन्द्रावस्था—

चंद्रस्य द्वादशावस्था फलं शुक्लदले शुभम् ।
अशुभं कृष्णपक्षे तु विज्ञेयं गणकोत्तमैः ॥ ३ ॥

अन्वयः--चन्द्रस्य द्वादशावस्था फलं शुक्लदले शुभम्, कृष्णपक्षे तु अशुभं [इति] गणकोत्तमैः विज्ञेयम् ॥ ३ ॥

भा०—चन्द्रमा के बारहो अवस्था का फल शुक्ल पक्ष में शुभ और कृष्ण पक्ष में अशुभ होता है, ऐसा उत्तम ज्योतिषियों को जानना चाहिये ॥ ॥

कुजावस्था—

मदननन्दनगोऽवनिनन्दनः शयनगश्च कलत्रसुतक्षयम् ।
प्रथमतः कुरुते रिपुणेक्षितो रिपुग्रहेकरभंगमनंगतः ।४।

अन्वयः—प्रथमतः अवनिनन्दन शयनगः मदननन्दनगः [तदा] कलत्रसुतक्षयं कुरुते, रिपुणेक्षितः रिपुगृहे [गतस्तदा] अनङ्गतः करभङ्ग [कुरुते] ॥ ४ ॥

भा०—अब मंगल के अवस्था का फल कहते हैं-मंगल शयनावस्थागत सातवें घर में बैठा हो तो स्त्री और पुत्रका नाश करता है, उक्तावस्थागत मंगलशत्रुग्रहसे दीखता हुआ छठें घरमें बैठा हो तो कामदेव के वशीभूत होकर (स्त्रियोंके फसादसे) वह मनुष्य हाथ में अति कष्ट (लाठी इत्यादि करके चोट) खाता है ।४॥

यदि युतः शनिनापि च राहुणा
शिरसि रोगकरो धरणीसुतः ।
तनुगतः शयने नयने गदं
वितनुते नितरां क्षतमंगिनाम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—यदि धरणीसुतः शयनेऽवस्थागः शनिनापि राहुणाच युतः तनुगतः [तदा] अङ्गिनां नयने गदं [तथा] नितरां क्षतं वितनुते ॥५॥

भा०—यदि मंगल शयनावस्थागत शनि और राहु के साथ २ जन्म लग्न में बैठा हो तो मनुष्यों के नेत्र में रोग होता है और शरीर में अनेक प्रकार कष्ट बढ़ाता है ॥ ५ ॥

अङ्गारकोऽङ्गे यदि नेत्रपाणौ
करोत्यनङ्गातिशयेन भङ्गम् ।
भुजङ्गदन्तक्षतपावकांबु-
भयं नगे हानिमिहांगनायाः ॥ ६ ॥

अन्वयः--यदि अङ्गारकः नेपाणौ अंगे (तदा) अनङ्गातिशयेन भङ्गं करोति (तथा) भुजङ्गदन्तक्षतपावकाम्बुभयं करोति, (यदि) नगे (तदा) अंगनायाः हानिं करोति ॥ ६ ॥

भा०—यदि मंगल नेत्रपाणि अवस्थागत लग्न में बैठा हो तो कामदेव सम्बन्ध (स्त्री प्रपञ्च) करके अंगभंग करता है और सर्पभय, दन्तरोग भय, रुधिर विकारभय, अग्निभय तथा जल से भय भी करता है, यदि मंगल नेत्रपाणि अवस्थागत सातवें घर में हो तो स्त्री की हानि करता है अर्थात कष्ट देता है ।६।

प्रकाशने पञ्चमसप्तमस्थः
सुतं निहत्याशु निहन्ति वामम् ।
पापान्वितः पापखगान्तराले
कुकर्मिणां केतुवरं करोति ॥ ७ ॥

अन्वयः—(यदि भौमः) प्रकाशने पञ्चमस्थः (तदा) सुतं आशु निहन्ति (यदि) प्रकाशने सप्तमस्थः (तदा) वामं आशु निहन्ति (यदि) पापान्वितः पापखगान्तराले (भौमस्तदा) कुकर्मिणां केतुवरं करोति ॥७॥

भा०—यदि मंगल प्रकाशन अवस्थागत पाँचवें घर में बैठा हो तो पुत्र को शीघ्र मार डालता है, यदि उक्त अवस्थागत सातवें घर में बैठा हो तो स्त्री को शीघ्र मार डालता है, यदि उक्त अवस्थागत मंगल पापग्रहों के साथ-साथ बैठा हो अथवा पापग्रहों के बीच में बैठा हो तो उस मनुष्य को पापियों में पताका रूप (अत्यन्त पाप कर्म करने वाला) बना देता है ॥ ७ ॥

बुधावस्था

नेत्रपाणौ सुते सौम्ये पुत्रहानिः सुतागमः ।
सभायामेव कन्यानामाधिक्यं मदने सुते ॥ ८ ॥

अन्वयः--सौम्ये नेत्रपाणौ (अवस्थायां) सुते (तदा) पुत्रहानि सुतागमः (तथा) सभायां मदने (वा) सुते (तदा) कन्यानां आधिक्यं करोत्येव ॥ ८ ॥

भा०—यदि बुध नेत्रपाणि अवस्थागत पांचवें घर में बैठा हो तो पुत्र की हानि और कन्या की उत्पत्ति करता है, यदि सभा अवस्थागत सातवें घर अथवा पांचवें घर में बैठा हो तो अधिकतर कन्या की उत्पत्ति करता है ॥ ८ ॥

गुरोरवस्था—

भवति देवगुरौ यदि भोजने
तनुगते मनुजोहि धनुर्द्धरः ।
नवमपञ्चमभे धनवर्जितो
भवति पापयुते विसुतो नरः ॥ ९ ॥

अन्वयः—देवगुरौ भोजने तनुगते भवति (तदा) मनुजो हि धनुर्द्धरः (भवति), यदि (उक्तावस्थायां) नवमभे पञ्चमभे भवति तदा) धनवर्जितः (यदि) पापयुते (नवमपञ्चमभे तदा) नरः विसुतो (भवति) ॥९॥

भा०—यदि बृहस्पति भोजन अवस्थागत लग्न में बैठा हो तो उस मनुष्य को अवश्य धनुर्धारी बनाता है, यदि नवें घर अथवा पांचवें घर में (भोजन अवस्थागत) बैठा हो तो दरिद्र बना देता है, यदि उक्तावस्थागत पापग्रहों से युक्त नवें अथवा पांचवें घर में बैठा हो तो मनुष्य को सन्तानहीन कर देता है ॥९॥

शुक्रावस्था—

तनुगृहे मदने दशमे सितो
नयनपाणिगतो यदि जन्मनि ।
शुभमतीव फलं तनुते बलं
दशनभंगमनंगविवर्द्धनम् ॥ १० ॥

अन्वयः—यदि जन्मनि सितः पाणिगतः तनुगृहे, मदने, दशमे, [भवति तदा] अतीव शुभं फलं बलं [च] तनुते, दशनभंगं, अनंगविवर्धनं [च] तनुते ॥ १० ॥

भा०—जिसके जन्म समय में शुक्र नयनपाणि अवस्थागत जन्मलग्न, सातवें घर अथवा दसवें घर में बैठा हो तो अत्यन्त शुभ फल देता है, बल को बढ़ाता है, दांतों को कमजोर करता है और कामदेव की वृद्धि करता है ॥१०॥

शनेरवस्था—

यत्र कुत्र स्थितो मन्दो जन्मकाले विशेषतः ।
अवस्थानामसदृशं वितनोति शुभाशुभम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—जन्मकाले मन्दः यत्र कुत्र स्थितः विशेषतः अवस्थानाम सदृशं [फलं] वितनोति ॥ ११ ॥

भा०—जन्मकाल में शनैश्चर जिस किसी घर में बैठा हो वह अपने अवस्था के अनुकूल शुभ और अशुभ फल मनुष्यों को देता है ॥ ११ ॥

राहुकेत्वोरवस्था—

नवमे मदने वापि राहुराहुरिहाङ्गिनाम्
महान्तो निद्रितं ऽवश्यं पुण्यक्षेत्रनिवासिताम् ॥१२॥

अन्वय—अङ्गिनां राहुः निद्रितः नवमे मदने वाऽपि (भवति तदा) पुण्यक्षेत्रनिवासितां अवश्य करोतीति) महान्तः—आहुः ॥१२॥

भा०—जिसके जन्म समय में राहु निद्रा अवस्थागत नवें घर अथवा सातवें घर में बैठा हो तो उसको पवित्र भूमि (काशी, जगन्नाथपुरी, मथुरा अयोध्या; इत्यादि) में अवश्य स्थान देता है अर्थात् कहीं भी जन्म हो किन्तु तीर्थस्थानों में जीविका देकर रहनेका सिलसिला बना देता है ऐसा सिद्धजनों ने कहा है ॥ १२ ॥

द्वितीये द्वादशे वापि लाभे वा सिंहिकासुते ।
वसुधां भ्रमते मर्त्यो विधनः शयने भवेत् ॥१३॥

अन्वयः—शयने सिंहिकासुते द्वितीये वा द्वादशे वा लाभेऽपि भवेत्तदा मर्त्यः विधनः वसुधां भ्रमते ॥१३॥

भा०—यदि शयन अवस्थागत राहु दूसरे, बारहवें अथवा ग्यारहवें घर में बैठा हो तो वह मनुष्य दरिद्र बनकर पृथ्वी पर जहाँ तहाँ भटकता फिरता है अर्थात् उसकी जीविका कहीं भी स्थिर नहीं होती ॥ १३ ॥

निजक्षेत्रे तुंगे कविकुजगृहे मित्रभवने
स्ववर्गे सद्वर्गे तमसि शयने जन्मसमये ।
फलं पूर्णं प्राहुः कथित भवनादन्यभवने
तदादुष्टप्रांचस्तदिह शिखिनो राहुवदिदम् ॥१४॥

अन्वयः—जन्मसमये शयने तमसि निजक्षेत्रे, तुङ्गे; कविकुजगृहे, मित्रभवने, स्ववर्गे, सद्वर्गे (वा भवति) तदा फलं (शुभं) पूर्णं आहुः (यदा) कथितभवनात् अन्यभवने तदा दुष्टप्रांचः (करोति) राहुवत् इदं फल शिखिनोऽपि (भवति ॥१४॥

भा०—जिसके जन्म समय में राहु अपने घर में, अपने उच्च स्थान में अथवा शुक्र; मङ्गल के घर (२; ७, १, ८) में, अपने अथवा शुभग्रहोंके षड्वर्ग में बैठा

हो तो शुभ फल करता है, इन स्थानों के अतिरिक्त स्थानों में बैठा हुआ राहु, नीच मनुष्यों का पुरोहित अथवा गुरु बनाता है। राहु के स्थानों का जो-जो फल कहा है वही केतु का भी जानना ॥ १४ ॥

अथविशेषफलानि—

यदि निद्रागतः पापः सप्तमे पापपीडितः।
तदा जायाविनाशः स्याच्छुभयोगेक्षणान्नहि ॥१५॥

अन्वयः—यदि पापः (पापग्रहः) पापपीडितः निद्रागतः सप्तमे (गतः) तदा जाया विनाशः स्यात्, शुभयोगेक्षणात् नहि विनाशः स्यात् ॥१५॥

भा०-यदि पाप ग्रह पाप ग्रहों से पीड़ित होकर निद्रा अवस्थागत सातवें घर में बैठा हो तो स्त्री का नाश कर देता है, यदि सातवें घर को शुभ ग्रह देखते हों तो स्त्री का नाश नहीं होता है ॥ १५ ॥

निद्रितो रिपुगेहस्थो रिपुयुक्तेक्षितो मदे।
भार्या विनश्यति क्षिप्रं विधिना रक्षितापि चेत् ॥१६॥

अन्वयः—यदि पापः निद्रितः रितुयुक्तेक्षितः रिपुगेहस्थः मदे (स्थितः) तदा चेत् विधिना रक्षतापि भार्या क्षिप्रं विनश्यति ॥१६॥

भा०-यदि पाप ग्रह निद्रा अवस्थागत शत्रु ग्रह से युक्त अथवा देखा जाता हुआ शत्रु घर में होकर सातवें घर में बैठा हो तो ब्रह्मा करके भी रक्षा की जावे फिर भी उसकी स्त्री शीघ्र मर जाती है ॥ १६ ॥

शुभयोगेक्षणादेका विनश्यति परा नहि।
शुभाशुभदृशा भार्या कष्टयुक्ता नृणां भवेत् ॥१७॥

अन्वयः—शुभयोगेक्षणात् एका भार्या विनश्यति अपरा नहि [यदा] शुभाशुभदृशाः [तदा] नृणां भार्या क्षिप्रं विनश्यति ॥१७॥

भा०--यदि उक्त योगों से युक्त सप्तम भाव को शुभ ग्रह देखते हों अथवा युक्त हों तो उस पुरुष की एक स्त्री मरकर दूसरी जीवित रहती है, यदि सातवाँ घर शुभ ग्रह और पाप ग्रह दोनों से दृष्ट युक्त हो तो उस पुरुष की स्त्री सदा रोगी रहती है ॥ १७ ॥

पुत्रसुखयोगः—

अपत्यभावे यदि तुङ्गगेहे
निजालये पापयुतेक्षितश्चेत् ।
निद्रागतोऽपत्यविनाशकारी
शुभेक्षितश्चैकसुतस्य हन्ता ॥१८॥

अन्वयः—यदि (ग्रहः) तुङ्गगेहे निजालये अपत्यभावे (गतः) चेत् पापयुतेक्षितः निद्रागतः (तदा अपत्य विनाशकारी (यदि) शुभेक्षितः (तदा) एक सुतस्य विनाशकारी भवति) ॥१८॥

भा०—यदि ग्रह उच्च अथवा अपने घर का होकर पांचवें घर में बैठा हो किन्तु उसको पापग्रह देखते हों और वह निद्रावस्थागत हो तो सन्तान का नाश करता है, यदि वह ग्रह शुभग्रहों से देखा जाता हो तो एक पुत्र को जीवित रखकर अन्य सन्तानों को नाश कर देता है ॥ १८ ॥

अपमृत्युयोगः—

राहुणा सहितौ यस्य निधनस्थौ कुजार्कजौ ।
अपमृत्युर्भवेत्तस्य शस्त्रघातान्न संशयः ॥१९॥

अन्वयः-यस्य जन्मनि) राहुणा सहितौ कुजार्कजौ निद्रावस्थागतौ निधनस्थौ (तस्य) शस्त्रघातात् अपमृत्युः भवेत् (अत्र) न संशयः ॥ १९ ॥

भा०—जिसके जन्मसमयमें राहुके साथ २ मङ्गल और शनैश्चर निद्रा अवस्थागत आठवें घरमें बैठे हो तो शस्त्र भाला, बर्छी, तलवार इत्यादि से उनकी अकाल मृत्यु हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं है ॥ १९ ॥

निधनेऽपि शुभो यस्य पापारिग्रहवीक्षितः ।
तदा मृत्युर्विजानीयादाहवे शस्त्रपीडनात् ॥२०॥

अन्वयः—यस्य पापारिग्रहवीक्षितः शुभोऽपि (निद्रागतः) निधने (स्थितः) तदा आहवे शस्त्रपीडनात् मृत्युर्विजानीयात् ॥२०॥

भा०-जिसके पापग्रह अथवा शत्रुग्रहसे देखा जाता हुआ शुभग्रह भी निद्रा अवस्थागत आठवें घरमें बैठा हो तो युद्ध में शस्त्र द्वारा उसकी मृत्यु होती है ऐसा जानना ॥ २० ॥

अथ शत्रुकृततीर्थकृतमृत्युयोगौ—

यदा निद्रायुक्तो निधनभवनं पापमिलितः
शयानो वा मृत्युं व्रजति रिपुकोपेन मनुजः ।
शुभैर्दृष्टौ युक्तो निजपतियुतो वान्तसमये
नरो गङ्गामेत्य व्रजति हरिसायुज्यपदवीम् ॥२१॥

अन्वयः—यदा (ग्रहः) निद्रायुक्त शयानो वा पापमिलितः निधनं भवनं (गतस्तदा) मनुजः रिपुकोपेन मृत्युं व्रजति, यदि [ग्रह] शुभैर्दृष्टः युतश्च तथा] निजपतियुतः [अष्टमेश न युतः] वा [तदा] अन्तसमये नरः गङ्गां एत्य हरिसायुज्यपदवीं व्रजति ॥२१॥

भा०—यदि ग्रह निद्रा अवस्था अथवा शयन अवस्थाका होकर पापग्रहों के साथ आठवें घरमें बैठा हो तो वह मनुष्य शत्रुके क्रोधसे (लड़ाई झगड़े से) मृत्युको प्राप्त होता है । यदि वह ग्रह शुभग्रहोंसे दृष्टयुत हो और अष्टमेश करके युत हो तो वह मनुष्य मृत्युकालमें श्रीगंगाकिनारे (तीर्थस्थानमें) पहुँचकर देवताओंको स्मरण करते हुये सायुज्य मोक्ष (मुक्तिपद) को प्राप्त होता है ॥२१॥

अथ तीर्थक्षेत्रलाभयोगः

यदा पश्येदङ्गं तनुभवननाथोऽष्टमपति-
र्मृतिं धर्माधीशो जनुषि च तपः स्थानमथवा ।
शुभाभ्यामाक्रान्तं नवमभवनं पापरहितं
वरक्षेत्रं प्राप्य व्रजति मनुजो मोक्षपदवीम् ॥२२॥

अन्वयः—यदा जनुषि तनुभवननाथः अङ्गं पश्येत्, अष्टमपतिः मृतिं पश्येत्, धर्माधीशः च तपः स्थानं पश्येत् अथवा शुभाभ्यामाक्रान्तं नवमभवनं पापरहितं भवति तदा मनुजः, वरक्षेत्रं प्राप्य मोक्षपदवीं व्रजति ॥२२॥

भा०—(१) यदि जन्मसमयमें लग्नेश लग्नको देखता हो, अष्टमेश आठवें घरको देखता हो और नवमेश घरको देखता हो, (२) अथवा दो शुभग्रह नवें घरमें बैठे हों और नवमघर पापग्रहसे दृष्ट युत न हो तो वह मनुष्य तीर्थस्थानमें मर कर मोक्ष पद को प्राप्त होता है ॥२२॥

इति भावकुतूहलेउत्साहवर्द्धिनी भाषाटीकायामवस्थाफलकथननामैकादशोऽध्यायः ॥

द्वादशोऽध्यायः

अथ ग्रहाणां प्रत्येकावस्थाफलानि।

तत्रादौ सूर्यफलम्

मन्दाग्निरोगो बहुधा नराणां
स्थूलत्वमंघ्रेरपि पित्तकोपः।
व्रणं गुदे शूलमुरः प्रदेशे
यदोष्णभानौ शयनं प्रयाते ॥ १ ॥

अन्वयः—यदोष्णभानौ शयनं प्रयाते (तदा) नराणां बहुधा मन्दाग्निरोगः अंघ्रेः स्थूलत्वं अपि पीत्तकोपः, गुदे व्रणं उरः प्रदेशे शूलं (च भवति) ॥ १ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में सूर्य शयन अवस्था में हो तो उसको सर्वदा मन्दाग्नि रहती है, पैर मोटा (हाथी पांव) होता है, पित्तजन्य रोग से दुःखी रहता है, गुदा (दिशा के स्थान में) घाव (भगन्दर) होता है और हृदय में शूल रोग होता है ॥ १ ॥

दरिद्रताभारविहारशाली
विवादविद्याभिरतो नरः स्यात्।
कठोरचित्तः खलु नष्टवित्तः
सूर्ये यदा चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

अन्वयः—यदा सूर्ये उपवेशनस्थे (तदा) नरः दरिद्रता भारविहारशाली, विवादविद्याभिरतः कठोरचित्तः खलु नष्टवित्तः स्यात् ॥ २ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में सूर्य उपवेशन अवस्था में हो तो वह मनुष्य दरिद्रता के साथ विहार करता है, कलह प्रपञ्च में निरत, कठोर चित्त और धनहीन होता है ॥ २ ॥

नरः सदानन्दधरो विवेकी
परोपकारी बलवित्तयुक्तः
महासुखी राजकृपाभिमानी
दिवाधिनाथे यदि नेत्रपाणौ ॥ ३ ॥

अन्वयः—यदि नेत्रपाणौ दिवाधिनाये तदा) नरः सदानन्दधरः, विवेकी, परोपकारी, वलवित्तयुक्तः, महासुखी, (तथा) राजकृपाभिमानी (स्यात्) ॥ ३ ॥

भा० यदि नेत्रपाणि अवस्था का सूर्य हो तो वह मनुष्य सदा सुखी, ज्ञानी, पराये का उपकार करनेवाला, शरीर पुष्ट, महासुखी और राज्यकुल से विशेष आदर पानेवाला होता है ॥ ३ ॥

उदारचित्तः परिपूर्णवित्तः
सभासु वक्ता बहुपुण्यकर्त्ता ।
महाबली सुन्दररूपशाली
प्रकाशने जन्मनि पद्मिनीशे ॥ ४ ॥

अन्वयः—(यदा) जन्मनि प्रकाशने पद्मिनीशे (तदा नरः) उदारचित्तः, परिपूर्णवित्तः सभासु वक्ता, बहुपुण्यकर्त्ता, महाबली, सुन्दररूपशाली (स्यात्) ॥ ४ ॥

भा०—यदि जन्मकाल में प्रकाशन अवस्थागत सूर्य हो तो वह मनुष्य उदार चित्तवाला, धनी, सभा में उचितवाणी बोलनेवाला, विशेष पुण्य करने वाला, महाबली और सुन्दर शरीर वाला होता है ॥ ४ ॥

प्रवासशाली किल दुःखमाली
सदालसी धीधनवर्जितश्च ।
भयातुरः कोपपरो विशेषा-
द्दिवाधिनाथे गमने मनुष्यः ॥ ५ ॥

अन्वयः—यदि गमने दिवाधिनाथे (तदा) मनुष्यः प्रवासशाली, किल दुःखमाली, सदालसी, धीधनवर्जितश्च, भयातुरः (तथा) विशेषात् कोपपरः (स्यात्) ॥ ५ ॥

भा०—यदि गमन अवस्था में सूर्य हो तो वह मनुष्य परदेश रहनेवाला अनेक कष्ट भोगनेवाला, आलसी, बुद्धि और धन से हीन, भय से विह्वल रहने वाला और अति क्रोध करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

परदाररतो जनतारहितो
बहुधाऽऽगमने गमनाभिरुचिः

कृपणः खलता कुशलो मलिनो
दिवसाधिपतौ मनुजः कुमतिः ॥ ६ ॥

अन्वयः-(यदा) मलिनः दिवसाधिपतौ (तदा) मनुजः परदार रतः जनता रहितः, बहुधाऽऽगमने गमनाभिरुचिः, कृपणः, खलता कुशलः (तथा) कुमतिः (स्यात्) ॥ ६ ॥

भा०—जिस मनुष्य के जन्म समयमें मलिन अवस्थागत सूर्य हो तो वह मनुष्य दूसरे स्त्रीके साथ भोग करने वाला, अपने परिवारसे अलग रहने वाला, विशेष लाभार्थ लोभ करने वाला, यात्रा करने वाला, कृपण, नीचकर्म करने वाला और दुष्ट बुद्धिवाला होता है ॥ ६ ॥

सभागते हिते नरः परोपकारतत्परः
सदाऽर्थरत्नपूरितो दिवाकरे गुणाकरः ।
वसुन्धरानवाम्बरालयान्वितो महाबली
विचित्रमित्रवत्सलः कृपाकलाधरः परः ॥ ७ ॥

अन्वयः-(यदा) हित सभागते दिवाकरः, (तदा) नरः परोपकार-तत्परः, सदाऽर्थरत्नपूरितः, गुणाकरः, वसुन्धरानवाम्बरालयान्वितः, महाबली, विचित्रमित्रवत्सलः परः कृपाकलाधरः (स्यात्) ॥ ७ ॥

भा०—यदि मित्रगृह में होकर सभा अवस्थागत सूर्य हो तो वह मनुष्य दूसरे का उपकार करने वाला, सदा रत्नादि धनोंसे युक्त रहने वाला, अनेक गुण सम्पन्न, पृथ्वी, भूषण, गृह और नये २ वस्त्रोंका सुख भोगने वाला, अत्यन्त बलवान्, मित्र तथा परिवारोंका पालन करने वाला और अत्यन्त दयालु होता है ॥७॥

क्षोभितोरिपुगणैः सदा नरः
चञ्चलः खलमतिः कृशस्तथा ।
धर्मकर्मरहितो मदोद्धतश्चा-
गमे दिनपतौ सदा तदा ॥ ८ ॥

अन्वयः—यदा आगमे दिनपतौ तदा नरः रिपुगणैः क्षोभितः, सदा चञ्चलः, खलमतिः, कृशः, तथा धर्मकर्मरहितः मदोद्धतश्च (स्यात्) ॥ ८ ॥

भा०—जिसके आगम अवस्थागत सूर्य हो तो वह मनुष्य शत्रुओंके झंझटसे सदा व्याकुल, चञ्चल, दुष्टबुद्धि वाला, दुर्बल, धर्म कर्मसे रहित और मदान्ध होता है ॥ ८ ॥

सदाङ्गसन्धिवेदना पराङ्गनाधनक्षयो
बलक्षयः पदे पदे यदा तदा हि भोजने।
असत्यताशिरोव्यथा तदा वृथान्नभोजनं
रवावसत्कथारतिः कुमार्गगामिनी मतिः ॥ ९ ॥

अन्वयः—यदा भोजने रवौ तदा सदांगसन्धिवेदना, पदे पदे परांगना धनक्षयः, बलक्षयः, हि असत्यता, शिरोव्यथा, वृथान्नभोजनं, असत्कथारतिः तथा कुमार्गगामिनो मतिः (स्यात्) ॥ ९ ॥

भा०—यदि भोजन अवस्थामें सूर्य हो तो वह मनुष्य सर्वदा गठियारोग से पीड़ित रहता है, अन्य स्त्रियोंके साथ व्यभिचार करने से बारंबार धन और बलका नाश करता है, विशेष झूठ बोलता है सिरमें दर्द रहता है, खराब अन्न भोजन करता है, झूठा व्यवहार करता है और निन्दित कार्योंमें चित्त लगाता है।९।

विज्ञलोकैः सदा मण्डितः पंडितः
काव्यविद्यानवद्यप्रलापान्वितः।
राजपूज्यो धरामंडले सर्वदा
नृत्यलिप्सागते पद्मिनीनायके ॥ १० ॥

अन्वयः—(यदा) नृत्यलिप्सा गते पद्मिनीनायके (तदा नरः) सदा विज्ञलोकैः मण्डितः, पण्डितः, काव्यविद्यानवद्यप्रलापान्वितः धरामडले सर्वदा राजपूज्यः (स्यात्) ॥ १० ॥

भा०—जिसके जन्म समयमे नृत्यलिप्सा अवस्थागत सूर्य हो तो वह मनुष्य सर्वदा विद्वानों करके पूजित अर्थात् विद्वद्वर होता है, साहित्य शास्त्रका प्रेमी और भूमण्डल में सदा राज्य कुल से विशेष आदर पाने वाला होता है ॥ १० ॥

सर्वदानन्दधर्त्ता जनो ज्ञानवान्
यज्ञकर्ता धराधीश सद्मस्थितः।
पद्मबन्धावरातीभपञ्चाननः
काव्यविद्याप्रलापी मुदा कौतुके ॥ ११ ॥

अन्वयः—(यदा) कौतुके पद्मबन्धौ (तदा) जनः सर्वदानन्दधर्ता, ज्ञानवान्, यज्ञकर्त्ता, धराधीशसद्मस्थितः अरातीभपञ्चाननः (तथा) मुदा काव्यविद्याप्रलापी (स्यात्) ॥ ११ ॥

भा०—जिसके कौतुक अवस्थागत सूर्य हो तो वह मनुष्य सर्वदा प्रसन्न रहनेवाला, ज्ञानी, यज्ञ करनेवाला, राज्यगृह में रहकर इन्तजाम करनेवाला, शत्रुरूपी हाथियों के झुण्ड में सिंह रूप गर्जन करनेवाला और प्रसन्नता से साहित्यशास्त्र में कला कौशल दिखाने वाला होता है ॥ ११ ॥

निद्राभरारक्तनिभे भवेतां
निद्रागते लोचनपद्मयुग्मे ।
रवौ विदेशे वसतिर्जनस्य
कलत्रहानिः कतिधार्थनाशः ॥१२॥

अन्वयः—(यदा) निद्रागते रवौ (तदा) जनस्य लोचनपद्मयुग्मे निद्राभरारक्तनिभे भवेतां, विदेशे वसतिः, कलत्रहानिः (तथा) कतिधार्थनाशः (स्यात्) ॥ १२ ॥

भा०—यदि निद्रा अवस्थागत सूर्य हो तो उस मनुष्य के दोनों आखें नींद से भरी हुई सुर्ख रंग की होती हैं परदेश रहना विशेष पसन्द करता है, स्त्री की हानि होती है और सञ्चितधन का नाश भी करता है ॥ १२ ॥

अथ चन्द्रफलम्—

जनुःकाले क्षपानाथे शयनं चेदुपागते ।
मानी शीतप्रधानी च कामी वित्तविनाशकः ॥१॥

अन्वयः—चेत् जनुः काले क्षपानाथे शयनं उपागते (तदा) मानी शीतप्रधानी, कामी, वित्तविनाशकश्च (स्यात्) ॥ १ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा शयन अवस्थागत हो तो वह मनुष्य अधिक प्रतिष्ठा चाहनेवाला, शरीर में शीत प्रधान रोगवाला, कामातुर और सञ्चित धन नाश करनेवाला होता है ॥ १ ॥

रोगार्दितो मन्दमतिर्विशेषाद्वित्तेन हीनो मनुजः कठोरः ।
अपायकारी परवित्तहारी क्षपाकरे चेदुपवेशनस्थे ॥२॥

अन्वयः- चेत् क्षपाकरे उपवेशनस्थे (तदा) मनुजः रोगार्दितः, मन्दमतिः, विशेषाद्वित्तेन हीनः, कठोरः, अपायकारी, (तथा) परवित्त-हारी (स्यात्) ॥ २॥

भा०--यदि चन्द्रमा उपवेशन अवस्थागत हो तो वह मनुष्य रोगी, बुद्धि-हीन, धनहीन, निर्दयी, अपना धन नाश करनेवाला और दूसरे के धन को लूटने वाला (डाँकू) होता है ॥ २॥

नेत्रपाणौ क्षपानाथे महारोगी नरो भवेत्।
अनल्पजल्पको धूर्त्तः कुकर्मनिरतस्सदा ॥३॥

अन्वयः—(यदि) नेत्रपाणौ क्षपानाथे (तदा) नरः महारोगी, अनल्पजल्पकः धूर्त्त (तथा) सदा कुकर्म निरतः भवेत् ॥ ३॥

भा०--यदि नेत्रपाणि अवस्थागत चंद्रमा हो तो वह मनुष्य महारोगी (राज रोगी) अत्यन्त झूठ बोलनेवाला, धूर्त और सर्वदा कुकर्म करनेवाला होता है ॥३॥

यदा राकानाथे गतवति विकाशं च जनने
विकासः संसारे विमलगुणराशेरवनिपात्।
नवा शालामाला करितुरगलक्ष्म्या परिवृता
विभूषायोषाभिः सुखमनुदिनं तीर्थगमनम् ॥४॥

अन्वयः—यदा जनने राकानाथे विकासं गतवति (तदा नरः) संसारे विमलगुणराशेः विकासः अवनिपात् नवा शालामाला, करितुरगलक्ष्म्या परिवृता विभूषायोषाभिः सुखमनुदिनं (तथा) तीथगमनं करोति ॥४॥

भा-जिसके जन्म समयमे चन्द्रमा विकास अवस्था में हो तो वह मनुष्य भूमण्डल में अपने सद्गुणों के ढेरी के विकास से राज्यकुल में प्रतिष्ठा पाकर मिले हुए नूतन सुन्दर गृह हाथी, घोड़ा, वस्त्र और भूषणोंसे युक्त अपने रमणी के साथ नित्य विहार करता हुआ अन्त में तीर्थ यात्रादि (सुकर्म) भी करता है ॥ ४॥

सितेतरे पापरतो निशाकरे
विशेषतः क्रूरतरो नरो भवेत्।
सदाक्षिरोगैः परिपीड्यमानो
बलक्षपक्षे गमने भयातुरः ॥५॥

अन्वयः—(यदि) सितेतरे निशाकरे गमने भवेत् (तदा) नरः विशेषतः पापरतः क्रूरतरः, सदाक्षिरोगैः परिपीड्यमानः (यदि) बलपक्षे-पक्षे (तदा) भयातुरः (भवेत्) ॥५॥

भा० यदि कृष्णपक्ष का चन्द्रमा गमना अवस्था में हो तो वह मनुष्य अत्यन्त पाप करनेवाला, दूसरे को सुखी देख द्वेष करनेवाला, सर्वदा नेत्र रोग से कष्ट पानेवाला होता है, यदि शुक्लपक्ष का चन्द्रमा गमना अवस्था में हो तो विशेष डरपोक होता है ॥५॥

त्रिधावागमने मानी पादरोगी नरो भवेत् ।
गुप्तपापरतो दीनो मतितोपविवर्जितः ॥६॥

अन्वयः—(यदि विधावागमने भवेत् (तदा) नरः मानी, पादरोगी, गुप्तपापरतः, दीनः (तथा) मतितोपविवर्जितः (भवेत्) ॥६॥

भा०—यदि चन्द्रमा आगमन अवस्थागत हो तो वह मनुष्य व्यार्थाभिमानी, पादरोग से संतप्त, छिपकर पाप करनेवाला, दरिद्र और बुद्धि तथा सन्तोष से हीन होता है ॥६॥

सकलजनवदान्यो राजराजेन्द्रमान्यो
रतिपतिसमकान्तः शान्तिकृत्कामिनीनाम् ।
सपदि सदसि याते चारुबिम्बे शशांके
भवति परमरीतिप्रीतिविज्ञो गुणज्ञः ॥ ७ ॥

अन्वयः—(यदि) चारुबिम्बे शशांके सदसि याते (तदा नरः) सकलजनवदान्यः, राजराजेन्द्रमान्यः रतिपति सम कान्तिः, कामिनीनां सपदि शान्तिकृत् परमरीतिप्रीतिविज्ञः (तथा) गुणज्ञः भवति ॥७॥

भा०—जिसके जन्म समय में पूर्ण चन्द्रमा सभी अवस्था में बैठा हो तो वह मनुष्य सबसे बुद्धिमान (अति चतुर), सम्राट से आदर पानेवाला कामदेव के समान सुन्दर कान्ति पानेवाल, कामोद्वेगस्त्री को शीघ्र शान्ति करनेवाला, हर एक मनुष्योंके साथ अत्यन्त प्रेम करनेवाला और गुणवान् भी होता है ॥७॥

विधावागमने मर्त्यो वाचालो धर्मपूरितः ।
कृष्णपक्षे द्विभार्यः स्याद्रोगी दुष्टतरो हठो ॥८॥

अन्वय—विधावागमने मर्त्यः वाचालः धर्मपूरितः, (यदि) कृष्ण पक्षे (तदा) द्विभार्यः, रोगी दुष्टतरः हठी स्यात् ॥ ८ ॥

भा०—यदि चन्द्रमा आगम अवस्था में हो तो वह मनुष्य विशेष बोलनेवाला और धर्मात्मा होता है, यदि चन्द्रमा कृष्णपक्ष का होकर आगम अवस्थागत हो तो उसको दो स्त्री होती हैं, रोगी, अत्यन्तदुष्ट और हठी होता है ॥८॥

भोजने जनुषि पूर्णचन्द्रमा
मानयानजनतासुखं नृणाम्।
आतनोति वनितासुतासुखं
सर्वमेव न सितेतरे शुभम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—(यदि) जनुषि पूर्ण चन्द्रमा भोजने (तदा) नृणां मानयानजनतासुखं, वनितासुतासुखं, आतनोति सितेतरे (चन्द्रे) सर्वं एव न शुभम् ॥ ९ ॥

भा०—यदि जन्मकाल में पूर्णचन्द्रमा भोजन अवस्था में हो तो उस मनुष्य को प्रतिष्ठा, सवारीका सुख, नौकरों का सुख और स्त्री पुत्र का सुख देता है, यदि कृष्णपक्ष का चन्द्रमा उक्तावस्थागत हो तो सब सुखों को नष्ट कर देता है ॥९॥

नृत्यलिप्सागते चन्द्रे सबले बलवान्नरः।
गीतज्ञो हि रसज्ञश्च कृष्णे पापकरो भवेत् ॥ १० ॥

अन्वयः—(यदि) सबले चन्द्रे नृत्यलिप्सा गते (तदा) नरः बलवान् गीतज्ञः, हि रसज्ञश्च भवेत् (यदि) कृष्णे चन्द्रे (तदा) पापकरो भवेत् ॥ १० ॥

भा०—यदि शुक्लपक्ष का चन्द्रमा नृत्यलिप्सा अवस्थागत हो तो वह मनुष्य बलवान्, गीतगानेवाला, और वैद्यक (रसायन) शास्त्र जाननेवाला होता है, यदि चन्द्रमा कृष्णपक्ष का उक्तावस्थागत हो तो मनुष्य पापकर्म करनेवाला होता है ॥१०॥

कौतुकभवनं गतवति चन्द्रे
भवति नृपत्वं वा धनपत्वम्।
कामकलासु सदा कुशलत्वं
वारवधूरतिरमणपटुत्वम् ॥ ११ ॥

अन्वयः—(यदि) चन्द्रे कौतुकभवनं गतवति (तदा नरः) नृपत्वं वा धनपत्वं, कमकङ्गसु सदा कुशलत्वं, वारवधूरतिमणपटुत्वं भवति ॥ ११ ॥

भा०—यदि चन्द्रमा कौतुक अवस्था में हो तो वह मनुष्य राजा होता है कुबेर तुल्य धनवान् होता है, रतिक्रीड़ा में सर्वदा कुशल और वेश्याओं के साथ रमण करने में अति चतुर होता है ॥ ११ ॥

निद्रागते जन्मनि मानवानां
कलाधरे जीवयुते महत्वम् ।
यदाङ्गना सञ्चितवित्तनाशः
शिवालये रौति विचित्रमुच्चैः ॥ १२ ॥

अन्वयः—(यदि) जन्मनि जीवयुते कलाधरे निद्रागते (तदा) मानवानां महत्वं यदाङ्गना (तदा) सञ्चितवित्तनाशः (तथा) विचित्रमुच्चैः शिवालये रौति ॥ १२ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में बृहस्पति के साथ २ चन्द्रमा निद्रावस्थागत हो तो वह मनुष्य सब प्रकार सुखी होता है. यदि चन्द्रमा कन्या राशि (कृष्णपक्ष) का होकर उक्त अवस्थागत हो तो सञ्चित धन नाश होता है और उसका घर खंडहर होकर उसमें स्यार उच्च स्वर से बोलते रहते हैं ॥ १२ ॥

अथ भौमफलम्

शयने वसुधापुत्रे जन्मकाले जनो भवेत् ।
बहुना कण्डुना युक्तो दद्रुणा च विशेषतः ॥ १ ॥

अन्वयः—(यदा) जन्मकाले वसुधापुत्रे शयने (तदा) जनः बहुना कण्डुना युक्तः विशेषतः दद्रुणा च युक्तः भवेत् ॥ १ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में मंगल शयन अवस्थागत हो तो वह मनुष्य खुजली रोग से पीड़ित तथा दाद रोग से विशेष पीड़ित होता है ॥ १ ॥

बली सदा पापरतो नरः
स्यादसत्यवादी नितरां प्रगल्भः ।

धनेन पूर्णो निजधर्महानो
धरासुते चेदुपवेशनस्थे ॥ २ ॥

अन्वयः--चेत् धरासुते उपवेशनस्थे (तदा) नरः बली, सदा पापरतः, असत्यवादी, नितरां प्रगल्भः, धनेनपूर्णः (तथा) निजधर्महीनः स्यात् ॥ २ ॥

भा०—यदि मंगल उपवेशन अवस्थागत हो तो वह मनुष्य बलवान्, सदा पाप कर्म करनेवाला, झूठ बोलनेवाला सदा प्रपञ्च करनेवाला, बहुत बड़ा धनवान् और अपने धर्म कर्म से रहित होता है ॥ २ ॥

यदा भूमिसुते लग्ने नेत्रपाणिमुपागते ।
दरिद्रता सदा पुंसामन्यभे नगरेशता ॥ ३॥

अन्वयः - यदा भूमिसुते नेत्रपाणिमुपागते लग्ने (गते तदा) पुंसां सदा दरिद्रता, अन्यभे नगरेशता (स्यात्) ॥ ३ ॥

भा० —यदि मंगल नेत्रपाणि अवस्थागत लग्न में बैठा हो तो उस पुरुष को सदा दरिद्रता सताती है, यदि दूसरे भाव में उक्तावस्थागत मंगल हो तो वह शहर का मालिक (छोटा राजा) होता है ॥ ३ ॥

प्रकाशो गुणस्य प्रवासः प्रकाशे
धराधीशभर्तुः सदा मानवृद्धिः ।
सुते भूसुते पुत्रकान्तावियोगो
युते राहुणा दारुणो वा निपातः ॥ ४ ॥

अन्वयः—(यदि) भूसुते प्रकाशे (तदा) गुणस्य प्रकाशः प्रवासः धराधीशभर्तुः सदा मानवृद्धि (यदि) भूसुते सुते [तदा] पुत्रकान्तावियोगः वा राहुणा युते [तदा] दारुणः निपातः [स्यात्] ॥ ४ ॥

भा०—यदि मंगल प्रकाश अवस्थागत हो तो उस मनुष्य के गुण का प्रकाश होता है, तदा परदेश में रहता है, राजा से सर्वदा आदर पाता है, यदि मंगल उक्तावस्थागत पाँचवें घर में बैठा हो तो वह मनुष्य अपने स्त्री पुत्र से अलग होकर रहता है, यदि राहु के साथ मंगल हो तो वह मनुष्य वृक्ष से गिर जाता है ॥४॥

गमने गमनं कुरुतेऽनुदिनं
व्रणजालभयं विनिता कलहम् ।

वहुदद्रुकक्रण्डुभयं बहुधा।
वसुधातनयो वसुहानिकरः ॥ ५ ॥

अन्वयः—(यदि) वसुधातनयो गमने (तदा नरः) अनुदिनं गमनं व्रणजालभयं, वनिताकलहं वहुदद्रुकक्रण्डुभयकुरुते (तथा) वसुहानिकरः (स्यात्) ॥५॥

भा०-यदि मंगल गमना अवस्था में बैठा हो तो वह मनुष्य प्रतिदिन सफर में रहता है, फुंसी फोड़ा से अति दुःखी रहता है, स्त्री से कलह करता है, दाद और खुजली से विशेष कष्ट पाता है और धन का नाश करता है ॥५॥

आगमने गुणशाली मणिमाली करालकरवाली।
गजगन्ता रिपुहन्ता परिजनसन्तापहारको भौमे ॥६॥

अन्वयः—(यदि) भौमे आगमने (तदा) गुणशाली, मणिमाली, करालकरवाली, गजगन्ता, रिपुहन्ता, परिजनसंताप हारकः 'स्यात्' ॥६॥

भा०-यदि मंगल आगमन अवस्था में हो तो उस पुरुष को विशेष गुणवान् बनाता है, मणियों का माला पहनाता है, तीक्ष्ण (चोखी) तलवार बांधने को, हाथी चढ़ने को देता है, शत्रुओं का नाश करता है और उसके स्वजन का कष्ट दूर करता है ॥ ६ ॥

तुङ्गे युद्धकलाकलापकुशलो धर्मध्वजो वित्तपः
कोणे भूमिसुते सभामुपगते विद्याविहीनः पुमान्।
अन्तेऽपत्यकलत्रमित्ररहितः प्रोक्तेतरस्थानगेऽ-
वश्यंराजसभाबुधो बहुधनी मानी च दानी जनः ॥७॥

अन्वयः—(यदि) भूमिसुते तुंगे सभामुपगते (तदा) पुमान् युद्धकलाकलापकुशलः धर्मध्वजो, वित्तपः (यदि कोणे तदा) विद्याविहीनः (यदि) अन्ते (तदा) अपत्यकलत्रमित्ररहितः (यदि) प्रोक्तेतरस्थानगे (तदा) जनः अवश्यं राजसभाबुधः बहुधनी, मानी, दानी च (स्यात्) ॥७॥

भा०-यदि मंगल उच्चस्थ सभा अवस्था में हो तो पुरुष युद्ध कला में अत्यन्त प्रवीण, धर्म का पताका और धनाढ्य होता है, यदि उक्तावस्थागत भौम कोण (५, ९) स्थान में बैठा हो तो वह पुरुष मूर्ख होता है, यदि उक्ता-

चस्यागत भौम बारहवें घर में बैठा हो तो स्त्री, पुत्र और मित्र से हीन करता है, उक्त स्थानों से भिन्न घर में मंगल बैठा हो तो वह मनुष्य अवश्य राजसभा में पण्डित होता है, धनाढ्य, मानी और दानी भी होता है ॥७॥

आगमे भवति भूमिजे जनो
धर्मकर्मरहितो गदातुरः ।
कर्णमूलगुरुशूलरोगवा-
नेवकातरमति कुसंगमी ॥ ८ ॥

अन्वयः—(यदि) भुमिजे आगमे भवति (तदा) जनः धर्मकर्मरहित. गदातुरः कर्णमूलगुरुशूलरोगवानेव कातरमतिः (तथा) कुसङ्गमी (स्यात्) ॥८॥

भा०-यदि मंगल आगम अवस्था में हो तो वह मनुष्य धर्म कर्म से हीन होता है, रोगी रहता है, कान के नीचे शूल रोग से दुःखी रहता है, परिश्रम से डरता है और नीचों का साथ करता है ॥८॥

भोजने मिष्ठभोजी च जनने सबले कुजे ।
नीचकर्मकरो नित्यं मनुजो मानवर्जितः ॥९॥

अन्वयः—(यदि) जननेसबलेकुजे भोजने (तदा) मनुजः मिष्ठभोजी, नित्यं नीचकर्मकर. (तथा) मानवर्जितः (स्यात्) ॥ ९ ॥

भा०-जिसके जन्म समय में बलवान मंगल भोजन अवस्था में बैठा हो तो वह मनुष्य मधुर [मीठा] में विशेष प्रेम करता है सदा निन्दित कर्म करता है और अपनी प्रतिष्ठा [इज्जत] अपने हाथों खो बैठता है ॥९ ॥

नृत्यलिप्सागते भूसुते जन्मिना-
मिन्दिराराशिरयाति भूमीपतेः ।
स्वर्णरत्नप्रवालैः सदामण्डिता
वासशाला विशाला नराणां भवेत् ॥१०॥

अन्वयः—जन्मिनां भूसुते नृत्यलिप्सागते (तदा) नराणा भूमिपतेः-इन्दिराराशिः अयाति, सदा स्वर्णरत्नप्रवालैः मण्डिता (तथा) विशाला वासशाला भवेत् ॥ १० ॥

भा॰—जिसके जन्मसमय में बलवान् मङ्गल नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो उस मनुष्य को राजासे विशेष धन प्राप्त होना है. सदा स्वर्ण,रत्न और मोतियों से युक्त रहता है और उसको उत्तम गृह रहने के लिये मिलता है ॥१०॥

कौतुकी भवति कौतुके कुजे मित्रपुत्रपरिपूरितो जनः ।
उच्चगे नृपतिगेहपण्डितो मण्डितो बुधवरैर्गुणाकरैः ॥११॥

अन्वयः—(यदि) कुजे कौतुके भवति (तदा) जनः कौतुकी, मित्रपुत्रपरिपूरितः (यदि) उच्चगे (तदा) नृपतिगेहपण्डितः बुधवरैर्गुणाकरैः मण्डितः भवति ॥ ११ ॥

भा॰—यदि मङ्गल कौतुक अवस्थागत हो तो मनुष्य नाच तमाशा विशेष देखता है और मित्र. पुत्र परिवार से युक्त रहता है यदि मङ्गल उच्च का होकर कौतुक अवस्थागत हो तो वह मनुष्य राजदरबार का पण्डित (पूज्य) बुद्धिमानों में आदरणीय होता है ॥११॥

निद्रावस्थागते भौमे क्रोधी धीधनवर्जितः ।
धूर्तो धर्मपरिभ्रष्टो मनुष्यो गदपीड़ितः ॥१२॥

अन्वयः—(यदि) भौमे निद्रावस्थागते (तदा) मनुष्यः क्रोधी, धीधनवर्जितः धूर्तः धर्मपरिभ्रष्टः (तथा) गदपीड़ितः (भवति) ॥१२॥

भा॰—यदि मङ्गल निद्रा अवस्था गत हो तो वह मनुष्य क्रोधी होता है, बुद्धि और धन से हीन होता है, धूर्त धर्महीन और रोगी होता है ॥१२॥

— — —

अथ बुधफलम्—

क्षुधातुरो भवेदङ्गे खञ्जो गुञ्जानिभेक्षणः ।
जन्मभे लम्पटो धूर्तो मनुजः शयने बुधे ॥१॥

अन्वयः—(यदि) बुधे शयने अङ्गे भवेत् (तदा) मनुजः क्षुधातुरः, खंजः गुंजानिभेक्षणः (यदा) अन्यभे तदा) लम्पटः धूर्तः (स्यात्) ॥१॥

भा॰—यदि शयन अवस्थागत लग्न में बैठा हो तो वह मनुष्य भूख से व्याकुल रहता है लङ्गड़ा होता है, गुञ्जा की तरह लाल आंख होती है, यदि शयन अवस्थागत अन्य भावों में बुध हो तो लम्पट और धूर्त होता है ॥ १ ॥

शशाङ्कपुत्रे जनुरङ्गगेहे यदोपवेशे गुणराशिपूर्णः।
पापेक्षिते पापयुते दरिद्रो हितोच्चभे वित्तसुखी मनुष्यः॥२॥

अन्वयः—यदा जनुः शशाङ्कपुत्रे उपवेशे अङ्गगेहे (भवति तदा) मनुष्यः गुणराशिपूर्णः यदा पापेक्षिते पापयुते (तदा) दरिद्र, हितोच्चभे वित्तसुखो (स्यात्) ॥२॥

भा०—जिसके जन्मकाल में बुध उपवेशन अवस्थागत लग्न में बैठा हो तो वह मनुष्य सदगुणों से पूर्ण होता है, यदि वह बुध पापग्रह से देखा जाता हो अथवा पापयुक्त हो तो मनुष्य दरिद्र होता है यदि वह बुध मित्र गृह अथवा अपने उच्च स्थान में बैठा हो तो मनुष्य धनाढ्य होता है॥ २॥

विद्याविवेकरहितो हिततोपहीनो
मानी जनो भवति चन्द्रसुतेऽक्षिपाणौ।
पुत्रालये सुतकलत्रसुखेन हीनः
कन्याप्रजो नृपतिगेहबुधो वरार्यः॥३॥

अन्वयः—(यदा) चन्द्रसुते अक्षिपाणौ भवति (तदा) जनः विद्याविवेकरहितः, हिततोपहीनः मानो (यदा) पुत्रालये तदा सुतकलत्रसुखेनहीनः, कन्याप्रजः नृपतिगेहबुधः वरार्यश्च॥ ३॥

भा०—यदि बुध नेत्रपाणि अवस्थागत हो तो वह मनुष्य विद्या और बुद्धि से हीन होता है, किसी के साथ सद्व्यवहार नहीं करता और मिथ्याभिमान रखता हैं, यदि उक्तावस्थागत बुध पाँचवें घर में बैठा हो तो पुत्र और स्त्री का सुख नहीं मिलता, कन्या विशेष पैदा होती हैं और वह पुरुष राज्यकुल का पण्डित तथा आदरणीय होता है॥ ३॥

दाता दयालुः खलु पुण्यकर्त्ता विकाशने चन्द्रसुते मनुष्यः।
अनेकविद्यार्णवपारगन्ता विवेकपूर्णः खलगर्वहन्ता॥ ४॥

अन्वयः—(यदा) चन्द्रसुते विकाशने (तदा) मनुष्यः दाता, दयालुः खलु पुण्यकर्त्ता, अनेकविद्यार्णवपारगन्ता, विवेकपूर्णः खलगर्वहन्ता (च भवति)॥ ४॥

भा०—यदि बुध विकास अवस्थागत हो तो वह मनुष्य दान देनेवाला, दया करनेवाला, अनेक विद्याओं के अद्वितीय विद्वान, ज्ञानपूर्ण और दुष्टों का घमण्ड विध्वंस करनेवाला होता है॥ ४॥

गमनागमने भवतो गमने
बहुधा वसुधावसुधाधिपतेः ।
भवनं च विचित्रमलं रमया
विदिनुश्च जनुः समये नितराम् ॥५॥

अन्वयः—जनुः समये विदि गमने (तदा) नुः गमनागमने भवतः वसुधाधिपतेः बहुधावसुधा, नितरांविचित्रं भवनं च (तथा) रमया अलं (भवति) ॥ ५ ॥

भा०—जन्मसमय में बुध गमनावस्था में हो तो उस मनुष्य को सर्वदा विदेश आना जाना लगा रहता है, राजकुल से विशेष पृथ्वी मिलती है, अनेक रङ्ग तथा साजों से सुसज्जित महल मिलता है और उसके घर में श्रीलक्ष्मी तथा रिद्धि, सिद्धि, दासियों की तरह टिकी रहती है ॥ ५ ॥

सपदि विदि जनानामुच्चभे जन्मकाले
र्वसदसि धनसमृद्धिः सदा पुण्यवृद्धिः ।
धनपतिसमता वा भूपती मन्त्रिता वा
हरिहरपदभक्तिः सात्त्विकी मुक्तिरद्धा ॥६॥

अन्वयः—[यदि] जन्मकाले विदि उच्चभे सदसि [तदा] जनानां सपदि धनसमृद्धिः, सर्वदापुण्यवृद्धिः धनपतिसमता वा भूपतीमन्त्रिता वा, हरिहरपदभक्तिः, सात्विकी मुक्तिरद्धा (भवति) ॥६ ॥

भा० यदि जन्मकालमें बुध अपने उच्च स्थानका होकर सभा अवस्था में बैठा हो तो उस मनुष्यका धन शीघ्र बढ़ जाता है, सदा धर्म करता है, कुबेर के समान धनी अथवा राजा का मन्त्री होता है, विष्णु तथा शङ्करके चरणारविन्द का सेवा करता हुआ सायुज्यमोक्ष का श्रद्धास्पद होता है ॥ ६ ॥

आगमे जनुषि जन्मिनां यदा
चन्द्रजे भवति हीनसेवया ।
अर्थसिद्धिरपि पुत्रयुग्मता
बालिका भवति मानदायिका ॥७॥

अन्वयः—जनुषि यदा चन्द्रजे आगमे भवति [तदा] जन्मिनां हीनसेवया अर्थसिद्धिः, अपि पुत्रयुग्मता (तथा) मानदायिका बालिका भवति ॥ ७ ॥

भा०—जन्मकालमें यदि बुध आगम अवस्थागतहो तो वह मनुष्य नीच-जनोंके सेवासे कार्यसिद्धि पाता है, उसको दो पुत्र होते हैं तथा प्रतिष्ठा देने-वाली [पतिव्रता, गुणवती] एक कन्या भी होती है ॥ ७ ॥

भोजने चन्द्रजे जन्मकाले यदा
जन्मिनामर्थहानिः सदा वादतः ।
राजभीत्या कृशत्वं चलत्वं मते-
रङ्गसङ्गो न जाया न मायाः सुखम् ॥८॥

अन्वयः—यदा जन्मकाले चन्द्रजे भोजने (तदा) जन्मिनां सदा वादतः अर्थहानिः राजभीत्या कृशत्वं, चपलत्वं, मतेरङ्गसङ्गः न जाया न मायाः सुखं (भवति) ॥ ८ ॥

भा०—यदि जन्मकालमें बुध भोजन अवस्थागत हो तो उस मनुष्यका सर्वदा वादाविवाद [वगाफसाद] से धन नाश हुआ करता है, राजभय [दण्ड] से दुर्बल और चञ्चल रहता है, बुद्धि डवाडोल रहती है, स्त्री तथा धन का सुख बिलकुल नहीं मिलता ॥ ८ ॥

नृत्यलिप्सागते चन्द्रजे मानवो
मानयानप्रवालव्रजैः संयुतः ।
मित्रपुत्रप्रतापैः सभापण्डितः
पापभे वारवामारतौ लम्पटः ॥९॥

अन्वयः—[यदा] चन्द्रजे नृत्यलिप्सागते [तदा मानवः मानयानप्रवालव्रजैः संयुतः, मित्रपुत्रप्रतापैः संयुतः, सभापण्डितः [यदि] पापभे [तदा] वारवामारतौ लम्पट ॥ ९ ॥

भा०—यदि चन्द्रमा नृत्यलिप्सा अवस्थागत हो तो वह मनुष्य प्रतिष्ठित होकर अनेक तरह की सवारियां तथा मूंगा मोती के ढेरियों से अत्यन्त सुखी होता है, प्रतापी मित्र और पुत्रों करके युक्त रहता है, पण्डितों के सभा में वक्ता होता है, यदि उक्तावस्थागत बुध पापग्रहों की राशि में बैठा हो तो वह मनुष्य वेश्याके साथ कुकर्म में रत रहता है ॥ ९ ॥

कौतुके चंद्रजे जन्मकाले नृणा-
मङ्गभे गीतविद्यानवद्या भवेत् ।
सप्तमे नैधने वारवध्वा रतिः
पुण्यभे पुण्ययुक्ता जनिः सद्गतिः ॥ १० ॥

अन्वयः—जन्मकाले चन्द्रजे अङ्गभे कौतुके (तदा) नृगां गीत-विद्यानवद्या भवेत्, सप्तमे नैधने वारवध्वारतिः, पुण्यभे जनिः पुण्य-युक्ता (ततः) सद्गतिः (भवति) ॥ १० ॥

भा०-जन्मकाल में बुधलग्नगत कौतुक अवस्था में हों तो उस मनुष्य को गानविद्या अनायास (कम परीश्रमसे) आ जाती है। यदि उक्तावस्थागत बुध सातवें अथवा आठवें घरमें बैठा हो तो वह वेश्या के साथ रमण करता है, यदि नवें घर में हो तो मनुष्य जन्मपर्यन्त पुण्य (तीर्थ, व्रत, यज्ञादि) करके अन्तमें मोक्ष पदवी को प्राप्त होता है ॥ १० ॥

निद्राश्रिते चंद्रसुते न निद्रा-
सुखं सदा व्याधिसमाधियोगः ।
सहोत्थवैकल्यमनल्पतापो
निजेन वादो धनमाननाशः ॥ ११ ॥

अन्वय.—चन्द्रसुते निद्राश्रिते न निद्रासुखं, सदा व्याधि समाधि-योगः, सहोत्थ वैकल्पमनल्पतापः, निजेनवादः, (तथा) दानमान नाशः (स्यात्) ॥ ११ ॥

भा०—बुध निद्रावस्थामें हो तो वह मनुष्य निद्रासे तृप्त नहीं होता, सर्वदा कष्टसे पीड़ित रहता है, भाइयोंके विरोध (कलह) से संतप्त रहता है, परिवार में कलह रहता है और उसकी प्रतिष्ठा तथा धनका नाश हो जाता है ॥ ११ ॥

अथ गुरोरवस्थाफलम्—

वचसामधिपे तु जनुः समये
शयने वलवानपि हि नरवः ।
अतिगौरतनुः खलु दीर्घहनुः
सुतरामतिभीतियुतो मनुजः ॥ १ ॥

अन्वयः--(यदि) जनुः समये वचसामधिपे शयने (तदा) मनुजः बलवानपि हीनरवः अति गौरतनुः खलु दीर्घहनुः, तु सुतरामरिभीतियुतः (भवति) ॥ १ ॥

भा०—यदि जन्मकाल में बृहस्पति शयन अवस्थागत हो तो वह मनुष्य बलवान् होता हुआ भी कम आवाज (मधुरवाणी) से बोलता है, गौरांग और हनु लम्बा होता है और सर्वदा शत्रुओं के भय से दुखी रहता है ॥ १ ॥

उपवेशं यदि गतवति जीवे वाचालो बहुगर्वपरीतः ।
क्षोणीपतिरिपुजनपरितप्तः पदजंघास्यकरव्रणयुक्तः ॥ २ ॥

अन्वयः- यदि जीवे उपवेशं गतवति (तदा नरः) वाचालः बहुगर्वपरीतः, क्षोणीपतिरिपुजनपरितप्तः, पदजंघास्यकरव्रणयुक्तः (स्यात्) ॥ २ ॥

भा०—यदि बृहस्पति उपवेश अवस्थागत हो तो वह मनुष्य चालबाज और घमण्डी होता है, राज्यकुल और शत्रुवर्गों के कलहसे सदा संतप्त रहता है, पैर जंघा मुँह और हाथ में फुंसी फोड़ाके कष्टसे दुःखी रहता है ॥ २ ॥

नेत्रपाणौ गते देवराजार्चिते
रागयुक्तो वियुक्तो वरार्थश्रिया ।
गीतनृत्यप्रियः कामुकः सर्वदा
गौरवर्णो विवर्णोद्भवप्रीतियुक् ॥ ३ ॥

अन्वयः—देवराजार्चिते नेत्रपाणौ गते (तदा नरः) रोगयुक्तः, वरार्थश्रिया वियुक्तः, गीतनृत्यप्रियः, कामुकः, सर्वदागौरवर्णः, विवर्णोद्भवप्रीतियुक् (भवति) ॥ ३ ॥

भा०—यदि बृहस्पति नेत्रपाणि अवस्थागत हो तो वह मनुष्य रोगी रहता है बड़प्पन और सम्पत्ति से हीन होता है, नाच, गान में विशेष प्रेम रखता है सदा गोरांग रहता है, कुलहीन स्त्री (वेश्या से प्रेम रखता है ॥ ३ ॥

गुणानामानन्दं विमलसुखकन्दं वितनुते
सदा तेजः पुंजः व्रजपतिनिकुञ्जं प्रतिगमम् ।
प्रकाशं चेदुच्चैर्द्रुतमुपगतो वासवगुरु-
र्गुरुत्वं लोकानां धनपतिसमत्वं तनुभृताम् ॥ ४ ॥

अन्वयः—चेत् वासवगुरुः प्रकाशं (तदा) तनुभृतां गुणानामानन्दं विमलसुखकन्दं वितनुते, सदातेजपुञ्जं, व्रजपतिनिकुञ्जं प्रतिगमं उच्चैर्द्रुतमुपगतः लोकानां गुरुत्वं [तथा] धनपतिसमत्वं (कृतम्) ॥ ४ ॥

भा०—यदि वृहस्पति प्रकाश अवस्था में हो तो उस मनुष्य को गुणों में आनन्द देनेवाला, अच्छे सुखों को भोगनेवाला बन जाता है, सर्वदा अपने शान से रहता हुआ भी श्रीकृष्ण भगवान् के लीला में रमण करता हुआं वह मनुष्य साकेतपुर (गोलोक) जाने की चेष्टा करता है, बहुत शीघ्र उच्च पदवी पर पहुँचता है, भूमण्डल में अति प्रतिष्ठित बनकर कुवेर के समान धनाढ्य हो जाता है ॥ ४ ॥

साहसी भवति मानवः सदा
मित्रपुत्रसुखपूरितो मुदा ।
पण्डितो विविधवित्तमण्डितो
वेदविद्यदि गुरौ गमं गते ॥ ५ ॥

अन्वयः—यदि गुरौ गमं गते [तदा] मानवः साहसी, सदा मित्रपुत्रसुखपूरितः मुदा पण्डितः, विविधवित्तमण्डितः, (तथा) वेदविद् भवति ॥ ५ ॥

भा०-यदि वृहस्पति गमनावस्था में हो तो वह मनुष्य साहसी होता है; सर्वदा स्त्री, पुत्र और मित्रगणों के सुख से युक्त रहता है, प्रसन्न चित्तवाला पण्डित, अनेक प्रकार के धनों से युक्त और वेद का जाननेवाला होता है ॥ ५ ॥

आगमने जनता वरजाया
यस्य जनुःसमये हरिमाया ।
मुञ्चति नालमिहालयमद्धा
देवगुरौ परितः परिवद्धा ॥ ६ ॥

अन्वयः—यस्य जनुः समये देवगुरौ आगमने [तदा] जनतावरजायाया, हरिमाया [लक्ष्मी] इहालयमद्धाअलं न मुञ्चति (अर्थात्) परितः परिवद्धा (भवति) ॥ ६ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में वृहस्पति आगमन अवस्था में हो तो उस मनुष्य की स्त्री अति सुन्दरी होती है, उसके घर को लक्ष्मी कभी नहीं छोड़ती

अर्थात् उसके सच्चे प्रेम (पूर्व जन्मार्जित पुण्य) से चारों तरफ से बँधी हुई रहती है ॥ ६ ॥

सुरगुरुसमवक्ता शुभ्रमुक्ताफलाढ्यः
सदसि सपदि पूर्णो वित्तमाणिक्ययानैः ।
गजतुरगरथाढ्यो देवताधीशपूज्ये
जनुषि विविधविद्यागर्वितो मानवः स्यात् ॥ ७ ॥

अन्वयः—(यदि) जनुषि देवताधीशपूज्ये सदसि (तदा) मानवः सुरगुरुसमवक्ता, शुभ्रमुक्ताफलाढ्यः, सपदि वित्तमाणिक्य यानैः पूर्णः, गजतुरगरथाढ्यः [तथा] विविधविद्यागर्वितः स्यात् ॥ ७ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में बृहस्पति सम अवस्थागत हो तो वह मनुष्य बृहस्पति के समान बोलनेवाला, सुन्दर २ मोतियों करके युक्त रहनेवाला, इच्छानुकूल धन, मणि और सवारियों का सुख पूर्ण भोगनेवाला, हाथी, घोड़े और रथ करके युक्त रहने वाला और अनेक विद्याओं के जाननेवाला होता है ॥ ७ ॥

नानावाहनमानयानपटलीसाख्यं गुरावागमे
भृत्यापत्यकलत्रमित्रजसुखं विद्यानवद्या भवेत् ।
क्षोणीपालसमानतानवरतं चातीव हृद्या मतिः
काव्यानन्दरतिः सदा हितगतिः सर्वत्र मानान्नतिः ॥ ८ ॥

अन्वयः—(यदा) गुरौ आगमे (तदा नरं) नानावाहनमानयानपटलीसाख्यं, भृत्यापत्यकलत्रमित्रजसुखं, विद्यानवद्या भवेत्, क्षोणीपालसमानतानवरतं, अतीव हृद्यामतिः, च काव्यानन्दरतिः, सदा हितगतिः (तथा) सर्वत्र मानान्नतिः भवेत् ॥ ८ ॥

भा०—यदि बृहस्पति आगम अवस्था में हो तो उस मनुष्य को अनेकों (हाथी, घोड़, रथ, मोटर इत्यादि) सवारियो का सुख, नौकर, स्त्री, पुत्र, मित्र, का सुख यथेच्छ मिलता है षट् शास्त्रज्ञ होता है, राजा की तरह निरन्तर सुख करता है, शुद्ध (विकार रहित) बुद्धि होती है, काव्य (साहित्य) कौशल में अत्यन्त प्रेम रखता है, सर्वदा दूसरे की भलाई करता है और सर्वत्र उसकी अति प्रतिष्ठा होती है ॥ ८ ॥

भोजने भवति देवतागुरौ
यस्य तस्य सततं सुभोजनम् ।
नैव मुञ्चति रमालयं तदा
वाजिवारणरथैश्च मण्डितम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—यस्य देवतागुरौ भोजने भवति तदा तस्य सततं सुभोजनम्, रमालयं नैव मुञ्चति, वाजिवारणरथैश्च मण्डितं (भवति) ॥९॥

भा०--जिसके बृहस्पति भोजन अवस्थागत होते उसको सर्वदा देवान्न (दही, दूध, मलाई, घीव, हविष्य इत्यादि) मिलता है, श्रीलक्ष्मी उसके घर को कभी नहीं छोड़ती अर्थात् अत्यन्त धनाढ्य आजन्म रहता है और घोड़े, हाथी, रथ इत्यादि सवारियों का सुख सर्वदा रहता है ॥६॥

नृत्यलिप्सागते राजमानो धनी
देवताधीशवन्द्ये सदा धर्मवित् ।
तन्त्रविज्ञो बुधमण्डितः पण्डितः
शब्दविद्यानवद्यो हि सद्यो जनः ॥१०॥

अन्वयः—(यदा) देवताधीशवन्द्ये नृत्यलिप्सागते (तदा) जनः राजमानो, धनी, सदा धर्मवित्, तन्त्रविज्ञः, बुधैर्मण्डित, पण्डितः, हि सद्यः शब्दविद्यानवद्यः भवति ॥१०॥

भा०—यदि बृहस्पति नृत्यलिप्सा अवस्थागत हो तो वह मनुष्य राजा से प्रतिष्ठा पानेवाला, विशेष धनवाला, सदा धर्म तत्पर रहनेवाला, तन्त्र शास्त्र जाननेवाला, पण्डितों में आदर पानेवाला और शीघ्र स्फुरण बुद्धिवाला व्याकरण शास्त्र का पण्डित होता है ॥ १० ॥

कुतूहली सकौतुके महाधनी जनः सदा
निजान्वयाब्जभास्करः कृपाकलाधरः सुखी ।
निलिंपराजपूजिते सुतेन भूनयेन वा
युतो महाबली धराधिपेन्द्रसद्मपण्डितः ॥११॥

अन्वय—(यदा) निलिंपराजपूजिते स कौतुके (तदा) जनः कुतूहली, महाधनी, निजान्वयाब्जभास्करः, कृपाकलाधरः; सदासुखी, सुतेन भनयेन वा युतः, महाबली, धराधिपेंद्रसद्मपण्डितः भवति ॥११॥

भा०--यदि बृहस्पति कौतुक अवस्था का हो तो वह मनुष्य खेल तमाशा करनेवाला, विशेष धनवाला, अपने कमलरूपी वंश में सूर्यरूप प्रकाश करनेवाला, अत्यन्त दया करनेवाला, सर्वदा सुख भोगनेवाला, पुत्र और भूमि से युक्त नम्र-स्वभाव वाला, बहुत बलवान और राज्यकुल का पण्डित होता है ॥११॥

गुरौ निद्रागते यस्य मूर्खता सर्वकर्मणि।
दरिद्रतापरिक्रांतं भवनं पुण्यवर्जितम् ॥ १२ ॥

अन्वयः—यस्य गुरौ निद्रागते [तदा] सर्वकर्माणि मूर्खता, दरिद्रता परिक्रान्तं [तथा] भवनं पुण्यवर्जितं [भवति] ॥१२॥

भा० जिसके जन्मकाल में बृहस्पति निद्रा अवस्थागत हो तो वह मनुष्य हर एक कार्य मूर्खता से करता है, दरिद्रा माता के गोद में बैठा रहता है और उसके घर से पुण्य विमुख होकर अरण्य रोदन करते हैं ॥ १२ ॥

———

अथ शुक्रस्यावस्थाफलानि—

जनो बलीयानपि दन्तरोगी
भृगौ महारोषसमन्वितः स्यात्।
धनेन हीनः शयनं प्रयाते
वाराङ्गनासङ्गमलंपटश्च ॥ १ ॥

अन्वयः—[यस्य] भृगौ शयनं प्रयाते [तदा] जनः बलीयानपि दन्तरोगी, महारोषसमन्वितः, धनेन हीनः, वाराङ्गनासङ्ग-अलम्पटश्च स्यात् ॥१॥

भा०—जिसके जन्मकाल में शुक्र शयन अवस्था में हो तो वह मनुष्य बलवान् होने पर भी दांत के रोग से दुःखी, महाक्रोधी और धनहीन होता है, वेश्या के साथ प्रेम होने पर भी उसमें संसक्त नहीं होता है ॥ १ ॥

यदि भवेदुशना उपवेशने
नवमणिव्रजकाञ्चन भूषणैः।
सुखमजस्रमरिक्षय आदरा-
दवनिपादपिमानसमुन्नतिः ॥ २ ॥

अन्वयः- यदि उशना उपवेशने भवेत् (तदा) नवमणित्रज-काञ्चनभूषणैः अजस्रं सुखं, अरिक्षयः आदरादवनिपादपि मान-समुन्नतिः (भवति) ॥ २ ॥

भा०—यदि शुक्र उपवेशन अवस्थागत हो तो वह मनुष्य नूतन मणियों के माला तथा सोने के आभूषणों से सदा सुशोभित रहता है, उसके शत्रुओं का नाश हो जाता है और आदरपूर्वक राजा से अपने प्रतिष्ठा की उन्नति करता है ॥२॥

नेत्रपाणिगते लग्नगेहे कवौ
सप्तमे मानभे यस्य तस्य ध्रुवं ।
नेत्रपातो निपातोधनानामल
चान्यभे वासशाल विशाला भवेत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—यस्य कवौ नेत्रपाणिगते लग्नगेहे, सप्तमे (वा) मानभे (भवेत् तदा) तस्य ध्रुवं नेत्रपातो धनानामलं निपातश्च, अन्यभे (तदा) सर्वदा विशाला वासशाला भवेत् ॥ ३ ॥

भा०—जिसके जन्म समय म शुक्र नेत्रपाणि अवस्थागत होकर लग्न, सातवें अथवा दसवें घर में बैठा हो तो उस मनुष्य की आंख फूटकर अवश्य गिर जाती है और धन का नाश भी हो जाता है, यदि उक्तावस्थागत शुक्र उक्त स्थान से दूसरे घरों में बैठा हो तो उसको सदा रहने के लिये उत्ताम बहुत बड़ा महल मिल जाता है ॥ ३ ॥

स्वालये तुङ्ग भे मित्रभे भार्गवे
तुङ्गमातङ्गलीलाकलापीजनः ।
भूपतेस्तुल्य एवं प्रकाशं गते
काव्यविद्याकलाकौतुकी गीतवित् ॥ ४॥

अन्वयः- भार्गवे स्वालये, तुङ्गभे, मित्रभे प्रकाशं गते (तदा) जनः तुङ्गमातङ्गलीला कलापी, एवं भूपतेस्तुल्यः काव्यविद्याकलाकौतुकी (तथा) गीतवित् (भवति) ॥ ४ ॥

भा०—यदि शुक्र अपने घर मे, अपने उच्च स्थानमें, अथवा मित्रके घरमें बैठकर प्रकाश अवस्था में हो तो वह मनुष्य मदान्ध बड़े-बड़े उच्च हाथियों के क्रीड़ा (फंसाने) में चतुर होता है, राजा की तरह सुख करनेवाला, साहित्यशास्त्र कला कौशल का जाननेवाला और भजन गानेवाला होता है ॥ ४ ॥

गमने जनने शुक्रे तस्य माता न जीवति ।
अधियोगो वियोगश्च जनानामरिभीतितः ॥ ५ ॥

अन्वयः—(यस्य) जनने शुक्रे गमने तस्य माता न जीवति, अरिभीतितः जनानां अधियोगः वियोगश्च भवति) ॥ ५ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में शुक्र गमना अवस्था में हो तो उसकी माता शीघ्र मर जाती है, शत्रुओं के भय से अपने परिवार के साथ रहता है और कभी अलग भी रहता है ॥ ५ ॥

आगमनं भृगुपुत्रे गतवति वित्तेश्वरो मनुजः ।
स तु तीर्थश्रमशाली नित्योत्साही करांघ्रिरोगी च ।।६।।

अन्वयः–(यदा) भृगुपुत्रे आगमनं गतवति (तदा) मनुजः वित्तेश्वरः स तु तीर्थश्रमशाली, नित्योत्साही करांघ्रिरोगी च ॥६॥

भा०—यदि शुक्र आगमन अवस्था में हो तो वह मनुष्य अत्यन्त धनाढ्य होता है, सदा तीर्थयात्रा किया करता है, सर्वदा मगन रहता है और उसके हाथ पैर में कष्ट रहता है ॥ ६ ॥

अनयासेनालं सपदि महसा याति सहसा
प्रगल्भत्वं राज्ञः सदसि गुणविज्ञः किल कवौ ।
सभायामायाते रिपुनिवहहन्ता धनपतेः
समत्वं वा दंतावलतुरगगन्ता नरवरः ॥७॥

अन्वयः—(यदि) कवौ सभायामायाते (तदानरः) अनायासेनालं सहसा प्रगल्भत्वं राज्ञः सदसि याति गुणविज्ञः, किल रिपुनिवहहन्ता, धनपतेः समत्वं वा दन्तावलतुरगगन्ता नरवरः (भवति) ॥ ७ ॥

भा०—यदि शुक्र सभावस्था में हो तो वह मनुष्य बिना किसी कोशिश से अति शीघ्र राजसभा में पहुँचकर अपनी विद्या से पूर्ण प्रतिष्ठा पाता है, प्रबल शत्रुओं के समूह को मारनेवाला होता है, कुबेर के समान धनी अथवा हाथी घोड़े की सवारियों पर चलनेवाला मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है ॥ ७ ॥

आगमे भार्गवे नागमो जन्मिना-
मर्थराशेररातेस्तीव क्षतिः ।

पुत्रपातो निपातो जनानामपि
व्याधिभीतिः प्रियाभोगहानिर्भवेत् ॥ ८ ॥

अन्वयः—(यदा भार्गवे आगमे (तदा) जन्मिनां नागमः, आरातेः अर्थराशेः अतीवक्षतिः, पुत्रपातः, जनानामपि निपातः, व्याधिभीतिः (तथा प्रियाभोगहानिर्भवेत् ॥ ८ ॥

भा०—यदि शुक्र आगमन अवस्थागत हो तो उस मनुष्य को लाभ नहीं होता शत्रुओं के विवाद से संचित धन का नाश होता है, पुत्र की हानि और परिवार की हानि भी होती है, शरीर में कष्ट और स्त्री के भय विलास से रहित अर्थात् नपुंसक होता है ॥ ८ ॥

क्षुधातुरो व्याधिनिपीडितः स्या-
दनेकधारातिभयार्दितश्च ।
कवौ यदा भोजनगे युवत्या
महाधनी पण्डितमण्डितश्च ॥ ९ ॥

अन्वयः—यदा कवौ भोजनगे (तदा नरः) क्षुधातुरः व्याधिनिपीडितः अनेकधारातिभयार्दितः युवत्या महाधनो (तथा पण्डितमण्डितश्च स्यात् ॥ ९ ॥

भा०—यदि शुक्र भोजन अवस्था में हो तो मनुष्य भूख (क्षुधा) से पीड़ित रहता है, शरीर से कष्ट पाता है, अनेक शत्रुओं के भय से दुखी रहता है, स्त्री सम्बन्ध (ससुराल) से विशेष धन पाता है और पण्डितों करके युक्त (पूज्य) होता है ॥ ९ ॥

काव्यविद्यानवद्या च हृद्या मतिः
सर्वदा नृत्यलिप्सां गते भार्गवे ।
शंखवीणामृदङ्गादिगानध्वनि-
व्रातनैपुण्यमेतस्य वित्तोन्नतिः ॥ १० ॥

अन्वयः— यदा भार्गव नृत्यलिप्सां गते तदा) काव्यविद्यानवद्या, च सर्वदा हृद्या मतिः, शंखवीणामृदङ्गादिगानध्वनिव्रातनैपुण्यं (तथा) एतस्य वित्तोन्नतिः (भवति) ॥ १० ॥

भा०—यदि शुक्र नृत्यलिप्सा अवस्थागत हो तो वह मनुष्य काव्य शास्त्र में प्रवीण और सदा विशुद्ध बुद्धिवाला होता है, शंख, वीणा, मृदंग आदि बाजा तथा गान ध्वनि (ताल, सुर) में विशेष चतुर होता है और उसका धन नित्य-नित्य बढ़ता है ॥ १० ॥

कौतुकभवनं गतवति शुक्रे
शक्रेशत्वं सदसि महत्वम् ।
हृद्याविद्या भवति च पुंसः
पद्मोदरनिवसति पद्मोदरतः ॥ ११ ॥

अन्वयः—यदि शुक्रे कौतुकभवनं गतवति तदा पुंसः शक्रेशत्वं सदसि महत्त्वं, हृद्या च भवति तथा पद्मोदरतः (त्याक्त्वा पद्मा (तस्य गृहे) निवसति ॥ ११ ॥

भा०--यदि शुक्र कौतुक अवस्था में बैठा हो तो वह मनुष्य इन्द्र की तरह सभा में आदर पाता है, उसकी विद्या बड़ी प्रगल्भ (शुद्ध) होती है और कमल के पुष्पवन को छोड़कर लक्ष्मी उसके घर में निवास करती हैं ॥ ११ ॥

परसेवारतो नित्यं निद्रामुपगते कवौ ।
परनिन्दापरोवीरो वाचाली भ्रमते महीम् ॥ १२ ॥

अन्वयः--कवौ निद्रामुपगते (तदा नरः) परसेवारातः परनिन्दा परोवीरः वाचालः, (तथा) महीं भ्रमते ॥ १२ ॥

भा०--यदि शुक्र निद्रावस्थागत हो तो वह मनुष्य दूसरे की सेवा । नोकर करता है, दूसरे की निन्दा करता है, दूसरे के लिये वीर होता है, ठग (धूर्त) होता है, और दुःखी होकर पृथ्वी में जहाँ तहाँ ठोकर खाता फिरता है ॥१२॥

अथ शनेरवस्थाफलानि—

क्षुत्पिपासापरिक्रान्तो विश्रान्तः शयने शनौ ।
वयसि प्रथमे रोगी ततो भाग्यवतां वरः ॥ १ ॥

अन्वयः--यदा शनौ शयने (तदा नरः) क्षुत्पिपासापरिक्रान्तः, विश्रान्तः, प्रथमे वयसि रोगी, ततः भाग्यवतां वरः (भवति) ॥१ ॥

भा०—यदि शनि शयन अवस्थागत हों तो वह मनुष्य भूख और प्यास से पीड़ित रहता है अर्थात् पेट भर अन्न जल नहीं मिलता है, अति परिश्रमसे थका हुआ रहता है, प्रथम अवस्थामें रोगी उसके बाद सुखी होकर धनाढ्य हो जाता है ॥१॥

भानोः सुते चेदुपवेशनस्थे
करालकारातिजनानुतप्तः ।
अपायशाली खलु दद्रुमाली
नरोऽभिमानी नृपदण्डयुक्तः ॥ २ ॥

अन्वयः—चेत् भानः सुते उपवेशनस्थे (तदा) नरः करालकारातिजनानुतप्तः, अपायशाली, खलु दद्रुमाली, अभिमानी तथा नृपदण्डयुक्तः भवति ॥ २ ॥

भा०—यदि शनि उपवेशन अवस्था में हों तो वह मनुष्य प्रचण्ड शत्रुओं के झंझट से अति दुःखी और सदा धन का नाश करनेवाला होता है। दादरोग युक्त अभिमानी और राजदण्ड से सदा संतप्त रहता है ॥ २ ॥

नयनपाणिगते रविनन्दने
परमया रमया परयायुतः ।
नृपतितो हिततो मतितोषकृद्
बहुकलाकलितो विमलोक्तिकृत् ॥ ३ ॥

अन्वयः—(यदा) रविनन्दने नयनपाणिगते (तदा नरः) परया रमया परमया युतः, नृपतितो हिततो मतितोषकृद्बहुकलाकलितः विमलोक्तिकृत् (भवति) ॥ ३ ॥

भा०—यदि शनि नयनपाणि अवस्था में हो तो वह मनुष्य दूसरे के द्रव्य से अति धनाढ्य हो जाता है, राजा के प्रसन्नता से अति प्रसन्न होकर कलाकौशल दिखाकर सदा शुद्ध बुद्धि से काम लेता है ॥ ३ ॥

नानागुणग्रामधनाधिशाली
सदा नरो बुद्धिविनोदमाली ।
प्रकाशने भानुसुते सुभानुः
कृपानुरक्तो हरपादभक्तः ॥ ४ ॥

अन्वयः—(यदा) भानुसुते प्रकाशने [तदा] नरः नानागुणग्रामधनाधिशाली, सदा बुद्धिविनोदमाली, सुभानुः, कृपानुरक्तः तथा हरपाद भक्त (स्यात्) ॥ ४ ॥

भा०—यदि शनि प्रकाशन अवस्था में हो तो वह मनुष्य अनेक सद्गुणों से युक्त तथा राज्य (भूमि) और धन से युक्त होता है, सर्वदा सद्विचार किया करता है, सुन्दर तेजयुक्त शरीर पाकर दीनबन्धु भी होता है और श्रीशंकर का अत्यन्त भक्त होता है ॥ ४ ॥

महाधनी नन्दननन्दितः स्या-
दपापकारी रिपुभूमिहारी ।
गमे शनौ पण्डितराजभावं
धरापतेरायतने प्रयाति ॥ ५ ॥

अन्वयः—(यदि) शनौ गमे (तदा नरः) महाधनी, नन्दननन्दितः अपापकारी, रिपुभूमिहारी स्यात्, पण्डितराजभावं, धरापतेरायतने प्रयाति ॥ ५ ॥

भा०—यदि शनि गमनावस्था में हो तो वह मनुष्य बहुत ही बड़ा धनवान् संतानयुक्त, पापकर्मों से डरनेवाला, शत्रुओं को दबाकर राज्य जीतनेवाला और पंडितों मे पण्डितराज कहलाकर राजसभा में जाकर विशेष आदर पानेवाला होता है ॥ ५ ॥

आगमने पदगदभययुक्तः
पुत्रकलत्रसुखेन विमुक्तः ।
भानुसुते भ्रमते भुवि नित्यं
दीनमना विजनाश्रयभावम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—(यदा) भानुसुते आगमने (तदा नरः) पदगदभययुक्तः पुत्रकलत्रसुखेन विमुक्तः (तथा) नित्यं दीनमना विजनाश्रयभावं भुवि भ्रमते ॥ ६ ॥

भा०—यदि शनि आगमन अवस्था में हो तो वह मनुष्य पैरके रोगसे दुखी होता है. पुत्र, स्त्रीके सुखसे रहित होता है और सदा दरिद्रा माताके अंकमें पालित होकर एकान्त स्थानमें वास करनेके लिये पृथ्वी में भटकता फिरता है ॥ ६ ॥

रत्नावलीकाञ्चनमौक्तिकानां
व्रातेन नित्यं व्रजति प्रमोदम् ।
सभागते भानुसुते नितान्तं
नयेन पूर्णो मनुजो महौजाः ॥ ७ ॥

अन्वयः—(यदा) भानुसुते सभागते (तदा मनुजः रत्नावलीः-काञ्चनमौक्तिकानां व्रातेन नित्यं प्रमोदं व्रजति, नितान्तं नयेन पूर्ण (तथा) महौजाः स्यात्] ॥ ७ ॥

भा०—यदि शनि सभा अवस्था में हो तो वह मनुष्य हीरा, पन्ना, पोखराज, सोना और मोतियों के खजाने को देख देखकर अथवा उनके आभषणों को पहनकर नित्यप्रति प्रसन्नता को प्राप्त होता है, उसमें नीतिशास्त्र कूट कूटकर भरा रहता है अर्थात् प्रत्येक कार्य न्यायपूर्वक करता है और अत्यन्त प्रभावशाली भी होता है ॥ ७ ॥

आगमे गदसमागमो नृणामब्जबन्धुतनये यदा तदा ॥
मन्दमेव गमनं धरातले याचनाविरहिता मतिः सदा ॥ ८ ॥

अन्वयः- यदा आगमे अब्जबन्धुतनये तदा नृणां गदसमागमः; गमनं मन्दमेव, (तथा) धरातले सदा याचना विरहिता मतिः [भवति] ॥ ८ ॥

भा०—यदि आगम अवस्था में शनि बैठा हो तो उस मनुष्य को रोग कब्जा में किये रहता है, उसकी चाल धीमी (मन्द गति) होती है और वह मनुष्य कभी भी किसी से कोई वस्तु माँगना नहीं चाहता अर्थात् सब सामानों से परिपूर्ण रहता है ॥ ८ ॥

संगते जनुषि भानुनन्दने
भोजने भवति भोजनं रसैः ।
संयुतं नयनमन्दताऽज्ञता
मोहतापपरितापिता मतिः ॥ ९ ॥

अन्वयः—(यदि जनुषि भानुनन्दने भोजने संगते (तदा) रसैः संयुतं भोजनं भवति, नयनमन्दता, अज्ञाता मोहतापपरितापिता मतिः (भवति) ॥ ९ ॥

भा०—यदि जन्मकाल में शनि भोजन अवस्था में हो तो वह मनुष्य षट्रस भोजन करता है, नेत्ररोगी होता है और मूर्खता से भ्रमजाल मे फँसकर उसकी बुद्धि संतप्त रहा करती है ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते मन्दे धर्मात्मा वित्तपूरितः ।
राजपूज्यो नरो धीरो महावीरा रणाङ्गणे ॥ १० ॥

अन्वयः—(यदा) मन्दे नृत्यलिप्सागते (तदा) नरः धर्मात्मा, वित्तपूरितः राजपूज्यः धीरः (तथा) रणाङ्गणे महावीरः (स्यात्) ॥ १० ॥

भा०- यदि शनि नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो वह मनुष्य धर्मिष्ठ, धनाढ्य, राजासे आदर पानेवाला, गम्भीर और युद्ध स्थान में अति बलवान् होता है ॥१०॥

भवति कौतुकभावमुपागते
रविसुते वसुधावसुपूरितः ।
अतिसुखी सुमुखीसुखपूरितः
कवितयाऽमलया कलया नरः ॥ ११ ॥

अन्वयः—(यदा) रविसुते कौतुकभावमुपागते (तदा) नरः वसुधावसुपूरितः अतिसुखी, सुमुखीसुखपूरितः, (तथा) कवितयाऽमलया कलया भवति ॥ ११ ॥

भा —यदि शनि कौतुक अवस्था गत हो तो वह मनुष्य पृथ्वी तथा धन से परिपूर्ण, शरीर से अति सुखी, चन्द्रवदनी मृगनयनी (स्त्री) के काम कटाक्ष सुखोंसे युक्त और काव्यशास्त्र कलओं में प्रवीण होता है ॥ ११ ॥

निद्रागते वासरनाथपुत्रे
धनी सदा चारुगुणैरुपेतः ।
पराक्रमी चण्डविपक्षहन्ता
सुवारकान्तारतिरीतिविज्ञः ॥ १२ ॥

अन्वयः—(यदा) वासरनाथपुत्रे निद्रागते (तदा नर) सदा धनी चारुगुणैरुपेतः, पराक्रमी, चण्डविपक्षहन्ता, सुवारकान्तारतिरीतिविज्ञः (भवति) ॥ १२ ॥

भा०-यदि शनि निद्रा अवस्थामें हो तो वह मनुष्य सर्वदा धनी सद्गुणों से

युक्त साहस करनेवाला, प्रचण्ड शत्रु पक्षकों विध्वंस करनेवाला और अति सुन्दरी वेश्याओं के साथ रमण करने में अति चतुर होता है ॥ १२ ॥

—०:०—

अथ राहोरवस्थाफलानि—

गदागमो जन्मनि यस्य राहौ
क्लेशाधिकत्वं शयनं प्रयाते ।
वृषेऽथ युग्मेऽपि च कन्यकाया
मजेसमाजो धनधान्यराशे ॥ १ ॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि राहौ शयनं प्रयाते (तस्य) गदागमः, क्लेशाधिकत्वं, अथ वृषे, युग्मेऽपि च कन्यकायामजे प्रयाते (तदा) धन-धान्य राशेः समाजः (स्यात्) ॥ १ ॥

भा०-जिसके जन्म समय में राहु शयन अवस्थागत हो तो उस मनुष्य को रोग सताया करता है, अनेक प्रकार के कष्टों से संतप्त रहता है, यदि वृष, मिथुन, कन्या अथवा मेष राशिगत राहु उक्तावस्थामें हो तो धनका खजाना और अन्न की मण्डी से युक्त रहता है ॥ १ ॥

उपवेशनमिह गतवति राहौ
दद्रुगदेन जनः परितप्तः
राजसमाजयुतो बहुमानी
वित्तसुखेन सदा रहितः स्यात् ॥ २ ॥

अन्वयः—(यदि) राहौ उपवेशनमिह गतवति (तदा) जनः दद्रुगदेन परितप्तः, राजसमाजयुतः बहुमानी (तथा) सदा वित्तसुखेन रहितः स्यात् ॥ २ ॥

भा०—यदि राहु उपवेशन अवस्था में हो तो वह मनुष्य दादरोग से दुखी रहता है, राजसभा में आदर पाता है, मानी होता है और सर्वदा दरिद्र (धन-हीन रहता है ॥ २ ॥

नेत्रपाणावगौ नेत्रे भवतो रोगपीड़िते ।
दुष्टव्यालारिचौराणां भयं तस्य धनक्षयः ॥ ३ ॥

अन्वयः—अगौ नेत्रपाणौ (तदा) तस्य नेत्रे रोगपीड़िते भवतः, दुष्टव्यालारिचौराणां भयं (तथा) धनक्षयः (भवति) ॥ ३ ॥

भा०-यदि राहु नेत्रपाणि अवस्था में हो तो उस मनुष्य के नेत्रों में पीड़ा रहती है, नीच मनुष्य, सर्प, शत्रु और चोरोंसे भय होता है और उसका सञ्चित धन नष्ट हो जाता है ॥ ३ ॥

प्रकाशने शुभासने स्थितिः कृतिः शुभानृणां
धनोन्नतिर्गुणोन्नतिः सदा विदामगाविह ।
धराधिपाधिकारिता यशोलता ततो भवे-
न्नवाननीरदाकृतिर्विदेशतो महोन्नतिः ॥ ४ ॥

अन्वयः—(यदि) अगौ प्रकाशने (तदा) नृणां शुभासने स्थितिः, शुभाकृतिः, धनोन्नतिर्गुणोन्नतिः सदाविदां धराधिपाधिकारिता यशोलता, नवीननीरदाकृतिः, ततः विदेशतः महोन्नतिः भवेत् ॥ ४ ॥

भा०-यदि राहु प्रकाशन अवस्था में हो तो उस मनुष्य को उच्चपद मिलता है, श्रेष्ठ कर्म करता है धन और गुणका विशेष उन्नति करता है, आजन्म पंडित (सद्बुद्धि) पदको प्राप्त करता है, राज्यकुल से प्राप्त की हुई प्रतिष्ठा की लता बहुत ही दूर तक फैलती है, नये मेघ की तरह (श्याम) कान्ति शरीर की होती है और विदेश से बहुत बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त करता है ॥ ४ ॥

गमने च यदा राहौ बहुसन्तानवान्नरः ।
पण्डितो धनवान्दाता राजपूज्यो नरोत्तमः ॥ ५ ॥

अन्वयः—(यदा) राहौ गमने (तदा) नरः बहु सन्तानवान्, पण्डितः, धनवान्, दाता राज्यपूज्यः नरोत्तमश्च भवति ॥ ५ ॥

भा०—यदि राहु गमनावस्था में बैठा हो तो वह मनुष्य बहुत संतानवाला, पण्डित, धनवान्, दान करनेवाला, राजा से आदर पानेवाला और श्रेष्ठ पुरुष (आदर्श पुरुष) होता है ॥ ५ ॥

राहावागमने क्रोधी सदा धीधनवर्जितः ।
कुटिलः कृपणः कामी नरो भवति सर्वथा ॥ ६ ॥

अन्वयः—(यदा) राहौ आगमने (तदा) नरः क्रोधी, सदा धीधन वर्जितः कुटिलः, कृपणः, (तथा) सर्वथा कामी भवति ॥ ६ ॥

भा०—यदि राहु आगमन अवस्था में हो तो वह मनुष्य क्रोधी, सदा बुद्धि और धन से हीन, खल, कृपण और अति कामी होता है ॥ ६ ॥

सभागते यदा राहौ पण्डितः कृपणो नरः ।
नानागुणपरिक्रान्तो वित्तसौख्यसमन्वितः ॥७॥

अन्वयः—यदा राहौ सभा (अवस्था) गते (तदा) नरः पण्डितः, कृपणः, नानागुणपरिक्रान्तः (तथा) वित्तसौख्यसमन्वितः स्यात् ॥ ७ ॥

भा०—यदि राहु सभा अवस्था में हो तो वह मनुष्य, पण्डित, कृपण, अनेक गुणों से युक्त और धन तथा शरीर सुख से सम्पन्न होता है ॥ ७ ॥

चेदगौवागमं यस्य याते तदा
व्याकुलत्वं सदाऽरातिभीत्या महत् ।
बन्धुवादो जनानां निपातो
भवाद्वित्तहानिः शठत्वं कृशत्वं तथा ॥८॥

अन्वयः—चेद्गौ यस्य आगमं याते तदा (नरः) आरातिभीत्या सदा व्याकुलत्वं, महद्बन्धुवादः जनानां निपातः वित्तहानि, शठत्वं, तथा कृशत्वं भवेत् ॥ ८ ॥

भा० –यदि राहु जिसके आगम अवस्थाका हो तो शत्रुओंके भयसे सदा घबड़ाये हुए रहता है, बन्धु वर्गोंसे बहुत ही विवाद रहता है, परिवार हीन दशामें रहता है, धनकी हानि होती है, कृपण होता है और शरीरसे कमजोर भी रहता है ॥ ८ ॥

भोजने भोजनेनालं विकलो मनुजो भवेत् ।
मन्दबुद्धिः क्रियाभीरुः स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः ॥ ९॥

अन्वयः—(यदि राहौ) भोजने [तदा] मनुजः भोजनेन अलं विकलं, मन्दबुद्धिः, क्रियाभीरुः [तथा] स्त्रीपुत्रसुखवर्जितः भवेत् ॥ ९ ॥

भा—यदि राहु भोजन अवस्था में हो तो उस मनुष्य का भोजन पर्याप्त नहीं मिलता है, बुद्धिहीन, धर्म कर्म से रहित और स्त्री, पुत्र सुख से वञ्चित होता है ॥ ९ ॥

नृत्यलिप्सागते राहौ महाव्याधिविवर्द्धनम् ।
नेत्ररोगं रिपोर्भीतिर्द्धनधर्मक्षयो नृणाम् ॥ १० ॥

अन्वयः—(यदा) राहौ नृत्यलिप्सागते (तदा) नृणां महाव्याधिविवर्द्धनं, नेत्ररोगं, रिपोर्भीतिः (तथा) धन धर्मविवर्जितः (भवेत्) ॥१०॥

भा०—यदि राहु नृत्यलिप्सा अवस्था में हो तो उस मनुष्य का रोग विशेष कष्टकारक होता है, आँखोंमें कष्ट, शत्रुओंसे भय और धन धर्मसे रहित होता है ॥ १० ॥

कौतुके च यदा राहौ स्थानहीनो नरो भवेत् ।
परदाररतोनित्यं परवित्तापहारकः ॥ ११ ॥

अन्वयः—यदा राहौ कौतुके (तदा) नरः स्थानहीनः, परदाररतः (तथा) नित्य परवित्तापहारकः भवेत् ॥ ११ ॥

भा०—यदि राहु कौतुक अवस्थामें हो तो उस मनुष्य का गृह स्थिर नहीं रहता है, पर स्त्री गामी और पराये धनका अपहरण करनेवाला होता है ॥ ११ ॥

निद्रावस्थागते राहौ गुणग्रामयुतो नरः ।
कान्तासन्तानवान्धीरो गर्वितो बहुवित्तवान् ॥ १२ ॥

अन्वय—[यदि] राहौ निद्रावस्थागते (तदा) नरः गुणग्रामयुतः कान्तासंतानवान्, धीरः, गर्वितः (तथा) बहुवित्तवान् (भवेत्) ॥ १२ ॥

भा०—यदि राहु निद्रा अवस्था में हो तो वह मनुष्य अनेक गुणों से युक्त और शहर का मालिक होता है, स्त्री पुत्रसे युक्त, गम्भीर, घमण्डी और बहुत धन वाला होता है ॥ १२ ॥

अथ केतोरवस्थाफलानि--

मेषे वृषेऽथ वा युग्मे कन्यायां शयनं गते ।
केतौ धनसमृद्धिः स्यादन्यभे रोगवर्द्धनम् ॥ १ ॥

अन्वयः--अथ केतौ, मेषे वृषे, युग्मे वा कन्यायां शयनं गते (तदा) धनसमृद्धिः अन्यभे रोग वर्द्धनं स्यात् ॥ १ ॥

भा०—अब केतुके अवस्थाका फल कहते हैं यदि केतु मेष, वृष, मिथुन, अथवा कन्या राशिमें बैठा हुआ शयन अवस्थागत हो तो उस मनुष्यका धन विशेष बढ़ता है, दूसरे राशिका होकर शयन अवस्था का हो तो रोग विशेष बढ़ता है ॥ १ ॥

उपवेशं गते केतौ दद्रुरोगविवर्द्धनम् ।
अरिव्रातनृपव्यालचौरशङ्कासमन्ततः ॥ २ ॥

अन्वयः—केतौ उपवेशंगते (तदा) दद्रुरोगविवर्द्धनम्, अरिव्रात-नृपव्यालचौरशङ्कासमंततः ॥ २॥

भा०—यदि केतु उपवेशन अवस्था गत हो तो उस मनुष्यका दादरोग अधिक वढता है (कष्टकारक होता) है, शत्रु, राजा, सर्प और चोरोंसे कष्ट पाने की आशंका सदा बनी रहती है ॥ २ ॥

नेत्रपाणि गते केतौ नेत्ररोगः प्रजायते ।
दुष्टसर्पादिभीतिश्च रिपुराजकुलादपि ॥
वित्तं विनाश मायाति मतिश्च चपला भवेत् ॥ ३ ॥

अन्वयः— यदि केतौ नेत्रपाणि गते (तदा) नेत्ररोगः प्रजायते दुष्ट सर्पादि भीतिः, च रिपुराजकुलादपि [भीतिः], वित्तं विनाशं आयाति, [तथा] चपला मतिः भवेत् ॥ ३ ॥

भा०—यदि केतु नेत्रपाणि अवस्थामे हो तो नेत्रोंमें रोग होता है, दुष्टजन सर्प इत्यादि से भय होता है, शत्रु और राज्यकुल से भी अनेक उपद्रवका भय होता है, धनका नाश हो जाता है और उसकी बुद्धि अत्यन्त चञ्चल हो जाती है॥३॥

प्रकाशने गते केतौ धनधान्यसमुन्नतिः ।
राजमानं यशो लाभं विदेशे सौख्यमाप्नुयात् ॥ ४ ॥

अन्वयः –[यदि] केतौ प्रकाशने गते [तदा नरस्य] धनधान्य समुन्नतिः, राजमानं यशालाभं [तथा विदेशे सौख्यमाप्नुयात् ॥ ४ ॥

भा० – यदि केतु प्रकाशन अवस्था में हो तो उस मनुष्य के धन, धान्य की वृद्धि होती है, राजदरबारमें प्रतिष्ठा पाता है, उसका यश दूर तक फैलता है और परदेश से विशेष धन पाता है ॥ ४ ॥

गमने तु यदा केतौ पुत्रसम्पत्ति मान्नरः ।
पण्डितो राजमानी च धनेन परिपूरितः ॥ ५ ॥

अन्वयः—यदा तु केतौ गमने [तदा] नरः पुत्र सम्पत्तिवात् [भवेत्] पण्डितः, राजमानी च [तथा] धनेन परिपूरितः (स्यात्) ॥ ५ ॥

भा०—यदि केतु गमन अवस्थामें हो तो वह मनुष्य सन्तान और धनसे युक्त होता है, विद्वान् होकर राज्यकुलसे प्रतिष्ठा पाता है और बहुत बड़ा धनवान् होता है ॥ ५ ॥

केतावागमने दुष्टमतिः श्रीरहितः पुमान्।
कामी धीधर्महीनश्च जायते क्रोधनः शठः ॥ ६ ॥

अन्वयः—[यदि] केतौ आगमने (तदा) पुमान् दुष्टमतिः, श्रीरहितः, कामी, धीधर्महीनः, क्रोधनः, शठश्च जायते ॥ ६ ॥

भा० यदि केतु आगमन अवस्थामें हो तो वह दुष्टस्वभाव वाला धन हीन, कामातुर, बुद्धि तथा धर्मसे रहित, क्रोधी और कृपण होता है ॥ ६ ॥

सभावस्थागते केतौ वाचालो बहुगर्वितः।
कृपणो लम्पटश्चैव धूर्तविद्याविशारदः ॥ ७ ॥

अन्वय—[यदा] केतौ सभा अवस्थागते (तदा नरः वाचालः, बहुगर्वितः, कृपणः, लम्पटः, च धूर्तविद्याविशारदः (स्यात्) ॥ ७ ॥

भा०—यदि केतु सभा अवस्थामें हो तो वह मनुष्य कुटिल, घमण्डी, कृपण कामी और धूर्तविद्यामें अति निपुण होता है ॥ ७ ॥

यदागमे भवत्केतुः केतुः स्यात्पापकर्मणाम् ॥
बन्धुवादरतो दुष्टो रिपुरोगनिपीडितः ॥ ८ ॥

अन्वय—यदा केतुः आगमे भवत् (तदा नरः) पापकर्मणां केतुः स्यात्, बन्धुवादरतः दुष्टः, रिपुरोगनिपीडितः स्यात् ॥ ८ ॥

भा०—यदि केतु आगम अवस्थामें हो तो वह मनुष्य पापियोंमें ध्वजारूप (महापापी) होता है, परिवारोंसे विरोध करता है, दुष्टस्वभाव वाला होता है और शत्रु तथा रोगसे दुखी होता है ॥ ८ ॥

भोजने तु जनो नित्यं क्षुधया परिपीडितः।
दरिद्रो रोगसंतप्तः केतौ भ्रमति मेदिनीम् ॥ ९ ॥

अन्वयः—(यदि) केतौ भोजने (तदा) जनः नित्यं क्षुधया परिपीडितः, दरिद्रः रोगसंतप्तः (तथा) मेदिनीं भ्रमति ॥ ९ ॥

भा०—यदि केतु भोजन अवस्थागत हो तो वह मनुष्य क्षुधासे नित्य

दुःखी रहता है और दरिद्र रूपी रोग से पीड़ित होकर जीविका के लिये भूमण्डल में भ्रमण करता फिरता है॥ ९॥

नृत्यलिप्सागते केतौ व्याधिना विकलो भवेत्।
बुद्बुदाक्षो दुराधर्षो धूर्त्तोऽनर्थकरो नरः॥ १०॥

अन्वयः—केतौ नृत्यलिप्सागते (तदा) नरः व्याधिना विकलः बुद्बुदाक्षः दुराधर्षः, धूर्त्तः (तथा) अनर्थकरो भवेत्॥ १०॥

भा०—यदि केतु नृत्यलिप्सा अवस्थामें हो तो वह मनुष्य रोगसे विकल रहता है, उसकी आँख बुद्बुदाकार (सदा पानी देनेवाली) होती हैं, अत्यन्त साहसी, वाचाल और नीच कर्म करनेवाला होता है॥ १०॥

कौतुकी कौतुके केतौ नटवामारतिप्रियः।
स्थानभ्रष्टो दुराचारो दरिद्रो भ्रमते महीम्॥ ११॥

अन्वयः—(यदि) केतौ कौतुके (तदा नरः) कौतुकी, नटवामारतिप्रियः, स्थानभ्रष्टः, दुराचारः दरिद्रः महीं भ्रमते॥ ११॥

भा०—यदि केतु कौतक अवस्था में हो तो वह मनुष्य खेल, तमाशा करने वाला, नर्तकी स्त्रियों (वेश्याओं) के साथ भोग विलास करनेवाला, दूसरे गृहमें गुजर करने वाला दुष्टकर्ममें रत रहनेवाला और धनहीन होकर जहाँ तहाँ ठोकर खानेवाला होता है॥ ११॥

निद्रावस्थागते केतौ धनधान्यसुखं महत्।
नानागुणविनोदेन कालो गच्छति जन्मिनाम्॥ १२॥

अन्वयः—केतौ निद्राअवस्थागते तदा जन्मिनां धनधान्यमहत्सुखं, (तथा) नानागुणविनोदेन कालः गच्छति॥ १२॥

भा०—यदि केतु निद्रा अवस्थामें हो तो वह मनुष्य द्रव्य तथा अन्नके खजाना से अति सुखी होता है और अनेक प्रकार के गुणों तथा व्यवसायोंसे सुखपूर्वक समय व्यतीत करता है॥ १२॥

इति श्रीभावकुतूहले उत्साहवर्द्धिनी सान्वयभाषाटीकायां ग्रहाणामवस्थाविचारे द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

त्रयोदशोऽध्यायः

अथ ग्रहाणां बालाद्यवस्था फलानि—

बालो रसांशैरसमे प्रदिष्ट-
स्ततः कुमारो हि युवाथवृद्धः ।
मृतः क्रमादुत्क्रमतः समर्क्षे
बालाद्यवस्थाः कथिता ग्रहाणाम् ॥ १ ॥

अन्वयः—अथ ग्रहाणां बालाद्यवस्थाः कथिता हि असमे विषम राशौ क्रमात् रसांशैः बालः ततः कुमारः ततः युवा, [तत] वृद्धः, (ततः) मृतः । समर्क्षे (समराशौ) उत्क्रमतः स्यात् ॥ १ ॥

भा०—अब ग्रहों की बालादि अवस्था कहते हैं, विषम (मेष, मिथुन, सिंह इत्यादि) राशियों में ६ अंश पर्यन्त ग्रहों की बाल अवस्था इसके बाद १२ अंश तक कुमार अवस्था, और इसके बाद १८ अंश तक युवा अवस्था इसके बाद २४ अंश तक वृद्धा अवस्था और ३० अंश पर्यन्त मृतक अवस्था है, सम (वृष, कर्क, कन्या इत्यादि) राशियों में इसका उलटा जैसे प्रथम ६ अंश तक मृत अवस्था, १२ अंश तक वृद्धा अवस्था, १८ अंश तक युवा अवस्था, २४ अंश तक कुमार अवस्था और ३० अंश पर्यन्त बाल अवस्था होती है ॥ १ ॥

फलं तु किंचिद्धि तनोति बाला-
च्चार्द्धं कुमारः प्रयतेन पुंसाम् ।
युवा समग्रं खचरोऽथ वृद्धः
फलं तु दुष्टं मरणं मृताख्यः ॥ २ ॥

अन्वयः—अथ च पुंसां खचरः बालः किञ्चित् फलं, कुमारः अर्द्धं फलं, तु युवा समग्रं फलं, वृद्धः दुष्टं फलं [तथा च] मृताख्यः प्रयतेन मरणं तनोति ॥२॥

भा०—जिस मनुष्य के जन्म समय में बाल अवस्था गत ग्रह हो तो शुभा-शुभ फल बहुत ही थोड़ा देते है, कुमार अवस्था वाले आधा युवा अवस्था वाले पूर्ण, वृद्धा अवस्था वाले अनिष्ट और मृत अवस्था वाले ग्रह अपने दशान्तर्दशा में मृत्यु तुल्य फल (कष्ट) देते हैं ॥ २ ॥

अथ दीप्ताद्यवस्थाः—

उच्चे दीप्तः स्वभे स्वस्थो मित्रभे हर्षितो भवेत् ।
शान्तः शोभनवर्गस्योऽतिशस्तो दीप्तदीधितिः ॥३॥
लुप्तोऽस्ते नीचभे दीनः पीडितः पापशत्रुभे ।
एवमष्टौ न भोगानां भावा दीप्तादिभेदतः ॥४॥

अन्वयः - उच्चे दीप्तः स्वभे स्वस्थः मित्रभे हर्षितः, शोभनवर्गस्थः शान्तः, दीप्तदीधितिः अतिशस्तः अस्ते लुप्त नीचभे दीनः, पापशत्रुभे पीड़ितः, एव दीप्तादिभेदतः नभो गानां अष्टौ भावः (भवन्ति)॥३-४॥

भा०--अब ग्रहों की दीप्तादि अवस्था बताते हैं-जो ग्रह अपने उच्च स्थान में बैठा हो उसकी दीप्त अवस्था, अपने घर में हो तो स्वस्थ अवस्था, मित्र के घर में बैठा हो तो हर्षित अवस्था, शुभ ग्रहों के घरमें बैठा हो तो शांत अवस्था जो ग्रह अपने परम तेज से युक्त (उदय) हो तो उसको अतिशस्त अवस्था, अस्त हो तो लुप्त अवस्था, नीच राशिमें दीन अवस्था और पाप ग्रहों की राशि अथवा शत्रु की राशि में पीड़ित अवस्था, इस प्रकार दीप्तादि भेद से ग्रहों की आठ अवस्था बताई गई है ॥३-४॥

दीप्ते मदोन्मत्तगजेन्द्रगन्ता
सदारिहन्ता वरतीर्थगन्ता ।
कान्तो मनस्वी नितरां यशस्वी
प्रदीप्तवेषो मनुजो महीपः ॥५॥

अन्वयः—दीप्ते (ग्रहे तदा) मनुजः मदोन्मत्तगजेन्द्रगन्ता, सदारिहन्ता, वरतीर्थगन्ता, कान्तः मनस्वी, नितरां यशस्वी (तथा) प्रदीप्त वेषः महीपः (स्यात्) ॥ ५ ॥

भा०—दीप्त ग्रह की दशा में मनुष्य अति मदान्ध हाथियों की सवारी पर बैठकर सफर करता है, सर्वदा शत्रुओं का विध्वंश करता है, अच्छे अच्छे तीर्थों की यात्रा करता है, उसकी स्त्री मनस्वी होती है, उसका यश दूर तक फैलता है, और अत्यन्त सुन्दर शरीर पाकर राजा होता है ॥५॥

स्वस्थे गुणागारजयालयाना-
मुपार्जको वैरिविनाशकर्त्ता ।

नरोऽप्युदारो नृपपूजितः स्या-
द्विशालकीर्तिः कमनीयमूर्तिः ॥६॥

अन्वयः--स्वस्थे ग्रहे तदा नरः गुणागारजयालयानामुपार्जकः, वैरिविनाशकर्त्ता, उदारः, नृपपूजितः, विशालकीर्तिः, (तया) कमनीय मूर्तिः स्यात् ॥ ६ ॥

भा०—स्वस्थ अवस्था वाले ग्रह की दशा में मनुष्य पाठशाला, वेधालय और किला कोट तथा फौज रखने के लिए बारिक वगैरहः बनवाता है अथवा शत्रुओं से जीत कर उस पर अपना सत्ता जमा बैठता है, सर्वदा शत्रुओं का नाश करता है, उदार स्वरूप, राजाओं में श्रेष्ठ बढ़ी कीर्ति और नटवर मूर्ति वाला होता है ।।६।।

हर्षिते भवति हर्षितः सदा
मित्रपुत्रपरिपूरितो मुदा ।
धर्मकृन्मणिगणेन मण्डितः
पण्डितः परमदैवविज्जनः ॥७॥

अन्वयः—हर्षिते जनः हर्षितः, सदा मुदा मित्रपुत्रपरिपूरितः धर्मकृत्, मणिगणेन मण्डितः (तथा) परमदैवविज्जनो भवति ।। ७ ।।

भा० हर्षित अवस्था वाले ग्रह की दशा में मनुष्य प्रसन्न रहता है, सर्वदा सच्चा मित्र और सत्पुत्र से युक्त रहता है, सुकर्म करता है, रत्नादि से परिपूरित और कर्म विपाक का जाननेवाला बहुत बड़ा विद्वान (ज्योतिषी) भी होता है ७।

शान्तेऽतिशान्तो युवराजराजो
जनो महौजा जनतासमेतः ।
अनेकविद्यामलगद्यपद्या-
भ्यासानुरक्तः खलु वित्तयुक्तः ॥८॥

अन्वयः-शान्ते (ग्रहे) जनः अतिशान्तः, युवराजराजः, महौजा जनतासमेत, अनेकविद्यामलगद्यपद्याऽभ्यासानुरक्तः, खलु वित्त युक्तः (स्यात्) ॥ ८ ॥

भा०—शान्त अवस्था ग्रह की दशा में मनुष्य अत्यन्त शान्त रहता है, युवराजों का राजा होता है, ओजस्वी (प्रतापी) मनुष्यों का साथ रहता है,

स्वयं प्रतापी होता है, अनेक विद्याओं के दोष रहित गद्य (श्लोक इत्यादि) लिखने पढ़ने में सदा अभ्यास (प्रेम) रखता है और धनी भी होता है ॥ ८ ॥

शस्ते विशेषाद्विदुषां प्रशस्तः
प्रशस्तवेषो गतरोगसंघः ।
विशालमालालसितोऽमलोक्त्या
नरो नराणामधिपः प्रधानः ॥ ९ ॥

अन्वयः-शस्ते नरः विशेषाद्विदुषां प्रशस्तः, विशस्तवेषः, गतरोग संघः, विशालमालालसितः, अमलोक्त्या नराणामधिप, प्रधानः (च भवति) ॥ ९ ॥

भा०—शस्त अवस्था वाले ग्रहकी दशामें मनुष्य विशेषतः विद्वानोंसे आदर पाता है, सुन्दर शरीर वाला, रोग हीन होता है, बहुमूल्य मणियों (हीरा पन्ना इत्यादि) की मालासे विभूपित होता है अपने मनोहर वाणी (युक्ति युक्त वचनों) से मनुष्यों का राजा अथवा वन जाता है ॥ ९ ॥

लुप्ते च लुप्तो गुणधर्मभावैः
प्रपीडितोऽरातिकुलेन मर्त्यः
भवेद्विरक्तो गदजालयुक्तो
प्रमादशाली खलु पापमाली ॥ १० ॥

अन्वयः -लुप्ते (ग्रहे तदा) मर्त्यः गुणधर्मभावैः लुप्तः, अराति-कुलेन प्रपीडितः, विरक्तः, गदजालयुक्तः, प्रमादशाली खलु पापमाली भवेत् ॥ १० ॥

भा०--लुप्त अवस्थागत ग्रहदशा में मनुष्य गुण और अपने धर्म कर्म से हीन हो जाता है, शत्रुओंके आक्रमणसे अत्यन्त दुखी होता है, परिवार तथा सम्पत्तिसे अलग रहता है, सदा रोगी रहता है और प्रमादसे भरा हुआ अत्यन्त पापी होता है ॥ १० ॥

दीनेऽतिदीनो मतितोषहीनो
जनो जनेशादिनिपीडितश्च ।
गुणेन हीनः परदाररक्तः
परार्थहारी च कुभूमिचारी ॥ ११ ॥

अन्वयः—दीने (ग्रहे तदा) जनः अतिदीनः मतितोषहीनः, जनेशादिनिपीडितः, गुणेन हीनश्च, परदाररलीनः, परार्थहारी, कुभूमिचारी च (भवति) ॥ ११ ॥

भा०-दीन ग्रह यदि जन्मकाल में हों तो वह मनुष्य अत्यन्त गरीब, बुद्धि और सन्तोष से हीन होता है, राजा अथवा मन्त्री इत्यादि से कष्ट पाता है, मूर्ख तथा पराई स्त्री से प्रेम करने वाला दूसरे के द्रव्य को हरण करने वाला और श्मशानादि कुत्सित भूमि में निवास करने वाला होता है ॥ ११ ॥

पीडिते गदनिपीडितः सदा
चिन्तया च परया समन्वितः ।
व्यग्रितो बहुमदोद्धतः पुमा-
नाधिरोगसहितो विशेषतः ॥१२॥

अन्वयः–निपीडिते (तदा पुनाम्) सदा गदनिपीडितः, परया चिन्तया च समन्वितः, व्यग्रितः, बहुमदोद्धतः (तथा) विशेषतः अधिरोग सहितः (स्यात्) ॥ १२ ॥

भा०--जन्मकालमें यदि निपीड़ित ग्रह हो तो वह मनुष्य सर्वदा रोग से दुःखी रहता है, दूसरे चिन्ता से चिन्तित रहता है, सदा व्यग्र, मदान्ध और विशेषतः मानसिक दुःखों से सन्तप्त रहता है ॥ १२ ॥

इति श्री भावकुतूहले उत्साहवर्द्धिनी सान्वयः भाषाटीकायां ग्रहावस्थाफलकथनं त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

चतुर्दशोऽध्यायः

अथ मारकग्रह विचारः—

शनेः मारकत्वनिरूपणम्

मारकग्रहसम्बन्धात् पापकर्त्ता शनिस्तदा ।
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहंता भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

अन्वयः—पापकर्ता शनिः मारकग्रहसम्बन्धात् सर्वान् ग्रहान् तिरस्कृत्य तदा ध्रुवं निहन्ता भवति ॥ १ ॥

भा०—अब मारकेश ग्रहों का विचार करते हुए कहते हैं कि यमराज के निकट रहनेवाले शनि यदि मारकेश ग्रहों के साथ चारों प्रकार के सम्बन्धों में किसी प्रकार का सम्बन्ध करता हो अथवा स्वयं मारकेश हो तो अन्य मारकेश ग्रहों की अपेक्षा प्रबल मारकेश होता है ॥ १ ॥

भवनाधिपानां शुभाशुभ संज्ञा--

त्रिकोणभवनाधिपाः शुभफलास्तु सर्वे ग्रहा-
स्त्रिवैरिभवभावपाः खलफला निरुक्ता बुधैः ।
भवन्ति यदि केन्द्रपाः शुभखगा न शस्ता नृणा-
मतीवशुभदायकाः खलखचारिणो जन्मनि ॥ २ ॥

अन्वय—जन्मनि सर्वे ग्रहाः त्रिकोणभवनाधिपाः (तदा) शुभफलाः, त्रिवैरिभवभावपाः (तदा) खलफलाः बुधैः निरुक्ता, यदि शुभखगाः केन्द्रपाः (तदा) नृणां न शस्ता भवन्ति, यदि खलखचारिणः केन्द्रपाः (तदा) अतीव शुभदायकाः भवन्ति ॥ २ ॥

भा०—जन्म समय में सूर्यादि ग्रह त्रिकोण (५, ९) घर के स्वामी हों तो शुभ फल करनेवाले होते हैं, तीसरे, छठें और ग्यारहवें घर के स्वामी जो ग्रह होते हैं वे पापी कहलाते हैं अर्थात् अपने दशान्तर्दशा में अनिष्ट फल करते हैं ऐसा पण्डितों ने कहा है, यदि शुभ ग्रह (पूर्णचन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र हैं,) केन्द्र (१; ४, ७, १०) के स्वामी हों तो मनुष्यों को शुभ फल नहीं देते, यदि पाप ग्रह केन्द्र के स्वामी हों तो अपनी दशा विदशा में अत्यन्त शुभ फल देने वाले होते हैं ॥ २ ॥

यद्यद्भावगतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम् ।
यद्यद्भावेशसंयुक्तस्तत्फलं प्रदिशेदलम् ॥ ३ ॥

अन्वयः--जनने राहुः केतुश्च यद्यद्भाव गतः (तदा) यद्यद्भावेशसंयुतः तत्फलं नृणां अलं प्रदिशेत् ॥ ३ ॥

भा०—जन्मकाल में राहु और केतु जिस २ भाव में बैठे हों अथवा जिस २ भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध करते हों उस भाव का फल मनुष्यों को पर्याप्त देते हैं ॥ ३ ॥

मन्दश्चेत्पापसंयुक्तो मारकग्रहयोगतः ।
तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहन्ता पापकृद्यदा ॥ ४ ॥

अन्वयः—यदा पापकृत् मन्दः पापसंयुक्तः मारकग्रहयोगतः सर्वान् ग्रहान् तिरस्कृत्य निहन्ता (भवति) ॥ ४ ॥

भा०—यदि पापी शनैश्चर पाप ग्रहों के साथ होकर मारक ग्रहों (द्वितीयेश, सप्तमेश, अष्टमेश इत्यादि) से सम्बन्ध करता हो तो अन्य सब मारकेशों को हटा कर प्रबल मारकेश स्वयं हो जाता है ॥ ४ ॥

अल्प-मध्यम-पूर्णायुः प्रमाणमिह योगजम् ।
विज्ञाय प्रथमं पुंसां ततो मारकचिन्तना ॥ ५ ॥

अन्वयः—प्रथमं पुंसां योगजं अल्प-मध्यम-पूर्णायुः प्रमाणमिह (वक्ष्यमाणतः) विज्ञाय ततः मारक चिन्तना (कार्या) ॥ ५ ॥

भा०—पहले मनुष्यों का योगज अर्थात् अल्पायु-मध्यमायु-पूर्णायु (दीर्घायु) प्रमाण युक्त विचार करने के बाद मारक ग्रहों का विचार करना चाहिये; जैसे मध्यमायु अथवा दीर्घायु निश्चय होने के अन्दर ही मारकेश ग्रहोंकी दशान्तर्दशा आ जाय तो विशेष कष्टातिरिक्त प्राणघातक नहीं होते, आयु खण्ड पूर्ति होने के समय जिस किसी भी मारकेश के दशान्तर्दशा में पञ्चत्व प्राप्त हो जाता है, अतः सबसे प्रथम आयु का विचार करना अत्यावश्यक है। चारो युग में पूर्णायु १०० वर्ष कही गई है यथा वेद में भी लिखा ("शतायु वै पुरुषः ।" त्रेता युग में श्रीरामचन्द्र के लिये वाल्मीकि ने जो लिखा है कि "दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि चेत्यादि, वह ठीक लिखा है पहले समय स्थान से गुणित अंक लिखा जाता था जैसे एक स्थानीय = १, दशस्थानीय=२, शत=३, सहस्र=४, अयुत्=५, इत्यादि, अतः १०×४+१०×३=४०+३०=७० वर्ष; अर्थात् ७० वर्ष ही पृथ्वी में श्रीरामचन्द्र ने राज्य कर साकेतपुर को पधारा। किन्तु ज्योतिष शास्त्रज्ञों ने १२० वर्ष पूर्णायु बताया है। आयु का तीन विभाग है, जन्म से ४० वर्ष तक अल्पायु, इसके बाद ८० वर्ष तक मध्यमायु और ८० वर्ष के बाद १२० वर्ष तक दीर्घायु कही गई है ॥ ५ ॥

अथ योगजायुर्दायविचारः—

चेदङ्गपो यदि रवेररिरेव हीनं
पूर्णं सुहृद्यदि समः सममायुराहुः ।
बालग्रहो हितसमारिपदेऽपि पूर्णं
मध्यं च हीनमिह जातकतत्त्वविज्ञाः ॥ ६ ॥

अन्वयः—यदि चेत् अङ्गपः रवेः अरिः (तदा) हीनं, सुहृद (तदा) पूर्णं, समः (तदा) सममायुः, (एवं) बाल ग्रह हितसमारिपदेऽपि पूर्णं, मध्यं हीनं च जातकत्वाविज्ञाः इहायुः आहुः ॥६॥

भा०--जन्म कालमें यदि लग्नेश सूर्यका शत्रु हो तो उस बालककी हीनायु (४० वर्ष के भीतर) होती है, यदि लग्नेश रविका मित्र हो तो दीर्घायु (८० वर्ष के ऊपर और १२० वर्ष से नीचे), यदि लग्नेश रविका सम हो तो मध्यमायु (४० वर्ष से अधिक और ८० वर्ष के अन्दर आयु) होती है। इसी प्रकार लग्नेश अपने मित्र, सम, शत्रु घर में बैठा हो तो बालक की दीर्घायु, मध्यमायु और हीनायु क्रमसे होती है ऐसी ज्योतिष शास्त्रज्ञों की सम्मति है ॥ ६ ॥

आयुस्थानमारकस्थानकथनम्—

अष्टमर्क्षं च तृतीयं बुधैरायुरुदाहृतम् ।
द्वितीयं सप्तमं स्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥ ७ ॥

अन्वयः—अष्टमर्क्षं तृतीयं च बुधैः आयुः-उदाहृतं, द्वितीयं, सप्तमं स्थानं मारकस्थानं—उच्यते ॥ ७ ॥

भा०—जन्म लग्न से तीसरा और आठवाँ आयु स्थान, दूसरा और सातवाँ मारक स्थान कहा गया है ॥ ७ ॥

अथ मृत्युकालयोगः—

मारकेशदशापाके मारकस्थस्य पापिनः ।
पाके पापयुजां पाके संभवे निधनं विशेत् ॥ ८ ॥

अन्वयः—(आयुखण्डप्राप्ते) मारकेश दशायां मारकस्थस्य पाके (अथवा) पापिनः पाके पापयुजां पाके निधन सम्भवं विशेत् ॥ ८ ॥

भा०--आयु खण्ड पूर्तिकाल में मारकेश ग्रह के दशा में और मारक स्थान में बैठे हुए पापग्रह (त्रिषडायेश) के अन्तर में मृत्यु सम्भव अथवा पापग्रहों की दशा में और पापग्रह से योग (सम्बन्ध) करने वाले ग्रहों के अन्तर में भी मृत्यु का सम्भव होता है ॥ ८ ॥

असंभवे व्ययाधीशदशायां मरणं नृणाम् ।
अभावे व्ययभावेशसम्बन्धिग्रहभुक्तिषु ॥ ९ ॥

अन्वयः—(पूर्वमारकेशाणां) असम्भवे तदा) व्ययाधीश-दशायां, [अस्य] अभावे व्ययभावेशसम्बन्धिग्रहभुक्तिषु नृणां मरणं (वाच्यम्) ॥ ९ ॥

भा०—आयु खण्ड पूर्तिकाल में पहले कहे हुये मारकेशों के दशा अन्तर्दशा न हो तो लग्न से बारहवें घर के स्वामी के दशा वा अन्तर्दशा में मरण कहना चाहिये, इसके अभाव में द्वादशेश से सम्बन्ध करने वाले ग्रहों के दशा अन्तर्दशा काल में मृत्यु कहनी चाहिये ॥ ९ ॥

तदभावेऽष्टमेशस्य दशायां निधनं पुनः ।
दुष्टतारापतेः पाके निर्याणं कथितं बुधैः ॥ १० ॥

अन्वयः—तदभावेऽष्टमेशस्य दशायां, पुनः दुष्टतारापतेः पाके बुधैः निर्याणं कथितम् ॥ १० ॥

भा०—द्वादशेश ग्रह से सम्बन्ध करने वाले ग्रहों के अभाव में अष्टमेश के दशान्तर्दशा में मरण कहना चाहिये, इसके भी अभाव में जन्म नक्षत्र से ३, ५, ७ वीं तारा जब आवे उस नक्षत्र के राशि के स्वामी के दशा-अन्तर्दशा में मृत्यु कहनी चाहिये अथवा प्रथम आवृत्ति का वध तारा जब आवे उस राशि के चन्द्रमा में अवश्य मृत्यु होती है ऐसा पण्डितों ने कहा है । १० ॥

अथ राजयोगाः—

नवमभावपतिस्तनयालये
सुतपतिर्नवमे यदि जन्मिनः ।
अतिविचित्रमणिव्रजमण्डितो
वसुमती विभुतां स नरो व्रजेत् ॥ ११

अन्वयः—यदि जन्मिनः नवमभावपतिस्तनयालये, (तथा सुत-पतिः नवमे (तदा) स नरः अतिविचित्रमणिव्रजमण्डितः (तथा) वसु-मती विभुतां व्रजेत् ॥ ११ ॥

भा०-यदि जन्मकाल में नवें घर का स्वामी पाँचवें घर में बैठा हो और पाँचवें घर का स्वामी नवें घर में बैठा हो तो वह मनुष्य अत्यन्त सुन्दर (बहु-मूल्य) रत्नों से युक्त पृथ्वी का राजा होता है ॥ ११ ॥

कर्माधीशः सुतस्थाने सुतेशः कर्मगो यदा ।
त्रिकोणपतिना दृष्टा राजा भवति निश्चितम् ॥१२॥

अन्वयः—यदा कर्माधीशः सुतस्थाने, सुतेशः कर्मगः (तथा) त्रिकोणपतिना दृष्टः (तदा) निश्चितं राजा भवति ॥ १२ ॥

भा०--जिसके जन्मकालमें दशमेश पाँचवें घरमें बैठा हो और पञ्चमेश दसवें घरमें बैठा हो, और दोनों नवमेश करके देखे जाते हों तो वह मनुष्य अवश्य राजा होता है ॥ १२ ॥

राज्येशाङ्गपवाहनेशसुतपा धर्मालये स्वामिना
संयुक्ता यदि वीक्षिताश्च बलिनो राजा भवेन्मानवः ।
पुत्रेशो यदि धर्मपेन सहितो लग्नाधिपेनाङ्गगो
दृष्टो वा सहितःसुखेऽपि दशमे राजा भवेन्निश्चितम् ॥१३॥

अन्वयः–यदि राज्येशाङ्गपवाहनेशसुतपाः बलिनः धर्मालये स्वामिना संयुक्ताः वीक्षिताश्च (तदा) मानवः राजा भवेत् । (अथवा) पुत्रेशः यदि धर्मपेन वा लग्नाधिपेन सहितः वा दृष्टः अङ्गगः (अथवा) धर्मपेन सहितः दृष्टः सुखे, दशमेऽपिगः (तदा) निश्चितं राजा भवेत् । १३ ॥

भा०—यदि दशमेश, लग्नेश, चतुर्थेश, और पञ्चमेश बलवान हों और नवमेश के साथ हों अथवा नवमेश से देखे जाते हों तो वह मनुष्य निश्चय करके राजा होता है । अथवा यदि पञ्चमेश, नवमेश वा लग्नेश के साथ देखा जाता हुआ तनु भाव में बैठा हो, अथवा लग्नेश नवमेश के साथ २ वा नवमेश से देखा जाता हुआ चौथे वा दशवें घर में बैठा हो तो भी वह मनुष्य अवश्य राजा होता है ॥ १३ ॥

यत्र कुत्रापि केन्द्रेशस्त्रिकोणपतिना युतः ।
सबलो मनुजो राजा दुर्बलो धनपो भवेत् ॥ १४ ॥

अन्वयः—सबलः केन्द्रेश त्रिकोणपतिना युतः यत्रकुत्रापि (गतः) (तदा) मनुजः राजा भवेत्, (यदि) दुर्बलः (तदा) धनपः भवेत् ॥१४॥

भा०—यदि बलवान् केन्द्रेश (दशमेश) नवमेश अथवा पञ्चमेश के साथ २ कहीं भी बैठा हो तो वह मनुष्य राजा होता है, यदि लग्नेश, सुखेश अथवा सप्तमेश के साथ २ त्रिकोणेश बैठा हो तो भी वह मनुष्य बहुत बड़ा धनवान् (खिताबी राजा) होता है ॥ १४ ॥

पुण्यस्थाने गुरुक्षेत्रे दशमे भृगुणा युते ।
पंचमस्वामिना दृष्टे राजपुत्रो नराधिपः ॥ १५ ॥

अन्वयः-भृगुणा युते (केन्द्रशः) पुण्यस्थाने गुरु क्षेत्रे (वा) पञ्चम-स्वामिना दृष्टे (गतस्तदा) राजपुत्रः नराधिपः (भवेत्) ॥ १५ ॥

भा०—शुक्र के साथ २ केन्द्र स्थान (१, ४, ७, १०) का स्वामी नवें घर में वृहस्पति के क्षेत्र (९, १२) में अथवा दसवें घर में वृहस्पति के क्षेत्र का बैठा हो और पञ्चमेश से देखा जाता हो तो राज्य कुलमें उत्पन्न हुआ मनुष्य अवश्य राजा होता है ॥ १५ ॥

अथ धनाढ्ययोगः—

पंचमे निजभे शुक्रे लाभे रविसुते यदा।
भोक्ता मणिसुवर्णानामधिपो जायते नृणाम् ॥१६॥

अन्वयः—यदा नृणां (जन्मकाले) निजभे शुक्रे पञ्चमे (तथा) रविसुते लाभ [तदा] भोक्ता मणिसुवर्णानामधिपः जायते ॥ १६ ॥

भा०—यदि मनुष्य के जन्मकाल में अपने राशि (७, २) का होकर शुक्र पाँचवें घरमें बैठा हो और शनैश्चर ग्यारहवें घर में बैठा हो तो वह मनुष्य सब पदार्थोंका भोगनेवाला हीरा, पन्ना इत्यादि रत्नोंसे युक्त बहुत ही बड़ा धनवान् होता है ॥ १६ ॥

कर्कटे तु कलानाथे पंचमे लाभगे शनौ।
नानाधनसंमृद्धिः स्याद्धर्मवृद्धिश्च भूपतिः ॥ १७ ॥

अन्वयः—(यदा) कर्कटे कलानाथे तु पञ्चमे, लाभगे शनौ (तदा) नानाधनसमृद्धिः स्यात्, धर्मवृद्धिः, (तथा) भूपतिः (भवेत्) ॥ १७ ॥

भा०—यदि कर्कराशिमें चन्द्रमा बैठा हो और पांचवें वा ग्यारहवें घरमें शनि बैठा हो तो वह मनुष्य अनेक तरहकी सम्पत्तियोंको पैदा कर अपने धर्म कर्म से युक्त रह कर राजा की तरह सुख करता है ॥१७॥

पंचमे तु मृगे कुंभे समन्दे यस्य जन्मनि।
बुधे लाभालये तस्य सर्वतो द्रविणोन्नतिः ॥ १८ ॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि पञ्चमे मृगे कुम्भे स मन्दे तु बुधे लाभालये, तस्य सर्वतः द्रविणोन्नति भवेत् ॥ १८ ॥

भा०—जिसके जन्मकालमें लग्नसे पाँचवें घरमें मकर अथवा कुम्भ राशि का होकर शनि बैठा हो और बुध ग्यारहवें घर में बैठा हो तो उस मनुष्य को चारों तरफ से धन की वृद्धि होती है अर्थात् कोट्यधीश होता है ॥ १८ ॥

पञ्चमे तु रवौ सिंहे लाभे देवगुरौ सदा ।
वाहनस्वर्णरत्नानामधिपो जायते क्षणात् ॥ १६ ॥

अन्वयः—(यदा) रवौ सिंहे पञ्चमे तु देवगुरौ लाभे (तदा) क्षणात् सदा वाहनस्वर्णरत्नानामधिपो जायते ॥ १९ ॥

भा०—यदि सूर्य सिंह राशिका होकर पाँचवें घर में बैठा हो और बृहस्पति ग्यारहवें घर में बैठा हो तो वह मनुष्य बाल्यावस्था से ही वाहन, सुवर्ण और बहुमूल्य रत्नादिकों का मालिक हो जाता है ॥ १६ ॥

पञ्चमे तु गुरुक्षेत्रे सगुरौ यदि जन्मनि ।
लाभगाविन्दुभूपुत्रौ पृथ्वीपतिसमो नरः ॥ २० ॥

अन्वयः—यदि जन्मनि गुरुक्षेत्रे सगुरौ पञ्चमे, तु-इन्दुभूपुत्रौ लाभगौ (तदा) नरः पृथ्वीपति समः जायते ॥ २० ॥

भा०—जिसके जन्मकालमें अपनी राशि (९, १२) का होकर बृहस्पति पाँचवें घरमें बैठा हो और चन्द्रमा तथा मङ्गल ग्यारहवें घरमें बैठे हों तो वह मनुष्य राजाके समान धनी होता है ॥ २० ॥

रविक्षेत्रगते लग्ने रविणा संयुते सति ।
गुरुभौमयुते वापि धनाधिक्यं दिने दिने ॥ २१ ॥

अन्वयः—लग्ने रविक्षेत्रगते रविणा सयुते सति गुरुभौमयुते वापि (तदा) दिने दिने धनाधिक्यं (जायते) ॥ २१ ॥

भा०—जिसके जन्मलग्न में सिंह लग्न हो और सूर्य वहीं बैठा हो अथवा बृहस्पति मङ्गलके साथ सूर्य लग्नमें बैठा हो तो दिनों दिन उस मनुष्य का धन बढ़ता है ॥ २१ ॥

कर्कभे जन्मलग्ने तु सचन्द्रे यदि जन्मनि ।
संयुते जीवभौमाभ्यां स सद्यो वित्तपो भवेत् ॥ २२ ॥

अन्वयः—यदि जन्मनि जन्मलग्ने कर्कभे सचन्द्रे तु जीवभौमाभ्यां संयुते (तदा) स सद्यः वित्तपः भवेत् ॥ २२ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में कर्कलग्न हो चन्द्रमा लग्न ही में बैठा हो और बृहस्पति मङ्गल के साथ हो तो वह मनुष्य अति शीघ्र धनाढ्य हो जाता है ॥२२॥

कुजक्षेत्रगते लग्ने सभौमे यस्य जन्मनि।
ज्ञशुक्रमन्दसंयुक्ते स धनेशसमो नरः ॥ २३ ॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि कुजक्षेत्रगते लग्ने सभौमे, ज्ञशुक्रमन्द-संयुक्ते (तदा) स नरः धनेशसमः भवति ॥ २३ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में मेष अथवा वृश्चिक लग्न हो मङ्गल वहाँ ही बुध, शुक्र शनि के साथ २ बैठा हो तो वह मनुष्य कुबेर के समान धनवान् होता है ॥ २३ ॥

अचललक्ष्मीयोगः--

गुरुभे गुरुसंयुक्ते जन्मलग्नगते सति।
चन्द्राङ्गारयुतो यस्य तस्य लक्ष्मीरचञ्चला ॥ २४ ॥

अन्वयः-यस्य गुरुभे गुरु संयुक्ते जन्मलग्नगते सति (तथा) चन्द्राङ्गारयुते (तदा) तस्य लक्ष्मीरचञ्चला (भवति) ॥ २४ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में धन अथवा मीन लग्न गत वृहस्पति जन्मलग्न में हो और चन्द्रमा, मङ्गल, भी वहाँ ही बैठे हों तो उस मनुष्य की लक्ष्मी अचला (चिरकाल रहने वाली) होती है ॥ २४ ॥

कन्यामिथुनयोर्लग्ने सबुधे यस्य जन्मनि।
संयुते शुक्रमन्दाभ्यां दृष्टे वा धनिको भवेत् ॥ २५ ॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि कन्या मिथुनयोः लग्ने सबुधे शुक्रमन्दाभ्यां संयुते वा दृष्टे (तदा) धनिको भवेत् ॥ २५ ॥

भा०--जिसके जन्मकाल में कन्या अथवा मिथुन लग्न हो बुध वहीं बैठा हो और शुक्र शनि से लग्न देखा जाता हो अथवा शुक्र शनि वहाँ बैठे हों तो मनुष्य धनवान् होता है ॥ २५ ॥

शुक्रराशिगते लग्ने ससिते यदि जन्मनि।
चन्द्रजादित्यजाभ्यां तु युते दृष्टे धनाधिपः ॥ २६ ॥

अन्वयः--यदि जन्मनि ससिते शुक्रराशिगते लग्ने, तु चन्द्रजादित्यजाभ्यां युते दृष्टे (तदा) धनाधिपः ॥ २६ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में शुक्रके साथ बुध अथवा तुलालग्न हो और वह लग्न बुध शनि से दृष्ट वा युक्त हो तो वह मनुष्य धनाढ्य होता है ॥२६॥

अथ दरिद्रयोगाः—

त्रिकोणपतिसम्बन्धी यो यो वित्तप्रदो ग्रहः ।
स षडष्टव्ययाधीशैर्युतो धनविनाशकः ॥ २७ ॥

अन्वयः--त्रिकोणपतिसम्बन्धी यो यो वित्तप्रदः ग्रहः स (यदि) षडष्टव्ययाधीशैर्युतः (तदा) धनविनाशकः स्यात्) ॥ २७ ॥

भा०—पञ्चमेश, नवमेश से सम्बन्ध करने वाले जो धन देने वाले ग्रह (केन्द्रेश) हैं वे यदि षष्ठेश, अष्टमेश और द्वादमेश के साथ २ हों तो धन नाश करने वाले हो जाते हैं ॥ २७ ॥

लग्नगे निधनाधीशे निधने लग्नपे यदि ।
मारकग्रहसंयुक्ते जातो भवति निर्धनः ॥ २८ ॥

अन्वयः--यदि मारकग्रहसंयुक्ते निधनाधीशे लग्नगे, (तथा) लग्नपे निधने गते तदा) जातः निर्धनः भवति ॥ २८ ॥

भा०--यदि मारक ग्रहके साथ २ आठवें घर का स्वामी लग्नमें बैठा हो और लग्नेश आठवें घर में बैठा हो तो मनुष्य दरिद्र होता है ॥ २८ ॥

रिपुभावपतौ लग्ने लग्नेशे रिपुभावगे ।
मारकस्वामिना दृष्टे युते वा निर्द्धनो भवेत् ॥ २६ ॥

अन्वयः—रिपु भावपतौ लग्ने, लग्नेशे रिपुभावगे, मारक स्वामिना दृष्टे वा युते (तदा नरः) निर्धनो भवेत् ॥ २९ ॥

भा०—जिसके जन्म समयमें छठवें घरका स्वामी लग्नमें बैठा हो, लग्नेश छठें घर में बैठा हो और दोनों ग्रह अष्टमेश से युक्त अथवा देखे जाते हों तो वह मनुष्य दरिद्र हो जाता है ॥ २६ ॥

चन्द्रादित्यौ यदा लग्ने वाङ्गपे निधनालये ।
मारकेण युते दृष्टे नरो भवति निर्धनः ॥ ३० ॥

अन्वयः--यदा चन्द्रादित्यौ लग्ने वा अङ्गपे निधनालये (तथा) मारकेण युते दृष्टे (तदा) नरः निर्धनः भवति ॥ ३० ॥

भा०—यदि चन्द्रमा और सूर्य लग्नमें बैठे हों अथवा लग्नेश आठवें घरमें बैठा हो और मारकेश ग्रहोंसे युत दृष्टहो तो वह मनुष्य निर्धन (दरिद्र) हो जाताहै॥३०॥

ऋणीयोगः--

यदाङ्गनाथस्त्रिकभावनाथै-
र्युतेक्षितः पापयुतोऽथवा स्यात् ।
पुत्रेश्वरेणापि युते विलग्ने
शुभैरदृष्टे च भवेदृणी सः ॥ ३१ ॥

अन्वयः--यदाङ्गनाथ, त्रिकभावनाथैर्युतेक्षितः अथवा पापयुतः शुभैरदृष्टे च स्यात् [तदा] पुत्रेश्वरेणापि युते विलग्ने सः (नरः) ऋणी भवेत् ॥ ३१ ॥

भा०—यदि लग्नेश त्रिक (६, ८, १२) स्थान के स्वामी के साथ हो तथा त्रिकेशसे देखा जाता हो, अथवा पापग्रहों के साथ हो और उसको शुभग्रह न देखते हों तो पञ्चमेश से योग करके धन देने वाला भी लग्नेश हो तो भी वह मनुष्य ऋणी होता है ॥ ३१ ॥

अस्तारिनीचत्रिकभावगे वा
लग्नेश्वरे मारकनाथयुक्ते ।
भाग्याधिपे वाथशुभैरदृष्टे
भवेदृणीशो मनुजेश्वरोऽपि ॥ ३२ ॥

अन्वयः—(यदा) मारकनाथयुक्ते भाग्याधिपे अथवा शुभैरदृष्टे लग्नेश्वरे अस्तारिनीचत्रिकभावगे वा (तदा) मनुजेश्वरोऽपि ऋणीशो भवेत् ॥ ३२ ॥

भा०—यदि मारकेश ग्रहों के साथ हो और नवनमेश तथा शुभग्रहों से न देखा जाता हो ऐसा लग्नेश अस्त हो, शत्रु की राशि का हो, नीच राशि में अथवा त्रिक (६, ८, १२) स्थान में बैठा हो तो राजकुल में उत्पन्न हुआ भी मनुष्य बहुत बड़ा कर्जदार हो जाता है ॥ ३२ ॥

इति श्री भावकुतूहले-उत्साहवर्द्धिनी सान्वयभाषाटीकायां विविधयोग-कथननाम चतुर्दशोऽध्यायः ।

——:०:——

पञ्चदशोऽध्यायः

अथ भावानां विचारः—

तत्रादौ तनुभावविचारः—

अष्टारिव्ययगो यस्य लग्नस्वामी खलैर्युतः।
सुखं निहन्ति तस्याशु सर्वभावेष्वयं विधिः ॥ १ ॥

अन्वयः—यस्य लग्नस्वामी खलैर्युतः अष्टारिव्ययगः, तत्सुखं आशु निहन्ति, अयं विधिः सर्वभावेषु भवन्ति ॥ १ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में लग्नेश पापग्रहों के साथ आठवें, छठें अथवा बारहवें घर में बैठा हो तो उस मनुष्य का शरीर सुख शीघ्र नष्ट हो जाता है; इसी प्रकार सब भावों का फल विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

लग्नपश्चन्द्रराशिशो नीचस्तु रिपुराशिगः।
विना स्वर्क्षं त्रिकस्थश्चेद्बलहीनो ग्रहो भवेत् ॥ २ ॥

अन्वयः—(यदा) लग्नपः चन्द्रराशीशः ग्रहः नीचः रिपुराशिगः (तथा) विना स्वर्क्षं त्रिकस्थश्चेत् (तदा) बलहीनः भवेत् ॥ २ ॥

भा०—यदि लग्नेश और चन्द्रस्थित राशि का स्वामी नीच स्थान में बैठा हो, शत्रु की राशि में बैठा हो अथवा अपने घर बिना त्रिक (६, ८, १२) स्थान में बैठा हो तो वह ग्रह दुर्बल जाता है अर्थात् शुभाशुभ फल करने में असमर्थ हो जाता है ॥ २ ॥

दुष्टस्थानगते यस्य चन्द्रलग्नेश्वरे यदि।
कार्श्यं गदभयं नित्यं वितनोति रिपूदयम् ॥ ३ ॥

अन्वयः—यस्य चन्द्रलग्नेश्वरे यदि दुष्टस्थान गते (तदा तस्य) नित्यं कार्श्यं गदभयं [तथा] रिपूदयं वितनोति ॥ ३ ॥

भा०—जिस मनुष्य के जन्म समय में चन्द्रराशि का स्वामी और लग्नेश यदि छठें, आठवें, बारहवें अपने नीच स्थान अथवा अस्त होकर बैठे हों तो वह मनुष्य सर्वदा रोग से पीड़ित रहता है और शत्रु समहों को बढ़ाता है ॥ ३ ॥

निजोच्चे निजभे वर्गे स्वकीये लग्नपे यदि।
दीर्घायुः सुखसंतुप्तो बली भोगी प्रजायते ॥ ४ ॥

अन्वयः—यदि लग्नपे निजोच्चे, निजभे [तथा] स्वकीये वर्गे [तदा] दीर्घायुः, सुखसंतृप्तः, बली, भोगी प्रजायते ॥ ४ ॥

भा०—यदि लग्न का स्वामी अपने उच्च स्थान में, अपने घर में अथवा अपने षडवर्ग में बैठा हो तो वह मनुष्य बहुत काल तक जीनेवाला, सब सुखों से युक्त, बलवान् और सब भोगों को पर्याप्त भोगने वाला होता है ॥ ४ ॥

अथ धनभावविचारः—

धनेशः शुक्रसंयुक्तोऽथवा शुक्रात्त्रिके भवेत् ।
सम्बन्धी लग्ननाथेन नेत्रयोः पीडनं भवेत् ॥ ५ ॥

अन्वयः—धनेशः शुक्रसंयुक्तो अथवा शुक्रात्त्रिके [तथा] लग्ननाथेन सम्बन्धी भवेत् [तदा] नेत्रयोः पीड़नं भवेत् ॥ ५ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में दूसरे घरका स्वामी शुक्र के साथ हो अथवा शुक्र से त्रिक (६, ८, १२) स्थान में बैठा हो और लग्नेश से सम्बन्ध करता हो तो उसके आँखों में कष्ट होता है ॥ ५ ॥

चन्द्रादित्यौ धने स्यातां निशान्धो मनुजो भवेत् ।
अर्कलग्नपकोशेशाः सुखाधिपतिना युताः ॥ ६ ॥
मात्रादीनां प्रकुर्वन्ति मन्दतां नेत्रयोरपि ।
उच्चगो निजगेहस्थो ग्रहो नैवात्रदोषकृत् ॥ ७ ॥

अन्वयः—[यदि] धने चन्द्रादित्यौ स्यातां [तदा] मनुजः निशान्धः भवेत् [अथ च अर्कलग्नपकोशेशाः सुखाधिपतिना युताः [तदा] मात्रादीनामपि नेत्रयोः मन्दतां प्रकुर्वन्ति [यदोक्तः] ग्रहः उच्चगः, निजगृहस्थः [तदा] अत्र दोषकृन् नैव [भवति] ॥ ६-७ ॥

भा०—यदि दूसरे घर में चंद्रमा और सूर्य बैठे हों तो वह मनुष्य रात्र्यन्ध होता है, यदि सूर्य, लग्नेश और धनेश ये तीनों ग्रह चौथे घर के स्वामी के साथ बैठे हों तो उस मनुष्य के माता पितादिकों के नेत्र ज्योति कम कर देते हैं, यदि उक्त ग्रह उच्च स्थान तथा अपने घर में बैठे हों तो नेत्र ज्योति कम नहीं करते अर्थात् आजन्म नेत्रज्योति प्रकाशित रहती है ॥ ६-७ ॥

गुरुवागभवनाधीशौ त्रिकस्थानगतौ यदाः ।
मूकतां कुरुतोऽप्येवं पितृमातृगृहेश्वरः ॥ ८ ॥

ताभ्यां युतस्त्रिकस्थाने तेषां मूकत्वमादिशेत्।
बलाबलविवेकेन जातज्ञैर्विशेषतः ॥ ९ ॥

अन्वयः-यदा गुरुवाग्भवनाधीशौ त्रिकस्थान गतौ (तदा) मूकतां कुरुतः, एवं पितृमातृगृहेश्वरः ताभ्यां (गुरुवाग्भवनाधीशाभ्यां) युतस्त्रिकस्थाने (गतस्तदा) तेषां मूकत्वं आदिशेत, जातकज्ञैः विशेषतः बलाबलविवेकेन (फलम्) आदिशेत् ॥ ८-९ ॥

भा०—यदि बृहस्पति और पाँचवें घर का स्वामी जन्मलग्न से त्रिक (६; ८; १२) स्थान में बैठा हो तो मनुष्य को गूँगा बनाते हैं, इसी तरह बृहस्पति से और पिता स्थान (दसवाँ घर) से पंचमेश त्रिक स्थानमें बैठे हों तो उसका पिता गूँगा होता है और बृहस्पति तथा मातागृह (चौथे घर) से पंचमेश यदि त्रिक स्थान में बैठे हों तो उसकी माता गूँगी होती है, इसी प्रकार पुत्र तथा स्त्री इत्यादिकों का विचार करना चाहिये जातक शास्त्र के जानने वालों को प्रायः ग्रहों के बल तथा निर्बल का विचार कर फल कहना चाहिये, अच्छा अथवा खराब फल करने वाले ग्रह बलवान् हों तो पूर्ण फल दुर्बल हों तो साधारण फल करते हैं ॥८-९॥

धनाधिपो माननवायभावे
बली यदा तिष्ठति जन्मकाले।
रमा विहारालयवासिनी वा
निजोच्चमित्रालयगो जनानाम् ॥१०॥

अन्वयः-- जन्मकाले बली धनाधिपः माननवायभावे यदि तिष्टति वा निजोच्चमित्रालयगः (तदा) जनानां विहारालयवासिनी रमा (भवति) ॥ १० ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में बलवान् होकर दूसरे घर का स्वामी दसवें, नवें अथवा ग्यारहवें घर में बैठा हो अथवा अपने उच्च स्थान, मित्र गृह में बैठा हो तो उसके विहार करने वाले घर में श्रीलक्ष्मी निवास करती हैं अर्थात् वह मनुष्य अत्यन्त धनाढ्य होता है ॥ १० ॥

अथ तृतीयभावविचारः—

सहजे सहजाधीशे षडादित्रयगेऽपि वा।
सहजेऽपि विशेषेण भ्रातुः सौख्यं न जायते ॥११॥

अन्वयः—सहजाधीशे सहजे वा षडादित्रयगेऽपि (तदा) सहजेऽपि विशेषेण भ्रातुः सौख्यं न जायते ॥ ११ ॥

भा०—तीसरे घर का स्वामी तीसरे घर में अथवा छठें, सातवें, आठवें घर में बैठा हो तो भाइयों के रहते हुए भी उस मनुष्य को विशेष भ्रातृ सुख नहीं मिलता, अर्थात् विरोध रहा करता है ॥ ११ ॥

सहोत्थभावेशकुजौ सपापौ
पापालये वा भवतो जनस्य ।
उत्पाद्य सद्यो निहतः सहोत्था-
निंतीरितं जातकतत्त्वविज्ञैः ॥१२॥

अन्वयः—(यस्य) सहोत्थभावेशकुजौ सपापौ वा पापालये भवतः (तदा) जनस्य उत्पाद्य सहोत्थान् सद्यः निहतः इति जातकतत्त्वविज्ञैः इरितम् ॥ १२ ॥

भा०—जिसके जन्म समय में तीसरे घर का स्वामी और मंगल पाप ग्रहों के साथ हों अथवा पाप ग्रहों के राशि में बैठे हों तो उस मनुष्य के भ्राता पैदा ही होकर शीघ्र मर जाते हैं ऐसा जातक शास्त्रज्ञों ने कहा है ॥ १२ ॥

स्त्रीखेटः सहजाधीशः शुक्रो वाथ निशाकरः ।
तत्रगो भगिनीं दत्ते भ्रातरं पुरुषग्रहः ॥१३॥

अन्वयः—सहजाधीशः स्त्रीखेटः वा शुक्रः अथ निशाकरः तत्रगः (तदा) भगिनीं दत्ते (यदि) पुरुषग्रहः सहजाधीशः (तथा पुरुष ग्रह-स्तत्र गस्तदा) भ्रातरं दत्ते ॥ १३ ॥

भा०—यदि तीसरे घर का स्वामी स्त्री ग्रह हो अथवा शुक्र वा चन्द्रमा तीसरे घर में बैठा हो तो उस बालक को अधिक बहिनें देते हैं, अथवा यदि तीसरे घर का स्वामी पुरुष ग्रह हों और पुरुषग्रह तीसरे घर में बैठे हों तो विशेष भाई देते हैं ॥ १३ ॥

अथ चतुर्थभावविचारः—

सुखपतिः सुखगस्तनुनाथयुग्-
जनयति प्रवरालयभङ्गिनाम् ।

त्रिकगतो विपरीतमिहादिभिः
सुखजनुः पतिरेव तया बुधैः ॥ १४ ॥

अन्वयः— (यदा) सुखपतिः तनुनाथयुक् सुखगः (तदा) अङ्गिनां प्रवरालयं जनयति, (यदा) त्रिकगतः (तदा) विपरीतं तथा सुखजनुः पतिरेव-इहादिभिः बुधैः (कथिम्) ॥ १४ ॥

भा —यदि चौथे घर का स्वामी लग्नेश के साथ २ चौथे घर में बैठा हो तो मनुष्यों को बहुत बड़े २ महल मिलते हैं, यदि उक्त दोनों ग्रह त्रिक (६, ८, १२) घ में बैठे हों तो उत्तम रमणीय पूर्वजों का बनवाया हुआ भी गृह बिक जाता है ऐसा चौथे और लग्न के स्वामी से प्राचीनाचार्यों ने फल कह रखा है ॥ १४ ॥

सुखाधीशे जीवे सुखनिवहचिन्ता भृगुसुते
विभूषायोषाङ्गप्रवरतुरगाणामपि बुधे ।
अगौ मन्दे नीचोद्भवसुखमतेरेवदिनपे
पितुश्चन्द्रे मातुः क्षितिनिकरचिन्ता क्षितिसुते ॥१५॥

अन्वयः—जीवे सुखाधीशे (तदा) सुखनिवहचिन्ता भृगुसुते बुधेपि (सुखाधीशे तदा) विभूषायोषाङ्गप्रवरतुरगाणां (चिन्ता) अगौ मन्दे (तदा) नीचोद्भवसुखमतेरेव दिनपे पितुः, चन्द्रे मातुः (तथा यदि) क्षितिसुते (सुखाधीशे तदा) क्षितिनिकर चिन्ता (भवति) ॥ १५ ॥

भा०—जिसके जन्मकाल में बृहस्पति चौथे घर का स्वामी हो तो वह मनुष्य अपने सुखके लिये विशेष चिन्ता करता है अर्थात् अत्यधिक सुख मिलने पर भी अधिक सुखके लिये चिंता करता है शुक्र और बुध चतुर्थेश हों तो भूषण, स्त्री ? । [illegible] त्यादि सवारियों का सुख होता हुआ भी अधिक के लिये चिंता करता है। राहु अथवा शनि चतुर्थेश हों तो नीच मनुष्यों से विशेष सुख की चिंता करता है सूर्य चतुर्थेश हो तो पिताके सुख का, चंद्रमा चतुर्थेश हो तो माता के सुख का और यदि मङ्गल चतुर्थेश हो तो विशेष भूमि लाभ होने की चिंता करता है ॥ १५ ॥

त्रिकोणे वाहनाधीशे केन्द्रे च बलसंयुते
निजोच्चादिपदे नूनं वाहनं नूतनं भवेत् ॥ १६ ॥

अन्वयः—(यदा) बलसंयुते (अर्थात्) निजोच्चादिपदे वाहनाधीशे त्रिकोणे, केन्द्र (गते तदा) नूतनं वाहनं नूनं भवेत् ॥ १६ ॥

भा०—यदि बलवान् अर्थात् अपने उच्च स्थान अपने गृह अथवा अपने षड्वर्गादि स्थानों में होकर चतुर्थ स्थान का स्वामी जन्मलग्न से पाँचवें, नवें अथवा केंद्र (१, ४, ७, १०) स्थान में बैठा हो तो उस मनुष्य को नये नये वाहनों का सुख अवश्य होता है ॥ १६ ॥

अथ पञ्चमभावविचारः—

लग्नाधीशे कुजक्षेत्रे पुत्रभावपतावरौ ।
म्रियते प्रथमापत्यं ततोऽपि न सुतोद्गमः ॥१७॥

अन्वयः—(यदा) लग्नाधीशे कुजक्षेत्रे (तथा) पुत्रभावपतौ अरौ (तदा) प्रथमापत्यं म्रियते ततोऽपि सुतोद्गमः न (भवेत्) ॥ १७ ॥

भा०—अब पञ्चमभाव विचार करते हुए कहते हैं–कि यदि तनु भाव का स्वामी मङ्गल के घर [१, ८] में बैठा हो और पाँचवें घर का स्वामी छठें स्थान में बैठा हो तो उस मनुष्य को एक संतान होकर मर जाने के बाद फिर संतानोत्पत्ति नहीं होती है ॥ १७ ॥

षडादित्रयगे नीचे पुत्रेशे पापसंयुते ।
काकवन्ध्यापतिस्तत्र केतुचन्द्रसुतौ यदा ॥ १८ ॥

अन्वयः—(यदा) पापसंयुते पुत्रेशे षडादित्रयगे (वा) नीचे (गते तथा) तत्र केतुचन्द्रसुतौ (तदा) काकवन्ध्या पतिः (भवति) ॥ १८ ॥

भा०—जिसके जन्मसमय में पापग्रहों के साथ २ पाँचवें घर का स्वामी छठें, आठवें बारहवें घर में बैठा हो अथवा पञ्चमेश नीचादि स्थान में बैठा हो और केतु, बुध पाँचवें घर में बैठे हों तो वह मनुष्य काक वन्ध्या का पति होता है अर्थात् उसके स्त्री के गर्भ से सिर्फ एक ही संतान पैदा होती है ॥ १८ ॥

तदीशो नीचगो यत्र पुत्रभां न पश्यति ।
तत्रैव बुधमन्दौ वा काकवन्ध्यापतिर्भवेत् ॥ १९ ॥

अन्वयः—यत्र तदीशो नीचगः वा पुत्रभावं न पश्यति (तथा तत्रैव बुधमन्दौ (गतौ तदा) काकवन्ध्या पतिर्भवेत् ॥ १९ ॥

भा०—जिसके पाँचवें घरका स्वामी अपने नीच स्थान में बैठा हो अथवा

कहीं भी बैठकर अपने (पांचवें) घर को पूर्ण दृष्टि से न देखता हो और पांचवें घर में बुध, शनैश्चर बैठे हों तो वह मनुष्य काकवन्ध्या का पति होता है ॥१९॥

धर्माधीशोऽङ्गगो नीचे सुतेशो यदि जन्मनि ।
केतुज्ञौ पञ्चमे स्यातां पुत्रं कष्टाद्विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

अन्वयः—जन्मनि यदि धर्माधीशोऽङ्गगः, सुतेशः नीचे (तथा) केतुज्ञौ पञ्चमे स्यातां तदा) कष्टात् पुत्रं विनिर्दिशेत् ॥ २० ॥

भा०—जन्मकाल में यदि नवमेश लग्न में बैठा हो, पञ्चमेश नीच स्थान में बैठा हो और केतु बुध पांचवें घर में बैठे हों तो अत्यन्त कष्ट (अनुष्ठान दानादि) से पुत्र पैदा होता है ऐसा कहना चाहिये ॥ २० ॥

पञ्चमाधिपतिः केन्द्रे त्रिकोणे वा शुभैर्युतः ।
तदा पुत्रसुखं सद्यो विलोमेन विलम्बतः ॥ २१ ॥

अन्वयः- (यदा) शुभैर्युतः पञ्चमाधिपतिः केन्द्रे त्रिकोण वा (गः तदा सद्यः पुत्रसुखं, विलोमेन विलम्बतः (भवति) ॥ २१ ॥

भा०— यदि शुभ ग्रहों से युक्त पांचवें घरका स्वामी केन्द्र (१, ४, ७, १०) स्थान अथवा पांचवें, नवें घर में बैठा हों तो उस मनुष्यको शीघ्र पुत्र सुख होता है यदि पञ्चमेश त्रिक (६, ८, १२) स्थान में बैठा हो तो विलम्बसे पुत्र-सुख होता है ॥ २१ ॥

सन्तानभवनाधीशो जन्मलग्नाधिपस्तथा ।
नरराशौ तदा पुत्रः स्त्रीराशौ कन्यका भवेत् ॥ २२ ॥

अन्वयः-(यदा) सन्तानभवनाधीशः, तथा जन्मलग्नाधिपः नरराशौ (गस्तथा विषम नवांशगः) तदा पुत्रः भवेत् (यदा) स्त्री राशौ (गस्तदा) कन्याका भवेत् ॥ २२ ॥

भा०—यदि पांचवें घरका स्वामी और जन्मलग्न का स्वामी विषम राशि और विषम राशि के नवांश (१, ३, ५ इत्यादि) में बैठे हों तो उस मनुष्यको पुत्र पैदा होता है, यदि समराशि या समराशि के नवांश में उक्त दोनों ग्रह बैठे हों तो कन्या पैदा होती हैं ॥ २२ ॥

अथ शत्रुभावविचारः—

रोगेशो लग्नगो यस्य निधनाथोऽपि जन्मनि
व्रणोदयस्तु सर्वाङ्ग सपापो न व्रणं दिशेत् ॥ २३ ॥

अन्वयः—यस्य जन्मनि रोगेशः लग्नग निधनस्थोऽपि (वा तस्य) सर्वांगे व्रणोदयः, तु सपापः (तदा) न व्रणां दिशेत् ॥ २३ ॥

भा०--जिसके जन्मकाल में छठे घरका स्वामी लग्न अथवा आठवें घर में बैठा हो तो उस मनुष्यके सब अंगों में फुंसी फोड़े होते हैं, यदि षष्ठेश पाप ग्रहों के साथ हो तो व्रणादि नहीं होने देता है ॥ २३ ॥

एवं तातादिभावेशास्तत्तत्कारकसंयुताः
व्रणाधिपयुताश्चापि षडादित्रयभावगाः ॥ २४ ॥
तेषामपि व्रणं वाच्यं जातकज्ञैः सुकोविदैः ।
कारकस्य दशाकाले व्रणमागन्तुकं दिशेत् ॥ २५ ॥

अन्वयः-एवं तातादि भवेशः तत्तत्कारकसंयुताः व्रणाधिपयुताश्चापि षडादित्रयभावगाः (तदा) तेषामपि व्रणं जातकज्ञैः सुकोविदैः वाच्यम्, कारकस्य दशाकले व्रणमागन्तुकं दिशेत् ॥ २४-२५ ॥

भा०--इसी प्रकार पिता, माता और भ्राता इत्यादि भावोंके स्वामी उक्त भावोंके कारकके साथ और उस उस भावोंसे षष्ठेशके साथ (तीनों ग्रह) छठें आठवें तथा बारहवें घरमें बैठें हों तो उन उन मनुष्यों को फुन्सी फोड़ा होता है ऐसा जातकशास्त्र के जाननेवाले विद्वानों से कहा गया है। कारक ग्रहकी दशा और षष्ठेशका अन्तर अथवा स्थानेश, कारकेश और षष्ठेशके दशान्तर्दशा में फुंसी फोड़े, विस्फोटकादि व्रण होते हैं। जैसे भ्राता के विचारमें तीसरे स्थान का स्वामी, तीसरे घरका कारक ग्रह (मंगल) और तीसरे घरसे छठवां (लग्न से आठवां) घरका स्वामी, ये तीनों ग्रह त्रिक स्थान में बैठे हों तो इन ग्रहोंके दशान्तर्दशा में भ्राता को व्रण विस्फोटकादि भय कहना चाहिये ॥ २४-२५ ॥

शिरोदेशे भानुर्मुखपरिसरे शीतगुरलं
धरासूनुः कण्ठे जनयति बुधो नाभिनिकटे ।
गुरुर्नासामध्ये पदनयनयोरेव भृगुजः
शनी राहुः केतुर्व्रणमुदरभागे जनिमताम् ॥ २६ ॥

अन्वयः-जनिमतां (पूर्वोक्तयोगकारकः) भानुः शिरोदेशे, शीतगुः मुखपरिसरे धरासूनुः कण्ठे, बुधः नाभिनिकटे, गुरु नासामध्ये, भृगुजः पदनयनयोः (तथा शनी राहुःकेतुः उदरभागे अलं व्रणं जनयति ॥ २६ ॥

भा०-जिस मनुष्य के जन्मकाल में षष्ठेश अथवा उक्त योग कारक ग्रह हों सूर्य तो शिर में चन्द्रमा मुख और गाल के ऊपर, मङ्गल कण्ठ में, बुध नाभि के पास में, वृहस्पति नाक के ऊपर, शुक्र पैर तथा नेत्रोंमें और शनि राहु केतु योग-कारक हों तो उदर में फुन्सी फोड़ा इत्यादि करते हैं ॥ २६ ॥

लग्नेशो यदि भौमभे बुधयुतो रोगं मुखे जन्मिनां
रोगाङ्गाधिपती: यदा कुजबुधौ चन्द्रेण वा राहुणा ।
मन्देनापि युतौ प्रयच्छत इति प्रायोऽङ्गगोरात्रिपो
युक्तो वा तमसा सितं च शनिना कुष्ठं तदा श्यामलम्॥२७॥

अन्वयः-यदि जन्मिनां बुधयुतः लग्नेशः भौमभे (तदा) मुखे रोगं, यदा रोगङ्गाधिपती: कुजबुधौ, चन्द्रेण राहुणा वा मन्देनापि युतौ (तदा कुष्ठादि) रोगं प्रयच्छतः प्रायः तमसा युक्तः रात्रिपः अगंगः तदा सितं कुष्टं (यदि) शनिना युक्तः अंगगः तदा श्यामल कुष्ठमिति (ददति) ॥ २७ ॥

भा०—यदि जन्मकाल में बुधके साथ २ लग्नेश मेष अथवा वृश्चिक राशि में बैठा हो तो मनुष्यों के मुखमें रोग होता है, यदि षष्ठेश तथा लग्नेश मंगल बुध हो और ये दोनों चन्द्रमा, राहु अथवा शनि के साथ २ हों तो कुष्ठादि रोग देते हैं, प्रायः राहु के साथ चन्द्रमा तनु भाव में बैठा हो तो श्वेत कुष्ठ करता है; शनि के साथ लग्नगदत हो तो श्याम (काला) रङ्ग का कुष्ठ करता है ॥२७॥

अथ सप्तमभावविचारः—

विना स्वर्क्षं कलत्रेशस्त्रिकस्थानगतो यदि ।
रोगिणीं तरुणीं दत्ते तथा तुङ्गपदं विना ॥ २८ ॥

अन्वयः—यदि कलत्रेशः विनास्वर्क्षं तथा तुङ्गपदं विना त्रिकस्थानं गतः (तदा) रोगिणीं तरुणी दत्ते ॥ २८ ॥

भा०—अब सप्तम भावका फल कहते हैं--यदि सातवें घर का स्वामी अपने राशि अथवा उच्च नवांशादि को छोड़कर छठें, आठवें अथवा बारहवें घर में बैठा हो तो उस मनुष्य को रोगी स्त्री देता है ॥ २८ ॥

जायास्थानगते शुक्रे कामी भवति मानवः ।
पापभे पापसंयुक्ते कवौ नारीसुखोज्झितः ॥ २९ ॥

अन्वयः—(यदा) शुक्रे जायास्थानगते (तदा) मानवः कामी भवति, कवौ पापभे पापसंयुक्ते (तदा) नारी सुखोज्झितः भवति ॥ २९॥

भा०—यदि शुक्र सातवें घरमें बैठा हो तो मनुष्य कामी होता है, यदि शुक्र पापग्रहके राशिमें अथवा पापग्रह के साथ बैठा हो तो वह पुरुष स्त्रियों के सुखसे वञ्चित होता है ॥ २९ ॥

चतुर्थे महिलाधीशे लग्ने लग्नाधिपे यदा ।
कलत्रे वा कुटुम्बे वा व्यभिचारी नरो भवेत् ॥ ३० ॥

अन्वयः—यदा महिलाधीशे चतुर्थे, लग्नाधिपे लग्ने वा कलत्रे वा कुटुम्बे (गते तदा) नरः व्यभिचारी भवेत् ॥ ३० ॥

भा०—यदि सातवें घरका स्वामी चौथे घरमें बैठा हो और लग्नका स्वामी लग्न, सातवें अथवा दूसरे घर में बैठा हो तो वह मनुष्य व्यभिचारी (किसी भी कुलके स्त्रियों के साथ भोग करनेवाला) होता है ॥ ३० ॥

यावन्तो निधने खेटा निजस्वामिसमीक्षिताः ।
तावन्तोऽपि विवाहाः स्युः प्राणिनां कथिता बुधैः ॥ ३१ ॥

अन्वयः—निजस्वामी समीक्षिता यावन्तः खेटाः निधने (स्थिताः) तावन्तोऽपि विवाहाः प्राणिनां स्युः (इति) बुधैः कथिताः ॥ ३१ ॥

भा०-अष्टमेश से देखे जाते ए जितने ग्रह आठवें घर में बैठे हों उतने ही संख्यक विवाह उस मनुष्य का होता है ऐसा पण्डितों ने कहा है ॥ ३१ ॥

जायाधीशे निजक्षेत्रे निजोच्चे कोणकंटके ।
शुभग्रहैर्युते दृष्टे विवाहः सत्वरं भवेत् ॥ ३२ ॥

अन्वयः—शुभग्रहैर्युते दृष्टे जायाधीशे निजक्षेत्रे (वा) निजोच्चे कोणकण्टके (तदा) सत्वरं विवाहः भवेत् ॥ ३२ ॥

भा०—शुभ ग्रहोंसे युक्त अथवा देखा जाता हुआ सातवें घर का स्वामी अपने राशि अथवा अपने उच्च स्थान का होकर कोण अथवा केन्द्र (५, ९, १; ४, ७, १०) स्थान में बैठा हो तो शीघ्र बचपन ही में) उस पुरुष का विवाह हो जाता है ॥ ३२ ॥

अथ अष्टमभावविचारः—

अष्टमाधिपतिः पापैर्युतो लग्नेश्वरोऽपि चेत् ।
करोत्यल्पायुषं जातं शुभेक्षणविवर्जितः ॥ ३३ ॥

अन्वयः--शुभेक्षणविवर्जितः पापैयुतः अष्टमाधिपतिः लग्नेश्वरोऽपि चेत् (तदा) जातं अल्पायुषं करोति ॥ ३३ ॥

भा०–शुभग्रहों की दृष्टि न हो और पाप ग्रहों से युक्त हों तो ऐसे अष्टमेश और लग्नेश मनुष्यों को अल्पायु करते हैं ॥ ३३ ॥

तमः शनिभ्यां निधनाधिनाथः
पापैर्युतो हीनबलोऽस्तगो वा ।
अल्पायुषं जातकमेवसद्यः
करोति नैवोच्चनिजर्क्षगश्चेत् ॥ ३४ ॥

अन्वयः—चेत् निधनाधिनाथः नैवोच्चनिजर्क्षगः तमः शनिभ्यां युतः वा पापैर्युतः वा हीनबलोऽस्तगः (तदा) जातकं सद्यः एव अल्पायुषं करोति ॥ ३४ ॥

भा०--यदि आठवें घर का स्वामी अपने उच्च तथा अपने राशिका न होकर राहु और शनिके साथ हो अथवा किसी भी पापग्रह के साथ हो अथवा बलहीन हो अस्त हो तो बालक को शीघ्र अल्पायु (बालमृत्यु) करता है ॥३४॥

अष्टमस्थे रवौ वह्नेश्चन्द्रे तु जलयोगतः ।
करवालात्कुजे ज्ञेयं मरणं ज्वरतो बुधे ॥ ३५ ॥
गुरौ त्रिदोषतः शुक्रे क्षुधया तृषया शनौ
चरस्थिरद्विःस्वभावैः परदेशे गृहे पथि ॥ ३६ ॥

अन्वयः—रवौ अष्टमस्थे वन्हेः तु चन्द्रेजलयोगतः, कुजे करवालात्, बुधे ज्वरतः, गुरौ त्रिदोषतः, शुक्र क्षुधया, शनौ तृषया, मरणं ज्ञेयम्, (तथैव) चरस्थिरद्विस्वभावैः परदेशे, गृहे, (तथा) पथि मरणं ज्ञेयम् ॥ ३५–३६ ॥

भा०—मनुष्यों के जन्मकाल में सूर्य आठवें घर में बैठा हो अथवा अष्टमेश हो तो अग्नि से जल कर मृत्यु होती है, चन्द्रमा अष्टमेश हो तो जल में डूबकर मङ्गल हो तो तलवार इत्यादि शस्त्र से, बुध हो तो ज्वर से, बृहस्पति हो तो त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) विकार से, शुक्र में अनशन वा मन्दाग्नि से, शनि में प्यास से मरण जानना चाहिये, उसी प्रकार आठवें घर में चरराशि और चरनवांश हो तो परदेश में, स्थिरराशि स्थिर नवांश हो तो अपने घर में, द्विःस्वभाव राशि द्विःस्वभाव नवांश हो तो रास्ते में मृत्यु कहनी चाहिये ॥३५–३६॥

केन्द्रे कोणेऽष्टमाधीशे तुङ्गादिपदगे तदा।
दीर्घायुरुदितं पुर्वैर्व्यत्यये हीनमङ्गिनाम् ॥ ३७ ॥

अन्वयः—(यदा) अष्टमाधीशे तुङ्गादिपदगे केन्द्रे कोणे (गते) तदा अङ्गिनां दीर्घायुः, व्यत्यये हीनं पूर्वैः-उदितम् ॥ ३७ ॥

भा०—यदि आठवें घरका स्वामी अपने घर अथवा उच्चादि शुभ स्थानमें होकर केन्द्र कोण के (१, ४, ७, १०, ५ ९) किसी घर में बैठा हो तो मनुष्यों को दीर्घायु और नीच, शत्रु घर इत्यादि निर्बल होकर केन्द्र कोण में बैठा हो तो अल्पायु पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ ३७ ॥

अथ नवमभावविचारः—

लग्नादिन्दोर्नवमभवनं भाग्यमार्य्यैः प्रदिष्टं
भाग्यं तस्मात्प्रथममभुतः संविचिन्त्यं प्रयत्नात्।
युक्तं दृष्टं जननसमये स्वामिना सौम्यखेटै-
र्जन्तोर्भाग्यं प्रसरति विधोरेव शौक्ली कलेव ॥ ३८ ॥

अन्वयः—जननसमये लग्नादिन्दोर्नवमभवन भाग्यं आर्य्यैः प्रदिष्टं तस्मात्प्रथममभुतः प्रयत्नात् भाग्यं संविसिन्त्यम्, (यदा भाग्यस्थानः) स्वामिना सौम्यखेटैः (च) युक्तं दृष्टं (तदा) विधोरेव शौक्ली कलेव जन्तोः भाग्यं प्रसरति ॥ ३८ ॥

भा०—जन्म समय में लग्न और चन्द्रमा से नवम घर को भाग्य (प्रारब्ध; ऐश्वर्य) स्थान श्रेष्ठों ने कहा है, इसलिए सबसे पहले इस स्थान से यत्नपूर्वक (परिश्रम से) भाग्योदय का विचार करना चाहिये, यदि नवम घर अपने स्वामी और शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो चन्द्रमाके शुक्लपक्ष के काल की तरह मनुष्यों का भाग्य बढ़ता है ॥ ३८ ॥

सहोत्थपुत्राङ्गतो ग्रहश्चेद्-
भाग्यं प्रपश्येद्यदि वा सवीर्यः।
हिरण्यमाली खलु भाग्यशाली
प्रसूतिकाले यदि यस्य जन्तोः॥ ३९ ॥

अन्वयः—यस्य प्रसूतिकाले यदि सहोत्थपुत्राङ्गगतः ग्रहः सवीर्यः

यदि वा भाग्यं प्रपश्येत् (तदा) जन्तोः हिरण्यमाली खलु भाग्यशाली भवेत् ॥३९॥

भा०—जिसके जन्मकाल में यदि तीसरे, पांचवें और लग्न में बैठे हुए ग्रह बलवान हों अथवा उक्त स्थान में बैठे हुए शुभ ग्रह नवम घर को पूर्णदृष्टि से देखते हों तो वह मनुष्य सुवर्ण की माला [आभूषण] पहनने वाला अत्यन्त भाग्यवान् होता है ॥३९॥

निजोच्चभे पुण्यगृहे नभोगो
बलीर्यदा तिष्ठति जन्मकाले ।
स पुण्यशाली नवरत्नमाली
धराधिपो राजकुलप्रसूतः ॥४०॥

अन्वयः—यदा जन्मकाले निजोच्चभे पुण्यगृहे बलीनभोगः तिष्ठति स पुण्यशाली, नवरत्नमाली (स्याद्यदि) राजकुलप्रसूतः (तदा) धराधिपः (स्यात्) ॥४०॥

भा०—जिसके जन्मकाल में अपने उच्च स्थानमें होकर नवम स्थानमें बैठा हुआ ग्रह बलवान हो तो वह मनुष्य अपने धर्म कर्म से युक्त रहकर नित्य नये नये रत्नों की माला पहनने वाला [अति धनाढ्य] होता है, यदि युक्त योग में राजकुमार पैदा हो तो अवश्य राज्यसिंहासन पर बैठते [राजा होते] हैं ॥४०॥

जीवज्ञशुक्रा नवमे बलिष्ठाः
सुतेशदृष्टा यदि जन्मकाले ।
स पुण्यकर्त्ता नृपतेरमात्यो
नृपालजातो नरपालवर्य्यः ॥४१॥

अन्वयः—यदि जन्मकाले बलिष्ठाः जीवज्ञशुक्राः नवमे (तदा) स पुण्यकर्त्ता नृपतेरमात्यः (यदि) नृपालजातः (तदा) नरपालवर्य्यः स्यात् ॥४१॥

भा०—यदि जन्मकाल में बलवान वृहस्पति, बुध और शुक्र नवें घर में बैठे हों तो वह मनुष्य तीर्थ, व्रत, धर्म करने वाला और राजा का मन्त्री होता है यदि उक्त योग में राज्यकुल में पैदा हो तो प्रतापी राजा होता है ॥४१॥

भाग्यभावाधिपो नीचे रविलुप्तकरे सति ।
अरिगेहगतो वापि भाग्यहीनो नरो भवेत् ॥४२॥

अन्वयः—भाग्यभावाधिपः नीचे वा रविलुप्तकरे सति अथवा अरिगेहगतोऽपि नरः भाग्यहीनः भवेत् ॥४२॥

भा०—भाग्यस्थान (नवम घर) का स्वामी नीच स्थान में हो, अस्त हो अथवा छठे घर में बैठा हो तो वह मनुष्य दरिद्र होता है ॥४२॥

अथ दशमभावविचारः—

कर्मभावाधिपो नीचे षडादित्रयगोऽपि चेत् ।
करोति कर्मवैकल्यं स्वोच्चस्वर्क्षपदं विना ॥४३॥

अन्वयः—स्वोच्चस्वर्क्षपदं विना कर्मभावाधिपः नीचे (तथा) षडादित्रयगेऽपि चेत् (तदा) कर्मवैकल्यं करोति ॥४३॥

भा०—यदि अपने उच्च तथा अपने घर को छोड़कर दशवें घर का स्वामी नीच राशि में बैठा हो अथवा छठें, आठवें, बारहवें घर में बैठा हो तो कर्मभाव-जन्य सब फल नष्ट कर डालता है ॥४३॥

कर्माधिपे केन्द्रनवात्मजर्क्षे
बुधेज्यदृष्टे सबले नराणाम् ।
तुरङ्गमातङ्गनवाम्बराणि
भवन्ति नानाधनसंयुतानि ॥४४॥

अन्वयः—(यदा) बुधेज्यदृष्टे सबले कर्माधिपे केन्द्रनवात्मजर्क्षे (तदा) नराणां नानाधनसंयुतानि तुरंगमातंगनवाम्बराणि भवन्ति ॥४४॥

भा०—यदि बुध और बृहस्पति से देखा जाता हुआ दशमेश केन्द्र (१, ४, ७, १०) स्थान अथवा नवें, पांचवें घर में बैठा हो तो मनुष्यों को रत्नादि अनेकों धन होते हुए भी घोड़े, हाथी, गृह और नये-नये वस्त्रों का सुख यथेच्छ मिलता है ॥४४॥

कर्मपः केन्द्रकोणस्थो ज्योतिष्टोमादियज्ञकृत् ।
कूपायतनकर्त्ता च देवतातिथिपूजकः ॥४५॥

अन्वयः—(यदा) कर्मपः केन्द्रकोणस्थः तदा नरः) ज्योतिष्टोमादि-यज्ञकृत्, कूपायतनकर्त्ता (तथा) देवतातिथिपूजकश्च (स्यात्) ॥४५॥

भा०—यदि दशमेश केन्द्र, कोण (१, ४, ७, १०, ५, ९) स्थान बैठा

हो तो मनुष्य ज्योतिष्टोम इत्यादि यज्ञ करने वाला, कूप, बावली, तालाब इत्यादि बनवाने वाला और देवता, अतिथि का पूजा सत्कार करनेवाला होता है॥४५॥

लग्नादिन्दोर्दशमभवने जन्मकाले नराणा-
मादित्याद्यैः क्रमत उदिता जीविका खेचरेन्द्रैः।
तातान्मातुर्निजरिपुकुलान्मित्रपक्षात्सहोत्थात्
पत्न्याः पुत्रादपि बुधवरैर्जातकज्ञैर्विशेषात् ॥४६॥

अन्वयः—जन्मकाले लग्नादिन्दोः दशमभवने आदित्याद्यैः खेचरेन्द्रैः (तदा) नराणां क्रमतः तातान्मातुर्निजरिपुकुलान्मित्रपक्षात्सहोत्थात् पत्न्याः पुत्रादपि जीविका विशेषात् जातकज्ञैः बुधवरैः उदिताः ॥४६॥

भा०-जन्मकाल में लग्न और चन्द्रमा से दशवें घर में जो ग्रह बैठा हो दोनों से दसवें घर में दो या दो से अधिक ग्रह बैठे हों तो उनमें जो सबसे अधिक बलवान् हो, यदि दोनों से दशम में एक भी ग्रह न हो तो उन दोनों से दशमेश में जो बलवान् हो उससे मनुष्यों की जीविका क्रम से अर्थात्-सूर्य दशवें घर में बैठा हो या दशमेश हो तो पिता से, चन्द्रमा हो तो माता या मातुल कुल से मंगल हो तो शत्रु कुल से, बुध हो तो मित्र सम्बन्ध से, बृहस्पति हो तो भ्रातृ-पक्ष से, शुक्र हो तो स्त्री से, और शनि दशवें घर में बैठा हो या दशमेश हो तो पुत्र से जीविका विशेषकर जातकशास्त्र के जाननेवाले पंडितों ने कहा है॥४६॥

रविशीतकरांगकर्मपानां
नरवृत्तिः कथिता लवेशवृत्त्या।
कनकोर्णतृणौषधैर्दिनेशे-
कृषिदाराम्बुसमाश्रयाच्च चन्द्रे ॥४७॥

अन्वयः—रविशीतकरांगकर्मपानां लवेशवृत्त्या नरवृत्तिः कथिता, दिनेशे कनकोर्णतृणौषधैः, चन्द्रे कृषिदाराम्बुसमाश्रयाच्च ॥४७॥

भा०—अब अन्य प्रकार से मनुष्यों की जीविका बताते हैं—सूर्य, चन्द्रमा, लग्नेश और दसवें घर के स्वामी इनमें जो बलवान हो वह जिस ग्रह के नवांश में हो उसके अनुकूल जीविका होती है। जैसे सूर्य जीविका दाता हो तो सोना, ऊन, तृणघासादि और औषध से लाभ करता है, चन्द्रमा खेती स्त्री सम्बन्ध, जल सम्बन्ध (पुल वगैरह के ठीकेदारी) से लाभ देता है॥४७॥

अथ साहसवह्नि धातुशस्त्रैः
क्षितिजे काव्यकलापतो ज्ञे ।
लवणद्विजकाञ्चनेभदेवै-
र्मणिरौप्यचयैः क्रमाच्च गुर्वोः ॥४८॥

अन्वयः—अथ क्षितिजे साहसवन्हिधातुशस्त्रैः, ज्ञे काव्यकलापतः, गुर्वोः लवणद्विजकाञ्चनेभदेवैर्मणिरोप्यैः क्रमाच्च ।।४८।।

भा०—अब यदि मंगल जीविका दाता हो तो हर एक काम साहस करके, अग्नि सम्बन्ध (अग्न्याधान अथवा ईंटा वगैरः के ठीकेदारी) से, रसायन औषध इत्यादि से और शस्त्र (युद्ध) से, बुध हो तो साहित्य शास्त्र लिखने पढ़ने से और कला कौशलादि से, वृहस्पति हो तो लवण, दाँत के बनाने इत्यादि से, सोना हाथी के व्यापार से, देवता के सम्बन्ध से मणि जवाहरात चाँदी के व्यापार से लाभ (जीविका जन्य सुख) होता है ।।४८।।

रविजे श्रमभारनीचतः स्या-
दिह कर्मेशभवांशनाथवृत्तिः ।
हितवैरिनिजर्क्ष तुङ्गसंस्थै-
र्हितवैरिस्ववशाद्धनाप्तिरुच्चैः ॥४९॥

अन्वयः—रविजे श्रमभारनीचतः स्यात् इह कर्मेशभवांशनाथवृत्तिः हितवैरिनिजर्क्षतुङ्गसंस्थैः हितवैरिस्ववशात् धनाप्ति उच्चैः(उत्तम्)।।४९।।

भा०-यदि शनि जीविका दाता हो तो अति परिश्रम करने से, भार ढोने से, नीच कर्म (मजदूरी इत्यादि) से जीवन व्यतीत होता है, यहाँ पर दशमेश जिस नवांश में हो उसके जो स्वामी हों उस जीविका से जीवन व्यतीत होता है; वह ग्रह अपने मित्र की राशि में हो तो मित्र सम्बन्ध से, शत्रु की राशि में हो तो वह शत्रु सम्बन्ध (शत्रु को जीतकर उसके जमीन जायदाद) से, और अपने घरका हो तो स्वार्जित धन से आजीविका श्रेष्ठ आचार्यों ने कह रखा है ।।४९।।

अथ लाभभावविचारः—

लाभेशो यदि केन्द्रस्थो लाभाधिक्यं प्रजायते ।
षडादित्रयमे नीचे लाभबाधा नृणां सदा ।।५०।।

अन्वयः—यदि लाभेशः केन्द्रस्थः (तदा) नृणां लाभाधिक्यं, यदि ये षडादित्रयगे (वा) नीचे (तदा) सदा लाभबाधा प्रजायते ।।५०।।

भा०—यदि ग्यारहवें घर का स्वामी केन्द्र (१,४,७, १०) स्थान में बैठा हो तो मनुष्यों को विशेष लाभ होता है, यदि लाभेश छठें,आठवें,ग्यारहवें अथवा अपने नीच स्थानों में बैठा हो तो कभी भी लाभ नहीं होता है ।।५०।।

आदित्येन युतेक्षिते नृपकुलाल्लाभालये चौरतो
लाभो नित्यमथेन्दुना गजजलप्रोद्भूतवामाजनैः ।
भूपुत्रेण विचित्रयानमणिभूस्वर्णप्रवालादिभि-
र्जन्तोश्चन्द्रसुतेन शिल्पलिखनव्यापारयोगैरलम् ।।५१।।

अन्वयः—(यदि) लाभालये आदित्येन युतेक्षिते (तदा) जन्तोः नृपकुलात् (वा) चौरतः नित्यलाभः अथ-इन्दुना युतेक्षिते गजजलप्रोद्भूतवामाजनैः,भूपुत्रेण विचित्रयानमणिभूस्वर्णप्रवालादिभिः, चन्द्रसुतेन शिल्पलिखनव्यापारयोगैः-अलम् ।।५१।।

भा०—यदि लाभ स्थानो में सूर्य बैठा हो या पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्य को राज्यकुलसे अथवा चोर सम्बन्ध से सर्वदा लाभ होता है, यदि चंद्रमा से देखा जाता हुआ हो अथवा युक्त हो तो हाथी के व्यापार से और नौका, घाट, पुल इत्यादि के ठीकेदारी से अथवा स्त्रियों के संबंध से सदा लाभ होता है, यदि मंगल उक्त योगकारक हो तो तरह २ के सवारियों के व्यापार से, मणि सुवर्ण मूंगा इत्यादिके व्यापारसे लाभहोता है, बुधयोगकारक हो तो (शिल्प कारीगरी) से लिखने पढ़ने से और व्यापार करने से सदा लाभ होता है ।।५१।।

जीवेनापि नरेशयज्ञगजभूज्ञानक्रियाभिः सिते-
नालं वारवधूगमागमगुणव्याख्यानमुक्ताफलैः ।
मन्देनापि गजव्रजव्यसनभू नीलेन्द्रलोहव्रजै-
रित्थंतत्र बहुग्रहैरभिहितो नानार्थलाभो बुधैः ।।५२।।

अन्वयः—जीवेनापि नरेशयज्ञगजभूज्ञानक्रियाभिः, सिते वारवधूगमागमगुणव्याख्यानमुक्ताफलैः अलं, मन्देनापि गजव्रजव्यसनभूनीलेन्द्रलोहव्रजैः-इत्थं तत्र (लाभस्थाने) बहुग्रहैः (युतक्षितैस्तदा) नानार्थलाभः बुधैः-अभिहितः (कथितः) ।।५२।।

भा०—यदि ग्यारहवें घरमें वृहस्पति बैठा हो या पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो मनुष्योंको राजाके यज्ञादि करानेसे, हाथों के व्यापारसे जमींदारीसे और ज्ञान उपदेश करने से लाभ होता है। शुक्र उक्त योगकारक हो तो वेश्याओं के साथ भोगविलास करने से, अनेक प्रकार गुणों के व्याख्यान देने से और मोतियों के व्यापार करने से लाभ होता है। शनि उक्त योगकारक हो तो हाथियों के समूह व्यापार से खेल तमाशे से, गृहस्थी से, नीलमणि लोहा इत्यादि के व्यापार से लाभ होता है। इस प्रकार यदि लाभभवन में बहुत ग्रह बैठे हों या बहुत ग्रह देखते हों तो अनेक प्रकार से बहुत विशेष लाभ पण्डितों ने बताया है ॥१२॥

अथ व्ययभावविचारः-

शुभग्रहाः प्रयच्छन्ति व्ययस्था विपुलं धनम् ।
विपरीतं खला जन्तोर्जन्मकाले विशेषतः ॥५३॥

अन्वयः—(यदि) जन्मकाले शुभग्रहाः व्ययस्थाः (तदा) जन्तोः विपुलं धनं प्रयच्छन्ति (यदा) खला व्ययस्थाः (तदा) विशेषतः विपरीतं (नेष्टफलं प्रयच्छन्ति) ॥५३॥

भा०—जिसके जन्मकाल में शुभग्रह बारहवें घरमें बैठे हों तो उस मनुष्यको विशेष धन देते हैं, यदि पापग्रह बैठे हों तो विशेषकर अनिष्टफल (निर्धन बना) देते हैं ॥५३॥

क्षीणेन्दुरन्त्यगो यस्य रविणा सहितो यदि ।
तस्य वित्तं हरेद्राजा कुजेनापि युतेक्षितेः ॥५४॥

अन्वयः—यस्य रविणा सहितः यदि क्षीणेन्दुः अन्त्यगः तथा) कुजेन युतेक्षितेः अपिः (इन्दुस्तदा) तस्य वित्तं राजा हरेत् ॥५४॥

भा०—जिसके जन्मकालमें सूर्य के साथ २ यदि क्षीणचन्द्रमा बारहवें घरमें बैठा हो अथवा क्षीण चन्द्रमा मंगल से युत दृष्ट बारहवें घरमें बैठा हो तो उस मनुष्य का धन राजा छीन (लूट) लेता है ॥ ५४ ॥

इति श्रीभावकुतूहले उत्साहवर्धिनी सान्वय भाषाटीकायां भावफलविचारः पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

—:o:—

षोडशोऽध्यायः ।

अथ दशानयनप्रकारः—

सूर्यादिग्रहाणां विंशोत्तरीया दशा
रसा आशाः शैला वसुविधुमिता भूपितिमिता
नवेलाः शैलेला नगपरिमिता विंशतिमिताः ।
रवाविन्दावारे तमसि च गुरौ भानुतनये
बुधे केतौ शुक्रे क्रमत उदिताः पाकशरदः ॥ १ ॥

अन्वयः--रवौ रसाः, इन्दौ आशा, आरे शैला, तमसि वसुविधुमितः चगुरौ भपतिमिता, भानुतनये नवेलाः, बुधे शैलेलाः, केतौ नगपरिमिता, शुक्रे विंशतिमिताः (एवं) क्रमतः पाकशरदः-उदिताः ॥ १ ॥

भा०—अब दशा विचारते हुए कहते हैं—कि सूर्यकी महादशा ६ वर्ष चन्द्रमाकी १० वर्ष, मंगल ७ वर्ष, राहु १८ वर्ष, बृहस्पति १६ वर्ष, शनि १९ वर्ष, बुध १७ वर्ष केतु ७ वर्ष, और शुक्र की महादशा २० वर्ष कही गयी है ॥ १ ॥

अथ विंशोत्तरमोह दशाज्ञानार्थं चक्रमिदम्--

सूर्य दशावर्षं ६	चन्द्रदशावर्ष १०	भौमदशावर्ष ७	राहुदशावर्ष १८	गुरुदशावर्षं १६
कृत्ति.उ.फ. उ.ष.	रो.हस्त श्र.	मृ. च. ध.	आर्द्रा.स्वा.श.	पुन.वि.पू.भा.
ग्रहा वर्ष	शनिदशावर्षं १९	बुधदशावर्ष १७	केतुदशावर्ष ७	शुक्रदशावर्ष २०
नक्षत्र	पुष्य अनु.उ.भा.	आश्ल.ज्ये रेवती	मघा. आश्वि. मूल	पू.षा.पू.फा. भर.

कृत्तिकादिस्त्रीरावृत्त्या दशा विंशोत्तरी मता ।
अष्टोत्तरी न संग्राह्या मारकार्थं विचक्षणैः ॥ २ ॥

अन्वयः--कृत्तिकादिः त्रिरावृत्या विंशोत्तरी दशा मता, मारकार्थं अष्टोत्तरी दशा विचक्षणैः न संग्राह्याः ॥ २॥

भा०-कृतिका से तीन आवृत्ति नक्षत्र गणना करने से सूर्य, चन्द्रमा, भौम इत्यादि ग्रह दशाधिपति होते हैं, जैसे कृतिका नक्षत्र में जन्म हो तो सूर्य दशा रोहिणी में चन्द्रमा इत्यादि, पुनः (२ री आवृत्ति) उत्तराफाल्गुनी में जन्म हो तो सूर्य हस्त में चंद्रमा, चित्रा में भौम इत्यादि, पुन (३ री आ०) उत्तराषाढ़ में जन्म हो तो सूर्य दशा, श्रवण में चंद्रमा, धनिष्ठा में भौम, शतभिष में राहु पूर्वाभाद्रपद में बृहस्पति इत्यादि ॥ २ ॥

अथ दशाभुक्तभोग्यानयनम्—

गतर्क्ष नाडीनिहता दशाब्दै-
र्भभोगनाड्या विहृता फलं यत्।
वर्षादिकं भुक्तमिह प्रवीणै-
र्भोग्यं दशाब्दान्तरितं निरुक्तम् ॥ ३ ॥

अन्वयः-गतर्क्षनाडी दशाब्दैः निहताः भभोगनाड्या विहृता वर्षादिकं यत फलं भुक्तं इह दशाब्दान्तरितं (तदा) भोग्यं प्रवीणैः निरुक्तम् ॥३॥

भा०—भयात् घटी-पल को पलात्मक बनाकर जिस ग्रह के दशा में जन्म हो उसके दशामान से गुणा कर भभोग घटी पलको पलात्मक (भाजक) बना कर उसमें भाग देवे जो लब्धि हो वह वर्ष, शेष को १२ से गुणा कर भाजक से भाग दे जो लब्धि हो वह मास, पुनः शेष को ३० से गुणा कर भाजक से भाग देवे जो लब्धि हो वह दिन, पुनः शेष को ६० से गुणा कर भाजक से भाग देवे जो जो लब्धि हो वह घटी, पुनः शेष को ६० से गुणा कर भाजक से भाग देवे जो लब्धि हो वह पल होता है, यह वर्ष, मास, दिन, घटी और पल भुक्त होते हैं, इसकी दशा मानमें घटा देवे तो भोग्य वर्ष मासादिक हो जाता है, ऐसा पण्डितोंने कहा है ॥ ३ ॥

दशा दशाहता कार्या विहृता परमायुषा।
अन्तर्दशाक्रमादेवं विदशाप्यनुपाततः ॥ ४ ॥

अन्वयः--दशा दशाहता कार्या परमायुषा (१२०) विहृता क्रमात् अन्तर्दशा एवं अनुपाततः विदशाऽपि भवति ॥ ४ ॥

भा०—अब अन्तर्दशा बनाने का प्रकार कहते हैं—जिस ग्रह के दशा में अंतर निकालना हो उसके दशा वर्ष को अंतर निकालने वाले ग्रह के दशा सर्व-मान से गुणा कर १२० का भाग दे लब्धि वर्ष शेषको १२ से गुणा कर १२० का

भाग दे लब्धि मास पुनः शेष को ३० से गुणा कर १२० से भाग दे लब्धि दिन पुनः शेष क्रिया करने से घटी पल होता है।

उदाहरण—

सूर्य की दशा में चन्द्रमा का अन्तर निकालना है अतः सूर्य दशावर्ष(६) को चन्द्र दशावर्ष (१०) से गुणा (६×१०=६०) किया, इसमें १२० का भाग दिया लब्धि ० वर्ष, शेष ६० को १२ से गुणा (६०×१२=७२०) किया, इसमें १२० का भाग दिया लब्धि ६ मास हुआ, शेष० अतः सूर्य के दशा में चन्द्रमा का अन्तर वर्षादि० ।६।०, इस प्रकार सब ग्रहों का अन्तर निकलना चाहिये।

अब प्रत्यन्तर निकालने का क्रम बताते हैं जिस ग्रह के अन्तर में प्रत्यन्तर निकालना हो तो उसके अन्तर वर्षादिको प्रत्यन्तर निकालने वाले ग्रह के दशा से गुणा कर १२० का भाग दे जो लब्धि हो वह मास, शेष को ३० से गुणा कर भाजक से भाग दे जो लब्धि हो वह दिन, पुनः शेष को ६० से गुणाकर १२० का भाग दे जो लब्धि हो वह घटी, पुनः शेष को ६० से गुणाकर १२० का भाग दे जो लब्धि हो वह पल हो जाता है।

उदाहरण--

सूर्य की दशामें भौमका अन्तर ४ मास ६ दिन है, इसमें सूर्य का प्रत्यन्तर निकालना है अतः ४ मा० ६ दि० को सूर्यके दशावर्ष (६) से गुणा (४।६× ६=२५।६) किया इसमें १२० का भाग दिया तो० मास ६ दिन १८ घटी सूर्य का प्रत्यंतर हुआ, इसी प्रकार सब ग्रहों का प्रत्यंतर निकालना चाहिये; सूक्ष्म दशा और प्राण दशा भी निकालने का यही क्रम है ॥ ४ ॥

अथ दशाफलानि।

तत्रादौ सूर्यस्य--

उद्वेगिता हृदि ततो परितो लताव-
द्दायादवाद उत वित्तवियोगयोगाः।
चिन्ता भयं नरपतेरपि पाककाले
रोगागमो भवति भानुदशाप्रवेशे ॥ ५ ॥

अन्वयः--भानुदशा प्रवेशे पाककाले नरपतेरपि परितः लतावत् हृदि उद्वेगिताः ततः दायादवादः उत वित्तवियोगाः, चिन्ता भयं, (तथा) रोगागमः भवति ॥ ५ ॥

भा०—सूर्यकी दशा प्रवेश से दशा काल तक मनुष्य राजा भी हो तो उसको चारो तरफ से लता की तरह हृदय में उद्वेग होता है, परिवारों में कलह, धन का नाश और आगम, चिन्ता और भय अनेक प्रकार का रोग होता है ॥५॥

अथ चन्द्रदशाफलम्--

सदा पाके राकेशितुरधिकृतिर्भूपतिकृता
सतां सङ्गो रङ्गोत्सवकृतिप्रीतिरतुला।
अलङ्कारागारोरिपुकुलमलङ्कारजसुखं
कलावत्यारत्यागम इभरथारामरमणम् ॥ ६ ॥

अन्वयः—राकेशितुः पाके सदा भूपतिकृता अधिकृतिः सतां सङ्ग रङ्गोत्सवकृतिप्रीतिरतुला, अलङ्कारागारः रिपुकुलमलंङ्कारजसुखं कलावत्यारत्या गमः (तथा , इभरथारामरमणम् । ६ ॥

भा०—चन्द्रमाकी दशामें मनुष्य सर्वदा राजासे अधिकार पाता है। सज्जनोंका साथ होता है, नाच तमाशा और उत्सव इत्यादि कराता हुआ उसमें अत्यन्त प्रेम रखता है, अनेक रङ्गोंसे सुसज्जित महल मे निवास करता हुआ वस्त्र भूषणोसे अलङ्कृत रहता है, शत्रुओं को दबाकर अत्यन्त प्रसन्न होता है, अति सुन्दरी षोड़शवार्षिका रमणी के साथ रमण करता है, और हाथी, रथ, उपवन (पुष्पवाटिकाओं) का सुख मिलता है ॥ ६ ॥

अथ भौमदशाफलम्--

अनलगरलभीतिः शस्त्रघातो नराणा-
मरिगणनृपचौरव्यालशङ्काकुलत्वम्।
क्षितिसुतपरिपाके कामिनीपुत्रकष्टं
भवति वमनमाधिर्व्याधिरर्थक्षतिश्च ॥ ७ ॥

अन्वयः--क्षितिसुतपरिपाके नराणां अनलगरलभीतिः शस्त्रघातः अरिगणनृपचौरव्यालशङ्काकुलत्वं, कामितीपुत्रकष्टं, वमनं, [तथा] आधिः, व्याधिः, अर्थक्षतिश्च भवति ॥ ७ ॥

भा०—मङ्गलकी दशामे मनुष्योंको अग्नि और विषसे भय होता है, शास्त्रसे क्षति होती है, शत्रुगण राजा और सर्पसे भय होता है, स्त्री और पुत्रको कष्ट होता है, वमन (उल्टी) होती है, ज्वरादिकष्ट और मानसिक सन्ताप विशेष होता है, और धनका नाश भी होता है ॥ ७ ॥

अथ राहुदशाफलम्

राकेशारातिपाके नृपकुलभयतो द्रव्यनाशो विनाशो
मानस्यातीवरोगागममपि नृणां तातकष्टं विशेषात् ।
कान्तापत्याकुलत्वं हितजनखलताऽराद्विरायाति सद्म-
व्यामोहागारमन्तः परित इव ततस्तुङ्गताताङ्कता वा ॥८॥

अन्वयः—राकेशारातिपाके नृणां नृपकुलभयतः द्रव्यनाशः, मानस्य विनाशः, अतीवरोगागमनम् अपि विशेषात् तातकष्टं, कान्तापत्याकुलत्वं हितजनखलतोऽरातिः सद्म आयाति, इत परितः व्यामोहागारमन्तः, ततः तुङ्गताताङ्कता वा भवति) ॥ ८ ॥

भा०—राहुकी दशामें मनुष्योंको राजाकी कुदृष्टिसे धननाश और प्रतिष्ठा नाश होती है, रोग बहुत बढ़ता है, विशेष पिताको कष्ट होता है, स्त्री और सन्तानों से कष्ट मिलता है, अपने मित्रगणों करके प्रेरणा किये हुए शत्रु गृहपर आकर आक्रमण करते हैं, चारों तरफसे आपत्तियों को देखकर अन्तःकरण में घबड़ाहट होता है, और उच्च पदको पाकर नीचा देखना पड़ता है ॥८॥

अथ गुरुदशाफलम्

उर्वी गुर्वी समायात्यवनिपतिकुलान्नायकत्वं जनानां
कान्तादन्तावलाग्रागम इह कमलालङ्कृता वासशीला ।
मैत्री सद्भिर्महद्भिर्गुरुजनगरिमा कालिमारातिकास्ये
हृद्या विद्यानवद्या भवति च वचसामीशितुः पाककाले ॥९॥

अन्वय—वचसामिशितुः पाककाले जनानां अवनिपति कुलात् गुर्वी-उर्वी (तथा) नायकत्वं समायाति, कान्तादन्तावलाग्रागमः, इह कमला-लङ्कृता वासशाला, सद्भिः मैत्री, महद्भिर्गुरुजनगरिमा, आरातिकास्ये-कालिमा (तथा) हृद्या विद्यानवद्या च भवति ॥ ९ ॥

भा०—बृहस्पतिकी दशामें मनुष्योंको राजासे उत्तम भूमि और बहुत बड़ा पद सुशीला स्त्रीका सुख और सवारीके लिये हाथियोंका सुख और श्रीलक्ष्मीसे युक्त उत्तम घर निवास करने के लिये मिलता है, सज्जनोंकी मैत्री और बहुत बड़े-बड़े आदमियोंसे प्रतिष्ठा भी होती है, शत्रुओं को दबाकर उन सबोंके मुँह पर स्याही पोती जाती है और नित्य नूतन सुख देने वाली विद्या भी प्रा जाती है ॥ ९ ॥

अथ शनिदशाफलम्—

मिथ्यावादेन तापोऽरिजनकृतातङ्कता रङ्कता वा
कृत्या गुप्ता प्रतप्ता मतिरपि कुजनैरर्थनाशो जनानाम् ।
कान्तापत्यादिरोगो जनककनकगोवाजिदन्तावलानां
विच्छेदो मित्रभेदो दिनपसुतदशायामनर्थो विशेषात् ॥१०॥

अन्वयः—दिनपसुतदशायां जनानां मिथ्यावादेन तापः, अरिजनकृत आतङ्कता रङ्कता वा, गुप्ताकृत्यामतिरपि प्रतप्ता, कुजनैः अर्थनाशः, कान्तापत्यादिरोगः, जनककनकगोवाजिदन्ता वलानां विच्छेदः मित्रभेदः (तथा) विशेषात् अनर्थः (स्यात्) ॥१०॥

भा०—शनिकी दशामें मनुष्यों को झूठा कलङ्कसे कष्ट होता है, शत्रुओं करके व्याकुल अथवा मुकदमेबाजी से दरिद्र हो जाता है उसके ऊपर कुप्रयोग होने से बुद्धि भी डांवाडोल हो जाती है, दुष्टजनोंके संसर्ग से धन नाशहो जाता है, स्त्री और सन्तान रोगी हो जाते हैं, अपना पालन करनेवाला (पिता इत्या०), सुवर्ण, गौ, घोड़े और हाथियों के झुण्ड ये सब नष्ट हो जाते हैं, मित्र गणोंसे वैमनस्य हो जाता है और बहुत बड़े-बड़े अनर्थ आ पहुँचते हैं ॥१०॥

अथ बुधदशाफलम्—

दिव्याहारविहारयानजनतापत्यार्थमानाम्बर-
श्रेणीग्रामनवालयेन्दुवदनालाभं विशेषादिह ।
सद्भिः सङ्गमनङ्गमङ्गमतुलं प्रोत्तुङ्गमताङ्गजं
सौख्यं सन्तनुते दशा सुतयशोवृद्धिं च सिद्धिंविदः ॥११॥

अन्वयः—विदः दशा दिव्याहारविहारयानजनतापत्यार्थमानाम्बर-श्रेणीग्रामनवालयेन्दुवदनालाभ विशेषादिह सद्भिः सङ्गं अनङ्गमङ्गमतुलं, प्रोतुङ्गमातङ्गजं सौख्यं (तथा) सुतयशः वृद्धिं सिद्धिं च संतनुते ॥११॥

भा०—बुधकी दशा मनुष्यों को उत्तम भोजन, विहार, सवारी, सन्तान, धन, प्रतिष्ठा, वस्त्र, भूमि, नूतन गृह और चन्द्रवदनी कामिनी का सुख विशेष रूप से देती है। सज्जनों के साथ की वृद्धि, कामदेव की वृद्धि, ऊँचे २ हाथियों की सवारी के सुख की वृद्धि और सुत यश वृद्धि होती है और उक्त वस्तुओं की सिद्धि भी होती है ॥११॥

अथ केतुदशाफलम्—

मनस्तापं तापं निजजनविवादं खलकृतं
सदाचन्द्रारातेरुदरभवरोगं वितनुते।
दशापुंसामारादनुगतिमपायं निजमतेः
कृशत्वं वित्तानामवनिपतिकोपेन परितः ॥१२॥

अन्वयः—चन्द्रारातेः दशा पुंसा सदा मनस्तापं तापं, निजजनविवादं खलकृतं (तथा) उदरभवरोगं वितनुते आरात् अनुगतिं निजमतेः (धनं) अपायं (तथा) अवनिपतिकोपेन परितः वित्तानां कृशत्वं जातम् ॥ १२ ॥

भा०—केतु की दशा मनुष्यों को सर्वदा चित्त में विकार पैदा करती और ज्वरजन्य कष्ट देती है, स्वजनों में कलह अन्य दुष्ट मनुष्यों के झगड़ा लगाने से हो जाता है, पेट में दर्द होता है, शत्रुओं के विवाद से चारों तरफ उलटा सीधा आना जाना लगा रहता है, अपने ही बेवकूफी से अपना धन नाश होता है और चारों तरफ से आते हुए धन राजा के क्रोध से नष्ट होने लगते हैं ॥ १२ ॥

अथ शुक्रदशाफलम्—

तुल्यत्वं धरणीधवेन महता मित्राज्जयो जन्मिनाम्
मारोल्लासविकास एव कमलालावण्ययुक्तं गृहम्।
दिव्यारामसुधामसामबहुला व्याख्यानगानध्वनिः
प्रज्ञासौख्यमतीव पाकसमये शाला विशाला कवेः ॥१३॥

अन्वयः—कवेः पाकसमये जन्मिनां महता धरणीधवेन तुल्यत्वं, मित्राज्जयः मारोल्लासविकास एव, गृहं कमलालावण्ययुक्तं दिव्यारामसुधामसामबहुला व्याख्यानगानध्वनिः प्रज्ञा (तथा) शाला विशाला अतीव सौख्यं (स्यात्) ॥ १३ ॥

भा०—शुक्र की दशा में मनुष्यों को बड़े-बड़े राजाओं के समान सुख मिलता है मित्र गणों से विशेष प्रतिष्ठा मिलती है, अनेक उत्सवादि और नवयुवती स्त्रियों का सुख मिलता है, घर में लक्ष्मी तुल्य सुख देने वाली स्त्री विराजती है, सुन्दर-सुन्दर बगीचे और महलें बनवाने लगते हैं और इनका सुख भी मिलता है, सुन्दर कथा और गाना बजाना में चित्त लगता है, सद्बुद्धि परिवार और गृह का अत्यन्त सुख मिलता है ॥ १३ ॥

अथ उच्चस्थग्रहदशाफलम्—

निजोच्चगामिनो यदा तदा यशोलता
नवाम्बरादिभूषणैः सुखं वराङ्गनागमः ।
उपेन्द्रतुल्यता मता गजेन्द्रवाजिराजिका
रथोवृषाश्च वैरिणः कृशा वशा दशा भवेत् ॥१४॥

अन्वयः—यदा निजोच्चगामिन, दशाभवेत्तदा (नराणां) यशोलता, नवाम्बराणि भूषणैः सुखं, वराङ्गनागमः उपेन्द्रतुल्यतामता गजेन्द्रवाजिराजिका रथ वृषाश्च (आगमः) वैरिणः वशा कृशा दशा भवेत् ॥१४॥

भा०—यदि उच्च स्थान में बैठे हुये ग्रह हों तो उनकी दशा में मनुष्यों का यशालता की तरह बहुत दूर तक फैलता है, नूतन वस्त्र और आभूषणों का सुख मिलता है। सुन्दर हाथी, घोड़े, रथ और गाय, बैल इत्यादि चतुष्पदों का आगम तथा उनके द्वारा अनेक सुख मिलता है। शत्रुगण पराजित हो वशीभूत होकर दुर्बल अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं ॥ १४ ॥

अथ स्वक्षेत्रगतदशाफलम्—

दशा निजागारगतस्य यस्य
नवाम्बरागार विहारसौख्यम् ।
नवीनयोषा बहुभूमिभूषा
यशो विशेषादरिवर्गहानिः ॥१५॥

अन्वयः - यस्य (नरस्य) निजागारगतस्य (ग्रहस्य) दशा (भवेत्तस्य) नवाम्बरागारविहारसौख्यम्, नवीनयोषा बहुभूमिभूषा विशेषात् यशः (तथा) अरिवर्गहानिः (भवेत्) ॥१५॥

भा०—जिस मनुष्य को अपने घर में बैठे हुए ग्रह की दशा आती है उस समय नूतन वस्त्र और अति रमणीय विहार करने योग्य गृह मिल जाता है, अति सुन्दरी प्रौढ़ा रमणीका सुख मिलता है, सुयश दूर तक फैलता है और शत्रु वर्गों का विशेष नुकसान होता है ॥ १५ ॥

अथ मित्रक्षेत्रगतदशाफलम्—

कलत्रपुत्रैरपि मित्रपुत्रै-
रतीव सौख्यं हितराशिगस्य ।

दशाविपाके वसनं नृपाला-
द्विशेषतो मानविवर्द्धनं स्यात् ॥१६॥

अन्वयः—हितराशिगस्य दशाविपाके कलत्रपुत्रैः मित्रपुत्रैरपि अतीव सौख्यं नृपालाद्विशेषतः वसनं (तथा) मानविवर्द्धनं स्यात् ॥१६॥

भा०—अपने मित्र के घर में बैठे हुए ग्रहों की दशा में मनुष्यों को अपने स्त्री-पुत्र का सुख, मित्र परिवार का सुख अधिकतर मिलता है। राजा से वस्त्रभूषण अधिक मिलते हैं और प्रतिष्ठा की विशेष वृद्धि होती है ॥१६॥

शत्रुराशिस्थग्रहदशाफलम्—

मनोजवेगो रिपुवर्गभीतिः
कृशत्वमर्थक्षतिराप्तिबाधा ।
दशा यदारातिगृहस्थितस्य
तदा नरस्य प्रकृतिश्चला स्यात् ॥१७॥

अन्वयः—अरातिगृहस्थितस्य यदा दशा तदा नरस्य मनोजवेगः रिपुवर्गभीतिः, कृशत्वम् अर्थक्षतिः आप्तिबाधा (तथा) प्रकृतिश्चला स्यात् ॥ १७ ॥

भा०—शत्रु गृह में बैठे हुए ग्रहों की दशा जब आती है तो मनुष्यों का चित्त डावांडोल, शत्रुवर्गों से भय, शरीर दुर्बल, धन नष्ट, आमदनी में रुकावट और प्रकृति चलायमान हो जाने का भय हो जाता है ॥१७॥

षष्ठेशदशाफलम्—

रोगाधीशदशाऽवला जनकलिं रोगागमं जन्मिना-
माधिव्याधिमरित्रजव्रणगणातङ्कं कलङ्कं खलात् ।
मानध्वंसमतिक्षयं कलयति ज्ञानार्थनाशं तथा
चित्तव्याकुलता च पापवशतो धातुक्षयं प्रायशः ॥१८॥

अन्वयः—अवलारोगाधीशदशा जन्मिनां जनकलिं, रोगागमं, आधिव्याधि, अरित्रजव्रणगणातङ्कं, खलात्कलङ्कं मानध्वंसमतिक्षयं ज्ञानार्थनाशं तथा च चित्तव्याकुलता, प्रायशः पापवशतः धातुक्षयं कलयति ॥ १८ ॥

भा०—बलहीन षष्ठेश ग्रह की दशा मनुष्यों को आपस में कलह, रोग की वृद्धि, मानसी चिन्ता और आधिभौतिक कष्ट, शत्रुगणों से और फुंसी फोड़ा

अन्य कष्टों से आतङ्क, दुष्टजनों से अपवाद, बहुत बड़ा अपमान, बुद्धि और धन का नाश, चित्त में घबड़ाहट और अत्यन्त कामातुर करके धातु क्षीण कर देती है ॥१८॥

अथाष्टमेशदशाफलम्—

निधनभावपतेरवनीपते-
रतिभयं गदजालभयं दशा।
कलयति स्वजनस्य विनाशनं
निधनतामपि वा भविनामिह ॥१९॥

अन्वयः—निधन भावपतेः दशा भविनां अवनिपतेः अतिभयं, गद-जालभयं, स्वजनस्य विनाशनं, निधनतामपि वा इह कलयति ॥१९॥

भा०—अष्टमेश ग्रह की दशा मनुष्यों को राजासे अतिभय, अनेक रोगों से भय, आत्मीय गणों की मृत्यु और अपने को भी मृत्यु तुल्य कष्ट अथवा मृत्यु देती है ॥१९॥

अथ व्ययेशदशाफलम्—

वित्तक्षतिरवनीशादाधिव्याधिर्व्ययेशपरिपाके।
कष्टं मृत्युसमानं भवति कुयानं कुसंगसंयोगः ॥२०॥

अन्वयः—व्ययेश परिपाके अवनीशात् वित्तक्षतिः, आधिव्याधिः, मृत्युसमानं कष्टं, कुयानं (तथा) कुसङ्गसंयोगः भवति ॥२०॥

भा०—बारहवें घरके स्वामी की दशा में मनुष्यों का राजा से धन नष्ट; शरीर और चित्त को अति कष्ट, मृत्यु तुल्य कष्ट, खराब सवारी और दुष्ट जनों का साथ होता है ॥२०॥

अथ सप्तमेशदशाफलम्—

जायापतिपरिपाके रोगज्वाला हृदि स्थिता भवति।
रिपुजन जनिता बाधा वित्तविनाशो नरेशभीतिश्च ॥२१॥

अन्वयः—जायापतिपरिपाके रोगज्वाला हृदिस्थिता, रिपुजनजनिता बाधा, वित्तविनाशः, नरेशभीतिश्च भवति ॥२१॥

भा०—सातवें घर के स्वामी की दशा में रोग रूपी अग्निकी ज्वाला हृदय में दाह पहुँचाती है, शत्रुजनों से कष्ट, धन का नाश और राज्यकुल से बन्धन इत्यादि का भय होता है ॥२१॥

अस्तंगतग्रहदशाफलम् -

दशाधीशे वास्तंगतवति विरोधे बलवता
सदा रोगागारं हृदयकुहरे वाथ जठरे ।
अरेराधिव्याधिव्यसनमुत मानक्षतिरथो
विरामो वित्तानामवनिपतिकोपेन भविनाम् ॥२२॥

अन्वयः--दशाधीशे अस्तं गतवति तदा भविनां बलवता विरोधे वा सदा रोगागारं हृदयकुहरे वा जठरे, अथ अरेः आधि व्याधि व्यसनं उत मानक्षतिः, अथ अवनिपतिकोपेन वित्तानां विरामः (भवति ।।२२॥

भा०--दशा का स्वामी अस्त हो तो उस समय में मनुष्यों को बलवान् शत्रु से मुकाबला करना पड़ता है, अथवा सर्वदा रोग अड्डा बना कर हृदय वा उदर को सताता है और शत्रुओं के भय से मानसी चिन्ता तथा शरीर में कष्ट हुआ करता है, अपमान होता है और राजा के क्रोध से सम्पत्ति नाश हो जाती है ॥२२॥

चन्द्रबलानुसारेणग्रहदशाफलम्—

दशाप्रवेशे सबलः शशाङ्को
दशाफलं शस्तमतीवजन्तोः ।
अतोऽन्यथा चेद्विपरीतमार्यै-
रुदीरितं चन्द्रबलानुमानात् ॥२३॥

अन्वयः—दशाप्रवेशे सबलः शशांकः (तदा) जन्तोः दशाफलं अतीव शस्तं, चेद्विपरीतं अतोऽन्यथा (इति) चन्द्रबलानुमानात् आर्यै-रुदीरितम् ॥२३॥

भा०--दशा प्रवेशकाल में जन्म राशि में चन्द्रमा बलवान् हो तो मनुष्यों का दशाफल अत्यन्त शुभदायक होता है, यदि दशा प्रवेश काल में चन्द्रमा लग्न से चौथे, आठवें बारहवें और नीच इत्यादि स्थान में बैठा हो तो दशा फल नष्ट होता है ऐसा चन्द्र बल के अनुमान से ऋषियों ने फलादेश कहा है ॥ २३ ॥

बलानुकूलदशाफलम्—

बलवन्तो दशाधीशा दिशन्ति सकलं फलम् ।
निर्बला नैव कुर्वन्ति मध्यं मध्यबला नृणाम् ॥२४॥

अन्वयः—दशाधीशाः बलवन्तः (तदा, नृणां सकलं फलं (दिशन्ति) निर्बला नैव दिशन्ति (तथा) मध्यबला मध्यं कुर्वन्ति ॥२४॥

भा०—दशा का स्वामी यदि बलवान् हो तो मनुष्यों को सब प्रकार शुभ फल देता है निर्बल हो तो शुभ फल नहीं देता, यदि मध्यम बली हो तो मध्यम फल करता है ॥ २४ ॥

संक्षेपतो भावाधीशानां फलानि—

लग्नेशस्य दशाफलं बहुधनं वित्तेशितुः पञ्चतां
कष्टं वेति सहोदरालयपतेः पापं फलं प्रायशः ।
तुर्यस्वामिन आलयं किल सुताधीशस्य विद्यासुखं
रोगागारपतेररातिजभयं जायापतेः शोकताम् ॥२५॥

अन्वयः—लग्नेशस्य दशा फलं बहुधनं वित्तेशितुः पञ्चतां कष्टंवेति, सहोदरालयपतेः प्रायशः पापं फलम्, तुर्यस्वामिनः आलयं (सुख), सुताधीशस्य किल विद्यासुखं, रोगागारपतेः अरातिजभयं, जायापतेः शोकतां (जातम्) ।२५॥

भा०—अब संक्षेप से बारह भावों के स्वामियों का फल बताते हैं-लग्नेश की दशा में मनुष्यों को विशेष धन मिलता है, द्वितीयेश की दशा मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट देती है, तृतीयेश की दशा अत्यन्त अनिष्ट फल देती है, चतुर्थेश की दशा में गृहादि सुख विशेष मिलता है, पञ्चमेश की दशा में स्वच्छ बुद्धि होती है और विद्या सुख मिलता है, षष्ठेश की दशा में शत्रुभय और रोगभय होता है और सप्तमेश की दशा में शोक होता है ॥ २५ ॥

मृत्युं मृत्युपतेः करोति नियतं धर्मेशितुः सुक्रियां
वित्तं राज्यपतेर्नृपाश्रयमथ लाभं हि लाभेशितुः ।
रोगं द्रव्यविनाशनं च बहुधा कष्टं व्ययेशस्य वै
पूर्वैरङ्गभृतामुदीरितमिदं तन्वादि भावेशजम् ॥२६॥

अन्वयः—मृत्युपतेः नियतं मृत्युं करोति, धर्मेशितुः सुक्रियां. राज्यपतेः वित्तं नृपाश्रयं अथ लाभेशितुः हि लाभं, व्ययेशस्य (दशायां) वै रोगं द्रव्यविनाशनं बहुधा कष्टं च-इदं तन्वादि भावेशजं अंगभृतां पूर्वैः-उदीरितम् ॥ २६ ॥

भा०—अष्टमेश की दशा मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट देती है, नवमेश की दशा धर्मादि सुक्रिया कराती है, दशमेश की दशा राजा से सम्पत्ति अथवा राजा से आश्रय देती है, लाभेश की दशा में निश्चय लाभ होता है, व्ययेश की दशा में रोग, धन नाश और अनेक प्रकार का कष्ट होता है, इस प्रकार लग्नादि बारहों भावों के स्वामियों की दशा का फल मनुष्यों के लिये प्राचीन आचार्यों ने कह रखा है ॥ २६ ॥

भावाधिपो बलयुतो निजगेहगामी
तुङ्गत्रिकोणशुभवर्गगतोपि पूर्णम्।
जन्तोः फलं किल करोति यदारिनीच-
स्थान स्थितोऽशुभफलं विबलो विशेषात् ॥२७॥

अन्वयः—यदा भावाधिपः बलयुतः, निजगेहगामी, तुंगत्रिकोणशुभ वर्गगतोपि जन्तोः किल पूर्णं फलं करोति, यदा अरि नीच स्थानस्थितः विबलः (तदा) विशेषात् अशुभफलं करोति ॥ २७ ॥

भा०—जिस मनुष्य की कुण्डली में जिस भाव का स्वामी बलवान हो अपने घर में बैठा हो उच्च स्थान में बैठा हो जन्म लग्न से पांचवें घर में बैठा हो, शुभ ग्रह की राशि अथवा नवांश में बैठा हो तो मनुष्यों को निश्चय कर अपने दशा में पूर्ण शुभफल देता है, यदि शत्रु के घर में बैठा हो, अपने नीच स्थान में बैठा हो अथवा बलहीन हो तो अपनी दशान्तर्दशा में विशेषकर अशुभ फल करता है ॥ २७ ॥

इति भावकुतूहले उत्साहवर्द्धिनी सान्वयभाषाटीकायां दशा-
फलाध्यायः ॥ १६ ॥

सप्तदशोऽध्यायः

अथ ग्रहाणां गर्वितादिभावाध्यायः—

कोणे तुङ्गगृहे गतो निगदितः खेटस्तदा गर्वितो
मित्रर्क्षे गुरुसंयुतोऽपि मुदितो मित्रेण युक्तेक्षितः।

पुत्रस्थानगतोऽगुभौमरविजार्कैः संयुतो लज्जितः
पापारिग्रहवीक्षितो हि रविणा संक्षोभितः कीर्त्तितः ।। १ ।।

अन्वयः – (यदा) खेटः कोणे तुंगगृहे गतस्तदा गर्वितः, मित्रर्क्षे गुरुसंयुतः अपि मित्रेण युक्तेक्षितः मुदितः, पुत्रस्थान गतः (वा) अगु-भौमरविजार्कैः संयुतः लज्जितः पापारिग्रहवीक्षितः (वा) रविणा वीक्षितः (तदा) संक्षोभित कीर्तितः ।। १ ।।

भा०—अत्र ग्रहोंकी गर्वितादि अवस्था कहते हैं-जो ग्रह अपने मूल त्रिकोण अथवा उच्च स्थान में बैठा हो वह गर्वित, अपने मित्र के घर में बैठा हो अथवा बृहस्पति के साथ हो अथवा अपने मित्र ग्रह से युक्त वा देखा जाता हो तो मुदित, जन्मलग्न से पाँचवें घरमें बैठा हो अथवा राहु, मङ्गल और शनि के साथ बैठा हो तो लज्जित, पापग्रह शत्रुग्रह अथवा सूर्य से देखा जाता हो तो क्षोभित कहा जाता है ।। १ ।।

यो मन्दारियुतेक्षितोऽरिभगतः खेटः क्षुधापीडितो
यः पापारियुतेक्षितो न च शुभैर्दृष्टस्तृषार्तोऽम्बुभे ।
गर्वाढ्यो मुदितोऽथ लज्जित इति प्रक्षोभितः कीर्तितो
विद्भिः संक्षुभितस्तृषार्त इह षड्भावाः ग्रहाणाममी ।।२।।

अन्वयः—यः खेट मन्दारियुतेक्षितः अरिभगतः क्षुधापीडितः, यः पापारियुतेक्षितः अम्बुभे गतः (तथा) न च शुभैर्दृष्टः तृषार्त्तः, अथ गर्वाढ्यः, मुदितः, लज्जितः प्रक्षोभितः, संक्षुधित, तृषार्त्तः इति ग्रहाणां अमी षड्भावाः विद्भिः कीर्तितः ।। २ ।।

भा०—जो ग्रह शनि अथवा अपने शत्रुग्रह से युत अथवा दृष्ट होकर अपने शत्रुके घरमें बैठा हो वह क्षुधा पीड़ित, जो पापग्रह अथवा अपने शत्रुग्रह से युत दृष्ट होकर चौथे घरमें बैठा हो और उसके ऊपर किसी भी पापग्रह की दृष्टि न हो तो वह तृषार्त्त कहलाता है, इस प्रकार गर्वित, मुदित, लज्जित, क्षोभित क्षुधित और तृषार्त्त ये ग्रहों के छः भाव विद्वानोंने कहा है ।। २ ।।

गर्वितादिभावफलम्—

क्षुधितः क्षोभितो वापि यत्र तिष्ठति तं बलात् ।
विनाशयति पुष्णाति मुदितो गर्वितो ग्रहः ।। ३ ।।

अन्वय.—यत्र क्षुधितः क्षोभितः ग्रहः तं बलात् विनाशयति, मुदितः गर्वितः ग्रहः पुष्णाति ॥ ३ ॥

भा०—जिस भाव में क्षुभित अथवा क्षोभित अवस्थागत ग्रह बैठा हो उसको अवश्य नाश कर डालता है, मुदित तथा गर्वित अवस्था वाला ग्रह जिस भाव में बैठा हो उसकी वृद्धि करता है ॥ ३ ॥

कर्मभावगतो यस्य लज्जितस्तृषितोऽथवा ।
क्षोभितः क्षुधितो वापि स दरिद्रो नरो भवेत् ॥ ४ ॥

अन्वयः–यस्य कर्मभावगतः लज्जितः अथवा तृषितः, क्षोभितः, क्षुधितः वापि (ग्रहः) स नरः दरिद्रः भवेत् ॥ ४ ॥

भा०—जिसके जन्म लग्नसे दशवें घरमें लज्जित, तृषित, क्षोभित अथवा क्षुधित अवस्थागत ग्रह बैठा हो तो वह मनुष्य दरिद्र होता है ॥ ४ ॥

लज्जितः पुत्रभावस्थः पुत्रनाशकरो मतः ।
क्षोभितस्तृषितो यस्य सप्तमे स्त्री न जीवति ॥ ५ ॥

अन्वयः—यस्य पुत्रभावस्थः लज्जितः (ग्रहस्तस्य) पुत्रनाशकरोमतः, सप्तमे क्षोभितः (वा) तृषितः (ग्रहस्तस्य) स्त्री न जीवति ॥ ५ ॥

भा०—जिस मनुष्य के पाँचवें घर में लज्जित ग्रह बैठा हो तो उसके पुत्रों को नाश कर डालता है जिसके सातवें घरमें क्षोभित अथवा तृषित अवस्था गत ग्रह बैठा हो तो उसके स्त्रीका नाश कर देता है ॥ ५ ॥

गर्वितदशाफलम्—

नवालयारामसुखं नृपत्वं कलापटुत्वं विदधाति पुंसाम् ।
मदार्थलाभं व्यवहारवृद्धिं दशा विशेषादिह गर्वितस्य ॥ ६ ॥

अन्वयः—गर्वितस्य (ग्रहस्य) दशा पुंसां नवालयारामसुखं, नृपत्वं, कलापटुत्वं मदार्थलाभं (तथा) विशेषात् व्यवहारवृद्धिं इह विदधाति ॥ ६ ॥

भा०--गर्वित ग्रहकी दशा में मनुष्यों को नूतन घर का सुख, राजाके समान सुख अनेक कलाओंमें चतुरता, जबरदस्ती दूसरे के धनका लाभ और विशेषकर व्यापार से धन लाभ होता है ॥ ६ ॥

मुदितग्रहदशाफलम्--

भवति मुदितपाके वासशाला विशाला
विमलवसनभूषाभूमियोषासुसौख्यम् ।
स्वजनजनविलासो भूमिपागारवासो
रिपुनिवहविनाशो बुद्धिविद्याविकासः ॥ ७ ॥

अन्वयः--मुदित (ग्रह) पाके विशाला वासशाला, विमलवसनभूषाभूमियोषासुसौख्यम् स्वजनजनविलासः, भूमिपागारवासः, रिपुनिवहविनाशः (तथा बुद्धिविद्याविकासः भवति ॥ ७ ॥

भा०—मुदित ग्रहकी दशा में अत्यन्त रमणीय सुसज्जित गृह रहने के लिये मिलता है, सुन्दर वस्त्र, आभूषण, पृथ्वी और नवयुवतीका सुख यथेच्छ मिलता है, अपने परिवारों से तथा सेवकों से आनन्द तथा राजा के दरबार में स्थान मिलता है, शत्रुओंका नाश होता है और बुद्धि विद्याका आदर भी होता है ॥७॥

लज्जितग्रहदशाफलम्--

दिशति लज्जितखेटदशावशात्
रतिविराममतीवमतिक्षयम् ।
सुतगदागमनं गमनं वृथा
कलिकथाभिरुचिं न रुचिं शुभे ॥ ८ ॥

अन्वयः लज्जितखेटदशावशात् रतिविरामं अतीव मतिक्षयम्, सुतगदागमनं, वृथा गमनं कलिकथाऽभिरुचिं (तथा) शुभे रुचिं न दिशति ॥ ८ ॥

भा०-लज्जित ग्रहकी दशा स्त्रीसे वियोग, बुद्धिमें अत्यन्त भ्रम, पुत्रको कष्ट व्यर्थ भ्रमण, लड़ाई झगड़े में प्रेम और धर्मादिकार्यों में अरुचि कराती है ॥८॥

क्षोभितग्रहदशाफलम्—

संक्षोभितस्यापि दशा विशेषा-
द्दरिद्रजातं कुमतिं च कष्टम् ।
करोति वित्तक्षयमंघ्रिबाधां
धनाप्तिबाधामवनीशकोपात् ॥ ९ ॥

अन्वयः—संक्षोभितस्यापि दशा विशेषात् दरिद्रजातं, कुमतिं, च कष्टम्, वित्तक्षयं, अंघ्रिवाधां (तथा) अवनीशकोपात् धनाप्तिवाधां करोति ॥ ९ ॥

भा०—संक्षोभित ग्रह की दशा विशेषकर दरिद्रता, बुद्धिहीन, अनेक तरह कष्ट, धन नाश, पैरमें पीड़ा और राजाके क्रोधसे लाभमें बाधा कर देती है॥९॥

क्षुधितग्रहदशाफलम्—

क्षुधितखगदशायां शोकमोहादितापः
परिजनपरितापादाधिभीत्या कृशत्वम् ।
कलिरपि रिपुलोकैरर्थबाधा नराणा-
मखिलबलनिरोधो बुद्धिरोधो विशेषात् ॥१०॥

अन्वयः—क्षुधितखगदशायां नराणां शोकमोहादितापः, परिजन परितापादाधिभीत्या कृशत्वम्, रिपुलोकैरर्थबाधा कलिरपि, अखिलबल निरोधः विशेषात् बुद्धिरोध (भवति) ॥ १० ॥

भा०—क्षुधित ग्रहकी दशामें मनुष्यों को शोक मोह इत्यादि, अनेक संताप परिवारोंके कलहसे शरीर में कष्ट तथा मानसिक कष्ट होता हुआ शरीर दुर्बल, शत्रुओंके वैमनस्यसे लाभमें रुकावट और प्रपंच, अत्यन्त बढ़ा हुआ दलका निरोध और विशेषकर बुद्धिमें भ्रम हो जाता है ॥१०॥

तृषितग्रहदशाफलम्—

तृषितखगदशायामंगिनामंगमध्ये
भवति गदविकारो दुष्टाकार्याधिकारः ।
निजजनपरिवादादर्थहानिः कृशत्वं
खलकृतपरितापो मानहानिः सदैव ॥ ११ ॥

अन्वयः—तृषितखगदशायां अङ्गिना अङ्गमध्ये गदविकारः, दुष्ट कार्याधिकारः निजजनपरिवादादर्थहानिः, कृशत्वं, खलकृतपरितापः (तथा) सदैव मानहानिः भवति ॥११॥

भा०—तृषित ग्रह की दशा में स्त्रीके शरीरमें रोगविकार, नीच कर्मोंका अधिकार, अपने परिवारमें कलह होनेसे धन नाश, शरीर दुर्बल, नीच मनुष्यों के साथ विवाद होने से मानसिक कष्ट और दशापर्यंन्त मान (इज्जत) नष्ट होता है ॥ ११ ॥

ग्रन्थकर्तृप्रशंसा—

आसीच्छ्रीकरुणाकरो बुधवरो वेदांगवेद्याकर-
स्तत्सूनुः क्षितिपालवन्दितपदः श्रीशंभुनाथः कृती ।
विज्ञव्रातकृतादरो गणितविज्जोतिर्विदां प्रीतये
चक्रे भावकुतूहलं लघुतरं श्रीजीवनाथः सुधीः ॥१२॥

अन्वयः—(श्रीमिथिलाप्रान्ते) वेदाङ्गवेद्याकरः बुधवरः श्रीकरुणाकरः आसीत्, तत्सूनुः क्षितिपालवन्दितपदः विज्ञव्रातकृतादरः गणितविद् श्रीशम्भुनाथः कृतीः आसीत्, तत्सूनुः श्रीजीवनाथः सुधीः ज्योतिर्विदां प्रीतये लघुतरं भावकुतूहलं चक्र ॥१२॥

भा०—श्रीमिथिला देशमें वेद और वेदान्त के अद्वितीय विद्वान् श्रीकरुणाकर नामक एक पण्डित हुए उनके पुत्र राजाओं से पूजित विद्वानों में उच्च आसन पानेवाले गणितशास्त्र में बृहस्पति के समान श्रीशम्भुनाथ पण्डित हुए, उनके पुत्र (विद्वद्वर वन्दितपद) श्रीजीवनाथ शर्मा ज्योतिष शास्त्रज्ञों के प्रसन्नार्थ अत्यन्त (अर्थ गौरव) भावकुतूहल नामक ग्रन्थ की रचना किये ॥१२॥

इति श्रीमन्मैथिल शंभुनाथगणकात्मजजीवनाथविरचिते भावकुतूहले ग्रहाणां गर्वितादिदशाफलकथनं सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

—०—

टीकाकर्तृवंशप्रशंसा—

योग्ये श्री बलियासुदेशनिकटे श्री केवराख्ये वरे
ग्रामे श्रेष्ठतरः श्रुतिस्मृतिलसत्कार्ये परं सम्मतः ।
श्रीमद्भागवतं पुराणविमलं यः सप्तकृत्वो बुधः
सप्ताहं व्यतनोद्विभुः सुकृतिधीः श्रीरामसंजीवनः ॥१॥
पुत्रस्तस्यैवजातः परमशुभमतिः धार्मिकः कृष्णतुल्यो
गोपालान्तः सुमिश्रः शिवपदसहितस्तस्य पुत्रोवरिष्ठः ।
विद्वान् रामावतारो रघुकुलतिलकस्यैव मूर्तिः पराकिम्
पुत्रस्तस्यैव जातो हरिपदकृपया ज्यौतिषाचार्य्यवर्य्यः ॥२॥

रामोत्साहो बुधो योग्यः त्रिस्कन्धे निपुणो परः।
भावे कुतूहलं कुर्वत् श्रीमद्भावकुतूहलम्॥ ३॥
व्याख्यां चकार भाषायां तस्य लोकसुखाय वै।
सोऽयं ग्रंथः परं श्रेष्ठः तनोतु बुधमानसे॥४॥

अन्वयः—योग्ये श्रीबलियासुदेशनिकटे श्रीकेवराख्ये वरे ग्रामे श्रेष्ठतरः श्रुतिस्मृतिलसत्कार्ये परं सम्मतः सुकृतिधी विभुः यः श्रीरामसंजीवन (रामजीयावन मिश्रः)। यध श्रीमद्भागवतं पुराणविमलं सप्ताहं सप्तकृत्वा व्यतनोत्, तस्यैव पुत्रः परमशुभमतिः धार्मिकः कृष्णतुल्यः शिवपदसहितः गोपालन्तः सुमिश्रः शिवगोपालमिश्र इत्यर्थः) जातः, तस्य पुत्रो वरिष्ठः विद्वान् रामावतारः सुमिश्रः रघुकुलतिलकस्यैवमूर्तिः पराक्रिम् (जातः) तस्यैव पुत्रः हरिपदकृपया ज्यौतिषाचार्यः योग्यः बुधः रामोत्साहः त्रिस्कन्धे (ज्यौतिषशास्त्रे) परं निपुणःभावे कुतूहलं कुर्वन् श्रीमद्भावकुतूहलं लोकसुखाय तस्य वै व्याख्यां चकार॥१-२-३-४॥

भा०—भूमण्डल में प्रसिद्ध मंडल (जिला) बलिया के समीप केवरा ग्राम विख्यात है जिसमें श्रौत स्मार्त्त कर्मों (कर्मकाण्डों) में अद्वितीय विद्वान् सत्कर्मनिष्ठ स्वपरिवारपालक पं० श्रीरामजीयावन मिश्र हुए जिन्होंने श्रीमद्भागवत पुराणपरायण सातबार सुनकर अनेकों यज्ञ किया, तिनके सुपुत्र अपने कुलकमल में सूर्यके समान प्रकाश करनेवाले शिव तथा कृष्ण तुल्य लोकोपकार (कल्याण) करनेवाले पं० श्रीशिवगोपाल मिश्र हुये, तिनके पुत्र परम धर्मिष्ठ सत्यसिन्धु, दयासागर (रघुकुल तिलक) श्रीरामचन्द्र के समान अपने कुल में धर्म प्रकाश करनेवाले पं० श्रीरामावतार मिश्र हुए, तिनके ज्येष्ठ पुत्र ज्योतिषाचार्य पं० श्रीरामोत्साहमिश्र भगवत् की असीम कृपासे तन्वादि बारहों भावों के फल कहनेमें अत्यन्त चमत्कार (आश्चर्य) रूप इत्यादि अनेक जातक लक्षणों से सम्पन्न 'भाव कुतूहल' नामक ग्रन्थ का अन्वय तथा सरल हिन्दी भाषा बनाया। इससे विद्वद्वृन्द तथा छात्रगणों का कुछ भी उपकार हुआ तो अपना सुपरिश्रम सफल समझकर अन्य ग्रन्थोंके कठिन स्थलको सरल करनेका साहस करूँगा॥१-२-३-४॥

* शुभम् *

समाप्तोऽयं ग्रन्थः।

मुद्रित—विजय प्रेस, वाराणसी।